संसार में सबसे मूल्यवान 'नोबल-पुरस्कार' द्वारा अब तक सम्मानित देश-विदेश के सभी साहित्यकारों के जीवन और कृतित्व का प्रामाणिक विवरण

ठाकुर राजबहादुर सिंह

नोबल-पुरस्कार-विजेता साहित्यकार
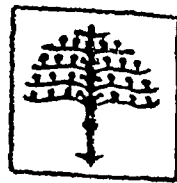
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

भूमिका

मानव-जीवन मे साहित्य का स्थान सर्वोपरि है। जीवन के हर पहलू से सम्बद्ध होने के कारण साहित्य के अन्तर्गत कला और विज्ञान का समन्वय स्वय हो जाता है। युगो से मानव को प्रेरणा देनेवाला साहित्य धर्मोपदेश से लेकर कथा-कहानी तक सभी प्रकार की मनोर्मियो से तरगित होता रहा है।

प्राचीन काल मे साहित्य का सत्कार राजा-सामन्त और सम्पन्न व्यक्तियो द्वारा होता था। आज के युग मे भी वह प्रथा सर्वथा लुप्त तो नही हुई, उसका प्रकार बदल गया है—अब भी सभी प्रतिमानो के राज्य और श्रेष्ठ समाज एव विशिष्ट व्यक्तियो द्वारा साहित्य का सम्मान होता है। ढग बदल गया है, पर उद्देश्य अब भी यही है कि साहित्य को प्रोत्साहन मिले और वह लोकरजन और लोकहित मे सहायक बने।

आज के युग मे जीवन की मान्यताएँ और मूल्य बदलते जाने पर भी साहित्य का सम्मान समाज से दूर नही हुआ है। समृद्ध देशो मे भिन्न-भिन्न विषयो के साहित्य पर पुरस्कार देने के लिए कितनी ही सस्थाएँ, प्रतिष्ठान और निधियाँ कायम है। अपेक्षाकृत असम्पन्न देशो मे भी यह प्रथा न्यूनाधिक रूप मे कायम है। इस तरह के विभिन्न पुरस्कारो के बीच नोबल-पुरस्कार एक विश्वव्यापी और सर्वाधिक ख्याति-प्राप्त पुरस्कार है, जो साहित्य और विज्ञान से ख्याति प्राप्त करनेवाले को प्रतिवर्ष दिया जाता है। हमारे देश मे—विशेषकर हिन्दी-जगत् मे भी इस सुन्दर प्रथा का अनुसरण हुआ है और काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इस दिशा मे स्तुत्य कार्य किया है।

मुझे इस प्रकार की साहित्यिक उपलब्धियाँ वर्षो से आकर्षित करती रही है अत इस दिशा मे साहित्य-सर्जन करने की प्रवृत्ति भी पहले ही से रही है। मैने पहले पत्र-पत्रिकाओ मे लेखो द्वारा और फिर पुस्तकाकार भी, ऐसे विश्वविख्यात साहित्यकारो के जीवन और उनकी रचनाओ की चर्चा शायद हिन्दी मे सबसे पहले इस शती के तीसरे दशाब्द से ही आरम्भ की थी। पीछे १९३४ मे वे रचनाएँ पुस्तकाकार भी प्रकाशित हुई, जिसकी भूमिका श्री सुकुमार चटर्जी ने लिखी थी।

कालान्तर मे, इन साहित्यिक पुरस्कारो की दिशा भी बदली है। जहाँ पहले सुन्दर काव्य और नाटक ही अधिक आकर्षण की रचना मानी जाती थी, अब लोक-हित और उपयोगिता के साथ-साथ आधुनिक मान्यताओ के अनुसार कथा-साहित्य के

प्रति विशेष अनुराग दिखाया जाने लगा है। इधर के दो दशको मे कथा-प्रवृत्ति अधिक विकसित भी हुई है, इसलिए ऐसे पुरस्कार औपन्यासिको को ही अधिक मिले है। इन औपन्यासिको मे कइयो की रचनाओ के अनुवाद ससार की सभी समुन्नत भाषाओ मे व्यापक रूप से हो रहे है—हिन्दी में भी अब ऐसी रचनाएँ अधिक आदर और चाव से पढी जाने लगी है।

वर्तमान पुस्तक के प्रकाशन का भी एक इतिहास है। मैंने एक दिन बातो-बातो मे राजपाल एण्ड सन्ज के पण्डित प्रकाशक श्री विश्वनाथजी से कहा था कि जब आप नोबल-पुरस्कार-विजेताओ की कृतियो के अनुवाद प्रकाशित करते है, तो स्वय उनके जीवन और रचनाओ के सम्बन्ध मे एक पुस्तक ही प्रकाशित क्यो नही कर देते। उन्होने बात स्वीकार कर ली और इस दिशा मे मुझे आगे बढने को कह दिया। इस काम मे दो वर्ष के लगभग लग गए जिससे कई महान् औपन्यासिको की इतिवृत्तियाँ भी इसमे जोडनी पडी। इस बात का पूरा प्रयत्न किया गया है कि नोबल-पुरस्कार-विजेताओ और उनकी रचनाओ के सम्बन्ध मे अद्यतन जानकारी इस रचना मे सश्लिष्ट कर ली जाए और मै समझता हूँ कि पाठक इसका परिचय इन पृष्ठो मे स्वय प्राप्त कर लेगे।

—राजबहादुरसिंह

गाधी मार्ग,
राजघाट, नई दिल्ली—१

नोबल-पुरस्कार-विजेता साहित्यकार

नोबल-पुरस्कार-विजेता साहित्यकार

अल्फ्रेड नोबल और नोबल पुरस्कार

भारत के साहित्यकारो मे —विशेषकर हिन्दी के साहित्यकारो मे— अभी तक नोबल महोदय और उनके पुरस्कार के सम्बन्ध मे बहुत थोडा ज्ञान फैल पाया है। वास्तव मे कवि-सम्राट श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर और विज्ञान-विशारद चन्द्रशेखर व्यकट रामन् को नोबल-पुरस्कार मिलने के पूर्व बहुत थोडे भारतीयो को इस बात का ज्ञान था कि नोबल महाशय कौन थे और उपर्युक्त पुरस्कार कहा से और क्यो दिया जाता है। इधर इन दो भारतीयो को यह पुरस्कार मिलने के कारण हमारे देश मे उसकी काफी चर्चा हुई और समय-समय पर हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओ मे इनके सम्बन्ध मे थोडा-बहुत उल्लेख होता रहा। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने तो एक प्रकार से नोबल पुरस्कार का अनुकरण भी कर डाला और स्वर्गीय श्री मगलाप्रसादजी के नाम पर प्रतिवर्ष पारितोषिक देने का प्रबन्ध कर लिया। किन्तु अभी तक हिन्दी के पाठक-पाठिकाओ को जगत्प्रसिद्ध नोबल महोदय के सम्बन्ध मे बहुत अल्प —लगभग नही के बराबर— ज्ञान है।

पुरस्कार-विजेताओ और उनकी रचनाओ का परिचय देने के पूर्व हम यहां नोबल महोदय और उनके नाम पर प्रचलित पुरस्कार के सम्बन्ध मे कुछ विस्तृत रूप मे बतला देना चाहते है।

वंश-परिचय

नोबल महोदय का पूरा नाम अल्फ्रेड बर्नार्ड नोबल था। इनके पूर्वजो का पारिवारिक नाम 'नोबिलियस' था। इनके पितामह इमानुएल फौजी डॉक्टर थे और वे अपने पारिवारिक नाम को बदलकर 'नोबल' लिखने लगे थे। अल्फ्रेड नोबल के पिता युवावस्था मे स्टॉकहोम मे विज्ञान के शिक्षक थे। उनकी अभिरुचि आविष्कार करने की ओर विशेष थी, इसलिए उन्होने विस्फोटक पदार्थों के सम्बन्ध मे प्रयोग करने आरम्भ कर

दिए और सयोगवश चीर-फाड मे काम आनेवाले यत्रो तथा रबड के ऐसे गद्दो के निर्माण करने के लिए नकशे बनाने मे सफल हुए जो आहतो और रोगियो के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते थे। जहाजो की निर्माण-कला मे भी वे काफी दिलचस्पी लेते थे और इस सम्बन्ध मे उन्होने अपना कुछ समय मिस्र मे व्यतीत किया था। प्रयोग के समय विस्फोटक पदार्थो द्वारा उन्हे बडी हानि पहुची थी। इस प्रकार का पहला विस्फोटक १८३७ ई० मे स्टॉकहोम मे हुआ था, जिसके बाद वे अपने मित्रो के परामर्श से रूस चले गए। रूस मे उन्हे सामुद्रिक खानो मे प्रयोग करने की नौकरी मिल गई। क्रीमिया के युद्ध के बाद तक वे सपरिवार वही रहे, और जल-सेना के लिए युद्धोपयोगी रासायनिक आविष्कार करते रहे। जब वे सपरिवार स्वीडन लौटने लगे, तो उनका बडा लडका लडविग रूस मे ही रह गया। लडविग रूस मे प्रख्यात इजीनियर बन गया और उसने बाकू मे तेल की कई खानो का पता लगाया।[1] दूसरी बार स्वीडन के एक कारखाने मे १८६४ ई० मे फिर एक भयकर विस्फोट हुआ, जिसमे उनके छोटे लडके की मृत्यु हो गई और उनके पिता को ऐसी चोट आई, जिससे वे अपने शेष जीवन-भर रोगी बने रहे।

जन्म और शिक्षा

अल्फ्रेड बर्नार्ड नोबल का जन्म १८३३ ई० मे स्टॉकहोम मे हुआ था। वह अपने भाइयो की अपेक्षा कम हृष्ट-पुष्ट थे, उनमे स्नायविक दुर्बलता थी और वे कोमल प्रकृति के थे। वे जीवन-भर सिर-दर्द से रुग्ण रहे। उनकी माता कैरोलाइन हेनरीट आलसिल उन्हे बडा प्रेम करती थी और बचपन से ही वे उन्हे वीर और बुद्धिमान मनुष्यो की कहानिया सुनाया करती थी। बुद्धिमती माता को मानो पहले ही इस बात का पता लग गया था कि अस्वस्थ प्रकृति का होते हुए भी उनका पुत्र किसी दिन एक महान् पुरुष बनेगा। अल्फ्रेड ने अपना विवाह नही किया, यद्यपि उनका एक लडकी से प्रेम हो गया था, जो अपनी तरुणावस्था मे ही इस ससार से चल बसी थी। वे अन्त तक अपनी माता के भक्त बने रहे। वय प्राप्त होकर जब वे विदेशो मे रहने लगे, तो प्राय. अपनी मा को बडे ही प्रेम-पूर्ण पत्र लिखा करते थे और कभी-कभी स्वीडन जाकर उनके दर्शन कर आया करते थे।

अपने पिता की तरह अल्फ्रेड ने भी रसायन, प्रकृति-विज्ञान, और यात्रिक शिल्प का अध्ययन करने मे काफी दिलचस्पी ली। लगभग सत्रह वर्ष की ही अवस्था मे उनका ध्यान जहाज के निर्माण की ओर गया और वे उसके यत्रो आदि का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए अमेरिका भेजे गए। अल्फ्रेड के पिता ने उन्हे इरिक्सन नामक अपने एक स्वदेशवासी के पास भेजा, जो उन दिनो सूर्य की गर्मी से इजन चलाने के सम्बन्ध मे कुछ प्रयोग कर रहे थे। अल्फ्रेड ने लगभग एक वर्ष वहा रहकर इरिक्सन को उनके आविष्कार मे सहायता दी। इरिक्सन के भाग्य मे उन दिनो परिवर्तन आरम्भ हो गया था। १८४९

---

१. 'वेस्ट मिन्स्टर रिव्यू' के १५६वें और ६४०वें अङ्कों में प्रकाशित लेख।

ई० मे उनके पास १३२ डालर[1] की सम्पत्ति शेष थी, और उस साल उन्हे कुल २,००० डालर की आमदनी हुई थी। किन्तु दो ही वर्ष बाद उनके पास ८७०० डालर के लगभग रकम इकट्ठी हो गई। इस बीच उन्होने बहुत-से नये आविष्कार करके उनके अधिकार बेच दिए थे और स्वीडन-सम्राट मे उन्हे इस सफलता के लिए बधाई प्राप्त हुई थी। किन्तु १८५३ ई० मे जब इरिक्सन की ५ लाख डालर की विपुल सम्पत्ति की लागत से उनका नवाविष्कृत इजन लगाकर तैयार किया हुआ 'दि इरिक्सन' नामक जहाज, जिसे उन्होने कितने ही वर्षो के लगातार अध्यवसाय के बाद तैयार किया था, परीक्षा के समय समुद्र मे डूब गया, तो इरिक्सन का दिल टूट गया। फिर भी इरिक्सन ने साहस नही छोडा और 'दि मानीटर' नामक एक दूसरा जहाज बनाने का नकशा सयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सरकार को उन्हाने दे दिया, जिमके निर्माण के फलस्वरूप उपर्युक्त सरकार को बडी सफलता मिली।[2]

अल्फ्रेड नोबल के दुर्बल स्वभाव पर श्री इरिक्सन के इस भारी उत्थान और पतन का गहरा प्रभाव अवश्य पडा होगा। कदाचित् उसी समय नवयुवक नोबल ने यह विचार किया होगा कि वैज्ञानिको की सहायता के लिए कुछ ऐसा धनकोश होना चाहिए, जिससे परीक्षा के समय असफल हो जाने पर, उन्हे कुछ आर्थिक सहायता मिल मके। जब वे स्वीडन और रूस से लौटे, तो विस्फोटक पदार्थो की निर्माण-क्रिया मे अपने पिता और भाइयो का हाथ बटाने लगे। अल्फ्रेड नोबल अब इसी खोज मे लग गए कि किसी ऐसे पदार्थ का निर्माण होना चाहिए, जो अधिक शक्तिशाली होते हुए भी कम खतरनाक हो। सन् १८५७ ई० मे उन्होने पीटर्सबर्ग मे वाष्प-मापक-यत्र बनाया और उसके निर्माणाधिकार की रजिस्ट्री अपने नाम से करा ली। कई लेखको का कथन है कि 'डाइनामाइट' नामक प्रबल स्फोटनशील द्रव्य का आविष्कार उन्होने अन्य परीक्षणो के समय सन् १८६५-६६ ई० मे सयोगवश कर लिया था। इस आविष्कार के पश्चात् अतुल धन कमाने की आशा से उन्होने कई देशो मे इसके निर्माण के लिए कारखाने खोलने के लिए उनकी सरकारो से प्रार्थना की और फ्रास के बैकवालो से यह कहकर ऋण मागा कि उन्होने एक ऐसा पदार्थ तैयार किया है, जिससे ससार को उडा दिया जा सकता है, किन्तु बैकवालो ने रकम देने से इन्कार कर दिया।

सफलता और अन्त

अन्तत नैपोलियन तृतीय ने नोबल के इस आविष्कार मे दिलचस्पी ली और फ्रास मे कारखाना खोलने के लिए नोबल को कुछ रकम दे दी। 'डाइनामाइट' के कुछ नमूने थैले मे बन्द कर अल्फ्रेड नोबल उसके व्यापार के मम्बन्ध मे अमेरिका गए। न्यूयार्क के होटलो ने डरते-डरते उन्हे अपने यहा ठहराया, क्योकि उनके विस्फोटक पदार्थों की चर्चा

---

१. डालर आजकल लगभग साढे चार रुपये के बराबर होता है।

२. The Life of John Ericsson by W C Church, New York, 1901

वहा पहले ही से हो चुकी थी। न्यूयार्क से वे कैलीफोर्निया गए, जहा उनके बडे भाई के मित्र डाक्टर वैण्डमैन रहते थे। उनकी सहायता से नोबल ने लास एंजिल्स[1] नगर के पास एक कारखाना खोल दिया। कुछ ही वर्षो मे इटली, स्पेन, फ्रास, स्कॉटलैण्ड, इगलैण्ड और स्वीडन मे नोबल के कारखाने खुल गए। जिस समय अल्फ्रेड नोबल की अवस्था चालीस वर्ष की हुई, उस समय 'जायण्ट पाउडर' नामक पदार्थ के निर्माण से उन्हे बडा आर्थिक लाभ हुआ। कई वर्ष पेरिस मे रहकर उन्होने सरेश, बैलेस्टाइट और अनेक प्रकार के धूम्रहीन पाउडरो के आविष्कार के लिए रसायनशालाए खोली। इसके पश्चात् 'सैन रीमो' मे रहकर उन्होने पेट्रोल और कृत्रिम गटापारचे के निर्माणाधिकार की रजिस्ट्री कराई। वैज्ञानिको और शिक्षितो ने उनका बडा आदर किया, किन्तु अर्द्धशिक्षित और अज्ञानी लोग उन्हे भय की दृष्टि से देखते थे।

यद्यपि नोबल महोदय का कार्य उच्चाभिलाषापूर्ण था और उन्हे सफलता, धन और प्रतिष्ठा खूब प्राप्त हुई थी, फिर भी उन्होने विवाह नही किया। उनका स्वास्थ्य ऐसा खराब रहता था कि वे प्राय सिरदर्द से दबे-से रहते थे। फिर भी वे सिर पर पट्टी बाधे रसायनशाला मे डटे रहते थे। उन्हे इस बात का भय था कि लोग उनकी ओर केवल उनके विपुल धन के कारण आकर्षित हो रहे हैं। बैरोनेस बर्था-वॉन-सटनर नामक एक महिला ने, जो कुछ दिनो इनकी सेक्रेटरी रह चुकी थी, उनके सस्मरण मे लिखा है—"वे कद मे कुछ छोटे थे, उनके रूप मे कोई विशेषता नही थी। वे बहुभाषाविद् और दार्शनिकतापूर्ण स्वभाव के थे। बातचीत मे पटु और कहानी कहने मे अद्वितीय थे। वे उच्छृङ्खल और झूठे लोगो के तीव्र आलोचक थे, और वैज्ञानिको तथा साहित्यिको से मिलकर प्रसन्न होते थे।"

बैरोनेस-वॉन-सटनर के सस्मरणो से इस बात का पता लगता है कि नोबल महोदय का उद्देश्य पुरस्कार— और विशेष करके शान्ति-सम्बन्धी पुरस्कार— का विचार निश्चित करने मे क्या था। यहा यह बतला देना आवश्यक है कि 'शाति-सम्बन्धी' पहला पुरस्कार बैरोनेस-वॉन-सटनर को उनकी प्रख्यात कहानी 'हथियार फेक दो!'[2] के लिए मिला था। इस कहानी मे उक्त महिला ने ससार मे शान्ति-स्थापना करने की आवश्यकता का प्रबल समर्थन किया था। इसके प्रकाशन के बाद १८९० ई० मे नोबल महोदय ने इसकी बडी प्रशसा की। एक अवसर पर उन्होने कहा था कि यदि मैं कोई ऐसा यन्त्र बना सकता, जिसके द्वारा युद्ध का रोकना सम्भव होता, तो मुझे बडी प्रसन्नता होती। ७ जनवरी, १८९३ ई० को, अपनी मृत्यु के तीन वर्ष पूर्व उन्होने उपर्युक्त बैरोनस को पेरिस से लिखा था कि मै अपने धन का एक भाग प्रति पाचवे वर्ष शान्ति-स्थापना के लिए पुरस्कार के रूप मे देना चाहता हू और इसे तीस वर्ष तक—अर्थात् छ किस्तो मे—देना उचित होगा, क्योकि यदि तीस वर्ष तक सब राष्ट्रो ने वर्तमान अवस्था को सुधारकर युद्ध

---

१. जिसमें अब हालीवुड के नाम से ससार का सर्वश्रेष्ठ सिनेमाकेन्द्र बन चुका है।
२. Die Waffn enieder

बन्द करने का प्रबन्ध न किया, तो फिर वे असभ्य और जंगलियो के रूप मे परिवर्तित हो जाएगे। नोबल महोदय धन एकत्रित करके उत्तराधिकारियो के लिए छोड जाने के विरोधी थे।

१० दिसम्बर, १८९६ ई० को अकस्मात् 'मैन रीमो' के कारखाने मे अल्फ्रेड नोबल का देहान्त हो गया। उन्होने बहुत पहले से ही दुर्बलता का अनुभव करके डॉक्टरो से अनिच्छापूर्वक परामर्श लिया था और बडी हिचकिचाहट के साथ उनके आदेशो का पालन करते थे। इस अवस्था मे भी वे दिन-भर रसायनशाला का काम करते थे। अपने अन्तिम दिनो मे ही उन्होने अपने धन के उपयोग पर विचार किया था और अन्तत यह निश्चय किया था कि वे अपना धन विज्ञान, साहित्य और मनुष्य-जाति के कल्याणार्थ सार्वभौम शान्ति की शिक्षा के लिए व्यय करेगे। उनके मौलिक और आदर्श दान के वसीयतनामे से सारा सभ्य ससार चकित हो उठा। जिस व्यक्ति ने इतनी सफलतापूर्वक ससार के विनाशकारी पदार्थो का आविष्कार किया था, उसने अपना विशाल धन समस्त ससार के मगल के लिए रचनात्मक साहित्य की सृष्टि मे लगा दिया।

नोबल पुरस्कार का विवरण

यहा नोबल महोदय के वसीयतनामे का साराश दिया जाता है जिससे पाठक समझ सकेगे कि उसमे पुरस्कार की शर्त क्या-क्या है

"मैं, डॉ० अल्फ्रेड बर्नार्ड नोबल, अपनी चल भू-सम्पत्ति के सम्बन्ध मे, जिसका नक्शा २७ नवम्बर, १८९५ ई० का बनाया गया था, आदेश देता हू कि वह रुपये के रूप मे परिवर्तित करके सुरक्षित रूप मे जमा करवा दी जाए। इस प्रकार जो धन जमा होगा, उसके व्याज से प्रति वर्ष उन व्यक्तियो को पुरस्कार दिए जाए, जो उस वर्ष मे मानव-जाति के हित के लिए सर्वोत्कृष्ट पुस्तके लिखे। व्याज की रकम पाच बराबर भागो मे बटेगी, जिसका विभाजन निम्नलिखित ढग से होगा — इस धन का एक भाग उस व्यक्ति को मिलेगा, जिसने प्रकृति-विज्ञान या पदार्थ-विद्या के सम्बन्ध मे किसी नई बात का आविष्कार किया होगा, एक भाग उसको मिलेगा, जिसने रसायन मे किसी नये तत्त्व का उद्घाटन किया होगा, एक भाग उस व्यक्ति को दिया जाएगा, जिसने प्राणि-शास्त्र या औषध-विज्ञान मे किसी नई बात का आविष्कार किया होगा और एक भाग उस व्यक्ति को प्रदान किया जाएगा, जो साहित्यिक-जगत् मे आदर्शपूर्ण सर्वोत्तम नूतन ज्ञान की सृष्टि करेगा; तथा अन्तिम एक भाग उस व्यक्ति को समर्पित किया जाएगा, जो ससार के सब राष्ट्रो मे बन्धु-भाव और शान्ति स्थापित करने और युद्ध रोकने का सत्प्रयत्न करेगा।"

आगे चलकर उन्होने लिखा है : "पदार्थ-विद्या और रसायन के पुरस्कार प्रदान करने का अधिकार स्टॉकहोम-स्थित 'स्वीडिश एकैडमी ऑफ साइन्स' को होगा, प्राणि-

शास्त्र और औषध-विज्ञान-सम्बन्धी पुरस्कार स्टॉकहोम का 'कैरोलिन मेडिकल इन्स्टीट्यूट' प्रदान किया करेगा, साहित्य-सम्बन्धी पुरस्कार देने का अधिकार स्टॉकहोम की एकेडमी (स्वेन्स्का एकैडमीन) को होगा और सार्वभौम शान्ति-सम्बन्धी पुरस्कार का निर्णय पाच व्यक्तियो की एक समिति करेगी, जिनका निर्वाचन 'नार्वेजियन स्टॉरदिग' के द्वारा होगा। मेरी यह विशेष इच्छा है कि पुरस्कार देने मे किसी भी उम्मीदवार के देश, जाति या धर्म आदि का विचार न किया जाए।"

इस प्रकार नोबल महोदय की जमा की हुई सम्पत्ति २० लाख पौण्ड[1] से अधिक थी, जिसमे से प्रत्येक पुरस्कार मे प्रतिवर्ष ८००० पौण्ड दिए जाते है।

साहित्य-सम्बन्धी पुरस्कार मे दो शर्ते और रखी गई थी, जिनमे से पहली यह थी कि "यदि साहित्य की दो पुस्तके पुरस्कार-योग्य सिद्ध हो, तो उपर्युक्त पुरस्कार की रकम दोनो मे बराबर विभाजित की जा सकती है।" इसके अनुसार १९०४ ई० का पुरस्कार स्पेनी नाटककार जोज एकेगारे और प्रावेन्स के कवि फ्रेडरिक मिस्त्राल मे बराबर-बराबर बाट दिया गया था। इसी प्रकार १९१७ ई० मे यह पुरस्कार डेन्मार्क के दो लेखको मे समान रूप से विभाजित कर दिया गया था। दूसरी शर्त यह थी कि "यदि किसी वर्ष ऐसा परीक्षाधीन साहित्य उच्चतम कोटि का न सिद्ध हो सके, तो उस वर्ष पुरस्कार किसीको नही दिया जाएगा और वह रकम मूलधन मे जोड दी जाएगी।" इसके अनुसार १९१४ और १९१८ ई० मे कोई साहित्यिक पुरस्कार नही दिया गया।

पुरस्कारो का निर्णय न्यायपूर्वक हो, इसके लिए वसीयतनामे मे यह नियम भी लिखा गया था कि इस कार्य के लिए 'नोबल कमेटी' नामक एक सस्था स्थापित होगी, जिसमे तीन से पाच तक ऐसे सदस्य होगे, जो पुरस्कार का निर्णय करेगे। इस 'कमेटी' (समिति) का सदस्य बनने के लिए यह आवश्यक नही होगा कि वह व्यक्ति स्वीडन का ही नागरिक हो।

पुरस्कार के उम्मीदवार उपर्युक्त समिति से किस प्रकार लिखा-पढी कर सकते है, इसके सम्बन्ध मे पुरस्कार-सम्बन्धी नियमावली के सातवे नियम मे लिखा है कि वसीयतनामे की शर्त के अनुसार पुरस्कार के लिए उम्मीदवार का नाम किसी सुयोग्य व्यक्ति द्वारा प्रस्तावित होगा। पुरस्कार के लिए सीधे भेजे हुए प्रार्थनापत्र पर विचार नही किया जाएगा। 'सुयोग्य व्यक्ति' का मतलब यहा ऐसे मनुष्य से है, जो विज्ञान, साहित्य आदि के क्षेत्र मे प्रतिनिधित्व करता हो, चाहे वह स्वीडन का निवासी हो या अन्य देश का। पुरस्कार-सम्बन्धी नियमो को सर्वसाधारण मे प्रचारित करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रति पांचवे वर्ष उन्हे सभ्य ससार के प्रभावशाली पत्रो मे प्रकाशित कराया जाए।

पुरस्कार के उम्मीदवारो के नाम प्रति वर्ष पहली फरवरी तक स्टॉकहोम पहुच

1. पौण्ड लगभग १५ रुपये के बराबर होता है।

जाने चाहिए। यद्यपि सफल उम्मीदवारो के नाम समाचारपत्रो द्वारा प्रति वर्ष नवम्बर महीने मे प्रकाशित हो जाते है, किन्तु सस्था की ओर से इसकी सूचना नियमपूर्वक १० दिसम्बर को प्रकाशित होती है, जो अल्फ्रेड नोबल की निधन-तिथि है। इसी समय निर्णयकर्ता पुरस्कार-विजेताओ को पुरस्कार की रकमो के चेक (जिनमे से प्राय प्रत्येक ८००० पौण्ड का होता है) देते है और साथ ही उन्हे सनद और स्वर्ण-पदक भी प्रदान करते है जिनपर नोबल महोदय की खुदी हुई मुखाकृति और कुछ लिखित मजमून होता है। पुरस्कार के नियमो मे एक बात यह भी लिखी हुई है कि पुरस्कार-विजेता के लिए, जहा तक सम्भव हो, यह आवश्यक होगा कि जिस पुस्तक पर उसे पारितोषिक मिला हो, उसके 'विषय' पर पुरस्कार प्राप्त करने के छ मास के अन्दर स्टॉकहोम मे व्याख्यान दे और शान्ति-सस्थापना-सम्बन्धी पुरस्कार-विजेता क्रिश्चियना मे भाषण दे। पुरस्कार-सम्वन्धी उपर्युक्त नियम साहित्यिक पारितोपिको पर लागू नही हो सका, क्योकि साहित्यिक पुरस्कार-विजेताओ मे से वहुत-थोडे ऐसे हुए है, जा स्वय उपस्थित होकर पुरस्कार प्राप्त कर सके हो। निर्णयकर्ताओ के निर्णय के विरुद्ध किसी प्रकार की आपत्ति की सुनवाई नही हो सकती। यदि निर्णयकर्ताओ मे कोई मतभेद होगा, तो उसकी सूचना न तो कार्य-विवरण मे प्रकाशित होगी, न सर्वसाधारण को दी जाएगी।

जिस समिति द्वारा पुरस्कार के धन का प्रबन्ध होता है, उसका नाम है 'नोबल फाउण्डेशन'। इसके पाच सदस्य होते है, जिनमे से एक – प्रधान—की नियुक्ति स्वीडन-सम्राट करते है और शेष चार सदस्यो का चुनाव प्रबन्ध-समिति से होता है। साहित्य-सम्बन्धी पुरस्कार का निदर्शन 'स्वीडिश एकैडमी' करती है, जिसके सदस्य 'नोबल इन्स्टीट्यूट' और उसके पुस्तकालयाध्यक्ष की सहायता से सव प्रवन्ध करते हैं। इस सस्था के पुस्तकालय मे पुस्तको का सुन्दर सग्रह है - खास करके आधुनिक लेखको की कृतिया यहा सव मिल जाती है। पुस्तके सभी प्रगतिशील भाषाओ की रखी जाती है और आवश्यकता पडने पर उनके अनुवादो की प्रतिया भी रखी जाती है। नव प्रकाशित पुस्तको के नये से नये विवरण भी यहा प्रस्तुत रखे जाते है।

सुपरिणाम

चाहे और जो हो, किन्तु यह वात सुनिश्चित है कि अल्फ्रेड नोवल की पुरस्कार-सम्वन्धी दो शर्तो का पालन सुचारु रूप से हुआ है। पहली वात यह हुई है कि सभी क्षेत्रो के पुरस्कार-विजेताओ द्वारा मनुष्य-जाति की 'वहुत' नही, तो 'कुछ' सेवा अवश्य हुई है, और दूसरी वात यह हुई है कि पुरस्कार के उम्मीदवार की जातीयता पर कोई विचार नही किया गया।

पहला नोवल पुरस्कार सन् १९०१ ई० मे दिया गया था। तव से १९२५ ई० तक साहित्य-सम्वन्धी पारितोपिक ससार के विभिन्न राष्ट्रो के व्यक्ति प्राप्त कर चुके है।

इन पुरस्कारो का अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव अच्छा हुआ है और सभी सभ्य देशो मे

इन पुरस्कारो के मम्बन्ध मे काफी चर्चा हुई है। इसमे सन्देह नही कि इस विशाल विश्व में केवल एक ही अन्तर्राष्ट्रीय विख्यात साहित्य-पुरस्कार नाममात्र का लाभ पहुचा सकता है, परन्तु आदर्श और उदाहरण के रूप मे पहला प्रयत्न होने के कारण महामना नोबल का नाम सदा के लिए अमर रहेगा, और ससार मे बहुत-से ऐसे विद्या-व्यसनी धनिक पैदा हो जाएगे, जो इसका अनुसरण करेगे और जिस पवित्र उद्देश्य से नोबल महोदय ने अपनी जन्म-भर की कष्टपूर्वक अर्जित सम्पत्ति ससार को प्रदान कर दी है, उसकी पूर्ति के लिए सचेष्ट होगे।

सुली प्रूधों

१६०१ ई० मे साहित्य का नोबल पुरस्कार सुली प्रूधो को मिला। यूरोप मे फ्रांस का साहित्य बहुत पहले से अद्वितीय रहा है। शताब्दियो से फ्रासीसी भाषा यूरोप की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक भाषा मानी जाती है। साहित्य मे जो गौरवपूर्ण पद हमारे देश मे वगभाषा को प्राप्त है, वही—वल्कि उससे भी ऊचा—यूरोप मे फ्रासीसी भाषा को प्राप्त है। यही कारण है कि पहले-पहल नोबल पुरस्कार जीतने का श्रेय फ्रांसीसी कवि रेनी फ्रासिस अर्मा को प्राप्त हुआ था।

फ्रासिस अर्मा का जन्म १६ मई, १८३६ ई० को पेरिस मे हुआ था। ये एक अच्छे कवि, और विख्यात फ्रेंच एकैडमी के सदस्य थे। इनका पूरा नाम रेनी फ्रासिस अर्मा सुली प्रूधो था। १६०१ ई० मे जिस समय उन्हे पहले-पहल नोवल पुरस्कार मिला, उस समय फ्रास के पत्र-पत्रिकाओ मे तो इनकी कृतियो की धूम मच ही गई, साथ ही इगलैड, जर्मनी, स्कैण्डेनेविया और अमेरिका के साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ मे भी उनकी खूब समालोचनाए प्रकाशित हुई। चालीस वर्ष से भी अधिक समय से वे अपने समय के अद्वितीय कवि माने जाते थे। फ्रास मे तो उन्हे उन्नीसवी सदी का सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक कवि माना जाता था। पुरस्कार मिलने तक इनकी रचनाओ के अनुवाद तथा इनके जीवन-सम्बन्धी अन्य वाते अग्रेजी भाषा मे वहुत कम मिलती थी। अब भी इनकी रचनाए अग्रेजी मे कम ही अनूदित हुई है। फ्रेंच एकैडमी के लिए यह गौरव की वात थी कि उसके एक सदस्य को अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा मे सर्वप्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

रेनी सुली प्रूधो अपनी माता के एकमात्र पुत्र थे। इनकी माता का तरुणावस्था के आरम्भ मे जिस पुरुष के साथ प्रेम हुआ था, उससे विवाह करने के लिए उन्हे दस वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पडी, पर विवाह अन्त मे उन्होने अपने उसी प्रेमी से किया, दुर्भाग्यवश विवाह के चार ही वर्ष पश्चात् उनके पति का देहान्त हो गया, और दोनो के प्रेम का अवशिष्ट चिह्न केवल शिशु सुली प्रूधो रह गया। माता ने अपने इस इकलौते वेटे को वडे लाड-प्यार से पाला और उसे समुचित शिक्षा देने का प्रवन्ध कर दिया।

वचपन से ही सुली प्रूधो की मेधा का पता लग गया। पेरिस स्थित 'इकोल पॉलीटेकनिच' नामक पाठशाला मे भर्ती होकर, इन्होने गणित-सम्बन्धी विज्ञान मे अच्छी योग्यता का परिचय दिया। उस समय ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रूधो महाशय आगे चलकर एक अच्छे अध्यापक बनेगे। किन्तु सहसा उन्हे आखो की ऐसी भयानक बीमारी हो गई कि वे एकाग्रतापूर्वक आगे अध्ययन नही कर सके और उन्होने कुछ दार्शनिक ढग की कविताए लिखनी आरम्भ कर दी। इनकी आरम्भिक कविताओ मे ही 'जीवन के अभिप्राय'-सम्बन्धी गम्भीर प्रश्न[1] पूछे गए है।

उनकी कविताओ का पहला सग्रह 'स्टैञ्जेज-एट पोयम्स' तब प्रकाशित हुआ, जब उनकी अवस्था छब्बीस वर्ष की हो चुकी थी। समालोचको मे इसकी काफी चर्चा रही और इसकी बिक्री इतनी अधिक हुई कि युवक प्रूधो ने वैज्ञानिक या वकील बनने के बदले कविता लिखने मे ही अपना समय लगाने का निश्चय कर लिया। इसी सग्रह मे उनकी विख्यात कविता 'ली वेस ब्राइस' भी आ गई थी, जिसमे उन्होने हृदय की उपमा टूटे पात्र से दी है।

दूसरे वर्ष उन्होने 'ले ए प्रीवेस' नामक काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित कराया, जिसका अनुवाद 'दि टेस्ट' नाम से अग्रेजी मे भी प्रकाशित हो चुका है। इसके तीन वर्ष पश्चात् अर्थात् १८७५ ई० मे 'ले सालिच्युड' और 'ले वैरेई टेण्ड्रेसेज' नामक दो पुस्तके और प्रकाशित हुई। इन काव्य-ग्रन्थो के रूप मे उन्होने अपने स्वभाव की अभिव्यक्ति के रूप मे 'विवेक' और 'भावो का सघर्ष प्रतिपादित किया है। इसके बाद 'ला जस्टिस' और 'ले बानहूर' नामक दो और रचनाए प्रकाशित हुई जिनमे उपर्युक्त सघर्ष और भी उग्र रूप मे अभिव्यक्त किया गया। उनके देशवासियो ने प्रूधो को विक्टर ह्यूगो का स्थानापन्न माना और उन्हे १८८१ ई० मे फ्रेच एकैडमी का सदस्य चुन लिया। 'ला जस्टिस' के दो भागो मे से पहले का अनुवाद अग्रेज़ी मे 'हार्ट, बी साइलेंट'[2] नाम से हो चुका है। अपने विचार व्यक्त करने के लिए उन्होने जो दो माध्यम चुने है, उनमे से एक है 'दि सीकर' (जिज्ञासु) है और दूसरा 'ए व्हाइस' (एक आवाज)। इन्हीके द्वारा प्रूधो ने सब वस्तुओ की दार्शनिक यथार्थता का विश्लेषण किया है और ससार की सभी वस्तुओ मे 'दैवी रूप' की घोषणा की है। उन्होने यह सिद्ध किया है कि न्याय और निरपेक्षता ससार मे नही, मनुष्य के हृदय मे मिल सकती है, जो उनका पवित्र मन्दिर है।

जिस प्रकार 'ला जस्टिस' मे न्याय की खोज के लिए भौतिक प्रकृति के निरीक्षण के दृष्टान्तो पर ध्यान देने को कहा गया है, उसी तरह 'ले बानहूर' मे 'चरम आनन्द' तक पहुचने के लिए तीन मार्ग बतलाए गए है, जो क्रमश उत्सुकता, चेतनता

---

१. वास्तव में वे प्रश्न पाश्चात्य देशवासियों के लिए ही गम्भीर हैं, भारत के तो साधारण लोगों में भी उनके अन्दर कोई गम्भीरता नहीं दीखेगी। —लेखक

२. 'ओ मेरे हृदय! शान्त हो।'

और ज्ञान तथा बलिदान की निष्ठा है। अंग्रेजी मे इन तीनो की क्रियाओ को क्रमशः प्रमत्तता[1], विचार[2], और उच्चतम उडान[3] कहा गया है। इस काव्य-ग्रन्थ के फास्टस और स्टीला नामक दो पात्र सुख की खोज मे लगते है और ससार के मायामोह और लोभ से आध्यात्मिक उडान भरकर—अर्थात् इनसे पृथक् होकर (आत्म) बलिदान मे सुख की सम्भावना प्राप्त करते है।

सुली प्रूधो के सहयोगी और सामयिक साहित्यिक श्री अनातोल फ्रास ने उनके व्यक्तित्व और काव्य दोनो ही की प्रशसा की है। अनातोल फ्रास की जीवनी मे प्रूधो महाशय के प्रति उनके प्रेम और प्रशसा के भाव लिखते हुए लेखक (जेम्स लुई मे) लिखते है

"प्रूधो की बुद्धि, उनका रूप तथा उनका धन तीनो ही सुन्दरता के सम्मिश्रण है।" इस प्रकार 'तीन कवि'[4] नामक पुस्तक मे महाशय ए० डब्ल्यू० इवान्स ने सुली प्रूधो, फ्रासिस कोपी और फ्रेडरिक प्लेसी की तुलना करते हुए लिखा है—"उन (प्रूधो) मे न केवल कवि के रहस्यपूर्ण गुण ही थे, वरन् उनके हृदय मे नितान्त सरलता, नम्रता, करुणा, अकपटता, सादगी और दार्शनिक सशयवादिता भी थी।"

प्रूधो महाशय का स्वास्थ्य अच्छा नही रहता था। अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे तो उन्हे पक्षाघात की बीमारी हो गई थी। फ्रासिस ग्रियर्सन महोदय ने लिखा है .

"ये (प्रूधो) सुन्दर और निराले ढग के व्यक्ति थे। उनकी अन्तर्दृष्टि स्पष्ट थी। उन्होने अपने वैज्ञानिक मस्तिष्क से ससार के माया-जाल के विरुद्ध युद्ध जारी कर दिया था और अपने कोमल भावो द्वारा कवि के स्वप्न की गहरी अनुभूति प्राप्त की थी। अपने घर पर (जो रू-डी-फावर्ग मुहल्ले मे स्थित था) ये नये कवियो का बडा सत्कार करते थे। ये सामाजिक जीवन कम पसन्द करते, यद्यपि ये काउण्टेस दिया-डी-बीसाक के घर प्राय देखे जाते थे। काउण्टेस महोदया एक अनिन्द्य सुन्दरी और स्वच्छद स्वभाव की कवयित्री थी। उनके सौंदर्य से अनुप्राणित होकर कवि प्रूधो कविता करते थे। यही दोनो मित्र दर्शन और कला पर विचार-विमर्श करते थे।"

फ्रास और प्रशिया मे जो युद्ध हुआ था, उसका प्रभाव कवि सुली प्रूधो की कोमल भावनाओ पर गम्भीर रूप मे पडा था और उन्होने राजनीतिक बहस मे पड़कर उसपर भी अपने विचार प्रकट किए थे। इसके पश्चात् उन्होने ललित कला, छन्द-शास्त्र और काव्य-सिद्धान्त पर निबन्ध लिखे। फिर उन्होने 'मैं क्या जानता हू ?' नामक पुस्तक लिखी।

---

१ Intoxication
२ Thought
३ Supreme Flight
४. Three Poets

इसके चार वर्ष के अनन्तर उन्हे नोबल पुरस्कार मिला, और मृत्यु के दो वर्ष पूर्व—अर्थात् छासठ वर्ष की अवस्था मे—उन्होने 'ला व्रेई रेलीजन सेलो पास्कल' नामक ग्रथ लिखा, जिसमे जीवन और साहित्य मे आध्यात्मिकता के महत्त्व के सम्बन्ध मे खूब प्रकाश डाला गया है।

सुली प्रूधो की स्फुट कविताओ मे से अधिकाश का अग्रेजी अनुवाद आर्थर ओ' शाफनेसी, ई० ऐण्ड आर० प्रोथेरो तथा डोरोथी फ्रासिस गिनी ने किया है।[1]

१. जो पाठक अग्रेजी भाषा का पर्याप्त ज्ञान रखते हो और प्रूधों महाशय की चुनी हुई कविताओं का आनन्द लेना चाहे, वे The Modern Book of French Verse पढे, जिसका सम्पादन एल्बर्ट बोनी (न्यूयार्क) ने किया है। —लेखक

थ्योडोर मॉमसन

थ्योडोर मॉमसन को १६०२ ई० मे नोबल पुरस्कार मिला था। ये बर्लिन विश्वविद्यालय के इतिहासाध्यापक थे और अपने समय मे इतिहास के अद्वितीय विद्वान माने जाते थे। उन्हे अपने प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ 'रोमिशे जोशिश्ते' के उपलक्ष्य मे वह पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

नोबल पुरस्कार प्राप्त करने मे फ्रास के बाद जर्मनी का नाम आया। मॉमसन महोदय इतिहास के अतिरिक्त कानून और प्राच्य-विद्या के भी अच्छे ज्ञाता थे। उन्हे यह पुरस्कार चौरासी वर्ष की अवस्था मे प्राप्त हुआ था, और पारितोषिक मिलने के दूसरे ही वर्ष उनका देहान्त हो गया।

जिस समय अध्यापक मॉमसन को पुरस्कार मिलने की खुशी मे जर्मन विद्वान आनन्द मना रहे थे, उसी समय कुछ आलोचको ने इस बात का विरोध किया कि यह पुरस्कार नोबल के वसीयतनामे के शब्दो को ध्यान मे रखकर नही दिया गया, क्योकि नोबल महोदय ने 'आदर्शवाद-युक्त' साहित्य के लिए पुरस्कार देने का उल्लेख किया था। इस विरोध से क्या होता था, क्योकि पुरस्कार प्राप्तकर्ता महोदय तो वयोवृद्ध हो चुके थे, अब वे आदर्श साहित्य लिखने के लिए नही जीवित रह सकते थे। हा, इसका यह परिणाम अवश्य हुआ कि स्वीडिश एकैडमी ने 'साहित्य' शब्द का अर्थ अधिक विस्तृत कर दिया और उसके अन्तर्गत विज्ञान तथा कला के अन्तर्गत आनेवाले सभी विषयो का समावेश कर दिया।

मॉमसन महोदय का जन्म श्लेस्विग प्रान्त के अन्तर्गत गार्डिग स्थान मे १८१७ ई० मे हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा-दीक्षा कील नामक स्थान मे हुई थी। तीस वर्ष की अवस्था के पूर्व ही बर्लिन एकैडमी ने उनकी अन्वेषण-सम्बन्धी योग्यता और उत्साह देखकर उन्हे अपने यहा नौकर रख लिया। वहा इन्हे इटली और फ्रास की रोमन लिपि की व्याख्या करने के कार्य पर लगाया गया। साथ ही वे इतिहास और कानून भी पढते रहे और १८४८ ई० मे लिपजिग विश्वविद्यालय के कानून-विभाग मे ले लिए गए। किन्तु राजनीतिक आन्दोलन मे क्रियात्मक रूप मे भाग लेने के कारण उन्हे बाध्य होकर १८४६ मे ही नौकरी से पृथक् होना पडा। दो वर्ष तक यहा रहने के बाद वे ज्यूरिच और वहा से ब्रेसला मे कानून के अध्यापक बनकर गए। ये जहा-

जहा गए, छात्रो ने इन्हे प्रेम और श्रद्धा की दृष्टि से देखा। विद्यार्थियो मे इन्होने एक नया उत्साह, नया जीवन और नई भावना भर दी और ससार-भर के शिक्षा-विशेषज्ञो मे इनका नाम हो गया। अन्तत' १८५८ ई० मे ये बर्लिन विश्वविद्यालय मे प्राचीन इतिहास के अध्यापक बन गए और वहा के विद्यार्थियो तथा साधारण इतिहास-पाठकों पर इनकी योग्यता का सिक्का जम गया।

यद्यपि इतिहास इनका विशेष विषय था और इससे उन्हे और विषयो के अध्ययन का अवसर कम मिलता था, फिर भी उनका अध्ययन काफी विस्तृत था और उन्होने देशाटन भी खूब किया था। उन्हे साहित्य-सम्बन्धी लगभग सभी विषयो का सुन्दर ज्ञान था। वे बडे ही वाकपटु और मिष्टभाषी थे। वे प्राय कहा करते थे कि 'प्रत्येक विद्यार्थी को अपना एक विशिष्ट विषय चुनकर उसमे विशेषता प्राप्त करनी चाहिए, किन्तु इसका यह अर्थ नही है कि उसे अन्य विषयो की ओर से आख मूद लेनी चाहिए।' उनका लिखा हुआ 'रोम का इतिहास' एक प्रख्यात पुस्तक है। अपनी तीक्ष्ण और तार्किक बुद्धि के बल पर इन्होने बिस्मार्क तक का सफलतापूर्वक विरोध किया था। बोअर-युद्ध के समय इन्होने सिद्धान्त के रूप मे अग्रेजो का भी विरोध किया था।

अनुवाद और मौलिक दोनो मिलाकर मॉमसन ने सौ से अधिक ग्रन्थ लिखे थे। एडवर्ड ए० फ्रीमेन नामक प्रसिद्ध आलोचक ने लिखा है कि "मॉमसन हमारे समय के सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं।" विशेषत. कानून, भाषा, रीति-रिवाज, पुरातत्त्व, प्राचीन सिक्के और लिपिया आदि पर लिखी हुई इनकी पुस्तके विद्यार्थियो के लिए बहुमूल्य है। ये बर्लिन एकैडमी से प्रकाशित होनेवाली 'कारपस इस्क्रप्शनम् लैटिनारम्' नामक पत्रिका के सम्पादक और उपर्युक्त एकैडमी के मन्त्री भी थे। इनकी लेखन-शैली बडी सजीव थी। ये प्राय: नाटकीय ढग की भाषा बडी सफलतापूर्वक लिखते थे और घटनाओ तथा पात्रो का रूपक बहुत अच्छा बाधते थे। इनका लिखा हुआ 'रोम का इतिहास' इसका सबसे अच्छा उदाहरण है—रोम के आरम्भिक काल से लेकर जूलियस सीजर की मृत्यु तक के इतिहास का उन्होने जैसा सुन्दर चित्रण किया है, उसे पढकर प्रतीत होता है कि हम कोई मनोरजक नाटक पढ़ रहे है, जिसके सब पात्र एक-एक करके हमारे मानव-चक्षुओ के सामने अभिनय करने लगते है। इतिहास-जैसे अपेक्षाकृत शुष्क विषय को इन्होने ऐसी सुन्दरता के साथ लिखा है कि केवल इसी एक पुस्तक (रोम का इतिहास) ने उन्हे विख्यात बना दिया। वास्तव मे उनकी रचनाओ मे यही सर्वश्रेष्ठ भी मानी जाती है। इन्होने रोमन धर्म, रोमन रीति-रिवाज़, रोमन साहित्य और रोमन कला पर अच्छा प्रकाश डाला है।

प्राचीन इतिहासज्ञ होते हुए भी उन्होने आधुनिक ससार की गतिविधि का अच्छा अध्ययन किया था और उनका मत था कि प्राचीन सस्कृति का चक्र फिर लौटकर आएगा और आधुनिकता के साथ उसका मेल होकर रहेगा तथा इस प्रकार इतिहास

अपने-आपको दुहराएगा।

मॉमसन महोदय की साहित्यिक योग्यता तथा नये ऐतिहासिक अन्वेषण और लेखन-शैली की विशेषता ने मनुष्य-जाति का बडा हित किया है और उससे इतिहास के विद्यार्थियो तथा साधारण पाठको को बडा लाभ हुआ है। वे नोबल पुरस्कार के सर्वथा योग्य थे। पुरस्कार प्राप्त करने के एक वर्ष पश्चात् १ नवम्बर, सन् १९०३ ई० को मॉमसन महोदय का शरीरान्त हुआ था।

ब्योर्न्सन

शान्ति-सम्बन्धी पुरस्कार प्राप्त करनेवाले ब्योर्न्सन महोदय पहले नार्वे-निवासी थे जिन्हे यह गौरव मिला। वास्तव मे ब्योर्न्सन महोदय यह पुरस्कार प्राप्त करने के उपयुक्त पात्र थे, क्योकि समस्त मानव-जाति के हित के लिए उन्होने अत्यन्त उपयोगी साहित्य लिखा था। १६०३ ई० मे जब उन्हे पुरस्कार प्राप्त हुआ, उसके पूर्व से ही इस विषय मे उन्हे काफी ख्याति प्राप्त हो चुकी थी और वे 'नार्वे के पिता' के नाम से प्रसिद्ध थे। उपन्यासकार के रूप मे वे अपने देश मे सबसे अधिक विख्यात हुए थे। इसके अतिरिक्त वे सार्वजनिक कार्यकर्ता, सुवक्ता, सुप्रवन्धक और शासन-विधानात्मक कार्यकर्ता के रूप मे एक सफल व्यक्ति थे।

पुरस्कार-समिति ने ब्योर्न्सन को पारितोषिक देते समय उनकी आरम्भ मे लिखी हुई ग्राम्य जीवन-सम्बन्धी कहानियो पर, जिनमे नार्वे के वास्तविक जीवन का सुन्दर और काव्यात्मक चित्रण है, विशेष रूप से ध्यान दिया था। बाद मे उन्होने 'मानवीय शक्ति के बाहर' 'सम्पादक' तथा 'सिगुर्द स्लोम्वे' नामक नाटक लिखे थे, जिनमे उन्होने बहुत-सी समस्याओ को हल किया, और जिनकी चर्चा अनेक सभ्य देशो मे खूब हुई थी। ब्योर्न्सन महोदय मे पौरुष और नम्रता का अद्‌भुत सामजस्य था। उनमे कवित्व का गुण भी था—विशेषकर नार्वे के ग्राम्य-गीतो को वे अत्यन्त गम्भीर और उत्साहमय प्रेम से पढते थे। उनकी शारीरिक शक्ति प्रशसनीय थी और वे अवसर आने पर बल-प्रयोग करने से नही चूकते थे।

ब्योर्न्सन का जन्म १८३२ ई० मे क्विकने नामक स्थान मे हुआ था। उनके पिता गडरिये थे। ब्योर्न्सन अभी छ: वर्ष के ही हुए थे कि उनका परिवार क्विकने से राम्सडेल को चला गया। इस स्थान की प्राकृतिक शोभा—पर्वतावली, घाटी और हरियाली—का वर्णन उनकी कविताओ मे मिलता है। मोल्ड की पाठशाला मे उनके दिन बडे आनन्द से कटे थे। वे प्राचीनकाल के सत्यनिष्ठ बुद्धिमान पुरुषो की जीवनिया और इतिहास बडे उत्साह से पढते थे। नार्वे के प्रख्यात कवि वर्गलैण्ड की रचनाए उन्हे बहुत पसन्द थी। १७ वर्ष की अवस्था मे वे विश्वविद्यालय की परीक्षा की तैयारी के लिए क्रिश्चिआनिया गए। वहां वे इब्सन के सहाध्यायी बने। उन दिनो के सस्मरणो का उल्लेख उन्होने अत्यन्त हास्यपूर्वक किया है। धीरे-धीरे ब्योर्न्सन और इब्सन के

परिवार मे इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि ब्योर्न्सन की लडकी बर्गलिवट का विवाह इब्सन के लडके के साथ हो गया।

क्रिश्चिआनिया मे ब्योर्न्सन डेनिश[1] साहित्य का अध्ययन करने लगे, और यही पर उन्होने अपने नाटक 'नव दम्पति'[2] का लिखना आरम्भ कर दिया था, जो दस वर्ष बाद जाकर समाप्त हुआ। उसी स्थान पर उन्होने 'युद्ध मे'[3] नामक एकाकी नाटक लिखा जो क्रिश्चिआनिया मे साधारण सफलता के साथ खेला गया। इसके बाद उन्होने नार्वे की ग्राम्य कथाए लिखनी आरम्भ की। उन्हे इस बात का बडा गर्व था कि उनके पूर्वज कृषक थे और गावो के रीति-रिवाजो तथा ग्राम-वासियो की अभिलाषाओ से अत्यन्त गहरी सहानुभूति रखते थे। वे वर्तमान जगत् के बुद्धिमान और आदर्श व्यक्तियो का चरित्र-चित्रण करने की विशेष इच्छा रखते थे। सीधे-सादे जीवन की आरम्भिक कहानियो मे से इनकी 'आर्ने', 'मछलीवाली', 'सुखी बालक' और 'सिनोव सालवेकन' का नार्वे, डेन्मार्क और जर्मनी मे अच्छा स्वागत हुआ। शीघ्र ही इनके अग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हो गए और इस प्रकार अपने प्रसाद गुण और राष्ट्रीय भावना के कारण इनकी कविताओ का खूब आदर हुआ।

प्रसिद्ध आलोचक श्री जार्ज ब्राण्ड्स लिखते है कि ब्योर्न्सन का ग्राम्य चित्रण आरम्भ मे बहुत-से लोगो की समझ मे नही आया और उसे लोगो ने भावुकता-मात्र समझा, किन्तु 'आर्ने' नामक कहानी मे जहा उसके नायक को आदर्श के लिए तडपते दिखलाया गया है, उसे पढकर बहुतो को विश्वास हो गया कि जार्नसन की प्रतिभा सर्वतोमुखी और पर्यवेक्षण-शक्ति बहुत गहरी है। इसी प्रकार 'सिनोवा सालवेकन' नामक आख्यायिका भी अपने ढग की निराली है। इन दोनो कहानियो को काफी ख्याति प्राप्त हुई है। 'आर्ने' मे टार्गिट नामक स्त्री का चरित्र-चित्रण इतना सुन्दर हुआ है कि नार्वे की कोई भी स्त्री उसे पढकर मुग्ध हुए विना नही रह सकती। 'सुखी बालक' मे जार्नसन की सर्वोत्कृष्ट कविता का नमूना पाया जाता है। इनकी कविताओ और गानो का अग्रेजी अनुवाद आर्थर हवेल पामर महोदय ने किया है, जो प्रकाशित हो चुका है। 'सिनोव सालवेकन' के पहले गान मे नार्वे देश की स्तुति है, जिसे उस देश का राष्ट्रीय गान कह सकते है। यह हमारे देश के 'वन्देमातरम्' की तरह नार्वे मे विख्यात है। पाठको की जानकारी के लिए उनके उस राष्ट्रीय गान के अग्रेजी अनुवाद का हिन्दी पद्यार्थ नीचे दिया जाता है

करते है हम नित्य वन्दना अपने प्यारे देश की।
जहा गगन-चुम्बी पर्वत है,
और उदधि की सुखद हिलोरे,

---

१. डेन्मार्क-देशीय
२. TheNewly Married Couple
३. Between the Battles

जहा वायु के द्रुत प्रवाह नित,
अगणित पर्णकुटी झकझोरे ।।
क्यो न प्रेम से गद्गद् होकर, जय बोले उस देश की।
अपने प्यारे देश की ।।
जहा हमारी प्यारी माता,
सदा बलैया लेती थी।
लोरी दे दे हमे सुलाती,
और सदा सुख देती थी।
क्यो न सदा विरुदावलि गाए ऐसे मधुर स्वदेश की।
अपने प्यारे देश की ।।

यह गान लिखने के तीस वर्ष पश्चात् अपने मित्र हर्मन ऐकलर के विवाह-दिवस के उपलक्ष्य मे ब्योर्न्सन ने देशभक्ति और आदर्शमूलक एक कविता लिखी थी, जिसका भावानुवाद इस प्रकार है :

है वह देश हमारा।
जहा विपुल अभिलाषा रूपी डाड से,
खेकर हम निज जीवन-तरणी जाएगे।
जहा सफलता के अभाव मे हाथ मल,
उच्छ्वासो के जलद बना, पछताएगे ।।
जहा हरित दल-सकुल घाटी और वन,
देख-देख निज नेत्र तृप्त कर पाएगे।
ऐसा लुब्धक दृश्य, और भावी सुदिन—
है यह दृढ विश्वास एक हो जाएगे ।।

उपसाला विश्वविद्यालय मे जाने और कोपेनहेगन मे अधिक काल तक रहने के बाद ब्योर्न्सन महोदय को नाटक लिखने और उसे अपने निरीक्षण मे खिलवाने का बडा शौक लगा। १८५७ से १८५९ ई० तक बर्गन मे उन्होने यह काम बडी धूमधाम से किया।

सन् १८८१ ई० मे ब्योर्न्सन महोदय ने इग्लैण्ड और अमेरिका की यात्रा की। इस यात्रा के बाद जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण तीक्ष्णतर हो गया, किन्तु 'सत्य' के प्रति उनकी आस्था पूर्ववत् ही बनी रही। उनका यह विचार हो गया कि ससार के सभी व्यक्ति और राष्ट्र पृथक् होने के स्थान पर मेल के साथ रह सकते है। उन्होने नार्वे के कपट और प्रपच की जो कार्यवाहिया देखी, उनका चित्रण अपने समस्यापूर्ण नाटको—'राजा', 'सम्पादक' और 'दीवालिया'— मे किया। उन्होने अपने देशवासियो के कुकृत्यो से दुःखी होकर जब उनका चित्रण इस प्रकार किया, तो नार्वे के राजनीतिज्ञ उनसे बिगड बैठे, यही नही, बल्कि ब्योर्न्सन महोदय को मारने-पीटने की धमकी भी

दी गई और एक नवयुवक ने उनकी खिडकी पर पत्थर भी फेका ।

ब्योर्न्सन के नाटको मे 'नव दम्पति' विद्यार्थियो को बहुत पसन्द आया । 'लगडी हल्दा' भी उनकी आरम्भ की सुन्दर और मनोविज्ञानपूर्ण कृतियो मे से है । पहली रचना मे तो यह दिखलाया गया है कि किस प्रकार नवविवाहिता लडकी अपने प्यारे माता-पिता को छोडकर एक नितान्त अपरिचित व्यक्ति से प्रेम करने को विवश होती है । इसमे इस बात की व्याख्या की गई है कि पैतृक प्रेम और दाम्पत्य प्रेम मे क्या अन्तर होता है । दूसरे नाटक मे चौबीस वर्ष की लगडी नायिका के ज्वलन्त प्रेम का चित्रण किया गया है जिसका चाहनेवाला किसी अन्य स्त्री को प्रेम करता है । काव्य की दृष्टि से जार्नसन महोदय का 'यग विकिंग' उच्चकोटि का नाटक है ।

ब्योर्न्सन महोदय के सामाजिक नाटको मे 'मानवीय शक्ति के बाहर'[१] सबसे अधिक विख्यात है । यह अपने समय की सर्वोत्तम रचनाओ मे से एक कही जाती है । इसके प्रथम भाग मे तो धार्मिक विश्वास और कट्टरता की समस्या पर प्रकाश डाला गया है और दूसरे भाग मे श्रमजीवी और पूजीवादी दलो के विचारो की विभिन्नता दिखलाई गई है । इसका पहला भाग अमेरिका मे वडी सफलतापूर्वक खेला जा चुका है ।

ब्योर्न्सन ने बाद मे जो नाटक लिखे, उनमे 'लेबोरेमस', 'डैगलानेट', और 'नव मदिरा' विशेष उल्लेखनीय है । सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने के बाद उन्होने 'मेरी' नामक कहानी लिखी । इससे प्रतीत होता है कि वृद्धावस्था मे भी उनके अन्दर कैसी सजीवता भरी हुई थी । १९०३ ई० मे नोवल पुरस्कार प्राप्त करने के वाद उन्होने हास्य-रसपूर्ण व्याख्यान दिए थे । उनकी स्त्री अभिनेत्री का काम करती थी । स्त्री के साथ उन्हे अन्त तक वडा प्रेम और सहानुभूति थी । अन्त मे २६ अप्रैल, १९१० ई० को उन्नीसवी शताब्दी के इस प्रकाण्ड साहित्यिक का शरीरान्त हो गया ।

---

१ Beyond Human Control

फ्रेडरिक मिस्त्राल

१९०४ ई० के नोबल पुरस्कार का अर्द्धांश फ्रेडरिक मिस्त्राल महोदय को मिला था। पुरस्कार का शेषार्द्ध एकेगारे नामक स्पेनी नाटककार को मिला था, जिनके सम्बन्ध मे आगे चलकर लिखा जाएगा। मिस्त्राल महोदय का जन्म मेला नामक नगर मे १८३० मे हुआ था। उनकी गणना फ्रासीसी लेखको मे होती है, यद्यपि इनकी भाषा प्रॉवेन्स थी, जो फ्रासीसी भाषा की ही एक शाखा है। मिस्त्राल महाशय के पिता एक किसान थे, जो अपने पुत्र को वकील बनाने के अभिलाषी थे। बालक मिस्त्राल को 'अविग्नो' की पाठशाला मे भेजा गया। बाद मे नीम विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करके वे 'एई' मे अध्ययन करने लगे। 'अविग्नो' के अध्यापको मे जोसेफ रूमेनाइल प्रॉवेस भाषा के बडे अनुरागी थे और उन्होने बालक मिस्त्राल मे भी उसके प्रति प्रगाढ प्रेम उत्पन्न कर दिया था। अध्यापक महोदय ने प्रॉवेस भाषा के वर्णविन्यास को नया रूप दिया और उसमे जातीयता के भाव भरे। उन्होने उसे स्कूल मे प्रचलित किया। मिस्त्राल ने भी अध्यापक की तरह इस (प्रॉवेस) प्राचीन भाषा के पक्ष मे खूब प्रचार किया। इसके बीस वर्ष पूर्व अगेन-निवासी जैक्स जस्मिन नामक एक नाई ने गाव-गाव घूमकर प्रॉवेस भाषा की ग्रामीण कविताए गाकर सुनाई थी। कहा जाता है कि उपर्युक्त नाई ने इस प्रकार गाने गा-गाकर लगभग १० लाख रुपये का प्रचुर धन एकत्रित किया था और उसने वह सारी रकम दान कर दी थी। उपर्युक्त अध्यापक महोदय ने नवयुवको की एक समिति इस भाषा और इसकी कविताओ के प्रचारार्थ बनाई। इस समिति ने यह सिद्ध किया कि इस भाषा का उद्गम रोम से हुआ है और इस प्रकार यह इटली, फ्रास और स्पेन की भाषाओ की जननी है। यद्यपि अनेक भाषा-तत्त्वविदो ने इस समिति के मन्तव्यो से मतभेद प्रकट किए है, किन्तु इसमे सन्देह नही कि इसके अन्वेषण काफी तर्कयुक्त थे।

दूसरी कहानी यह प्रसिद्ध है कि मिस्त्राल बडे मातृ-भक्त थे, इसलिए वे फ्रासीसी भाषा मे बहुत-से पद्य लिखकर इस आशा से उनके पास ले गए कि वे उन्हे प्रोत्साहन देगी और उनकी प्रशसा करेगी। पर शोक की बात यह थी कि उनकी मा फ्रेंच (फ्रासीसी) भाषा नही समझ सकती थी। मिस्त्राल जिस उत्साह से अपनी मा के पास अपनी कविताओ का सग्रह लेकर गए थे, उसपर पानी फिर गया—मिस्त्राल को बडी निराशा हुई और उन्होने निश्चय किया कि अब अपनी मातृ-भाषा मे कविता लिखूगा, और अपनी

माता को गाकर सुनाऊगा। इसके अनुसार उन्होने प्रॉवेस की अनेक दन्तकथाओ, कहानियो और औपन्यासिक घटनाओ का सग्रह करके कविता का रूप दिया और १८५८ ई० मे उसे 'मीरीओ' नाम से प्रकाशित कराया। इस पुस्तक के प्रकाशन मे अध्यापक रूमेनाइल महोदय का काफी हाथ था। दूसरे वर्ष जब मिस्त्राल महोदय ने उसका फ्रासीसी अनुवाद किया तो उसे पढकर पेरिस के नागरिक उसके माधुर्य पर मुग्ध हो गए। इस पुस्तक ने मिस्त्राल की कीर्ति खूब बढाई और आलोचनाओ मे उनकी तुलना वर्जिल, थिमोक्रीटस और अरिस्टो से की गई।

अपने काव्य-ग्रन्थ के बारह सर्गो तक तो कवि मिस्त्राल ने स्थानीय रीति-रस्मो का वर्णन किया है और व्यक्तिगत सस्मरण लिखे है, फिर खलिहान का वर्णन आया है, जो एक प्रकार से इनके अपने ही घर का चित्रण है। रैमू को उन्होने अपने पिता के चरित्र से लिया है। वे बचपन से ही खलिहान के कामो—गेहू की दवाई (अनाज को डठल से अलग करने की क्रिया), सीप एकत्र करना, अगीठी के पास बैठकर भोजन करने, अनाज की कटाई के समाप्त हो जाने के उपलक्ष्य मे नृत्य करने आदि से पूर्णत परिचित थे। कथानक मे कृषक-मुखिया की लडकी 'मीरीओ' डलिया बुननेवाले के लडके को प्रेम करती थी। दोनो दिन आनन्द मे बिताते थे और रात गम्भीर मनोव्यथा मे। अन्त मे 'होली मेरीज' के गिरजे मे उस तरुण बालिका का शरीरान्त हो जाता है, और इस दु खान्त के समय उसके ओठो से आशापूर्ण शब्द निकलते है।

सबसे अधिक मर्मस्पर्शी स्थल वह है, जहा नायिका, 'ला क्रा' की पथरीली जगह पार करके 'होली मेरीज' की समाधि मे शरण लेने के लिए पहुचती है। दो सर्गो मे इसी बात का विवरण है कि होली मेरीज का इतिहास क्या है। जिस समय फिलिस्तीन से महात्मा ईसा की बलि के पश्चात् उनके शिष्यगण वहां से निकाल दिए गए थे, तो, किम्वदन्ती के अनुसार, उन्हे बजरे मे बैठाकर छोड दिया गया था। उनके पास न डाड थे न पाल। फलत वायु के झोको से वह बजरा उस जगह समुद्र के पवित्र किनारे पर आ लगा था जहा 'सेण्ट्स मेरीज़' गाव आबाद है। उन शिष्यो मे लाजरस और उसकी बहने भी थी, जिनके नाम क्रमश मेरी और मर्था थे। साथ ही उनका नौकर बद्दू साधु 'सारा' भी था। इनके अतिरिक्त मेरी मैगडालेन, जोसेफ ऑफ अरीमाथिआ और ट्रोफीन भी थीं। इनमे से अन्तिम शिष्या सबसे अधिक बुद्धिमती थी और उसने आर्ल्स नगर-निवासियो को ख्रीष्ट धर्म की दीक्षा दी थी।

प्रेम और देश-भक्ति के गानो मे मिस्त्राल महोदय की आरम्भिक रचनाए जो १८७५ ई० मे प्रकाशित हुई थी, विशेष प्रख्यात है। इनमे 'ले आइल्म डी ओर' की अधिक प्रशसा हुई थी। इन रचनाओ मे प्रॉवेस के मुहावरे खूब प्रयुक्त हुए है, जिनके उच्चारण मे लैटिन की ओर माधुर्य मे अटिका[1] और टस्कानी[2] की छाप है। बयासी वर्ष की अवस्था

---

१ बोली विशेष।

२. फ्रास के एक विशेष प्रान्त की बोली।

मे मिस्त्राल ने १९१२ ई० मे 'ले ओलिवेड्स' नामक सग्रह प्रकाशित कराया था, जिसके शीर्षक की व्याख्या उन्होने इस प्रकार की थी . "दिन मे शीत की वृद्धि और समुद्र का ज्वार मुझे सूचित करते है कि मेरे जीवन का शीत-काल आ गया, और मुझे बिना विलम्ब परमात्मा की वेदी पर बलिदान करने के लिए अपनी 'सामग्री' तैयार कर लेनी चाहिए।" उन्होने 'मी ओरिजिन' के शीर्षकान्तर्गत अपनी आत्मकथा भी लिखी थी, जिसमे युवा-वस्था के सस्मरण भी सम्मिलित थे। कान्सटास एलिज़ाबेथ मॉड महाशय ने इसका अग्रेजी अनुवाद 'मेमॉयर्स ऑफ मिस्त्राल' (मिस्त्राल के सस्मरण) नाम से किया था। इसमे प्रॉवेस के गानो का अग्रेजी अनुवाद आल्मा स्ट्रेटिल (श्रीमती लारेस हैरिसन) ने किया था।

ग्राम्य-जीवन से जैसा प्रेम मिस्त्राल को था, वैसा कदाचित् कुछ ही कवियो को रहा होगा। उन्होने फ्रेच एकैडमी का सदस्य बनना इसलिए अस्वीकार कर दिया कि ऐसा करने पर उन्हे प्रॉवेस-देहात छोडकर पेरिस नगर मे रहना पडता। उन्हे एकैडमी ने पुरस्कार और 'लिजियन' के बैज[1] दिए थे। प्रौढावस्था मे उन्होने आर्लीसियन परिवार की एक सुन्दरी युवती से विवाह किया था। उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे मिस्त्राल महोदय प्रॉवेस के फूल, पत्थर, और प्राच्यविद्या सम्बधी चीजे अजायबघर के लिए सग्रह करने लगे थे और वह इस कार्य को अपनी 'अन्तिम कविता' कहते थे। मिस्त्राल महोदय को नोबल पुरस्कार का जो धन मिला था, उसका अधिकाश अजायबघर तैयार करवाने मे खर्च हो गया था। अपने जीवन के अन्तिम दस वर्षो मे उन्होने प्राचीन और आधुनिक प्रॉवेस का सरल शब्दकोश 'कम्प्रेहेसिव लैक्सिकन आफ एन्शियण्ट ऐण्ड मॉडर्न प्रॉवेसल' नाम से लिखा, जो दो बडी-बडी जिल्दो मे १८८६ ई० मे प्रकाशित हुआ। शिक्षित वर्ग मे उनकी बडी प्रतिष्ठा थी और किसानो तथा 'रोन' के मल्लाहो मे उनके प्रति अगाध प्रेम था। १८९७ ई० मे मिस्त्राल महोदय ने अपने पद्यो मे 'ले पोयम-डू-रोन' लिखकर उसमे प्राचीन काल के नाविको के आनन्द का चित्रण करते हुए बतलाया कि इजनवाले जहाजो के चलने के पहले नावो के सचालन मे क्या आनन्द था।

ग्राम-वासियो का चरित्र-चित्रण कवि मिस्त्राल ने जिस सुन्दरता के साथ किया है, और वहा के दैनिक जीवन की घटनाओ को जो पद्यात्मक रूप दिया है, वह अपने ढग का नितान्त मौलिक और अद्वितीय है। जब वे अधिक वृद्ध हो गए तो देश-विदेश के अनेक विद्वान इनके दर्शनो को आया करते थे। उनका शरीरान्त २५ मार्च, १९१४ ई० को हुआ था।

---

१. चिन्ह-विशेष जो किसी सस्था या समाज की सदस्यता का परिचायक होता है।

एकेगारे

१६०४ ई० को नोबल पुरस्कार का अर्द्धांश स्पेन के प्रसिद्ध नाटककार जोज एकेगारे को प्रदान किया गया था। इसके पहले स्पेनी साहित्य अग्रेजी भाषा के पाठको के सम्मुख इतने परिमाण मे नही आया था जितना एकेगारे को पुरस्कार मिलने के बाद आया। उस समय तक स्पेनी भाषा यूरोप की अन्य भाषाओ के साथ उच्च साहित्यिक भापा मे परिगणित नही होती थी। गैलडोज, वैलेरा, वैलडीज और इबानेज के उपन्यासो ने अग्रेजी पाठको के मन पर यह छाप लगा दी कि उनकी रचनाओ मे यथार्थवाद का पूरा जोर और काव्यात्मक सौन्दर्य है। नाटको मे गैलडोज की तीन, मर्टिनेज़ सीरा की नौ, एनेगारे की एक दर्जन और वेनाविन्ते की अनेक रचनाए उल्लेखनीय है। इनकी रचनाओ के अग्रेजी अनुवाद क्रमश जॉन गैरेट अण्डरहिल, जेम्म ग्राहम, चार्ल्स निर्टलिगर, हैना लिच, रूथ लैसिग आदि प्रसिद्ध अनुवादको ने किए है।

जोज़े एकेगारे को १६०४ई० मे फ्रेडरिक मिस्त्राल के साथ नोबल-पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उनका जन्म १८३३ ई० मे स्पेन मे हुआ था। एकेगारे ने आरम्भिक शिक्षा मे अकगणित पढने मे विशेष रुचि दिखलाई थी। आगे चलकर भू-विज्ञान और दर्शन की ओर भी विशेष मनोयोग दिया। प्रजातन्त्र राज्य मे उन्होने कृपि, शिल्प और व्यापार मन्त्री का पद भी ग्रहण किया और शिक्षा-समिति के प्रधान और मत्रिमण्डल के सदस्य भी बने। उन्होने नेशनल टेकनिकल स्कूल मे शिक्षक का काम भी किया और वाद मे मैड्रिड विश्वविद्यालय से सम्वन्ध स्थापित कर लिया।

आरम्भ मे इस गणित-विशेपज्ञ और राजनीतिज्ञ के लिए नाटक लिखना एक शौक की चीज ही समझी गई। 'वाइफ आफ दि एवेजर', 'ऐट दि हिल्ट आफ दि सोर्ड' और 'ग्लैण्डियेटर आफ रैवेना' का प्रकाशन सन् १८४७ और १८७६ ई० के वीच मे हुआ। यद्यपि ये नाटक उन दिनो स्पेन मे विख्यात हो चुके थे, किन्तु इनके अग्रेजी अनुवाद प्रसिद्ध नही हो सके। १८७७ ई० मे उन्होने एक ऐसा नाटक लिखा जिसकी चर्चा वहुत अधिक हुई। इसका अनुवाद रूथ लैसिग ने 'मैडमैन आर सेण्ट' (पागल या साधु) के नाम से किया। इसी पुस्तक का दूसरा अनुवाद हैना लिच ने 'फाली आर सेण्टलीनेस' (मूर्खता या साधुता) नाम से किया। आगे चलकर इस पुस्तक का एक और तीसरा अनुवाद भी मेरी सरेनो ने 'लाइब्रेरी आफ दि वर्ल्ड्स वेस्ट लिटरेचर'

(ससार के सर्वोत्कृष्ट साहित्य का पुस्तकालय) की पुस्तकमाला मे स्वय छपाकर प्रकाशित कराया। इस नाटक मे भावावेश की प्रधानता है और आदर्श एव अद्‍भुतता का भी सन्निवेश है। अन्तिम दोनो गुण इस लेखक की विशेषता है। पुस्तक मे इन दोनो ही विषयो का सूक्ष्म विश्लेषण है। मेड्रिड का एक धनिक व्यक्ति जिसका नाम डान लारेजो है, यह मालूम करता है कि उसे अपने माता-पिता की वास्तविकता के सम्बन्ध मे धोखा दिया गया है, वह अमीर घराने की सुसम्पन्ना स्त्री का पुत्र नही है। उसने तथा ससार ने उसके सम्बन्ध मे भूल की है। सत्य यह है कि वह दाई जुआना का पुत्र है जो उसे यह सच्ची कहानी सुनाकर मर जाती है। लारेजो की लडकी की मगनी डचेज आफ आलमाण्टी के पुत्र से हो चुकी होती है, किन्तु लारेजो अब अपने वश की वास्तविकता सबपर प्रकट कर देना चाहता है। इसपर एक मानसिक रोगो का विशेषज्ञ औषध-विशेषज्ञ के साथ उसकी परीक्षा करने के लिए आता है। इसी समय लारेजो एक न्यायाधीश को बुलाकर अपने नाम तथा सम्पत्ति का परित्याग करने के लिए स्वत्त्वाधिकार-पत्र लिखवाता है। उसका अन्तिम स्वगत-वाक्य इस प्रकार है "यह क्या ! किसी आदमी को केवल इसलिए पागल घोषित किया जाता है कि वह अपने कर्तव्य-पालन का निश्चय कर चुका है ! यह हो नही सकता। मनुष्यता न तो इतनी अन्धी है, न भ्रष्ट।"

एकेगारे के ये आरम्भिक नाटक, जिनकी उनके स्वदेशवासियो ने भूरि-भूरि प्रशसा की है, और उन्हे अपने भूतकाल के बडे से बडे साहित्यिक की कोटि मे रखा है, विशेष साहित्यिक महत्त्व नही रखते। उनकी अन्य दो रचनाए ऐसी है जिन्हे अपेक्षाकृत अधिक ऊची कह सकते है। इनके नाम है—'दि ग्रेट गैलिवोटो' और 'दि सन आफ डानजुआन' इन दोनो रचनाओ के समय मे ग्यारह वर्ष का अन्तर था—पहली १८८१ ई० मे लिखी गई थी और दूसरी १८९२ ई० मे। इसके बीच मे लेखक ने कुछ ऐतिहासिक नाटक भी लिखे जिनमे 'हैरोल्ड दि नार्मन' और 'लिसेण्डर दि बैंडिट' अधिक उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त उन्होने कुछ दुखान्त और सुखान्त नाटक भी लिखे है। साधारणत उन्होने अद्‍भुततापूर्ण नाटको को पुनर्जीवित करने की चेष्टा की है और उनमे यह दिखलाया है कि वासना और कर्तव्य मे कैसा कठोर सघर्ष होता है। उनके चरित्र-चित्रण की अपेक्षा उनका हेतु-प्रदर्शन अधिक सफल हुआ है। उनके पात्रगण प्रतिष्ठा और सत्य के लिए लडते दिखाए गए है। उनकी रचनाओ मे पात्रो द्वारा स्वगत विचार बहुत प्रकट किए गए है।

जिस समय 'दि सन आफ डानजुआन' और 'मरिआना' का अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ, तो अग्रेज़ी के पाठक 'दि ग्रेट गैलिवोटो' के अनुवाद की अपेक्षा उसकी ओर अधिक आकृष्ट हुए। १९०४ ई० मे जब उन्हे नोबल पुरस्कार मिला, तो उन्होने प्रोत्साहित होकर और भी कई नाटक लिखे। जिस समय उन्हे पुरस्कार मिला, स्पेन-सम्राट् ने मेड्रिड मे सभा करके उन्हे अपने हाथ से नोबल पुरस्कार प्रदान किया और गालडोज,

वेल्लेरा तथा मेण्डेनेज पालायो के भाषण हुए। ये तीनो साहित्यिक किसी समय एकेगारे की रचनाओ के तीव्रतम आलोचक थे। इस अवसर पर पालायो ने कहा था कि तीस वर्ष तक एकेगारे ने विभिन्न क्षेत्रो मे अत्यन्त सफलतापूर्वक कर्तव्य-सम्पादन किया है, जो असाधारण प्रतिभावान पुरुष के लिए ही सम्भव है। उनकी यह प्रतिभा साहित्यिक क्षेत्र मे भी इसी प्रकार चमकी है। फ्रास मे भी उनका बडा आदर हुआ और उन्हे दूसरा विक्टर ह्यूगो कहा गया।

एकेगारे ने अनेक छोटे नाटक—प्रहसन—भी लिखे है जिनमे 'आलवेज रेडिकुलस' मे एक लडकी की व्यग्य, श्लेष और उत्सुकतापूर्ण बाते बडे सौन्दर्य के साथ व्यक्त की गई है। पोडशी कन्या सस्पीरो कोलेटो नामक पचास वर्ष के बूढे भिक्षुक से बात करती है—

कोलेटो—तुम्हे भीख मागना नही आता।

सस्पीरो—मुझे तो भीख मागना आता है, पर कठिनाई यह है कि लोगो को देना नही आता। मै कहती हू—'मेरी बीमार मा के लिए एक पैसा दो, बाबा।' और तुम तो जानते हो वह कैसी बीमार थी—दो साल पहले उसका देहान्त हो गया। इसपर मुझे कुछ नही मिलता। फिर कहती हू—'खुदा के लिए एक पैसा दो। मेरी मा अस्पताल मे है—मरियम के नाम पर दो। मेरे दो छोटे भाई है।' फिर भी कोई कुछ नही देता।

कोलेटो—नही देता ? अच्छा आज रात को कितने भाई है, कहकर भीख मागोगी ?

सस्पीरो—ओह ! महाशय कोलेटो ! 'मेरे दो भाई है' कहने पर तो किसीने कुछ दिया नही। कल रात को मैने 'चार भाई है' कहा था, तो छ पैसे मिले। आज रात को पाच भाई है' कहकर देखूगी कि लोग क्या देते है। कुछ न मिला तो मा थप्पड मारेगी।

कोलेटो—और वास्तव मे तुम्हारे है कितने भाई !

सस्पीरो—वास्तव मे दो थे, पर मेरी असली मा की तरह वे भी मर गए। मेरी सौतेली मा उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा मेरे साथ। दो-तीन डॉलर हो गए तो मै जाटिवा भाग जाऊगी और वहा अपनी चाची के साथ रहूगी।

७२ वर्ष की अवस्था मे एकेगारे को नोबल-पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके पूर्व भी उन्हे अपने देश मे पर्याप्त ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। उनकी गम्भीरता और अन्तर्दृष्टि को लोग टॉलसटॉय के टक्कर की मानते है। टॉलसटॉय की तरह एकेगारे ने भी आध्यात्मिक स्वतन्त्रता के लिए कष्ट-सहन का महत्त्व दिखलाया है। इस प्रसग का वर्णन एकेगारे के 'पागल या साधु' मे सुन्दर रूप मे हुआ है। एकेगारे ने समाज को ऐसा सन्देश दिया है जिसमे आदर्शवाद की सर्वत्र झलक है।

१४ सितम्बर, १९१६ ई० को एकेगारे इस संसार से उठ गए।

सीनकीविच

सन् १६०५ ई० का नोवल पुरस्कार हेनरिक सीनकीविच को मिला था। एकेगारे और वेनावेन्ते की तरह हेनरिक सीनकीविच और ब्लाडिस्लॉ रेमॉण्ट भी एक ही देश के निवासी थे। पोलैंड जैसे छोटे देश को पुरस्कारदाताओ ने काफी महत्त्व दिया, क्योकि यूरोप के वडे राष्ट्रो मे वह अज्ञात-सा है। यद्यपि इस देश की उपेक्षा कला की दृष्टि से वहुत दिनो से की जा रही थी, किन्तु इसने कला और साहित्य के भण्डार भरने मे कसर नही रखी। कवि सीनकीविच और स्लोवाकी के सम्बन्ध मे लीज्ट ने वहुत-कुछ लिखा है। इसी प्रकार रॉय डिवेस्यू ने 'पोलैंड का पुनर्जन्म'[1] नामक पुस्तक मे उस देश की शिक्षा और साहित्य-सम्बन्धी उन्नति की चर्चा करते हुए कहा है कि पोलैंड का नाम हेनरिक सीनकीविच ने पश्चिमी यूरोप मे अपनी साहित्यिक योग्यता से विख्यात कर दिया।

सीनकीविच को नोवल पुरस्कार मिलने पर यूरोप के समालोचको को वडा आश्चर्य हुआ और रूसी साहित्यिको पर भी वज्रपात-सा हुआ था, पर पीछे जव सबने इनकी रचनाए पढी तो शान्त हो गए।

हेनरिक सीनकीविच का जन्म लिथुआनिया प्रदेश के वोला ऑकरेजेस्का नामक स्थान मे १८४६ ई० मे हुआ था। उनका जन्म एक कुलीन घराने मे हुआ था और उन्होने वारसा विश्वविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त की थी। १८६३ ई० मे जव पोलैंड मे राज्यक्राति हुई तो उनका परिवार रूस चला गया। रूस जाकर उन्होने सेण्ट पीटर्सवर्ग मे एक पत्रिका का सम्पादन करना आरम्भ किया। उनकी इच्छा ससार देखने की थी, इसलिए उन्होने जिप्सी या वोहेमियन ढग की यात्रा आरम्भ की। कोई विशेप लक्ष्य न रखकर वे कमाते-खाते एक देश से दूसरे देश को जाने लगे। पहले दक्षिणी यूरोप का भ्रमण करके सन् १८७६ ई० मे अमेरिका पहुचे। वहा वे लॉस एञ्जिलस मे ठहरकर अपना यात्रा-विवरण लिखने लगे, जिसमे से 'सगीतज्ञ जाको'[2] और 'पुराना घटेवाला'[3] नामक दो निवधात्मक यात्रा-विवरण और कई स्फुट लेख विभिन्न

---

१. Poland Reborn

२. Janko, the Musician

३. The Old Bell Ringer

पत्रो मे प्रकाशित हुए ।

१८८० ई० मे वे उपर्युक्त यात्रा से पोलैंड वापस आए। उस समय तक उनकी स्त्री का देहान्त हो चुका था। इसके पश्चात् वे पोलैंड की ऐतिहासिक कहानियो का अध्ययन करने मे लग गए। उन्होने यह नियम बना लिया कि जाडे के दिनो मे वे वारसा के पुस्तकालयो मे अध्ययन किया करेगे और गर्मियो मे कारपाथियान की पर्वतमालाओ पर। इसका परिणाम बडा सुन्दर हुआ, क्योकि इसके पश्चात् उन्होने कई कल्पनापूर्ण और ऐतिहासिक तथ्य-युक्त लम्बी कहानिया लिखी। 'आग और तलवार'[1] एक ऐसी कहानी है कि जिसमे पोलैंड की सन् १६४७ से १६६१ ई० तक की घटनाओ का विशद एव अलकारपूर्ण वर्णन है। इसी प्रकार उन्होने 'दि डेल्यूज'[2] नामक दूसरी कहानी भी लिखी, जिसमे १६५२ से १६५७ ई० तक की ऐतिहासिक घटनाओ का समावेश है। 'पैन माइकेल'[3] नामक तीसरी कहानी भी उसी समय की रचनाओ मे से है, जिसमे टर्की के आक्रमण का चित्रण किया गया है। इसका कथा-काल १६७० से १६७४ ई० तक है। इसमे सीनकीविच के साहित्यिक कौशल का भली भाति विकास हुआ है। विशेषत पहली और तीसरी कहानी मे तो वार्तालाप बहुत ही स्वाभाविक रखा गया है। लेखक ने पोलैंड-निवासियो को भली भाति समझा है और वहा के निवासी विपत्ति, भय, प्रेम, सघर्ष और अभिलाषा के समय अपने भाव किस प्रकार व्यक्त करते है, इसका ज्वलन्त चित्र खीच दिया है। रचनाओ मे प्रतिष्ठा, देश-भक्ति और विश्वास का वर्णन बडी ओजस्वी भाषा मे किया गया है। कज्जाको, स्वीडन-निवासियो और तुर्को के आक्रमण से पोलैंड की जैसी अवस्था हुई थी उसका क्रमिक वर्णन भी इन पुस्तको मे है। वास्तव मे सीनकीविच ने पोलैंड-निवासियो मे आदर्श के भाव भरे है और उन्हे आशा का सन्देश सुनाया है।

आधुनिक पोलैंड पर उनकी दूसरी पुस्तके 'सिद्धान्त हीन'[4] और 'सतान'[5] है जिनमे से पहली दु खान्त है। इसमे एक अमीर का वर्णन है, जो अपनी चचेरी बहन अनीला पर आसक्त हो जाता है। उससे पोलैंड के आधुनिक समाज पर काफी प्रभाव पडता है। बहुत वर्षो तक सीनकीविच ने ईसाई मत का आरम्भिक इतिहास और उसकी विरोधी शक्तियो का हाल पढा था। सन् १८९६ ई० मे उन्होने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति 'को वाडिस ?'[6] नाम से लिखी। यह पुस्तक युग-प्रवर्तक रचनाओ मे से है, और सीनकीविच का नोबल पुरस्कार मिलने के पहले ही इनका प्रचार अच्छी तरह हो चुका था। इसके अतिरिक्त उनकी दो पुस्तके 'हम उनका अनुकरण करे'[7] और 'हानिया' भी प्रकाशित हुई। 'को वाडिस' मे यह दिखलाया गया है, कि किस प्रकार ईश्वरीय शक्ति ने मूर्ति-

---

१ With Fire and Sword
२ The Deluge
३. Pan Michael
४. Without Dogmas
५. Children of the Soil
६. Quo Vadis ?
७ Let Us Follow Them

पूजको पर विजय प्राप्त की। यह उपन्यास ऐसा है जिसे धार्मिक और ऐतिहासिक कह सकते है। इसके पात्र अत्यन्त सजीव हैं जिनमे से पॉल पेट्रोनियस, उरसस, चिलो और कैदी लडकी लिगिया बहुत आकर्षक है। इसमे लेखक ने नीरो का चरित्र-चित्रण किया है। सीनकीविच ने 'किधर को ?'[१] नामक शीर्षक देकर वर्तमान जगत् से, जो अशाति के पजे मे जकडा हुआ है, पूछा है कि तुम कहा जा रहे हो ? जिस अश मे रोम-सम्राट् नीरो का चरित्र-चित्रण किया गया है वह कोई विशेष सफल नही कहा जा सकता, क्योकि नीरो के सम्बन्ध मे लेखक ने कोई भी नवीन और आधुनिकतापूर्ण दृष्टि-विन्दु नही रखा है, किन्तु जिस भाग मे लेखक ने आजकल के सतप्त जगत् के मनुष्यो से उपर्युक्त प्रश्न किया है, वह पाठक के मन पर गहरी छाप छोड जाता है। इसमे सहानुभूति और अध्यात्मवाद भरा हुआ है। इनकी 'क्रॉस के शूर'[२] मे भी उपर्युक्त गुण हैं। इसमे उन्होने ट्यूटनो के विरुद्ध पोलैंड और लिथुआनिया-निवासियो को लडाया है। 'रोटी के पीछे'[३] नामक एक दूसरी पुस्तक मे उन्होने अमेरिका-प्रवासी पोलैंड-वासियों का जीवन चित्रित किया है। इस पुस्तक का दूसरा नाम 'रोटी के लिए' और 'देशान्तर-वासी किसान' भी है। 'यश के मैदान मे'[४] भी उनकी एक रचना है। उनकी सव रचनाओ का अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। कर्टिन, वीनियन और सीजन्स ने भी इनके ऐतिहासिक और धार्मिक उपन्यासो की प्रशसा की है। 'चमकीले तट पर'[५] 'जगल और रेगिस्तान'[६], 'तीसरी स्त्री'[७] और 'व्यर्थ'[८] ये सव सीनकीविच की सुन्दर रचनाए है।

सीनकीविच का देहान्त १९१६ ई० मे हुआ और मरते समय तक वे अपनी शक्तिशाली लेखनी चलाते रहे। उनका आदर्श था कि उपन्यास मे जीवन, सचेतनता-परिवर्द्धन-शक्ति और उत्तमतापूर्ण नवीनता होनी चाहिए और जहा तक हो उनमे वुराई का वर्णन कम होना चाहिए।

---

१. Whither Goest Thou ?
२. Knight of the Cross
३. After Bread
४. On the Field of Glory
५. On the Bright Shore
६. Desert and Wilderness
७. The Third Woman
८. In Vain

जिओसुए कार्डूची

१९०६ ई० मे नोवल पुरस्कार इटली के तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ कवि और साहित्याध्यापक को प्रदान किया गया था। इस समय उनकी अवस्था सत्तर वर्ष की हो चुकी थी और वे वोलोना विश्वविद्यालय मे अध्यापन-कार्य कर रहे थे। मिस्त्राल की तरह ये भी देशभक्त कवि थे। कार्डूची महाशय मे भावुकतापूर्ण कवित्व की अपेक्षा स्वतत्रता की प्रवृत्ति अधिक थी।

कार्डूची का जन्म २७ जुलाई, १८३५ ई० को वाल-डी-कैसेलो मे हुआ था। उनके पिता गाव मे दवा-दारू का काम करते थे और कार्डूची के जन्म के पहले राज-नीतिक आन्दोलन मे भाग लेने के कारण जेल जा चुके थे। शिशु कार्डूची की अवस्था अभी तीन ही वर्ष की थी कि इनका परिवार टस्कन-मरेमा प्रदेश के वालगेरी नामक स्थान को चला गया। ग्यारह वर्ष की अवस्था तक वालक कार्डूची यही पहाडियो पर और घाटियो मे घूमा करते थे। अपनी एक कविता मे इन्होने अपने वचपन के सस्मरण लिखे है। उनकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी, इनके पिता उन्हे लैटिन पढाते थे और इनकी माता इन्हे अलफीरी की कविताए सुनाया करती थी। सन् १८४८ ई० के अशान्त वातावरण मे उनका परिवार वालगेरी से फ्लोरेस पहुचा और कार्डूची को स्कूल भेजा गया। अट्ठारह वर्ष की अवस्था मे उन्होने 'सैकिक्स और अलकेइक्स' नामक पुस्तक लिखी जिसमे उन्होने प्राचीन इटली की महिलाओ के आदर्श का चित्रण किया। गिर्जा-घरो से सुधार मे क्या-क्या वाधाए पडती है, इसपर भी उन्होने हल्का प्रकाश डाला था। उन दिनो वे शिलर, वायरन और स्कॉट की कविताए विशेष रूप से पढते थे।

सन १८५६ ई० मे वे सैन-मनियाटो की व्यायामशाला मे अध्यापक नियुक्त हो गए, किन्तु राजनीतिक और साहित्यिक विरोध मे पड जाने के कारण इन्हे अरेजो मे अध्यापक का जो स्थान मिला था, सरकार ने उसके लिए स्वीकृति नही दी, इसलिए विवशत इन्हे फ्लोरेस को लौटना पडा। उस अवस्था तक वे वडे ही अकिंचन थे और अत्यन्त दरिद्रतापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। पढने के लिए पुस्तके न खरीद सकने के कारण दूर-दूर के पुस्तकालयो मे पढने जाया करते थे और ग्रीक तथा लैटिन साहित्य का अध्ययन करने मे लगे हुए थे। उन्ही दिनो उन्हे वरवेग नामक एक इटैलियन प्रकाशक के यहा नौकरी भी मिल गई, जिसकी पुस्तको की भूमिका आदि लिखने का

साहित्यिक कार्य ये करते रहे। दुर्भाग्यवश इनके परिवार पर दो विपत्तिया पडी—एक तो इनके भाई दाते ने आत्महत्या कर ली और दूसरे इनके पिता का शरीरात हो गया। अपने भाई के विछोह से विकल होकर इन्होने 'अल्ला मेमोरिया-डी० डी० सी०' नामक सुन्दर पद्य लिखे। पीछे जब उन्होने अपने सम्बन्धी और मित्र मेनीक की गुणवती कन्या से विवाह कर लिया, तो उनका जीवन काफी सुखपूर्ण हो गया। उनका गार्हस्थ्य जीवन सुख से व्यतीत होने लगा। उसी स्त्री से इनके चार बच्चे पैदा हुए, जिनमे से एक लडकी का नाम इन्होने 'लिबर्टी' (स्वतन्त्रता) रखा। इसके बाद उन-पर पुन विपत्तिया पडी—जिस वर्ष कार्डूची की माता का देहान्त हुआ, उसी वर्ष उनका तीन वर्ष का छोटा लडका दाते भी चल बसा। मा तो पर्याप्त रूप से वृद्धा हो चुकी थी, इसलिए उनके लिए उतना दु ख नही हुआ, पर छोटे बच्चे की मृत्यु ने उन्हे विक्षिप्त-सा कर दिया। बच्चे की स्मृति मे जो करुणापूर्ण पक्तिया उन्होने लिखी है, वे अत्यन्त मर्मस्पर्शिनी है।

कार्डूची महोदय की १८७० ई० तक की सगृहीत कविताओ से प्रतीत होता है कि वे समय-समय पर राजनीतिक प्रभाव मे आकर किस प्रकार उत्तेजित हो उठते थे। उनमे से अधिकाश कविताए 'इल पोलोजिआनो' नामक पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी। १८६० ई० मे वे ग्रीक और लैटिन के अध्यापक होकर पिस्टोइआ गए, और वही इटली के महावीर देशभक्त गेरीबाल्डी की सिसली-यात्रा पर कविता लिखी। इसके बाद दस वर्ष तक वे राजनीतिक परिवर्तनो से प्रभावान्वित होते रहे। उनकी 'शैतान से प्रार्थना'[१] नामक कविता १८६९ ई० मे एनोट्रियो रोमानिओ के हस्ताक्षर से प्रकाशित हुई थी, जिसके कारण वे अत्यन्त शीघ्रता से विख्यात हो गए। उनकी यह कविता पूर्णत राज-नीतिक थी। उन्होने नरम साम्राज्यवादी और धर्मवादियो की ऐसी खबर ली कि उन्हे इन दलवालो ने 'अयोग्य प्रजावादी' का नाम दे डाला। इनकी कविता मे क्रान्ति भरी हुई थी और उसमे सावोनारीला, लूथर, तस तथा वीक्लिफ आदि सभी विख्यात देशभक्तो की चर्चा थी। इनके पद्य चार-चार पक्तियो मे सुन्दर और गाए जाने योग्य थे, इसलिए इनका प्रचार बहुत जल्दी हुआ।

'शैतान से प्रार्थना' के प्रकाशन के सात वर्ष पूर्व वे बोलोना विश्वविद्यालय के अध्यापक नियुक्त हो चुके थे। यही वे शरीरात होने तक रहे, और इस प्रकार छियालीस वर्ष तक अध्यापन-कार्य करते रहे। इस बीच उन्हे मैमिआनी से शिक्षा-सचिव के पद का प्रस्ताव मिला, किन्तु कवि कार्डूची ने टस्केनी न छोडने का निश्चय कर लिया था। विद्यार्थियो पर इनका अद्भुत प्रभाव था। 'शैतान से प्रार्थना' प्रकाशित होने के पश्चात् उन्हे सरकार का कोप-भाजन बनना पडा। सरकार विद्यार्थियो पर उनका अत्यधिक प्रभाव देखकर डर गई और उसने उन्हे वहा से बदलकर नेपिल्स मे लैटिन पढाने के कार्य पर लगाना चाहा। कार्डूची ने यह कहकर नेपिल्स जाने से इन्कार कर दिया कि

१. Hymn to Satan

वह अपने-आपको लैटिन पढाने योग्य नही समझते। लगातार सरकार का विरोध करते रहने के कारण उन्हे वोलोना मे अध्यापन-कार्य करने से रोक दिया गया। इसके बाद इटली के मन्त्रिमण्डल मे काफी परिवर्तन हो गया और कवि कार्डूची ने भी विश्वविद्यालय मे राजनीतिक आन्दोलन की शिक्षा देनी बन्द कर दी।

इसके बाद उन्होने व्याख्यान देने का काम खूब जोरो पर आरम्भ किया, और इस रूप मे लोग इनकी ओर अधिक आकर्षित होने लगे। कुछ ही दिनो मे ये इटली के चुने हुए चार व्याख्यानदाताओ मे से हो गए। उन्ही दिनो मे रोम मे दाते के नाम पर एक 'चेयर'[1] स्थापित हुई। ये यहा प्रतिवर्ष व्याख्यान देने लगे। दाते के सम्बन्ध मे इन्होने काफी अध्ययन किया और उसपर अधिकारपूर्वक विचार किया। कार्डूची महाशय मे विशेषता यह थी कि वे साहित्य के द्वारा क्रान्ति उत्पन्न करना चाहते थे। उनकी 'ऑडी वारवेर' (१८७३-७७ ई०) नामक रचना से इस बात की पुष्टि होती है। अपने दो आलोचक मित्रो —चिञ्जारिनी और तार्जिआनी— से ये कहा करते थे कि ससार के सर्वश्रेष्ठ कवि होमर, पिडर, थिवोक्रिटस, सोफोक्लीज और अरिस्टोफैस हो गए है।

कार्डूची महोदय ज्यो-ज्यो बुड्ढे होने लगे, सम्राट् के प्रति उनका विरोध-भाव धीरे-धीरे कम होने लगा। इसका कारण कुछ लोग तो स्वाभाविक वृद्धावस्था-जन्य उत्साह-हीनता वतलाते है, और कुछ लोग यह कहते है कि जिन दिनो कवि कार्डूची वोलोना मे थे, उन्ही दिनो सम्राट् और सम्राज्ञी का वहा आगमन हुआ। सम्राज्ञी को कविता से बडा प्रेम था और वे एक सफल आलोचक थी। उन्होने कवि कार्डूची को बुलवा भेजा। कार्डूची महोदय लोगो से मिलते-जुलते कम थे और केवल विश्वविद्यालय के सहकारियो तथा पुस्तको मे ही उनका अधिक समय कटता था। अस्तु, किसी प्रकार अनिच्छापूर्वक वे सम्राट के पास गए। सम्राज्ञी ने उनकी कविताओ की काफी प्रशसा की और एक वास्तविक समालोचक की भाति इनकी उत्तम रचनाओ की कद्र की। इससे कार्डूची सम्राज्ञी की साहित्यिक अभिरुचि पर मुग्ध हो गए और इस घटना के बाद सदा सम्राज्ञी को पत्रादि लिखते रहे। फिर उन्होने सम्राट का कभी विरोध नही किया।

सन् १८९९ ई० मे कवि कार्डूची को पक्षाघात की बीमारी हो गई और उनकी आर्थिक अवस्था भी खराव हो गई। फिर भी वे ज्यो-त्यो करके अपने शिष्य सेवेरिनो फेरारी की सहायता से विश्वविद्यालय का काम करते रहे। जब उनकी आर्थिक अवस्था ऐसी हो गई कि उन्हे अपना बहुमूल्य पुस्तकालय वेचने की नौबत आ गई और सम्राज्ञी को इसका पता लगा तो उन्होने उनका पुस्तकालय अच्छे दामो मे खरीद लिया और कवि को इस बात की स्वतन्त्रता दे दी कि वह अपने जीवन-भर उस पुस्तकालय का

[1] किसी विश्वविद्यालय या शिक्षा-सस्था मे किसी प्रख्यात व्यक्ति के नाम पर एक 'चेयर' रखी जाती है, और चुने हुए विद्वान विशेषज्ञो के व्याख्यान होते है।

उपयोग स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकते है। १६०४ ई० मे सरकार ने कार्डूची महोदय को पेन्शन दे दी। दूसरे ही वर्ष कवि के सहायक कार्यकर्ता फेरारी का देहान्त हो गया, जिससे इन्हे अत्यन्त दु ख हुआ। उसके दूसरे ही वर्ष जब इन्हे नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया, तो वे उसे लेने के लिए अपना स्थान छोडकर जाने मे असमर्थ थे। स्वीडन सम्राट ने अपने खास आदमी को बोलोना भेजकर वृद्ध कवि को पुरस्कार-सम्बन्धी प्रमाणपत्र दिलवाया। यह प्रतिष्ठा प्राप्त करने के वाद कार्डूची महोदय केवल दो मास और जीवित रहे और १६ फरवरी, १६०७ ई० को इनका शरीरान्त हो गया। इनकी मृत्यु के बाद सम्राज्ञी ने इनका घर खरीदकर उसे सार्वजनिक स्मारक के रूप मे बनवा दिया।

कार्डूची की कविताओ मे एक अद्भुत सजीवता और लावण्य का सम्मिश्रण है। उनकी कोई कविता अपूर्ण नही रही। इनकी कतिपय रचनाओ मे तो शोक, करुणा, आशा और वान्छना का अद्भुत प्रवाह है—विशेषकर प्रकृति और जीवन-सम्बन्धी कविताओ मे यह भाव विशेष रूप से भरे है।

कवि कार्डूची कहा करते थे कि उनके जीवन के तीन खास सिद्धान्त है— राजनीति मे सबसे पहले इटली की समस्या, कला मे सबसे पहले प्राचीन काव्य और जीवन मे सबसे पहले अकपट सहृदयता और शक्ति। राजनीतिक उग्रता के साथ-साथ अधिक अवस्था मे उन्होने धार्मिकता और ईसाइयत के विरुद्ध भी विशेष कुछ नही लिखा। वास्तव मे धार्मिकता के विरुद्ध तो वे कभी नही थे। हा, धार्मिक कट्टरता और अन्धभक्ति का उन्होने अवश्य विरोध किया था। वे काल्पनिक गाथाओ को गढने की अपेक्षा ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर कुछ लिखना अधिक पसन्द करते थे। वृद्धावस्था मे उन्होने प्राचीन इटली और उसके साहित्य की काफी प्रशसा की है। उन्होने कथाओ मे अद्भुतता का सामजस्य करने के स्थान पर सत्य और वास्तविकता का आधार लेना अधिक उपयुक्त समझा है। श्री विकरस्टेथ नामक आलोचको ने लिखा है – "कार्डूची ने कला के दृष्टिकोण से सदा मनुष्य-प्रकृति और स्वाधीनता को ही अपनी कविता का विषय वनाया है और इनकी समस्त कविताए इन्ही तीन विषयो पर आधारित है।" स्त्रियो के सम्वन्ध मे कार्डूची की कविताओ को आदर्शवाद की श्रेणी मे नही रख सकते, क्योकि वाल्ट व्हिटमैन की तरह उन्होने स्त्रियो के वाह्य सौन्दर्य - नख-शिख— का वर्णन खूब किया है। श्री विकरस्टेथ का कथन है कि अपने देश—इटली—के सम्वन्ध मे कवि कार्डूची ने जो कुछ लिखा है, यह वास्तव मे आदर्शवाद की श्रेणी मे परिगणनीय है।

रुडयार्ड किप्लिग

सन् १९०७ ई० मे रुडयार्ड किप्लिग नामक पहले अग्रेज कवि और कहानी-लेखक को नोवल पुरस्कार मिला। इसके पहले फ्रास, जर्मनी, नार्वे, स्पेन, इटली और पोलैण्ड को यह प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी थी। इग्लैण्ड का नम्बर सातवे वर्ष आया। जिस वर्ष किप्लिग महोदय को यह पुरस्कार मिला, इग्लैण्ड के कितने ही अन्य लेखको के नाम और कृतिया 'नोवल फाउण्डेशन, और 'स्वीडिश एकैडमी' के पास भेजे गए थे। इन लेखको के नाम क्रमश स्विनबर्न, जॉर्ज मेरेडिथ, जॉन मार्ले, टॉमस हार्डी, वैरी और रॉबर्ट व्रिज थे। किप्लिग महोदय का नाम तो सबसे पीछे और एक पत्र के यह प्रश्न करने पर कि 'किप्लिग का नाम क्यो न भेजा जाए ?' भेजा गया था, और सयोगवश किप्लिग को ही वह आदर भी प्राप्त हुआ। उन्हे पुरस्कार मिलने के वाद कुछ विरोधियो ने फिर आवाज उठाई कि 'आदर्शवाद क्या है, और किप्लिग की रचनाओ मे उसका कहा तक समावेश है ?'

रुडयार्ड किप्लिग का आधुनिक अग्रेजी-साहित्य मे विशेष स्थान है। यद्यपि उनके छोटे-बडे सभी उपन्यास ब्रिटिश साम्राज्य खासकर भारत के शासको का चरित्र-चित्रण करने मे ही अपना अधिकाश भाग समाप्त कर देते हैं। सम्भवत यही कारण है कि ब्रिटेन मे बहुत-से समालोचक उनके पीछे हाथ धोकर पड गए और उनकी हर रचना मे दोष-दर्शन ही उनका लक्ष्य प्रतीत होता रहा। विरुद्ध समालोचनाओ के होते हुए किप्लिग की रचनाए खूब पढी गई हैं और वे अपने काल मे सर्वाधिक सर्वप्रिय, और लोक-विख्यात लेखको मे गिने जाते रहे हैं। सही या गलत, जितने उद्धरण किप्लिग की रचनाओ के दिए गए है उतने और किसी अग्रेजी लेखक की रचना के नही।

किप्लिग ने लेखन-कार्य भारत मे ही आरम्भ किया था और यहा चार-पाच वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् १८८९ ई० मे वे लन्दन पहुचे। वहां उन्होने भारत मे अग्रेजी साम्राज्य के मध्याह्नकाल का वर्णन वडी ही सजीव भाषा और शैली मे अपने उपन्यासो और कहानियो मे किया। यही कारण था कि बहुत-से साम्राज्यवादी अग्रेजो ने उनकी रचनाओ की कडी आलोचना की। यही नही, बहुत-से आलोचको ने तो इनके उपन्यासो मे अभिव्यक्त राजनीतिक विचारधारा के प्रति घृणा-व्यजक विचार प्रकट किए। फिर भी किप्लिग ने किसीकी भी परवाह किए विना अपना लेखन-कार्य ज्यो का त्यो जारी रखा और उसी विचारधारा और शैली पर अनेक सफल उपन्यास प्रकाशित कराए।

उपयोग स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकते है। १९०४ ई० मे सरकार ने कार्डूची महोदय को पेन्शन दे दी। दूसरे ही वर्ष कवि के सहायक कार्यकर्ता फेरारी का देहान्त हो गया, जिससे इन्हे अत्यन्त दु ख हुआ। उसके दूसरे ही वर्ष जब इन्हे नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया, तो वे उसे लेने के लिए अपना स्थान छोडकर जाने मे असमर्थ थे। स्वीडन सम्राट ने अपने खास आदमी को बोलोना भेजकर वृद्ध कवि को पुरस्कार-सम्बन्धी प्रमाणपत्र दिलवाया। यह प्रतिष्ठा प्राप्त करने के बाद कार्डूची महोदय केवल दो मास और जीवित रहे और १६ फरवरी, १९०७ ई० को इनका शरीरान्त हो गया। इनकी मृत्यु के बाद सम्राज्ञी ने इनका घर खरीदकर उसे सार्वजनिक स्मारक के रूप मे बनवा दिया।

कार्डूची की कविताओ मे एक अद्भुत सजीवता और लावण्य का सम्मिश्रण है। उनकी कोई कविता अपूर्ण नही रही। इनकी कतिपय रचनाओ मे तो शोक, करुणा, आशा और वाञ्छना का अद्भुत प्रवाह है—विशेषकर प्रकृति और जीवन-सम्बन्धी कविताओ मे यह भाव विशेष रूप से भरे है।

कवि कार्डूची कहा करते थे कि उनके जीवन के तीन खास सिद्धान्त है—राजनीति मे सबसे पहले इटली की समस्या, कला मे सबसे पहले प्राचीन काव्य और जीवन मे सबसे पहले अकपट सहृदयता और शक्ति। राजनीतिक उग्रता के साथ-साथ अधिक अवस्था मे उन्होने धार्मिकता और ईसाइयत के विरुद्ध भी विशेष कुछ नही लिखा। वास्तव मे धार्मिकता के विरुद्ध तो वे कभी नही थे। हा, धार्मिक कट्टरता और अन्धभक्ति का उन्होने अवश्य विरोध किया था। वे काल्पनिक गाथाओ को गढने की अपेक्षा ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर कुछ लिखना अधिक पसन्द करते थे। वृद्धावस्था मे उन्होने प्राचीन इटली और उसके साहित्य की काफी प्रशसा की है। उन्होने कथाओ मे अद्भुतता का सामजस्य करने के स्थान पर सत्य और वास्तविकता का आधार लेना अधिक उपयुक्त समझा है। श्री विकरस्टेथ नामक आलोचको ने लिखा है – "कार्डूची ने कला के दृष्टिकोण से सदा मनुष्य-प्रकृति और स्वाधीनता को ही अपनी कविता का विषय बनाया है और इनकी समस्त कविताए इन्ही तीन विषयो पर आधारित है।" स्त्रियो के सम्बन्ध मे कार्डूची की कविताओ को आदर्शवाद की श्रेणी मे नही रख सकते, क्योकि वाल्ट व्हिटमैन की तरह उन्होने स्त्रियो के बाह्य सौन्दर्य - नख-शिख— का वर्णन खूब किया है। श्री विकरस्टेथ का कथन है कि अपने देश—इटली—के सम्बन्ध मे कवि कार्डूची ने जो कुछ लिखा है, यह वास्तव मे आदर्शवाद की श्रेणी मे परिगणनीय है।

रुडयार्ड किप्लिग

सन् १६०७ ई० मे रुडयार्ड किप्लिग नामक पहले अग्रेज कवि और कहानी-लेखक को नोबल पुरस्कार मिला। इसके पहले फ्रास, जर्मनी, नार्वे, स्पेन, इटली और पोलैण्ड को यह प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी थी। इग्लैण्ड का नम्बर सातवे वर्ष आया। जिस वर्ष किप्लिग महोदय को यह पुरस्कार मिला, इग्लैण्ड के कितने ही अन्य लेखको के नाम और कृतिया 'नोबल फाउण्डेशन, और 'स्वीडिश एकैडमी' के पास भेजे गए थे। इन लेखको के नाम क्रमश स्विनवर्न, जॉर्ज मेरेडिथ, जॉन मार्ले, टॉमस हार्डी, वैरी और रॉबर्ट ब्रिज थे। किप्लिग महोदय का नाम तो सबसे पीछे और एक पत्र के यह प्रश्न करने पर कि 'किप्लिग का नाम क्यो न भेजा जाए ?' भेजा गया था, और सयोगवश किप्लिग को ही वह आदर भी प्राप्त हुआ। उन्हे पुरस्कार मिलने के बाद कुछ विरोधियो ने फिर आवाज उठाई कि 'आदर्शवाद क्या है, और किप्लिग की रचनाओ मे उसका कहा तक समावेश है ?'

रुडयार्ड किप्लिग का आधुनिक अग्रेजी-साहित्य मे विशेष स्थान है। यद्यपि उनके छोटे-बडे सभी उपन्यास ब्रिटिश साम्राज्य खासकर भारत के शासको का चरित्र-चित्रण करने मे ही अपना अधिकाश भाग समाप्त कर देते है। सम्भवत यही कारण है कि ब्रिटेन मे बहुत-से समालोचक उनके पीछे हाथ धोकर पड गए और उनकी हर रचना मे दोष-दर्शन ही उनका लक्ष्य प्रतीत होता रहा। विरुद्ध समालोचनाओ के होते हुए किप्लिग की रचनाए खूब पढी गई है और वे अपने काल मे सर्वाधिक सर्वप्रिय, और लोक-विख्यात लेखको मे गिने जाते रहे है। सही या गलत, जितने उद्धरण किप्लिग की रचनाओ के दिए गए है उतने और किसी अग्रेजी लेखक की रचना के नही।

किप्लिग ने लेखन-कार्य भारत मे ही आरम्भ किया था और यहा चार-पाच वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् १८८६ ई० मे वे लन्दन पहुचे। वहा उन्होने भारत मे अग्रेजी साम्राज्य के मध्याह्नकाल का वर्णन बडी ही सजीव भाषा और शैली मे अपने उपन्यासो और कहानियो मे किया। यही कारण था कि बहुत-से साम्राज्यवादी अग्रेजो ने इनकी रचनाओ की कडी आलोचना की। यही नही, बहुत-से आलोचको ने तो इनके उपन्यासो मे अभिव्यक्त राजनीतिक विचारधारा के प्रति घृणा-व्यजक विचार प्रकट किए। फिर भी किप्लिग ने किसीकी भी परवाह किए बिना अपना लेखन-कार्य ज्यो का त्यो जारी रखा और उसी विचारधारा और शैली पर अनेक सफल उपन्यास प्रकाशित कराए।

किप्लिग पद्य भी लिखते थे। उनकी पद्यात्मक रचनाग्रो मे से एक तो उन दिनो इतनी प्रसिद्ध हुई कि वह हर हिन्दुस्तानी की जवान पर चढ गई । उसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है

प्राच्य सदा है प्राच्य
ग्रोर पश्चिम है पश्चिम
इनका मेल नही चाहे,
कल्पान्त भले ही बीतते जावे
चाहे भू-ग्राकाश मिले,
स्वय ईश्वर हो सम्मुख,—
किन्तु सत्य है यही कि
प्राच्य पश्चिम का ग्रन्तर
है कोरा काल्पनिक,
जाति, सीमा, वर्णादिक,
जब दो प्रवल मनुष्य खडे होते है सम्मुख तनिक
तो होते है दूर सभी व्यवधान दूर के ।

केवल इस कविता पर किप्लिग को इतनी ख्याति मिल गई जितनी उनके समकालीन बर्नार्ड शॉ, एच० जी० वेल्स, जॉन गाल्सवर्दी ग्रौर ईट्स ग्रादि वर्षो के वाद भी न पा सके । चौबीस वर्ष की ग्रवस्था मे ही किप्लिग को वह यश मिल गया जो ग्रधेड होकर भी वडे-वडे लेखक नही प्राप्त कर सके । यही नही इक्कीस वर्ष की ग्रवस्था मे किप्लिग ने भारत मे जो रचनाए की थी उनकी सुन्दर कथा-माला वन गई ग्रौर 'वैरकसम वॅलाड' के नाम से प्रकाशित हुई । उनकी ८० लघुकथाए तो भारतीय पत्र-पत्रिकाग्रो से लेकर पुनर्मुद्रित की गई। कुछ दिनो तक तो किप्लिग की ऐसी धूम मची कि हर महीने उनकी कोई न कोई नई पुस्तक प्रकाशित हो जाती थी। किप्लिग के पद्य भी प्रकाशित होते रहे। तीस वर्ष तक निरन्तर यह क्रम जारी रहा जिससे पुस्तक-ससार मे किप्लिग की रचनाग्रो की वाढ-सी ग्रा गई। वास्तव मे इसके पूर्व किसी भी साहित्यिक की रचनाग्रो ने ग्रग्रेजी के पाठको मे ऐसी सनसनी नही फैलाई जैसी किप्लिग की पुस्तको ने ।

किप्लिग को 'दि लाइट दैट फेल्ड' से वडी ख्याति मिली । यद्यपि ग्रालोचको ने इनकी ग्रश्लीलता पर प्रवल ग्राक्रमण किया ग्रौर इनकी तुलना फ्रेंच उपन्यासकार गाई-द-मोपासा मे कर डाली, पर इसने एक वडा लाभ किप्लिग को यह मिला कि ग्रास्कर वाइल्ड जैसे लेखक उनके मित्र ग्रौर सरक्षक वन गए ।

प्रौढ लेखक वन चुकने तक किप्लिग ग्रपनी रचनाग्रो की त्रुटियो से न तो ग्रव-

१ 'ग्रोह ईस्ट इज ईस्ट, ऍड वेस्ट इज वेस्ट, ऍड नेवर दि ट्वीन शैल मीट, टिल ग्रर्थ ऐड स्काई स्टैड प्रेजेटली ऐट गाड्स ग्रेट जजमेट सीट, वट देग्रर इज नीदर ईस्ट नार वेस्ट, वॉर्डर, नार ब्रीड, नार वर्थ, व्हेन टू स्ट्राग मेन स्टैड फेस-टू-फेस, दो दे कम फ्राम दि एड ग्राफ दि ग्रर्थ !

गत थे और न उन्हे स्वीकार किया। उस समय तक तो उनकी रचनाओ की सर्वप्रियता ही सबसे बडी कसौटी बनी रही। उनको धन की आवश्यकता थी और इसके लिए प्रकाशन का सिलसिला जारी रखना आवश्यक था। उन्हे रुककर यह विचार करने का अवकाश ही नही मिला कि उनकी रचनाओ मे किन तत्त्वो की कमी है और कहा घटना और वर्णन मे अतिरजना है एव कुरुचि-सुरुचि का कितना समावेश समीचीन कहा जा सकता है। कुछ समय बाद जब किप्लिग मे कुछ अधिक विवेक का विकास हुआ तो एक नई समस्या उनके सामने उपस्थित हो गई और वह यह थी कि अमेरिका मे 'कापीराइट' का कानून विदेशी लेखको के लिए कुछ न होने के कारण वहा के प्रकाशक इनकी रचनाए बिना आज्ञा धडाधड प्रकाशित करने लगे। उन्होने अमेरिकन प्रकाशको और वहा के कापीराइट कानून के विरुद्ध लिखने मे बहुत-कुछ शक्ति लगाई।

किप्लिग का विवाह एक अमेरिकन पत्रकार—ओलकाट बालेरिटयर की बहन कैरोलाइन से हुआ। विवाह के बाद वे सपत्नीक जापान-भ्रमण के लिए गए। वे अभी सैर ही कर रहे थे कि उनकी दो वर्ष की बचत एक बैंक का कारबार बन्द हो जाने के कारण डूब गई। वे घबडाकर सपत्नीक अपने न्यूइग्लैड स्थित घर को लौट आए। यहा किप्लिग चार वर्ष सपत्नीक सुखपूर्वक रहे और उनके दो बच्चे यही पैदा हुए। ब्रैटिल बोरो और बरमाण्ट मे उन्होने अपनी वे पुस्तके लिखी जिनके कारण वे और भी विख्यात हुए। 'दिन का काम' (दि डेज वर्क) 'सात-समुद्र' (दि सेवन सीज) गद्य-पद्यमय रचनाए उन्होने यही पूरी की और 'वन-पुस्तक' (जगल बुक) भी। उनकी इन रचनाओ की बिक्री यूरोप और अमेरिका मे बहुत हुई और ये ससार की अनेक भाषाओ मे प्रकाशित हुई। यद्यपि यह अन्तिम पुस्तक बच्चो के लिए लिखी गई थी, पर इसका प्रभाव गत दो पीढियो से सभी पाठको पर पडा है और इसके आधार पर फिल्म का निर्माण भी हो चुका है। इसके एक पद्य का अनुवाद यहा देने का लोभ-सवरण हम नही कर सकते :

सभी महापुरुषो का जीवन हमको यही सिखाता है—

हम अपना यह नियम न बदले—काम करे नित डटकर।
जो कुछ करो, लगन से कर लो—
तन से कर लो, मन से कर लो
टाल-मटोल बिना कर डालो।

किप्लिग की जो रचनाए भारतीय पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई है इनमे सैकडो हिन्दी-शब्दो का प्रयोग अग्रेजी के साथ इस प्रकार कर डाला है कि वे इटैलिक टाइप मे होते हुए भी अग्रेजी के अग बन गए है—उदाहरण के लिए पडित, इक्का, बन्दर, सईस, आया आदि। इसके कारण अग्रेज और दूसरे विदेशी पाठक बहुत-से ऐसे हिन्दी शब्दो से परिचित हो गए है।

१८९६ ई० मे पर्याप्त धन और ख्याति अर्जित करने के पश्चात् किप्लिग अमेरिका से इग्लैड लौट गए। लौटने का कारण बेगुला-प्रकरण था जिसके सिलसिले में

इग्लैड और अमेरिका मे घोर मतभेद हो गया और मोनरो-सिद्धान्त की सृष्टि हुई जिससे सारे अमेरिका मे अग्रेजो के विरुद्ध एक विद्वेष भावना भडक उठी और ऐसा प्रतीत होने लगा कि दोनो देशो के बीच युद्ध छिड जाएगा इससे किप्लिग ने स्वदेश लौट जाने मे ही अपना कल्याण समझा।

किन्तु तीन वर्ष बाद १८९९ ई० मे जब अमेरिका मे ब्रिटेन-विरोधी भावना कुछ दबी तो किप्लिग फिर अमेरिका गए जहा न्यूयार्क के एक होटल मे उन्हे निमोनिया रोग हो गया। अपनी पत्नी और मित्रो की शुश्रूषा से किप्लिग जब किसी तरह अच्छे होकर इग्लैड लौटे तो उसके बाद अमेरिका जाने का नाम नही लिया।

इग्लैड लौटकर वे एक गाव मे रहने लगे। अन्त मे वे सुसेक्स के निकट बुरवाश नामक गाव मे रहने लगे। किप्लिग मे यह विशेषता थी कि वे किसी भी सैनिक, इजीनियर या शासनाधिकारी से बाते करते समय बडे ही कलापूर्ण ढग से उन्हीके मुह से उनकी रामकहानी या विचार उगलवा लेते थे। इसीलिए जब उनके निवास-स्थान पर पत्रकार उनसे मुलाकात करने आते तो किप्लिग उन्हे ऐसी बातो मे उलझा देते कि वे स्वय कुछ न कुछ अपनी बात कह जाते और मुलाकात के अन्त मे उन्हे ऐसा लगता कि उन्होने किप्लिग से मुलाकात नही की, बल्कि किप्लिग ने ही उनसे भेट की है और उनसे बहुत-सी ज्ञातव्य बाते जान ली है।

भारत मे सैनिक-जीवन का जैसा वर्णन किप्लिग ने किया है उससे अग्रेज-जाति का गौरव कुछ बढा नही—उल्टे उनके साम्राज्यवाद के प्रति एक तीखा व्यग्य ही प्रकट हुआ है। 'टामी एटकिन्स' का चरित्र-चित्रण करके उन्होने युद्ध और सैनिको के सम्बन्ध मे यथार्थ बाते बिना सकोच के लिख डाली हैं। सैनिको के अज्ञान का वर्णन उन्होने उस कविता मे किया है। जिसमे कहा गया है

"जानी ! जानी !
सुनू जरा तेरे मुह से ही—
तेरी राम कहानी ?"
"ओहो ! मुझे नही कुछ मालूम—
पूछ लो कर्नल ज्ञानी से"
"हमने राजा को तोडा
औ' सडक बनाई एक
खोल अदालत दी कम्पू के थल पर
नदी खून की जहा बही थी
वहा स्वच्छ जलधार
विधवाओ मे भी आमत्रण का
आया अमित उछाह !"

किप्लिग की रचनाओ मे देहात का, समुद्र का और जहाजी जीवन का सुन्दर

चित्रण है।

साम्राज्य के निर्माताओ और रक्षको के प्रति किप्लिग अपनी रचनाओ मे प्रत्यक्ष प्रहार करने की क्षमता रखते थे। उन्होने अग्रेजो को प्रकारान्तर से कथा-कहानियो के द्वारा बतलाया कि उपनिवेशो मे इनकी शक्ति का रहस्य क्या है। उन्होने अपनी रचनाओ द्वारा अमेरिकनो का आह्वान किया कि वे गोरी जाति का बोझ-वहन न करे और अपना एकाकीपन छोडे। कुछ साहित्यिक किप्लिग को साम्राज्य का चारण कहने से नही चूके।

१६०६ ई० मे किप्लिग की 'पक आफ पुक्स हिल' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई यह बच्चो से लेकर बुड्ढो तक ने पढी और वह 'जगल बुक' के समान ही सर्वप्रिय बन गई। इस रचना का विचार किप्लिग को शिमले मे पन्द्रह-बीस वर्ष पहले आया था।

किप्लिग की अन्तिम महत्त्वपूर्ण रचना 'डेबिट और क्रैडिट' थी जो सन् १६२६ मे प्रकाशित हुई। इसकी छ कहानिया, और विशेषकर 'इच्छाग्रह' बहुत प्रसिद्ध है।

किप्लिग की रचनाओ मे स्त्री पात्रो का अभाव-सा है और वे प्रगाढ प्रेम जैसी किसी अनुभूति का नाम तक नही जानते प्रतीत होते है। बाद मे किप्लिग पुरानी शैली के लेखक माने जाने लगे किन्तु उनकी पुस्तको का पठन-पाठन और उनकी ख्याति नही घटी। उन्होने नये युग की प्रवृत्तियो पर काफी आक्रमण किया, फिर भी उनकी रचनाए पढी गई। उनके महोद्यम, स्वावलम्बन, कौशल और स्वतत्रता की कद्र सुरक्षा को पहला स्थान देनेवाले इस युग मे इतनी नही हुई जितनी पहले थी। यही कारण है कि किप्लिग का सम्मान पिछली पीढियो की अपेक्षा घट गया, फिर नोबल पुरस्कार ने उनके मिटते नाम को एक बार फिर पुनर्जीवित कर दिया। किप्लिग ने जिस द्वितीय विश्व-व्यापी महासमर की भविष्यवाणी की थी उसे देखे बिना ही वे १६३६ ई० मे इस ससार से चल बसे।

किन्तु मृत्यु के बाद भी अच्छे लेखक तो कुछ समय तक जीवित रहते है और इस रूप मे भारत आदि पूर्ववर्ती ब्रिटिश उपनिवेशो मे अग्रेजो की करतूत का आधार उनके उपन्यास कहानियो मे पाया जा सकता है।

आदर्शवाद के अतिरिक्त किप्लिग की रचनाओ मे साहस और पौरुष का प्रबल स्रोत मिलता है और नवयुवको एव कॉलेज के छात्रो को उनसे तेजस्विता, प्रतिष्ठा और वीरतापूर्ण कार्य-कलाप की शिक्षा मिलती है। उनसे साहसपूर्ण वक्तृत्व और क्रिया के लिए उत्तेजना भी मिलती है। उनकी कविताओ और कहानियो 'दि डेज वर्क' और 'किम' और 'लाइफ्स हैडीकैप्स' आदि प्रसिद्ध रचनाओ से निर्भयता का अच्छा पाठ मिलता है।

विख्यात् समालोचक गिलबर्ट चेस्टर्टन ने किप्लिग महादय की रचनाओ के सम्बन्ध मे लिखा है "उनकी रचनाए ऐसी नही है जिनसे युद्ध की सी उत्तेजना मिलती हो, वरन् उनमे ऐसे साहस और वीरता का सम्मिश्रण है जो इजीनियरो, नाविको और खच्चरो मे होती है। इस प्रकार की कहानियो मे से 'दि ब्रिज बिल्डर्स', 'दि शिप दैट फाउण्ड

हरसेल्फ', '००७', 'विद दि नाइट मेल' और 'वायरलेस' इसी कोटि की है।"

किप्लिग की कविताए पूर्ववर्ती नोबल पुरस्कार-विजेता कवियो से भिन्न है। इनकी कविताए भी देशभक्तिपूर्ण है, किन्तु वे मिस्त्राल और ब्योर्न्सन की कविताओ की अपेक्षा कम उद्दीपनमयी है। वास्तव मे बहुत-सी बातो मे किप्लिग अपने देश के प्रति बडे खरे विचार रखते थे। उत्तरवर्ती जीवन मे उनके विचार प्रजावादियो से मिलने लगे है और वे अपने पूर्ववर्ती विचारो के कुछ-कुछ विरुद्ध होकर साम्राज्यवाद के विरोधी बन गए जिसका परिचय उनके 'ए पिलिग्रम्स वे' (यात्री का पथ) नामक कविता के प्रत्येक पद से मिलता है। देश की प्रतिष्ठा और सेवा के सम्बन्ध मे ऐसी आकर्षक पक्तिया लिखनेवाले कवि थोडे ही हुए है। उनकी 'इफ', 'फार आल वी हैव ऐण्ड आर' और 'दि चिल्ड्रन्स साग' शीर्षक कविताए इस प्रकार के सुन्दर उदाहरणो मे से है।

किप्लिग महोदय को ससार का सुन्दर ज्ञान था और उन्होने काफी यात्रा की थी।

इन्होने अपने एक लडके के देहान्त पर जो शोकपूर्ण कविता 'माइ ब्वाय जैक (जैक मेरा लडका), १६१४-१८' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी है, वह करुणारस से ओत-प्रोत है। उन्होने १६ मई, १६२१ ई० को सार्बोन मे जो व्याख्यान दिया था, उसमे मालूम होता है कि उनमे आध्यात्मिकता का पुट कितना था। उन्होने कहा है-- "कोई भी व्यक्ति टूटे (अधूरे) ससार की पूर्ति उस सरलता के साथ नही कर सकता, जिस प्रकार अधूरे वाक्यो की कर सकता है।"

किप्लिग महोदय को नोबल पुरस्कार उनकी आरम्भिक रचनाओ के कारण मिला है। पुरस्कार प्राप्त करने के समय उनकी अवस्था बयालीस वर्ष की थी और इस प्रकार के पुरस्कार-विजेताओ मे ये सबसे अल्पवयस्क थे। इस अवस्था के पहले ही उनकी गद्य और पद्य की इतनी रचनाए प्रकाशित हो चुकी थी, जितनी इनकी दुगनी अवस्थावालो की न हुई होगी। इनका जन्म भारत के बम्बई नगर मे ३० दिसम्बर, १८६५ ई० को हुआ था। इन्होने अपने माता-पिता का-सा ही मानसिक उत्कर्ष प्राप्त किया है। इनके पिता जॉन लॉकउड किप्लिग कलाकार थे और इनके जन्म के समय लाहौर स्कूल आफ इण्डस्ट्रियल आर्ट के सचालक थे। जान किप्लिग कहानी कहने की कला मे बडे निपुण थे और उन्हे कला तथा शिल्प-विज्ञान का अच्छा अभ्यास था। उन्होने अपने पुत्र की आरम्भिक कहानियो मे से कुछ के चित्र बनाए थे। उनकी लिखी हुई 'बीस्ट ऐण्ड मैन आफ इण्डिया' (भारत के पशु और मनुष्य) रुडयार्ड किप्लिग के नाम से १८६१ ई० मे लन्दन से प्रकाशित हुई थी। इसमे चित्राङ्कन असाधारण रूप मे किया गया है। रुडयार्ड किप्लिग की माता का नाम एलिस मैकडॉनेल्ड था। उन्होने अपने पुत्र मे उत्साह और अपूर्व हास्य भर दिया था।

किप्लिग का नाम जोजेफ रुडयार्ड रखा गया था। परन्तु उनका पहला नाम कभी-कभी ही लेने मे आता था। रुडयार्ड नाम इग्लैण्ड की एक झील के नाम पर रखा

गया था, जहा किप्लिग के माता और पिता पहले-पहल मिले थे। उनका शैशव और बाल्यावस्था के आरम्भिक दिन भारत मे ही व्यतीत हुए थे, इसलिए इस देश के प्रति उनको प्रेम हो गया था। ये शिक्षा प्राप्त करने के लिए डिवानशायर भेज दिए गए थे, जहा शिक्षा समाप्त करके वे युनाइटेड सर्विसेज कॉलेज, वेस्टवर्ड को चले गए। वे अपनी माता की याद मे बहुत व्याकुल रहा करते थे और उनके लिए इग्लैण्ड मे पैदा हुए अग्रेज बच्चो के साथ मिलना-जुलना कठिन हो गया। सन् १८८० ई० मे वे भारत लौट आए और यहा पत्रकारिता के क्षेत्र मे घुसने की चेष्टा करने लगे। वे भारतीय सैनिको की स्थिति जानने के लिए भी सचेष्ट रहने लगे। उनके सम्बन्ध मे यह कहानी प्रसिद्ध है कि जब वे लाहौर मे पत्रकार थे, उन्ही दिनो ड्यूक ऑफ कैनाट भारत-भ्रमण करते हुए उस स्थान पर पहुचे, और उनसे पूछा कि वे भारत मे रहकर क्या काम करना चाहते है। नवयुवक किप्लिग ने तुरन्त उत्तर दिया . "माननीय महोदय, मै कुछ समय तक सेना के साथ रहना और सीमान्त प्रदेश जाकर एक पुस्तक लिखना चाहता हू।" ड्यूक ने किप्लिग की प्रार्थना स्वीकार कर ली और परिणाम-स्वरूप किप्लिग ने 'हिल्स टु आईज आव एशिया' नामक पुस्तक के अन्तर्गत 'डिपार्टमेण्टल डिट्टीज', 'सोल्जर्स' 'थ्री', 'अण्डर दि देवदार' और कई अन्य सुन्दर कहानिया लिखकर समाप्त की।

किप्लिग ने भारत के सम्बन्ध मे— और विशेषकर सैनिको और उनकी स्त्रियो के बारे मे—जो कुछ लिखा, उसको लेकर अग्रेजो मे खूब चर्चा हुई और यह कहा गया कि किप्लिग की कहानिया अतिशयोक्तिपूर्ण है। भारत का भ्रमण किए बहुतेरे समालोचको ने उनकी रचनाओ की सत्यता प्रमाणित की और कुछ ने उनकी सचाई मे सन्देह प्रकट किया। कुछ ऐसे आलोचक भी थे जो भारतीयो से किप्लिग के लिखे हुए विषयो पर वार्तालाप कर चुके थे और उन्होने उनकी रचनाओ को अस्वाभाविक बतलाया था।

सन् १८८२ ई० से १८८९ ई० तक वे भारत के कई नगरो लाहौर, बम्बई और माडले मे रहे और वहा के सैनिक और शासक अफसरो से मिलते-जुलते रहे। इन दिनो उन्होने जो कहानिया या पद्य लिखे, वे भारत के अग्रेजी समाचारपत्रो मे प्रकाशित हुए थे। इनकी पहली पुस्तकाकार रचना इलाहाबाद की ए० एच० व्हीलर ऐण्ड कम्पनी ने प्रकाशित की थी और वह विशेष रूप से रेलवे स्टेशनो पर बिकती थी। किप्लिग के अपने हाथ से खीचे हुए चित्रो के साथ उनकी कहानियो का सुन्दर सग्रह 'वी विली विकी'[१] नाम से प्रकाशित हुआ था, जिसे उन्होने अपनी माता को समर्पित किया था। अपने सग्रह के प्रकाशन का अधिकार —जिसमे बहुत से सुन्दर और अद्भुत चित्र थे - उन्होने हाल मे ही जे० पियरपाण्ट मार्गन को दिया था, जिसका पारिश्रमिक उन्हे पचास हजार रुपये से अधिक प्राप्त हुआ था।

जब किप्लिग की अवस्था पच्चीस वर्ष की हुई तो अपने मस्तिष्क मे भारत के

---

१. Wee Willeie Wikie

वास्तविक चरित्र-चित्रण की सामग्री और वीरतापूर्ण घटनाओ के स्वचित्रित चित्र लेकर वे इग्लैण्ड गए और वहा उन्हे प्रकाशित कराने की चेष्टा करने लगे। लन्दन से वे इसी उद्योग मे प्रशान्त महासागर के मार्ग से कैलीफोर्निया और वहा से न्यूयार्क पहुचे। उन्हे आशा थी कि अमेरिका के सम्पादक उन्हे प्रोत्साहित करेगे, क्योकि उनके पास कुछ इस प्रकार के परिचय-पत्र थे, जिनसे उन्हे ऐसी सहायता मिलने की आशा थी। किन्तु अमेरिका मे उनका स्वागत नही हुआ। बाद मे शायद उपर्युक्त सम्पादको और प्रकाशको ने इस बात पर खेद भी प्रकट किया कि उन्होने एक नये प्रतिभाशाली लेखक को खो दिया। लन्दन मे भी धीरे-धीरे उनका यश फैला। किप्लिग की रचनाओ की कद्र सबसे पहले एण्ड्रू लाग नामक समालोचक ने की, यद्यपि बाद मे उन्हीने किप्लिग की कुछ रचनाओ को अत्यन्त त्रुटिपूर्ण भी बतलाया।

किप्लिग महोदय को उनकी आरम्भिक रचनाओ के तीन गुणो पर नोबल-पुरस्कार मिला। उन्होने अपनी रचनाओ मे उन्नीसवी सदी के अन्त के एग्लो-इडियनो के जीवन का सजीव चित्रण किया है। उन्होने अग्रेज और हिन्दुस्तानी फौजी सिपाहियो के रस्म-रिवाज, रहन-सहन, बोल-चाल और स्वभाव आदि का सुन्दर वर्णन किया है। जिस तरह मिस्त्राल महोदय ने प्रॉवेस की ग्रामीण भाषा को लुप्त होने से बचाया था, उसी प्रकार किप्लिग महोदय ने भारत के एग्लो-इडियन सैनिको के सम्प्रदाय की ठेठ भाषा का साहित्यिक उपयोग किया। उनकी रचनाओ मे सैनिको के जीवन के कर्कश और अभद्र रूप का उल्लेख सुन्दर रूप मे हुआ है। उनकी रचनाओ मे से 'भूत का रिक्शा'[१], 'तीन सैनिक'[२], 'शहर पनाह पर'[३], 'माडले'[४], और 'प्रेमी की प्रार्थना'[५] आदि पुस्तको मे बहादुरी, खतरा और आकाक्षाओ की स्मृति का सुन्दर समावेश है। भारत छोडने के दस वर्ष के पश्चात् १९०२ ई० तक उन्होने अत्यन्त सुन्दर कविताए लिखी, जिनका सग्रह 'टूटे हुए आदमी'[६] नामक पुस्तक मे हुआ है।

अपनी इस सफलता के बाद जब किप्लिग महोदय पुन अमेरिका गए, तो वहा उनका बडा स्वागत हुआ। अमेरिका मे ओलकाट बैलेस्टियर की बहन कैरोलिन बैलेस्टियर के साथ इनका प्रेम हो गया और बाद मे १८९२ ई० मे लन्दन मे उनके साथ इनका विवाह भी हो गया। सर आर्थर कॉनन डायल ने किप्लिग को पक्का पत्नि-भक्त लिखा है। विवाह के बाद ससार-भ्रमण करते हुए किप्लिग महोदय अपनी स्त्री के साथ पुन अमेरिका गए थे।

किप्लिग की एक छोटी लडकी का अल्पावस्था मे ही देहान्त हो गया था। उसकी मृत्यु से दुखी होकर उन्होने 'जगल बुक' नामक पुस्तक लिखी। अमेरिका मे

---

१. The Phantom Rickshaw
२. Soldiers Three
३. On the City Wall
४. Mandalay
५. The Lover's Litany
६. The Broken Men

रहकर उन्होने 'सात समुद्र'[१] और 'अनेक अन्वेषण'[२] नामक पुस्तके लिखी। उनकी बाद की रचनाओ मे 'पथ-बाधक'[३], 'खोया हुआ सैन्य दल'[४] और 'स्त्री का प्रेम'[५] प्रसिद्ध है। इनकी प्रार्थना-सम्बन्धी पुस्तको मे 'दी रिसेशनल'[६] एक अमर कृति है। इनकी अमेरिका की रचनाओ मे 'बुझी रोशनी'[७], 'क्रिया और प्रतिक्रिया'[८] और 'चौथे आयतन की एक भूल'[९] विशेष उल्लेखनीय है।

किप्लिग की सन् १८९० ई० से १९०० ई० तक की रचनाओ मे विशेष प्रौढता आ गई है। १८९७ ई० मे इन्होने "००७"[१०] और 'दिन का कार्य'[११] नामक दो रचनाए प्रकाशित कराई। १८९९ ई० किप्लिग के जीवन मे विशेष घटना का वर्ष था। इसी वर्ष अमेरिका जाने पर वे निमोनिया रोग से पीडित हो गए और कई सप्ताह तक बीमार रहे। इस रोग से वे स्वस्थ तो हो गए, पर कुछ समालोचको का कथन है कि इसके बाद उनकी सारी साहित्यिक योग्यता जाती रही, क्योकि उनकी बाद की रचनाओ मे वह सजीवता नही रही। किन्तु ऐसी अवस्था मे भी उन्होने भारत के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा और 'यदि'[१२] तथा 'पृथ्वी का अन्तिम चित्र'[13] नामक सुन्दर रचनाए प्रकाशित कराई।

बालोपयोगी साहित्य लिखने की ओर उनकी अभिरुचि पहले से ही थी—इनकी 'जगल बुक्स'[१४] और अन्य कहानिया बाल-ससार मे काफी पसन्द की गई। इसी प्रकार इनकी समुद्री कहानिया भी बालको के मनोरजन के लिए अच्छी सिद्ध हुई। इनमे 'साहसी कप्तान'[१५] विशेष रूप से प्रसिद्ध हुई। इस प्रकार की अधिकाश कहानियो के सग्रह[१६] उनकी अधिक प्रचलित पुस्तको मे से है। उन्होने 'पचराष्ट्र'[१७] नामक काव्य-सग्रह भी प्रकाशित कराया। इनकी 'किम' या 'किम्बाल ओ हारा' (लाहौर का अनाथ बालक) ने यह सिद्ध कर दिया कि बीमारी के बाद भी उनकी साहित्यिक योग्यता और नाटकीय कौशल मे कमी नही आई थी। बच्चो को इस कहानी से पर्याप्त उद्वेलन मिलता

---

१ The Seven Seas
२. Many Inventions
३ The Disturber of Traffic
४ The Lost Legion
५. Love o' Women
६ The Recessional
७ The Light That Failed
८ Actions and Re-actions
९. An Error of the Fourth Dimension
१०. 007
११. The Day's Work
१२. If
१३ When the World's Last Picture is Painted
१४. Jungle Books
१५ Captains Courageous
१६ Puck of Pook's Hill, Rewards and Fairies और Kim
१७. The Five Nations

है। इसमे उन्होने तिब्बती लामा के साथ यात्रा करने का रोचक वर्णन किया है।

बीसवी सदी के साथ नये-नये कवियो और कहानी-लेखको का अभ्युदय हुआ है। जिस समय किप्लिग को नोबल पुरस्कार मिला, उस समय यद्यपि वे पूरे ओज के साथ अपनी लेखनी चला रहे थे, पर साहित्यिक क्षेत्र मे उन्हे पुरानी पीढी का लेखक समझा जाता था और वे आधुनिकता से पिछडे हुए समझे जाते थे। १६०७ ई० के नोबल-पुरस्कार की घोषणा के बाद ससार के प्रत्येक सभ्य देश मे एक नई दिलचस्पी फैल गई। किप्लिग के ग्रन्थो का अनुवाद डेनिश, डच, फ्रेच, जर्मन, इटैलियन, नार्वेजियन, पोलिश, रूसी, सर्वियन, स्पेनिश और स्वीडिश भाषाओ मे हो गया। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ ने उनकी १६०७ ई० के पहले की रचनाओ की आलोचना आरम्भ कर दी और उनके 'आदर्श' साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार दिए जाने पर स्वीडिश एकैडमी की प्रशसा की जाने लगी। 'लन्दन नेशन' ने लिखा—"अग्रेजी भाषा मे किप्लिग की कोटि का कोई ऐसा लेखक मुश्किल से मिल सकता है जिसने सैनिक वर्णन इतनी सफलता के साथ किया हो।" 'न्यूयार्क वर्ल्ड' ने लिखा—"पाठशाला के लडको की भाति किप्लिग मार-पीट का वर्णन करते है पर ऐसा मालूम होता है, जैसे वे किसी घटना का अन्त उन बालको की ही तरह नही करते।" 'शिकागो पोस्ट' ने यह टिप्पणी कसी कि "उन (किप्लिग) का आदर्शवाद 'शक्ति' का आदर्शवाद है, और उनकी अग्रेजी काफी जोरदार है।"

इस प्रकार उनकी रचनाओ के सम्बन्ध मे अनेक मत है, किन्तु यह सच है कि उनके ग्रन्थो मे दो प्रकार की शैली पाई जाती है। एक तो वह है जिसमे एक दम आदर्शवाद है। इस श्रेणी मे 'दीनाशाद की शादी'[१], 'दुखो का द्वार'[२], 'मेरी पुत्रवधू'[३] और 'गैली स्लेव' (काव्य) का नाम लिया जा सकता है। किन्तु 'दिन का काम'[४] और 'गहरे समुद्र का शैतान'[५] और कुछ अशो मे 'ब्रशवुड ब्वाय' यथार्थवाद के अच्छे उदाहरण है।

नोवल पुरस्कार प्राप्त हो जाने के वाद किप्लिग ने अपनी कलम ढीली कर दी और फिर वहुत कम लिखने लगे। इनकी बाद की रचनाओ मे अधिकाश मे युद्धो का ही वर्णन है। इनमे से 'समुद्रीय युद्ध'[६], 'फ्रास' और 'आयर्लैण्ड के गारद का इतिहास'[७] अधिक उल्लेखनीय है। अन्य प्रकार की रचनाओ मे 'महान् हृदय'[८] उन्होने १६१६ ई० मे रूजवेल्ट को श्रद्धाजलि देने के लिए लिखी थी। उन्होने इगलैण्ड और अमेरिका से शान्ति-स्थापन

---

१. The Courtship of Dinah Shadd
२. The Gate of the Hundred Sorrows
३. My Son's Wife
४. The Day's Work
५. The Devil of Deep Sea
६. Sea Warfare
७. History of the Irish Guards
८. Great Heart

के लिए अपील के रूप मे भी कविताए लिखी थी। 'लार्ड राबर्ट' के प्रति जो शोकोद्गार उन्होने लिखे है, वह भावुकता से परिपूर्ण है और उसमे करुणरस का विकास अच्छा हुआ है। इसके कुछ पदो मे व्यग का सम्मिश्रण भी समुचित रूप मे हुआ है। १९२३ ई० के आसपास भी इन्होने अनेक पुस्तके लिखी थी, किन्तु उनमे 'एशिया की दृष्टि'[१] (जिसमे पूर्वीय देशवाले यूरोपियनो को किस दृष्टि से देखते है, इसका विवरण हे) और 'उच्छ्वास'[२] अधिक प्रसिद्ध है।

किप्लिग की रचनाओ की आलोचना काफी हुई है और फिलिप गेडाला ने उनकी एक पुस्तक ('माडले') की समालोचना 'ए गैलेरी' नामक पुस्तक मे करते हुए यहा तक लिख दिया है कि किप्लिग ने वहुत-सी बातो को थोडे से थोडे शब्दो मे कह दिया है और उन्होने अग्रेजी भाषा पर शान रखकर उसे तेज कर दिया है। उस तेज धार से उन्होने अग्रेजी गद्य के खुरदरे धरातल को काटकर बराबर कर दिया है, किन्तु यह बात भी सच है कि उनकी कविता की शैली मे पुरानापन काफी है और नई शैली की कविता के पाठको को उसे पढकर वैसा आनन्द नही मिलता।

किप्लिग ने क्रियात्मक रूप मे सार्वजनिक जीवन मे कम भाग लिया है, और १९२३ ई० मे पहले-पहल उन्हे सेण्ट एण्ड्रूज विश्वविद्यालय मे भाषण करने का निमत्रण मिला था।

कि प्लग का आदर्श कोरी भावुकता से ही पूर्ण नही है, उसमे क्रियाशीलता और उत्तरदायित्व की छाप है। 'गोरो का उत्तरदायित्व'[३] मे उन्होने इस बात पर जोर दिया है कि उन्हे अपने युवको को शुद्ध मनुष्यता की दीक्षा देनी चाहिए। यद्यपि उनकी आरम्भिक रचनाओ मे वहुत-सा अश ऐसा है जिसे कुछ हद तक 'फालतू' कह सकते है, पर उनमे भी ध्यानपूर्वक सुनने और देखने के लिए सन्देश है। दो दशाब्दी पहले के कॉलेजो के विद्यार्थी इनकी रचनाओ को जितने चाव के साथ पढते थे, उतने चाव से आज शायद किसीकी रचना नही पढी जाती, यही नही, अब भी सुशिक्षितो और अपढ यूरोपियनो और अमेरिकनो द्वारा इनकी रचनाओ के उद्धरण प्राय. सुनने मे आते है।

किप्लिग महोदय मे यह एक वडी विशेषता थी कि उन्होने आर्थिक लाभ के लिए कभी अपनी साहित्यिक रचना का मान (स्टैंडर्ड) नीचे नही गिराया। उन्होने सदा निर्भीकता और खरेपन के साथ काम लिया है।

---

१. Eyes of Asia
२. The Fumes of the Heart
३ The White Man's Burden

रुडल्फ यूकेन

१६०८ ई० का नोबल पुरस्कार रुडल्फ यूकेन नामक जर्मन दार्शनिक को मिला यूकेन महाशय जेना विश्वविद्यालय के दर्शनाध्यापक थे। अध्यापक मॉमसन के बाद य दूसरे जर्मन विद्वान थे, जिन्हे यह गौरवपूर्ण पद प्राप्त हुआ।

रुडल्फ यूकेन का जन्म १८४६ ई० मे ऑरिच नामक स्थान मे हुआ था। इन पूर्व जिन लोगो को नोबल पुरस्कार मिला था, उनकी अपेक्षा इनको अल्प अवस्था ही पुरस्कार मिला था, इसलिए ये पुरस्कार प्राप्त होने के बाद लिखने तथा व्याख्या देने का काफी कार्य कर सके थे। अधिक अवस्था हो जाने पर उन्होने उन दिनो प्रचलित जडवाद के विरुद्ध प्रचार करने मे अपना समय लगा दिया था। वास्तव यूकेन महोदय को आदर्शपूर्ण रचनाओ के कारण ही पुरस्कार मिला था। उन्हो अपनी आत्मकथा मे लिखा है "मेरा जीवन जीवन के बहिर्मुख बनने के विरुद्ध यु करने मे लगा है। आजकल वास्तव मे यह किसी व्यक्ति का दुर्गुण होने के बदले राष्ट्र का दुर्गुण बन गया है, और इसमे अब मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है। जो भ व्यक्ति आध्यात्मिक सुधार मे विश्वास रखता है, आशा है कि वह मेरी तुच्छ सेवाअ मे सहयोग देगा।"

पूर्वी फ्रीसलैंड के सूबे की भूमि, जहा यूकेन महोदय का जन्म हुआ था, कृ और व्यापार का केन्द्र है। यह प्रान्त हालैण्ड से मिला हुआ है। यहा मछलिया पकडन का धन्धा भी खूब चलता है। ऑरिच भी व्यापार का केन्द्र है। बालक यूकेन क बचपन कुछ सुखद ढग से नही व्यतीत हुआ। ये अपने माता-पिता की प्रथम सन्ता थे और ये अभी पाच ही वर्ष के हुए थे कि इनके पिता का देहान्त हो गया। इसके बाद युवावस्था तक इनके ऊपर विपत्ति पर विपत्ति पडती गई। बचपन मे एक पद मे लगा हुआ छल्ला आधा निगल जाने के कारण इनका गला चिर गया और उसे निकालने की चेष्टा मे और भी गहरा घाव हो गया। इसके कुछ समय बाद उन्हे लाल बुखार आ गया, जो चिकित्सा खराब होने के कारण अच्छा होने के बदले और बढ़ गया। कुछ समय के लिए तो उनकी आखे बेकार हो गई, पर पीछे इन्हे दिखाई देने लगा। इनके कुछ बड़े हो जाने पर इनका एक छोटा भाई मर गया, जिससे परिवार और भी शोक-सतप्त हो उठा।

रुडल्फ यूकेन की प्रवृत्ति लडकपन से ही पढने-लिखने की ओर थी। इनके पिता डाक विभाग की नौकरी मे थे और वे एक अच्छे गणितज्ञ थे। इनकी माता एक पादरी की लडकी थी, और उन्होंने विज्ञान का अच्छा अभ्यास किया था। उनकी अभिलाषा यह थी कि उनका पुत्र योग्य बने। अपनी आत्मकथा मे यूकेन ने अपनी माता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। ऑरिच की पाठशाला मे पढने के समय से ही यूकेन गणित और सगीत मे दिलचस्पी लेने लगे थे। इनके ऊपर इनके अध्यापक रूटर, लीज और टीगमुलर का अच्छा प्रभाव पडा था। कुछ समय तक तो यह बर्लिन विश्वविद्यालय मे थे, इसके बाद अध्यापन-कार्य के परीक्षण मे सफल हो जाने पर बैसेल मे दर्शन पढाने लगे। वहा इनके साथ इनकी माता भी गई, किन्तु उनका देहान्त हो जाने के कारण इनका सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने का कार्यक्रम बिगड गया।

बैसेल विश्वविद्यालय उन दिनो शैशवावस्था मे था। यूकेन ने वहा के विद्यार्थियो से अच्छी घनिष्ठता प्राप्त कर ली। उन्होंने अरस्तू आदि प्राचीन दार्शनिको की कृतियो पर टीका-टिप्पणी के साथ पुस्तके लिखनी शुरू कर दी थी। सन १८७३ ई० मे वे जेना विश्वविद्यालय मे बुलाए गए, जहा उनका कुनो, फिशर हैकेल और हाइल्ड ब्रैण्ड जैसे प्रख्यात दार्शनिको के साथ सम्पर्क हुआ। सन् १८७८ ई० मे इनकी दर्शन-सम्बन्धी पुस्तक 'वर्तमान दार्शनिक विचारो के मौलिक भाव'[1] प्रकाशित हुई, जिसके फलस्वरूप प्रत्येक सभ्य देश मे इनका और जेना विश्वविद्यालय का नाम विख्यात हो गया। एल विश्वविद्यालय के प्रेसीडेण्ड नोह पोर्टर के अनुरोध करने पर प्रोफेसर एम० स्टूअर्ट फेल्प्स ने उपर्युक्त जर्मन पुस्तक का अग्रेजी अनुवाद किया था।

सन् १८८२ ई० मे यूकेन महोदय ने आइरेन पैसो नामक लडकी से विवाह किया। इसके कारण उनका सामाजिक नेताओ से अधिक परिचय हो गया। यूकेन का कथन है कि उनकी स्त्री सुशिक्षित नही थी, किन्तु उनमे आध्यात्मिकता, कला-प्रेम और प्रबन्ध शक्ति अच्छी थी। यूकेन महोदय की सास एथेस के प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता अलरिच की पुत्री थी, इसलिए इस विवाह से यूकेन महाशय का परिचय वैज्ञानिको और इतिहासज्ञो मे खूब हो गया। इसके बाद उन्होने आधुनिक दर्शन और मानव-जीवन पर अनेक पुस्तके लिखी। कितने ही जडवादी और अद्वैतवादी जर्मन विद्वानो ने यूकेन के ग्रन्थो की कडी आलोचनाए की—जर्मनी के पत्र-पत्रिकाओ ने उनकी रचनाओ को उपेक्षा की दृष्टि से देखा। यूकेन की ख्याति उस समय हुई जब उन्होने धार्मिक दर्शन पर पुस्तके लिखनी आरम्भ की। इस प्रकार की पुस्तको मे 'धर्म की सत्यता'[2] और 'क्या हम अब भी ईसाई रह सकते है ?'[3] ने उन्हे काफी प्रख्यात बना दिया और हालैंड, फ्रास, इगलैण्ड तथा अमेरिका से ये इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए

---

१. The Fundamental Concepts of Modern Philosophic Thoughts

२. The Truth of Religion

३. Can We Still Be Christians ?

आमन्त्रित हुए।

उनकी बाद मे लिखी हुई पुस्तको मे से कुछ ने सन् १६०८ ई० मे उन्हे नोबल-पुरस्कार-विजेता बनाया। उन्हे इस बात की बिलकुल आशा नही थी कि उन्हे कभी नोबल पुरस्कार मिल सकता है, इसीलिए जब यकायक उन्हे पुरस्कार मिलने का समाचार मिला, तो ये अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुए। इसके पश्चात इन्हे 'स्वीडिश एकैडमी ऑफ साइन्स' (स्वीडन की विज्ञान-परिषद) ने अपना सदस्य बना लिया। जब फ्रास, हालैड और इग्लैड ने यूकेन का आदर किया, तो जर्मनी के पत्र-पत्रिकाओ ने उनके ग्रन्थो की तीव्र आलोचना करनी बन्द कर दी। १६११ ई० मे वे इग्लैड गए और बाद मे व्याख्यान देने के लिए अमेरिका भी पहुचे। अमेरिका मे वे अस्थायी रूप से अध्यापन-कार्य करते रहे और क्रमश हार्वर्ड और कोलम्बिया विश्वविद्यालयो तथा बोस्टन के लॉवेल इन्स्टीट्यूट और स्मिथ कॉलेज के लेक्चरर रहे। उनके साथ उनकी स्त्री और लडकी भी अमेरिका गई और उन्होने मूर तथा मस्टरवर्ग का आतिथ्य स्वीकार किया।

यूकेन महोदय की वे रचनाए जो धर्म से सम्बन्ध रखती थी, इग्लैड और अमेरिका मे खूब प्रचलित हुई। मीरिबूथ ने उनके कितने ही निबन्धो का भी अनुवाद किया था। लुसी जन गिब्सन और डब्ल्यू० आर० ब्वायस गिब्सन ने उनकी 'ईसाई धर्म और नये आदर्श'[१] तथा 'जीवन का अर्थ और मूल्य'[२] नामक पुस्तको का अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कराया। इनकी अन्य पुस्तको मे 'धर्म और जीवन'[३] काफी प्रसिद्ध है। 'नीति-शास्त्र और आधुनिक विचार'[४] भी उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तको मे से है।

यूकेन महाशय की तुलना विद्वानो ने प्राय दो अन्य आधुनिक विचारको—राडल्फ हारनक और हेनरी बर्गसन के साथ की है। इनमे से पहले महोदय तो लिपजिग और बर्लिन विश्वविद्यालयो मे अध्यापक थे और 'ईसाईपन क्या है ?'[५] और 'पथो का इतिहास'[६] नामक क्रातिकारी पुस्तके लिखी थी, और दूसरे महाशय ने दर्शन पर कई अधिकारपूर्ण पुस्तके लिखी थी।[७] ई० हर्मन नामक प्रसिद्ध जर्मन विद्वान ने यूकेन और बर्गसन की तुलना करते हुए लिखा है "यूकेन कदाचित् वर्तमान समय के सर्वश्रेष्ठ विचारक है, क्योकि वे एक ऐसे नये आदर्श के प्रतिपादक है, जो हमारी वर्तमान नैतिक माग की पूर्ति करता है। इस प्रकार का कार्य अब तक किसी भी आदर्शात्मक दर्शन ने नही किया था। इन्होने नैतिक आदर्शवाद की धार्मिक उलझनो को भली प्रकार सुविकसित करके समझाया है। इनकी 'जीवन की दार्शनिकता' आध्यात्मिक उच्चता

---

१ Christianity and the New Idealism
२ The Meaning and Value of Life ३ Religion and Life
४. Ethics and Modern Thoughts
५ What is Christianity ? ६ History of Dogmas
७ इनकी 'Creative Philosophy' अधिक विख्यात है।

की सहायक है, वाधक नही ।"

नोवल पुरस्कार प्राप्त करने के वाद २७ मार्च, १६०६ ई० को यूकेन ने स्टॉक-होम मे व्याख्यान देते हुए कहा था "हम लोग एक ऐसे जमाने मे गुजर रहे है जब 'परम्परा एक सन्दिग्ध वस्तु मान ली गई है और हमारे जीवन का पथ-प्रदर्शन करने के लिए नये विचारो मे सघर्ष हो रहा है ।" आगे चलकर 'जडवाद और आदर्शवाद' पर अपने विचार प्रकट करते हुए यूकेन ने वतलाया है कि जडवाद का मतलव 'मनुष्य के साथ प्रकृति के सम्वन्ध मे विश्वास' है, आदर्शवाद इस विश्वास को स्वीकार करता है, किन्तु यह प्रश्न करता है कि क्या समस्त जीवन यही है, या इस (जीवन) का और भी कोई रूप है। उन्होने 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' का प्रभाव स्वीकार किया है किन्तु केवल उपयोगितावाद की दृष्टि से नही। उन्होने यह भी कहा कि जीवन केवल एक सीमित तथ्य का प्रतिविम्ब न होकर कुछ ऊची चीज है, वह दूसरे 'लोक' मे जाता नही, वरन् उस (दूसरे लोक) का निर्माण करता है। आदर्शवाद, जो दैनिक जीवन के प्रसार से कोई सम्वन्ध रखता है, कोई आदर्श नही रखता । आज कोई नया आदर्श ही नही रहा, क्योकि हम जडवाद की निर्दिष्ट सीमा को पार कर चुके है । हमे अव क्षण-स्थायी सस्कृति से ऊपर उठकर किसी अधिक हृदयग्राही और चिरस्थायी वस्तु की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

यूकेन के उपर्युक्त आदर्शात्मक विचारो ने ही उन्हे शिक्षक, दार्शनिक और लेखक के रूप मे ऐसा प्रख्यात वना दिया कि अन्त मे उन्हे नोवल पुरस्कार-समिति ने पारितोषिक देने मे अपनी प्रतिष्ठा समझी और इस प्रकार उनका सार्वभौम आदर वढाया । यूकेन महोदय का देहान्त १४ सितम्बर, १६२६ ई० को हुआ और इस प्रकार उन्होने दार्शनिक की पूर्ण अवस्था का उपभोग किया ।

सेल्मा लागरलोफ

१६०६ ई० का साहित्यिक मुकुट सेल्मा लागरलोफ नामक स्वीडिश महिला के सिर बधा। सेल्मा के पिता लेफ्टिनेट लागरलोफ बडे ही खुशदिल, साहसी और विख्यात पुरुष थे। सेना से अवकाश प्राप्त करके वे घर पर ही रहते थे और प्राय अपने पुराने साथियो की मेहमानदारी और आव-भगत मे लगे रहते थे। सेल्मा की शिक्षा का उन्हे खास खयाल था और वे उन्हे स्वीडन का प्राचीन इतिहास और अपने वश की परम्परागत कथाए बडे चाव से सुनाते थे। आगे चलकर सेल्मा ने अपनी पहली कहानी मे गोस्टा बर्लिंग नामक नायक का जो चित्रण किया, उसका मूल रूप उन्होने अपने पिता की कही हुई एक कहानी से लिया था। उस मनुष्य का चित्रण इतना आकर्षक है कि पाठक उसपर मुग्ध हुए बिना नही रह सकते। वह आदमी गायक है, कवि है, नृत्यकला-विशारद है, और जब वह सामाजिक सम्मेलन मे नाचने लगता है तो दर्शको के अग थिरक उठते है, किन्तु यह सब होते हुए भी उसमे एक बडी त्रुटि है और वह है पुरुषोचित गुणो का अभाव। सेल्मा लागरलोफ को माता एक राजमत्री की कन्या थी और उनके पितृगृह मे दो पीढी से राज-मन्त्रित्व का ही कार्य होता था। इसलिए वह गृह-प्रबन्ध तथा मेहमानदारी करने मे पूर्णत पटु और सक्षम थी। 'दुलहिन का मुकुट'[1] नामक रचना मे सेल्मा ने अपने घरेलू अनुभव का सुन्दर चित्र खीचा है और घर मे बुढिया दादी छोटे बच्चो को जो कहानिया, किम्व-दन्तिया और पारिवारिक इतिहास सुनाया करती है, उनका उन्होने अनुभवपूर्ण वर्णन किया है।

सेल्मा की अवस्था जब केवल साढे तीन वर्ष की ही थी तभी अपने पिता के साथ एक तालाब मे नहाने के कारण उन्हे एक प्रकार के लकवे की सी बीमारी हो गई थी। इससे स्वस्थ होने मे काफी समय लग गया और इसका कुछ न कुछ असर तो उनके जीवन भर रहा। 'मारबाका' नामक रचना मे उन्होने अपने बाल्यजीवन की छाप-सी लगा दी है। उनमे पर्यवेक्षण शक्ति कैसी तीव्र थी, इसका अनुमान उनकी पुस्तको मे वर्णित पशु-पक्षियो के जीवन से किया जा सकता है। फूलो के सौन्दर्य का वर्णन उन्होने बडे ही आकर्षक ढग से किया है।

बचपन मे कुमारी सेल्मा लागरलोफ पर सबसे अधिक प्रभाव बेलमैन की स्फुट

---

१ The Br.dal Crown

कविताओ का पड़ा था, क्योंकि उनमे हास्य, करुणा और संगीत का अद्भुत सामंजस्य है। जिस समय कुमारी लागरलोफ स्टॉकहोम के 'शिक्षक महाविद्यालय'[१] के पच्चीस चुने हुए उम्मीदवारो मे हो गई और उन्होने वैलमैन, रयूनबर्ग तथा उनकी कविताओ के सम्बन्ध मे व्याख्यान सुने तो अकस्मात् भावुकता के अतिरेक से वे अनुप्राणित हो उठी और उन्होने निश्चय किया कि वे इस प्रकार की कहानिया स्वय लिखेगी और उनमे प्रचलित किस्से, कहानियो और किम्वदन्तियो का प्रचुर रूप मे उपयोग करेगी। उनके मन मे कविता और नाटक लिखने की अभिलाषा अल्पावस्था मे ही हो गई थी। अपने चाचा के पास स्टॉकहोम जाकर उन्होने उसी अवस्था मे नाटक देखने के बाद यह निश्चय कर लिया था और जिस रात को नाटक देखा था, उस रात ऐसी ही भावना मे जागकर 'प्रार्थना' आदि सम्बन्धी पद्य लिख डाले थे।

स्नातिका होने के पश्चात् वे लैंडूस्क्रोना नामक स्थान मे अध्यापिका का काम करती रही और समय बचाकर कुछ लिखने का विचार भी किया करती थी, किन्तु पाठशाला के कार्य से उन्हे अवकाश ही नही मिलता था। ऐसी अवस्था मे वे विद्यार्थियो को अपनी कहानिया जवानी सुनाकर ही सन्तोष कर लिया करती थी। छुट्टियो मे वे अपने पुराने घर मे आकर कुछ न कुछ लिखने का अवसर प्राप्त करती रहती थी। उनकी 'गोस्टा वर्लिंग की कहानी' का पहला अध्याय वडे दिन की छुट्टियो मे घर पर ही लिखा गया था। पहले उन्होने इस कथा को पद्यात्मक रूप मे लिखा, फिर उसे नाटक का रूप देना चाहा और अन्त मे उसे सक्षिप्त कहानी के रूप मे लिखकर तैयार किया। बाद मे उन्होने इसी प्रकार की अन्य कहानिया भी लिखी और १८९० ई० मे अपनी बहन के अनुरोध पर इन्होने ये कहानिया एक पुरस्कार की प्रतिस्पर्द्धा के लिए भेज दी। यह पुरस्कार 'आइडन' नामक पत्रिका की ओर से दिया जानेवाला था। जब उक्त पत्रिका ने यह विज्ञप्ति निकाली कि कई कहानिया तो ऐसे अस्पष्ट रूप मे लिखी हुई आई है कि उन्हे प्रतिस्पर्द्धा के लिए रखा भी नही जा सकता, तो कुमारी लागरलोफ ने समझा कि वे उन्हीकी कहानिया होगी पर बाद मे उन्हे बधाई का तार मिला कि वह सफल हुई है।

फिर क्या था! उस पत्रिका के सम्पादक महोदय ने प्रस्ताव किया कि कुमारी लागरलोफ उस कहानी के कथानक पर शीघ्र ही एक उपन्यास लिख डाले। अन्तत: सेल्मा ने पाठशाला से छुट्टी ले ली और स्वीडन की किम्वदन्तियो के आधार पर एक उपन्यास लिख डाला जिसमे हास्य के साथ-साथ कोमल आदर्शवाद भी सम्मिलित था, किन्तु कुमारी लागरलोफ को उससे स्वय भी सन्तोष नही हुआ और वह उन्हे असम्बद्ध-सा लगा। इसके बाद उन्होने 'जेरूसलम' और पोर्टूगालिया के सम्राट'[२] की रचना की। 'लन्दन टाइम्स' मे ये दोनो ही उपन्यास प्रकाशित हुए और इनसे कुमारी सेल्मा का काफी

---

१ Teacher's College

२. The Emperor of Portugallia बहुत-से लोग इसे लेखिका की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते है।

नाम हुआ। उनकी लेखन-शैली और विचार-धारा ने सबको अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उनकी रचनाओ मे 'पियक्कड और फक्कड कवि गोस्टा बर्लिग' 'बेला बजानेवाली लिलीक्रोना' ('पोर्टूगालिया के सम्राट' की नायिका) और 'गोल्डन सनीकैसिल' का चरित्र-चित्रण बडा ही विमोहक है।

उनकी सक्षिप्त कहानियो का सग्रह सन् १८९४ ई० मे 'अदृश्य शृङ्खला'[1] के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसमे किसानो, मछुओ, बच्चो और पशुओ के अन्तरात्मक सम्बन्ध का विश्लेषण सुन्दर रूप मे किया गया है। इसके बाद कुमारी लागरलोफ को साहित्यिक सेवाओ के बदले स्वीडिश एकैडमी, सम्राट आस्कर और उनके पुत्र राजकुमार यूजेन से वार्षिक पुरस्कार मिलने लगे। इसके बाद एक मित्र के साथ वे इटली और सिसली गई और वहा के पर्यवेक्षणो और अनुभवो को 'खीष्ट-विरोधी के चमत्कार'[2] नामक रचना मे लिखा, जो १८९७ ई० मे प्रकाशित हुई थी, और दो ही वर्ष बाद जिसका अग्रेजी अनुवाद भी पालिन बैंक्राफ्ट फ्लैच ने कर डाला था। उपर्युक्त दो पुस्तके 'स्टोरी आफ गोष्टा बर्लिग'[3] तथा अदृश्य शृङ्खलाए' का अनुवाद भी उन्होने किया था। 'खीष्ट-विरोधी के चमत्कार' मे उन्होने प्राचीन 'सिसिली की परम्पराओ और कविताओ तथा आधुनिक साम्यवाद और धर्म पर उसके प्रभाव का सघर्ष सुन्दर रूप मे चित्रित किया है। इसके लिखने मे उन्होने अपनी सुकुमार कल्पना और तीव्रता दोनो ही का सुन्दर उपयोग किया है। इसमे एक अग्रेज स्त्री के चातुर्य का वर्णन है, जो हजरत ईसा की बाल-मूर्ति देखकर रोम के किसी गिरजे मे लुब्ध हो जाती है और उसे अपना समस्त वैभव देकर भी प्राप्त करना चाहती है। चमत्कार-वश कुछ ही सप्ताह बाद कृत्रिम मूर्ति गिर पडती है और उसकी जगह भगवान ईसा का वास्तविक बालरूप सामने खडा हो जाता है। खीष्ट-विरोधी को इस घटना के बाद सिसिली भेज दिया जाता है। कुमारी लागरलोफ ने पोप के मुह से – फादर गोण्डो से—यह कहलवाया है कि खीष्ट-धर्मावलम्बियो और उनके विरोधियो मे एकता इस प्रकार स्थापित हो सकती है कि आप अपने कार्यो द्वारा विरोधियो पर यह प्रमाणित कर दे कि वे जो कुछ कर रहे है वह ईसा का अनुकरणमात्र है। इससे वे ईसा की शरण मे आ जाएगे।

१८९९ ईस्वी मे उन्होने अपनी सुन्दर कृति 'फ्राम ए स्वेडिश होमस्टीड'[4] प्रकाशित कराई जिसमे 'देहाती घर की कहानी' भी थी। सम्राट का खजाना'[5] भी इस सग्रह की प्रसिद्ध कहानियो मे से है।

नोबल पुरस्कार मिलने के पूर्व उनकी दो सुन्दर रचनाए—'जेरूसलम और 'नाइल्स का महोद्यम[6] और प्रकाशित हो गई थी। उनकी इस दूसरी रचना का फल

---

१ Invisible Links
२ Miracles of Antichrist
३ Story of Gosta Berling
४ From a Swedish Homestead
५ The Emperor's Money-Chest
६. The Wonderful Adventure of Nils

यह हुआ कि १८६६ ई० मे स्वीडिश सरकार ने उन्हे अपनी ओर से पलेस्टाइन भेजा। वहा उन्हे यह कार्य दिया गया कि वे स्वीडिश प्रवासियो का, जो 'नान' से जाकर वहा बसे है, वृत्तान्त लिखे। वहा वालो की बीमारी और दरिद्रता की अफवाह उडने के कारण स्वीडिश सरकार ने ऐसा किया था। कुमारी लागरलोफ ने वहा का वास्तविक हाल लिखते हुए बतलाया कि अवस्था उतनी भयावह नही है जितनी कि अफवाह से मालूम होती है—पर ये दोनो कष्ट उक्त उपनिवेश के स्वीडिश प्रवासियो को अवश्य है। इसी यात्रा मे 'उन्होने जेरुसलम' लिखने का कथानक और उपकरण प्राप्त किया। 'क्राइस्ट दन्तकथाए'[1] भी इसी यात्रा के बाद लिखी गई जो श्रीमती हॉवर्ड द्वारा अनुवादित होकर १६०८ ई० मे प्रकाशित हुई थी।

'एलिस इन वण्डरलैण्ड' और 'डाक्टर डुलिटिल' की तरह 'दि वण्डरफुल एडवैचर्स आफ नील्स' और 'फर्दर एडवैचर्स आफ नील्स' भी विद्यार्थियो के लिए बडी ही उपयोगी पुस्तके है और समस्त सभ्य ससार मे चाव से पढी जाती है।

इस प्रकार पाठक देखेगे कि नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के पूर्व कुमारी सेल्मा लागरलोफ ने पर्याप्त रूप से साहित्यिक उन्नति कर ली थी। १६०६ ई० मे यह पुरस्कार प्राप्त करने के पहले ही उन्हे स्वीडिश एकैडमी ने स्वर्णपदक प्रदान किया था। उपसाला विश्वविद्यालय ने उन्हे एल-एल० डी० की उपाधि से भी पहले ही विभूषित कर दिया था। जिस समय स्टॉकहोम मे इन्हे पुरस्कार दिया गया तो वहा मेला लग गया था और सम्राट गस्टेव पचम ने ग्राण्ड होटल मे इन्हे दावत दी थी। इस अवसर पर कुमारी लागर-लोफ ने जो भाषण किया उसमे उन्होने बतलाया कि किस प्रकार लडकपन मे उनके पिता ने उनकी साहित्यिक भावनाओ को जाग्रत किया था।

कुमारी लागरलोफ को इक्यावन वर्ष की अवस्था मे नोबल पुरस्कार प्राप्त करने की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। उनके पुरस्कार-पत्र मे उनकी जन्मतिथि १८५८ ई० लिखी है। इन्हे पुरस्कार देने का कारण यह बतलाता गया है कि इनकी रचनाओ मे आदर्शवाद और आध्यात्मिकता के साथ-साथ सुन्दर कल्पना-शक्ति का अद्भुत सामजस्य है।

१६११ ई० मे जब अन्तर्राष्ट्रीय स्त्री-सुधार काग्रेस का अधिवेशन हुआ तो इन्होने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाषण किया था, जो ससार-भर के प्रमुख पत्रो मे अनुवादित होकर प्रकाशित हुआ था। इस भाषण मे उन्होने यह बताया कि गार्हस्थ्य सुख किस प्रकार समस्त ऐहिक सुखो की कुञ्जी है। इसी वर्ष उनका 'लिलिक्रोना का घर'[2] भी प्रकाशित हुआ जो तीन वर्ष बाद एनाबार्वेल द्वारा अनूदित होकर अग्रेजी मे भी प्रकाशित हुआ। इसमे बेला बजाने की मधुर और काव्यपूर्ण कल्पना की गई है। वह सगीत को ही अपना घर समझती है, और उसे ही विश्राम-स्थल, उसे छोडकर वह ससार मे और किसी वस्तु को कुछ मानती ही नही। तन्मयता का जैसा मनोमुग्धकारी वर्णन उपर्युक्त पुस्तक मे है, वैसा शायद ही कही अन्यत्र मिलेगा।

---

१. Christ Legend २ Lilliecrona's Home

यूरोपीय महायुद्ध के अन्त मे इनकी 'बहिष्कृत'[1] नामक पुस्तक स्वीडिश भाषा मे प्रकाशित हुई, जिसका अनुवाद १९२२ ई० मे अमेरिका से प्रकाशित हुआ। इसके कथानक के उत्तरार्द्ध मे ससार-व्यापी महायुद्ध का भी प्रासगिक वर्णन है। यद्यपि सेल्मा का देश स्वीडन उस युद्ध मे तटस्थ ही रहा था पर लेखिका के मन पर नर-सहार का कैसा प्रभाव पडा था, इसका परिचय इस पुस्तक से मिल जाता है। उन्होने पवित्र मनुष्य-जीवन पर आए हुए घोर सकट की निन्दा की, और युद्ध के कुप्रभावो का चित्रण किया है। इसके बाद उनकी आरम्भिक कहानियो का भी अग्रेजी अनुवाद 'खजाना'[2] नाम से प्रकाशित हुआ है। ये कहानिया साधारण कोटि की है।

कुमारी लागरलोफ को आरम्भ मे ही नाटक लिखने की अभिलाषा थी, और यह अभिलाषा हमेशा जागृत रही। उनके कुछ नाटक स्वीडन, डेनमार्क और नार्वे मे सफलतापूर्वक खेले गए। इनमे से 'मार्शक्राफ्ट की लडकी'[3] की फिल्म भी बन गई और वह अमेरिका आदि सभी देशो मे दिखलाई गई। 'गोस्टा बर्लिग की कहानी' की भी फिल्म बन गई जो स्वीडन तथा यूरोप के अन्य देशो मे अच्छी चली। उनका देहान्त १९४० ई० मे हुआ।

कुमारी लागरलोफ छ भाषाए अच्छी तरह पढ-लिख लेती थी और वे सभी देशो की समस्याओ का थोडा-बहुत ज्ञान रखती थी। यद्यपि रचनाओ की दृष्टि से वे एक जातीय या राष्ट्रीय विचार की कही जा सकती है। किन्तु जीवन की समस्याओ की अन्तर्दृष्टि और सहानुभूति की दृष्टि से वे एक अन्तर्राष्ट्रीय विभूति कही जा सकती है। पुरस्कार-प्राप्ति के बाद वे स्वीडिश एकैडमी की सदस्या भी चुन ली गई जो ससार मे स्त्री-जाति का अपने ढग का पहला सम्मान था। एडविन जार्कमैन ने अपने 'वाइसिज ऑफ टुमारो' मे उनके सम्बन्ध मे लिखा है, कि वे एक स्वप्नदर्शी, भावनामयी और अभिलाषापूर्ण महिला थी।

लागरलोफ की आरम्भिक रचनाओ मे 'लावेनस्कोल्ड्स की अगूठी' भी है जिसमे जनश्रुतियो, रीति-रिवाजो और हास्य-परिहासो का जीवित चित्र खीचा गया है—यह चित्र स्थानीय होते हुए भी विश्व-भर के पाठको के लिए मनोरजन की चीज है।

१　The Outcast

२.　The Treasure

३.　The Girl from the Marshcraft　इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'बहिष्कार' नाम से विश्व-वाणी ग्रथमाला, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है।

पॉल हीज़

१६१० ई० मे साहित्य का नोबल पुरस्कार पॉल हीज को मिला। जॉन लड्विग पॉल हीज का जन्म १५ मार्च, सन् १८३० ई० मे बर्लिन मे हुआ था। इनके पिता भाषा-तत्त्व-विशारद और बर्लिन विश्वविद्यालय मे अध्यापक थे। इनकी माता एक धनिक यहूदी परिवार की लडकी थी। अपनी माता के जो सस्मरण हीज महोदय ने लिखे है, उसमे उन्होने अपनी माता के सम्बन्ध मे लिखा है कि वे बडे ही उत्तेजनापूर्ण और भावुक स्वभाव की थी। कहानी कहने और सनसनीपूर्ण ढग की बाते सुनने मे यह गुण इनकी माता को अपने पिता से मिला था। युक्तिवाद और तर्कवाद के गुण भी इन्हे अपने पिता से ही प्राप्त हुए थे। हीज-परिवार मे प्राय विद्वान लेखक और कलाविद् इकट्ठे हुआ करते थे, इसलिए बालक हीज के लिए पहले से ही उत्तम विकास के साधन प्रस्तुत थे। कुगलर नामक एक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ से बालक पॉल हीज की मित्रता हो गई और आगे चलकर कुलगर महोदय की ही लडकी के साथ पॉल का विवाह हुआ।

- वर्लिन से हीज जब बॉन विश्वविद्यालय मे गए तो वे स्पेनी भाषा की ओर आकर्षित हुए और उसमे कर्वेटस और कलडेरो की रचनाओ से बहुत प्रभावान्वित हुए। बाद मे १८४६ और १८५२ ई० मे उन्होने इटली का भी भ्रमण किया और दाते, बोकैसिवो तथा लिवोपार्डी की रचनाओ मे विशेष रस लेने लगे। इटली के कलाविदो ने योग्य पिता की इस योग्य सन्तान का अच्छा आदर किया और उन्होने भी इटली को बहुत पसन्द किया। उन्होने इटली के लिए लिखा है कि वास्तव मे यह रग और सौन्दर्य का देश है। शेक्सपियर की रचनाओ के वे प्रशसक थे। नाटक तथा प्रेम-काव्य लिखने की ओर उनकी विशेष प्रवृत्ति थी। खण्ड-काव्य लिखने की ओर भी इन्होने विशेष रूप से ध्यान दिया था। १८५४ ई० मे बवेरिया के बादशाह ने इन्हे म्यूनिच के न्यायालय मे १५०० फ्लोरिन[1] प्रति मास पर जगह दी। म्यूनिच वास्तव मे ऐसी जगह थी जहा उनका सौन्दर्य-प्रेम सन्तुष्ट हो सकता था और उनकी मेधाशक्ति का विकास हो सकता था। लुई प्रथम के समय मे म्यूनिच मे सुन्दर भवनो का निर्माण हुआ था। वैसे भी म्यूनिच एक सुसस्कृत स्थान था। हीज़ की मित्रता गीबल, बाडेनस्टट, विलब्रैड, लॉग आदि कवियो और विद्वानो से हो गई। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ शेक से भी

---

१. बवेरिया का सिक्का

इनकी काफी घनिष्ठता हो गई। १८६८ ई० मे जब बादशाह मैक्स के उत्तराधिकारी लुई द्वितीय ने गीवल का अपमान किया और उन्हे नगर छोड देने की आज्ञा दे दी, तो हीज को इस बात से बडा दु.ख हुआ। उन्होने म्यूनिच को मृत्यु (१९१४ ई०) पर्यन्त नही छोडा।

जीवन के आरम्भ से सम्पन्न घराने मे पलते और सदा सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करते रहने पर भी उन्होने अपनी रचनाओ मे मछुओ, किसानो और अन्य देहातियो का चित्रण करने मे काफी सफलता प्राप्त की थी। उनकी रचनाओ मे 'सलामनदर', 'ससार के बच्चे'[१] तथा 'ला अरेवियाटा' सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। ऐंटोनियो नामक नाविक से एक कुमारी का प्रेम हो जाता है, पर जब तक कि उस (नाविक) की बाह मे चोट नही लग जाती, तब तक वह उस प्रेम को रोकती है। फिर अपनी माता की स्मृति मे उसकी क्या अवस्था होती है और उस प्रेम का कैसा अद्‌भुत परिणाम होता है, यह वर्णन पढने योग्य है। पच्चीस वर्ष बाद हीज सॉकेण्टो वापस आए।

हीज महोदय की रचना-शैली बालजाक और तुर्गनेव की शैली से मिलती-जुलती है, क्योकि उनका वर्णन प्राय सक्षिप्त किन्तु सारगर्भित होता है और एक ऐसा वातावरण पैदा कर देता है जो स्मृति मे जीवित रहता है। इस प्रकार की कहानियो के उदाहरण 'बारबरोसा', 'ऐट दी घोस्ट आवर'[२] और 'मृतक झील'[३] है।

बाद के उपन्यासो मे हीज महोदय ने अद्‌भुतता के बदले अधिकाश रूप मे यथार्थ-वाद दिखलाने की चेष्टा की है, परन्तु इन्द्रिय-ग्राह्य सौन्दर्य को उन्होने सदा और सर्वत्र प्रधानता दी है। वह कभी तबियत पर जबर्दस्ती दबाव डालकर नही लिखते थे, जब मन मे उमग उठती थी और कुछ लिखने की इच्छा होती थी तभी लिखने को बैठते थे। उनकी 'सुख के बाद यात्रा'[४] जैसी छोटी कहानी से लेकर 'ससार के बच्चे' और 'स्वर्ग मे'[५] जैसे बडे नाटको तक मे प्राय यह बात दिखलाई गई है कि प्रकृति के विरुद्ध जाना ही पाप है। ये भाग्यवादी और भोगवादी दोनो ही थे। इनकी रचनाओ मे और विशेषत 'दि सेबाइन ओमन'[६] मे स्त्री के अन्दर आतम-दमन और आतम-समर्पण की मात्रा कितनी अधिक होती है, यह दिखलाया गया है। 'ससार के बच्चे' मे उन्होने बतलाया है कि बाह्य रूप से कष्ट होते हुए भी जीवन सुख से पूर्ण है और हम उसे न केवल उद्‌बोधित कर सकते है वरन् हम भूत और भविष्य का अनुभव भी कर सकते है और सब मिलाकर जीवन मे आनन्द की अनुभूति अच्छे रूप मे कर सकते है।

हीज महोदय ने साठ से अधिक नाटक जर्मन भाषा मे लिखे है, किन्तु उनमे से बहुत थोडे नाटको का अग्रेजी मे सुन्दर और सफल अनुवाद हुआ है और रगमच पर वे

---

१ Children of the World
२ At the Ghost Hour
३. Dead Lake
४. Journey After Happiness

प्राय. असफल रहे है—'हैंसलैंज', 'हैड्रिअन ओलबर्ग' और 'मेरी आफ मागदला' (लेखक के अन्तिम नाटक) का अनुवाद विलियम विटर और लायनल वेल ने अंग्रेजी मे अच्छा किया है। कोलबर्ग मे जोपफेन नामक वृद्ध दार्शनिक का चित्रण उन्होने अपने पिता के चरित्र के आधार पर किया है। 'निर्वासितगण' मे उन्होने फ्रान्स, जर्मनी और प्राग के युद्धो का वर्णन ऐसे सजीव ढग से किया है कि उसे पढकर उत्साह और आत्मबलिदान की भावना प्रज्ज्वलित हो उठती है। 'फेनिन' नामक कहानी मे उन्होने एक किसान की लडकी का चरित्र-चित्रण किया है जो इन्द्रिय-लिप्सा की अपेक्षा बुद्धिवाद की ओर अधिक ध्यान देती है। इसमे लेखक के उस सिद्धान्त का प्रतिपादन जोरदार ढग से हो जाता है कि हृदय की उत्तेजना के अनुसार कार्य कर बैठना अवाञ्छनीय है। बाद मे उन्होने जो कहानिया लिखी है, उनमे 'लास्ट सेण्टार' मे तत्कालीन जडवाद के विरुद्ध काफी विद्रोहात्मक भाव प्रकट किए गए है। 'असाध्य'[1] और 'अन्धा'[2] भी उनकी सुन्दर कृतियो मे से है। हीज महाशय पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो के चरित्र-चित्रण मे अधिक सफल हुए है। इसीलिए उनको बहुत-से जर्मन साहित्यिक 'तरुणियो के प्रेमी' कहा करते थे। उनकी रचनाओ मे कही-कही महाकवि गेटे के विचारो की झलक स्पष्ट दिखाई देती है - विशेषकर 'काइण्डर-डर वेल्ट', 'दि वॉण्डरर आफ ट्रेविसो', 'उडाऊ पूत'[3] और स्पेल आफ रादेनबर्ग' मे तो उक्त बात पर्याप्त मात्रा मे पाई जाती है।

हीज महोदय की गद्य-रचना पद्य की अपेक्षा अधिक सफल हुई है। इनके पद्य-ग्रन्थो मे तो केवल 'सलामनन्दार', 'दि फ्यूरी' और 'दि फेयरी चाइल्ड' अधिक ख्याति पा सके है। इनके अन्दर कोमल भावना, सौन्दर्य और आदर्श पर्याप्त परिमाण मे पाए जाते है।

हीज का शरीरान्त १९१४ ई० मे हो गया।

---

१. The Incurable   २. The Blind

३. Prodigal Son

मटरलिंक

मॉरिस मैटरलिक को १६११ ई० मे नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था, इसलिए इस पुरस्कार की दशाब्दी हो चुकने के कारण काफी ख्याति प्राप्त हो चुकी थी और नये-नये लेखक साहित्यिक प्रतिद्वन्द्विता मे आने लगे थे। मैटरलिक को नोबल पुरस्कार उनकी बहुमुखी साहित्यिक क्रियाशीलताओ और विशेषकर उनकी उन नाटकीय रचनाओ के लिए मिला है जो कल्पना और काव्योचित आदर्श से ओतप्रोत है। उनकी कृतिया ऐसी रहस्यपूर्ण रीति से लिखी गई है कि सहृदय पाठक उनसे अनुप्राणित होकर भावाकुल हुए बिना नही रह सकता।

१६११ ई० के पुरस्कार के सम्बन्ध मे साहित्यिक जगत् यह आशा कर रहा था कि इस बार वह किसी रूसी या अमेरिकन लेखक को मिलेगा, किन्तु यह गौरव वेल्जियम जैसे छोटे देश को प्राप्त हुआ। इनके अधिकाश नाटक फ्रेंच भाषा मे लिखे गए और उन्होने मैटरलिक को साहित्यिक जगत् मे शीघ्र ही विख्यात् बना दिया। इसके पहले वेल्जियम के कुछ ही लेखक साहित्यिक क्षेत्र मे थोडे-वहुत प्रसिद्ध हो पाए थे। चार्ल्स-वान-लर्वर्ग, हेनरी मावेल और एडमाण्ड पिकाई नामक वेल्जियन लेखको की रचनाए प्रकाश मे आ चुकी थी।

मैटरलिक का जन्म सन् १८६१ ई० मे बेल्जियम के घेण्ट नामक स्थान मे एक अच्छे घराने मे हुआ था। इन्होने वाल्यकाल मे अपने चारो ओर जो वातावरण देखा था, उसका दिग्दर्शन इनकी रचनाओ मे मिलता है— वाटिका, समुद्र और जहाजो का वर्णन इन्होने पूरी दिलचस्पी के साथ किया है। धुआ फेकते हुए छोटे-से चिराग के धुधले प्रकाश मे अपनी कुटिया के द्वार पर बैठे हुए किसानो का चित्रण उन्होने सुन्दर रूप मे किया है, और यह उनके वचपन के निरीक्षण का ही फल है। छोटे-छोटे वच्चो को स्कूल जाते देखकर उन्हे अपने वचपन की याद आ गई और उन्होने युवावस्था मे वालको के मनोविज्ञान का अध्ययन किया और उसे अपनी रचना मे स्थान दिया। वच्चो की अद्भुत परम्परा और उनके अकारण भय का प्रतिविम्ब उनके कुछ नाटको मे स्पष्ट झलकता है।

मैटरलिक के पिता की यह इच्छा थी कि उनका पुत्र कानून पढे इसलिए पहले उन्होने कानून का ही अध्ययन करके कुछ समय तक घेण्ट मे उसकी 'प्रैक्टिस' की। सात

वर्ष तक जेसूट कॉलिज मे अध्ययन करने पर उनकी विचारधारा दार्शनिकता की ओर झुकती प्रतीत हुई और उन्होने विचार किया था कि पेरिस मे रहकर वे साहित्यिको और विद्वानो की सगति का सुअवसर प्राप्त कर सकते है । वहा उन्होने विलियर्स से काफी घनिष्ठता प्राप्त कर ली थी । उनका दूसरा भावुक मित्र आवर्टव सिरावा था जिसे बाद मे मैटरलिक ने अपनी 'प्रिसेज मैलीन' और 'पेलियास एण्ड मेलीसादे' नामक रचनाए समर्पित की थी । सिरावा मैटरलिक का बडा प्रशसक था और उसे 'बेल्जियन शेक्सपियर' कहा जाता था ।

१८८९ ई० मे अपने पिता की मृत्यु के पहले मैटरलिक बेल्जियम वापस गए और उसके बाद सात वर्ष तक वही रहकर प्रकृति और तत्त्वविद्या का अध्ययन करते रहे तथा साथ ही प्रहसन और नाटक भी लिखते रहे । इसी बीच उन्होने कुछ अग्रेजी रचनाओ के फ्रेंच अनुवाद भी किए और इस प्रकार अग्रेजी की ओर आकर्षित हो गए । उन्होने इमर्सन नोवालिस और रुइसब्राक की मध्यकालीन गूढ रहस्यमय रचनाओ का अग्रेजी से फ्रेंच मे उसी समय अनुवाद कर लिया था जब ये जेसूट कॉलेज मे पढते थे । इमर्सन की दार्शनिक रचनाओ के उस भाग की उन्होने विशेष रूप से प्रशसा की है जिसमे उन्होने 'मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति की उच्चता और आत्मबल' का वर्णन किया है । उन्होने इमर्सन की प्रशसा करते हुए लिखा है "इमर्सन ने हमारे जीवन की महत्ता बताने के लिए जन्म धारण किया था।···उन्होने हमे स्वर्ग और पृथ्वी की सभी शक्तियो का दिग्दर्शन कराया है ।"

१८९६ ई० मे मैटरलिक बेल्जियम मे फिर पेरिस लौट आए और यही उन्होने अपना घर बना लिया। फ्रेंच एकैडमी का सदस्य बनने के लिए उन्होने अपनी बेल्जियम की नागरिकता का परित्याग नही किया । महायुद्ध के दिनो मे उन्होने अनेक प्रकार से अपने स्वदेश —बेल्जियम—की सेवा की । अधिकाश जीवन पेरिस मे व्यतीत करने पर भी उनकी स्वदेश-भक्ति कम नही हुई और उन्होने अपने को गौरवपूर्वक बेल्जियम-निवासी कहा है ।

१८८९ ई० से १८९६ ई० तक जिन दिनो वे बेल्जियम मे थे उन्होने 'दि ब्लाइड', 'दि इण्ट्रूडर', 'दि सेवेन प्रिसेज', 'अलादीन ऐण्ड पैलोमाइड्ज' और 'दि डेथ ऑफ टिंटाजिल्स' की रचना की थी । इनकी कृतिया रगमच पर लाने योग्य भी सिद्ध हुई और पाठोपयोगी भी । 'पेलिया और मेलीसादे' मे मेलीसादे की दुखद मृत्यु का उस समय दिखाना, जब वह अपने प्रणयी का वध और लडकी की पैदाइश देख चुकती है, नाट्य-कला की शक्ति का परिचय देता है । इनकी भाषा-शैली सरल और वर्णन का प्रवाह अत्यन्त परिमार्जित है ।

मैटरलिक की रचनाओ का अग्रेजी अनुवाद पहले-पहल रिचार्ड हॉवी नामक एक अमेरिकन कवि ने किया था, जिसकी युवावस्था मे ही अकाल मृत्यु हो गई थी । अनुवादक ने मैटरलिक से सहमति प्रकट करते हुए पहली जिल्द की भूमिका मे कहा है कि आदर्शवाद

तथ्यवाद से नितान्त पृथक् वस्तु है। और मैटरलिक मे पहले गुण का पूर्ण विकास हुआ है। मैलार्म गिलवर्ट पार्कर और ब्लिस कार्मन ने भी इनके इस कथन का समर्थन किया है। मैटरलिक की कृतियो मे भाव-धारा निश्चित सीमा के भीतर चलती है, किन्तु जहा उन्होने दुखान्त और अद्भुतता को मिलाने का यत्न किया है, वहा उन्हे उतनी सफलता नही मिली। श्री हॉवी का कथन है कि वे (मैटरलिक) सदा भय और दुख का चित्रण करते है··· ··उन्हे कब्र का कवि कहना अधिक ठीक होगा, क्योकि एडगर ऐलेन पो की तरह इनकी शैली भी अत्यन्त प्रभावशाली है। उनके 'दि ब्लाइण्ड' और 'होम टू ज्वायजील' मे भावी क्लेश का पूर्वाभास विशिष्ट रूप से मिल जाता है।

पेरिस मे अपने साहित्यिक मित्रो द्वारा प्रोत्साहित होकर और जार्जेट-ली ब्लैक (एक अभिनेत्री, जिसने बाद मे उनसे शादी कर ली थी) के सम्पर्क मे आकर उन्होने तीन ऐसे नाटक लिखे जिनमे उनकी नाटकीय प्रतिभा चरम सीमा पर पहुच गई। इनके नाम क्रमश 'ज्वायजील', 'मोनावाना' (१६०३ ई०) और 'दि ब्ल्यू बर्ड' है। सम्भवत उनकी यह अन्तिम पुस्तक ही उन्हे नोबल पुरस्कार दिलाने मे सफल हुई है। इस नाटक मे आदर्शवाद, कोमल भावना, विचारप्रवणता, प्रत्येक दृश्य के आकर्षक पात्र, प्रत्येक देश और प्रत्येक काल के लिए उनके व्यापक सन्देश आदि ऐसे है, जो मनुष्य के हृदय पर स्थायी प्रभाव डालते है। सम्भव है कि रगमच पर इस नाटक की रहस्यमय पारदर्शिता कुछ नष्ट हो जाए, पर चित्रपट के रूप मे उसका वह सौन्दर्य पूर्णत. प्रदर्शित हुआ है। उनके इस 'दि ब्ल्यू बर्ड' जैसे पूर्ण नाटक के बाद भी उसके उपसहार के रूप मे 'सगाई'[1] नामक नाटक क्यो निकला, यह अनेक आलोचको का आलोच्य विषय वर्षो तक बना रहा है।

'मोनावाना' की रचना उन्होने खास तौर पर अपनी स्त्री के लिए की थी। इसमे भावो की प्रचुरता है और पात्र ऐसे सन्धि-क्षण पर रखे गए है, जो बुद्धि का आह्वान पूर्ण रूप से करते हैं। गिवोवाना या मोनावाना 'पीसा' की सैनिक टोली के सचालक गीडो कोलोना की स्त्री है। यही इस कथानक की नायिका है। फ्लोरेन टाइन्स का सेनापति प्रिंजिवेल जो उपर्युक्त नायिका का बचपन का प्रेमी है, खल-नायक का कार्य करता है। मध्यकालीन वातावरण और नाटकीय भाव-भगी के कारण इस नाटक के सवाद मे सजीवता आ गई है। इसके लिखने के दस वर्ष बाद १६१३ ई० मे 'मेरी मेगदालेन' प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की भूमिका मे मैटरलिक ने अपने प्रति पॉल हीज के सद्भाव की चर्चा की है और लिखा है कि इसी पुस्तक के कथानक पर क्वचित् स्थिति-परिवर्तन के साथ उन्होने भी नाटक लिखने का निश्चय किया है।

गत यूरोपीय महासमर का प्रभाव मैटरलिक पर खूब पडा था, इसका पता उनकी पाच रचनाओ[2] से लगता है। उनकी अन्य पुस्तके जिनके द्वारा उन्होने अपनी मनो-

---

१. The Betrothal

२. Wrack of the Storm, Belgeum at War, Burgomas 'er at Stilemonde, The Cloud that Lifted, The Power of the Dead

विज्ञानात्मक योग्यता प्रदर्शित की है, 'बड़ा रहस्य'[१], 'हमारी अमरता'[२], 'अज्ञात अतिथि'[३] और 'उस ओर का प्रकाश'[४] है। मनुष्य अज्ञात शक्तियों का उत्पादक है और मनुष्यता और प्रकृति सदा एक-दूसरे से विशृङ्खलित रहती है, इसका प्रतिपादन उनकी 'विनम्र का धन',[५] 'जीवन और फूल'[६] और 'मधुमक्षिका का जीवन' नामक रचनाओं में हुआ है। मधुमक्षिकाओं की कार्य-शैली का विशिष्ट अध्ययन करके उसे मानव-जीवन पर घटित करने के लिए उन्होंने मधुमक्षिकाओं को स्वयं पाला था। मधुमक्षिकाओं के छत्ते का अध्ययन करके उन्होंने मक्खियों की कार्य-प्रणाली की तुलना मनुष्य की कार्य-प्रणाली से की है।

जीवन की स्पर्श्य वस्तुओं से परे जाने के लिए बड़े साहस की आवश्यकता होती है। मैटरलिक ने 'एरिआन और नीली चिड़िया',[७] 'बहन बीट्रिस'[८] और 'सन्त अन्थोनी के चमत्कार'[९] में संसार को उस उपेक्षित जादू की चाबी की ओर ध्यान देने को कहा है जिसके द्वारा स्पर्श्य संसार के निषिद्धात्मक क्षेत्रों में भी प्रवेश प्राप्त हो सकता है। जीवन की उपमा उन्होंने 'वाटिका' या 'भीतरी मन्दिर' से दी है और वानस्पतिक संसार तथा मधु-मक्षिकाओं के छत्ते से भी उसका सादृश्य सिद्ध किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में उग्र भावनाओं का चित्रण थोड़े स्थलों पर किया है, किन्तु उन्होंने सत्य की खोज और नैतिक आत्मसंयम के सौन्दर्य पर अधिक दृष्टान्त-प्रदर्शन किया है। इन्होंने सहज ज्ञान के द्वारा अज्ञात और रहस्यपूर्ण गुत्थियों में प्रविष्ट होकर उसे सुलझाने की चेष्टा की है। उनकी बहुत-सी रचनाओं में उदासीनता और शोक की छाया देखने में आती है, उनके पात्र प्रायः अपने चारों ओर के वातावरण से संघर्ष लेने में दुर्बल सिद्ध होते हैं। उनके तीन नाटकों 'दि इंट्रूडर',[१०] 'टिटाजिल्स की मृत्यु'[११] और 'भीतर'[१२] में अदृष्टवाद की ओर काफी इंगित है, किन्तु परिपक्वावस्था और परिपक्व बुद्धि के बाद उन्होंने जो नाटक लिखे हैं उनमें आध्यात्मिक उन्नति और रहस्यमय आदर्शवाद की प्रचुरता है।

उनके बाद के नाटकों में 'शून्य का जीवन'[१३] और 'नक्षत्रों का जादू'[१४] में उक्त विचारों का विकसित रूप देखने में आता है।

उनकी आरम्भिक रचनाओं में से 'दीमकों का जीवन'[१५] का अनुवाद भी १९३० ई० में प्रकाशित हो गया है। मैटरलिक सदा गम्भीर विचार के साथ लेखनी उठाते थे और संख्या-वृद्धि के लिए साहित्यिक रचना नहीं करते थे।

उनकी मृत्यु १९४९ में हुई।

---

१. The Great Secret
२. Our Eternity
३. Unknown Guest
४. The Light Beyond
५. Treasure of the Humble
६. Life and Flowers
७. Ariadne and Bule Beard
८. Sister Beatrice
९ The Miracles of Saint Anthony
१०. The Intruder
११. The Death of Tintagiles
१२. Interior
१३ Life of Space
१४ Magic of the Stars
१५. The Life of the White Ants

गर्हार्ट हॉप्टमैन

१९१२ ई० का साहित्यिक पुरस्कार गर्हार्ट हॉप्टमैन नामक प्रख्यात जर्मन उपन्यासकार और नाटककार को प्राप्त हुआ था। इनका जन्म १८६२ ई० मे हुआ था और यह दूसरे जर्मन साहित्यिक थे जिन्हे हीज के बाद नोबल पुरस्कार मिला। नोबल पुरस्कार के इतिहास मे प्राय ऐसा होता आया है कि एक ही राष्ट्र के दो प्रतिनिधियो का बराबर पुरस्कार मिला है। नार्वे के उपन्यासकार ब्योर्न्सन और हैमसन, स्पेन के नाटककार एकेगारे, बेनाविन्ते तथा जर्मन साहित्यिक हीज और हॉप्टमैन इसी प्रकार के उदाहरण है। हीज की रचनाओ मे अपेक्षाकृत प्राचीनता, काव्य और अद्भुतता पाई जाती है। उन्होने मनुष्य की सदाशयता और सन्तोषवृत्ति की प्रशसा की है। दो ही वर्प बाद पुरस्कार प्राप्त करनेवाले गर्हार्ट हॉप्टमैन को कुछ समालोचको ने आधुनिक काल के उच्च कोटि के यथार्थवादियो की श्रेणी मे रखा है। समाज की जैसी चुटकी इन्होने ली है, वह खल-बली मचा देनेवाली थी। १९०० ई० के बाद जब हीज की रचनाए नवयुग के नवयुवको को कम प्रिय हो चली थी और प्रगतिशील एव उदीयमान लेखको के मन मे उनका आदर कम हो चला था, तो उन्हे अस्सी वर्प की अवस्था मे पुरस्कार प्रदान करके पुरस्कारदात्री समिति ने एकबार फिर उनकी रचनाओ के प्रति लोक-रुचि उत्पन्न कर दी थी।

यद्यपि हॉप्टमैन के दादा एक जुलाहे थे और वे जन्म-भर सम्पन्नता और समृद्धि मे वञ्चित रहे थे, पर उनके पिता तीन होटलो के मालिक थे और आगे चलकर गर्हार्ट हॉप्टमैन एक काफी सुसम्पन्न व्यक्ति हो गए। उनका जन्म साल्जबर्न मे १८६२ ई० मे हुआ था। इस प्रकार वे हीज से बत्तीस वर्प छोटे थे और इसीलिए इनकी रचनाओ मे वास्तव मे एक पीढी को प्रगतिशीलता दिखाई देती है। उनकी शिक्षा ब्रेसथा, जेना और इटली मे हुई थी। पढने-लिखने मे वे इतने सुस्त थे कि इनके भाई कार्ल के अतिरिक्त और किसीको यह विश्वास नही था कि भविष्य मे ये कभी किसी प्रकार की उन्नति कर सकेगे। उन्होने साहित्य के साथ कृपि और इतिहास का विशेष अध्ययन किया था। उनका विचार अभिनेता बनने का था, किन्तु बोलने मे ये कुछ तुतलाते थे, इसलिए उनकी आशाए व्यर्थ गई। उन्होने एक सुसम्पन्ना स्त्री के साथ शादी कर ली और बर्लिन मे रहकर नाट्यशालाओ के लिए नाटक लिखने शुरु कर दिए। शुरु मे बायरन को साहित्यिक गुरु मानकर 'चाइल्ड हेराल्ड्स पिलग्रिमेज' के ढग पर इन्होने 'प्रोमेथियस के

बच्चो का भाग्य'[1] लिखा ।

हीज ने अपने समय के जिन लेखको को मान दिया था, उनमे गर्हार्ट हॉप्टमैन मुख्य थे, क्योकि उनके मन मे इनकी रचना मे स्वाभाविकता विशेष रूप मे थी। जब यह घोषणा प्रकाशित हुई कि १९१२ ई० का नोबल पुरस्कार जर्मन लेखक गर्हार्ट हॉप्टमैन को प्रदान किया गया है, तो जर्मनी के कलाकारो का राष्ट्रीय गौरव बहुत बढ गया, किन्तु अन्यदेशीय आलोचको ने प्रश्न करना शुरू कर दिया कि आदर्शवाद को किस प्रकार खीच-तानकर उस लेखक की रचनाओ पर लागू किया गया है और 'प्रभात मे पहले'[2], 'एकाकी जीवन'[3], 'जुलाहे और माइकेल क्रेमर'[4] आदि रचनाओ मे आदर्शवाद कहा तक है ? हॉप्टमैन ने कुछ नाटक ऐसे लिखे है जो सामाजिक समस्याओ मे पूर्ण है, किन्तु साथ ही उनकी दो-तीन रचनाए ऐसी भी है, जो वास्तव मे काव्य-गुणपूर्ण है। इन रचनाओ (नाटको) का जर्मन साहित्य मे खास स्थान है और इनके अग्रेजी अनुवादो के नाम है 'दी एजम्पशन आफ हैनेल,' 'दि सकेन बेल' और 'पर्सीवल' ।

हॉप्टमैन मे दो स्पष्ट और विरोधी व्यक्तियो का दर्शन पाठक करेगे। 'सकेन-बेल' की रचना पर वे नोबल पुरस्कार के लिए चुने गए थे। इसमे भौतिक और आध्यात्मिक सघर्ष सुन्दर रूप मे प्रदर्शित किया गया है। कही-कही उनकी रचना मे प्रसिद्ध उपन्यासकार और नाटककार सडरमैन की रचनाओ की छाप है। आदर्शवादी रचना करने के पहले हॉप्टमैन ने इव्सन, जोला, टॉलसटॉय, मैक्स नारडा और आर्नो होल्ज की तरह दुखान्त रचनाए की थी। इनकी यथार्थवादी रचनाओ के कथानक कमजोर और शिथिल है—विशेषत 'दि वीवर कोट', 'रोज बर्ड' और 'दि कन्पलेग्रेशन' मे ऐसी त्रुटिया है। उनमे कविजनोचित भावनाए काफी थी और इनका परिचय उन्होने 'सुन्दर जीवन'[5] 'सहचर कैम्पटन' और 'जुलाहा'[6] नामक रचनाओ मे यत्र-तत्र स्फुट पद्यो द्वारा भली भाति दिया है। 'जुलाहा' नामक रचना मे शैल्पिक उत्क्षेपन है— इसमे भावनाओ का उग्र विकास है और व्यग्य तथा उच्चाभिलाषा भी सन्निविष्ट है। इस पुस्तक को गर्हार्ट हॉप्टमैन ने अपने पिता को समर्पित करते हुए लिखा है "प्यारे पिताजी, आप जानते है कि किन भावनाओ से प्रेरित होकर मै यह पुस्तक आपको समर्पित कर रहा हू, अत मुझे उसका विवरण यहा लिखने की आवश्यकता नही है। आप मेरे दादा की (जो अपनी युवावस्था मे करवे पर बैठकर इस पुस्तक मे वर्णित दरिद्र जुलाहो की भाति कपड़ा बुना करते थे) जो कहानिया सुनाया करते थे, वही मेरे इस नाटक मे है—इसमे जीवन की जो शक्ति या पतन है, वह उसी रूप मे है।"

१८८९ ई० मे बर्लिन मे एक सामाजिक नाट्यशाला स्थापित हुई थी जिसमे प्रसिद्ध

---

१ The Fate of the Children of Prometheus २ Before Dawn
३ Lonely Lives
४ The Weavers and Michail Kramer ५. The Lovely Lives
६. The Weaver

नाटककारो की कृतिया रगमच पर लाई गई। इस सस्था के सचालक ओटो ब्राम, मैक्स मिलियन हार्डेन, थ्योडोर वुल्फ आदि थे। हॉप्टमैन की अनेक रचनाए इस नाट्यशाला के रगमच पर आई जिनमे से आठ[1] के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमे से पहला नाटक 'प्रभात के पूर्व' सिलीसियन पर्वत पर लिखा गया था और पहले-पहल १८८९ ई० मे बर्लिन मे रगमच पर आया। इसमे दुराचारी पिता और उसके नीच साथी लडकी की अप्रतिष्ठा करना चाहते है और लडकी आत्मरक्षा के लिए उनको जान से मारने मे सफल होती है। कथानक दु.खान्त और प्रतारणा एव प्रत्याख्यान से भरा हुआ है।

'जुलाहा' मे नाट्यकला का प्रस्फुटन अपेक्षाकृत सुन्दर रूप म हुआ है। इसमे कोई व्यक्ति प्रधान अभिनय नही करता—जुलाहो का झुण्ड सन्धि के समय पर सामूहिक रूप से जो कुछ करता है, यही इसका प्रधान अभिनय है। इसमे पूजीपतियो के वैभवपूर्ण जीवन और जुलाहो की दरिद्रतापूर्ण अवस्था का मार्मिक चित्रण किया गया है। साथ ही सरकार की इसके प्रति उदासीनता, और लोभ के शिकार बने हुए लोगो की शैल्पिक दासता का भी दिग्दर्शन कराया गया है। दूसरे अङ्क मे यह दिखलाया गया है कि बुड्ढे ऐन्सोर्ज को इस बात का विश्वास नही होता कि यदि उन (जुलाहो) की दशा का समाचार सम्राट् तक पहुचाया गया तो वह उनका दुख नही मेटेगा। जेगर उस (बुड्ढे) से कहता है कि सम्राट् तक समाचार पहुचाना व्यर्थ है। वह बुड्ढा जुलाहा जब अपने उस करघे के प्रति अनुराग प्रदर्शित करके शोकाकुल होता है, जिसपर ४० वर्ष तक वह काम करता रहा है, और जिससे अब पूजीपतियो की क्रूरता के कारण पृथक् होना पड रहा है, तो दर्शको और पाठको के हृदय मे करुणा का स्रोत उमड पडता है।

इसी प्रकार उनके दूसरे नाटक 'एजम्पशन आफ हनेले' की भी जर्मनी मे खूब चर्चा हुई और अमेरिका मे उनका यह खेल रगमच पर भी खेला गया। वहा के लोग पहले हॉप्टमैन के पूजीवाद-विरोधी विचारो के कारण बहुत रुष्ट थे और इनके खेल का बहिष्कार करनेवाले थे, पर बाद मे खेल शान्तिपूर्वक समाप्त हो गया। बाद मे इनका 'जुलाहा' भी अमेरिका मे अच्छा चला, किन्तु अमेरिका जैसे देश मे ये दु खान्त और समस्या-युक्त नाटक उस समय आशातीत सफलता नही प्राप्त कर सके।

इनकी दो रचनाओ 'एजम्पशन ऑफ हनेले' और 'सकेन वेल' के अग्रेजी अनुवाद चार्ल्स हेनरी मेलजर ने किए थे। जिस समय इनके खेलो के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हुआ तो बेचारे अनुवादक पर भी लोगो की कोप-दृष्टि हुई—यहा तक कि उस अभिनेत्री पर भी लोग बहुत क्रुद्ध हुए जिसने उनके नाटक मे प्रधानपात्री के रूप मे अभिनय किया था।

उपर्युक्त घटना के अठारह वर्ष पश्चात् स्वीडिश एकैडमी ने हॉप्टमैन को जगद्विख्यात् नोबल पुरस्कार देकर सुप्रसिद्ध और प्रतिष्ठित लेखक बना दिया। फिर तो पाठको

---

१. Before Dawn, College Crampton, Florian Geyear, The Festival of Peace, Lonely Lives, The Weavers, The Beaver Coat, The Assumption of Hannele.

का अनुराग उनकी रचनाओ की ओर बढता ही गया और हॉप्टमैन की दो कविताओ 'स्वप्न काव्य'[1] और 'अजनबी'[2] पर उन्हे जर्मनी का गिलपार्जर-पुरस्कार भी मिला। दो वर्ष बाद उन्होने जीवन के तथ्य और रहस्यमय आकर्षण पर एक और नाटक लिखा जिसका नाम 'परी-नाटक'[3] रखा। इस रचना ने उनके आलोचको को विश्वास दिला दिया कि उनमे नाट्य-रचना की अद्भुत क्षमता है।

'सकेन वेल' नामक नाटक का आधार जर्मनी की ट्यूटानिक पुराण-कथा है—इसमे घटी बनानेवाले और उसकी स्त्री, एक दुर्दान्त प्रेतात्मा, पुरोहित और अध्यापक का चित्रण अन्य आलकारिक पात्रो के साथ सुन्दर रूप मे किया गया है। इसमे हीनरीच घटीवाले को सत्य और ज्ञान का खोजी और जिज्ञासु बनाया गया है—रॉटडलीन को प्रकृति का रूपक बनाया गया है जो स्वतन्त्रता प्रदान करता है। इसी प्रकार विटिकिन जीवन के तत्त्वज्ञान का व्यक्तीकरण करता है और वह पुरोहित के दिखाऊ सिद्धान्तो का विरोधी है, क्योकि वे (सिद्धान्त) उच्चादर्श के मार्ग मे बाधक है। हीनरीच अपना आदर्श प्राप्त करने मे असफल होता है। वह ईसाई धर्म द्वारा प्रचारित सत्य के पालन मे सफलता नही प्राप्त कर सकता, क्योकि वह मानवीय कमजोरियो का शिकार होता है। घटीवाला ससार-भर मे घूमता फिरता है—उच्च पर्वत-शिखरो के विपुल प्रकाश और ध्वनि मे भी वह नही ठहरता, पर उनका प्रभाव उसके चित्त पर पडता है। वापस आने पर पुरोहित जब उसकी अभ्यर्थना करता है, तो घटीवाला जिज्ञासु कहता है :

"मैं वही हू, किन्तु मेरा रूप बदल गया है। दरवाजा खोल दो और अदर प्रकाश को आने दो।"

इस नाटक के प्रदर्शन मे बहुत अधिक सफलता इसलिए नही मिली कि इसमे रूपक और अध्यात्मवाद का बाहुल्य है। इसलिए दर्शको की अपेक्षा विचारको को इसमे अधिक आनन्द आता है। इनका 'हेनरी ऑफ आउ' नामक नाटक १६०२ ई० मे प्रकाशित हुआ था। इसे 'सकेन बेल' का उपसहार कह सकते हैं। इसमे दिखाया गया है कि जिस समय हीनरीच उन्नति की चरम सीमा पर पहुचता है, तो ईश्वर के प्रति धृष्टता करने के कारण उसे कुष्ठ रोग हो जाता है और उस रोग से उसे आरोग्य-लाभ तब होने लगता है जब वह अपनी निराशा और घृणापूर्ण आत्मा को प्रकृति और जीवन की दातव्यता स्वीकार करने मे लगाना आरम्भ कर देता है। इसमे हीनरीच, हर्टमैन वान-आउ, गॉडफ्रीड, ब्रिगिटा और किसान की लडकी ऑटेजेब का चरित्र सुन्दर रूप मे चित्रित किया गया है। नायक के आरोग्य-लाभ मे इस कृषक-बालिका का विशेप प्रभाव दिखाया गया है। नाटकीय कला की दृष्टि से यह नाटक 'सकेन बेल' या 'हैनेल' के टक्कर का नही है, किन्तु इसमे पात्रो की दशा ऐसी चित्रित की गई है जिसके कारण पाठक और दर्शक आकर्षित हो उठते है—कुष्ठ रोग के कारण हीनरीच की दुर्दशा पाठको की सहानुभूति

१. Dream Poem
२. The Stranger
३. A Fairy Tale Play

अपनी ओर खीचती है और अन्त मे प्रेम के द्वारा पुनरुद्धार का दृश्य उपस्थित किया जाता है।

नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद हॉप्टमैन ने अनेक नाटक और उपन्यास लिखे, जिनमे तथ्यवाद और आदर्शवाद का सुन्दर सम्मिश्रण है। 'पर्सीवल' नामक नाटक मे मानवता की अन्तर्दृष्टि के साथ-साथ नैतिकता और धार्मिकता का भी पुट है। 'ऐण्ड पिप्पा डासेज', 'एलगा', और 'पोएट लोर' भी बाद के ही लिखे हुए है।

कई लेखको ने हॉप्टमैन की तुलना जान गॉल्सवर्दी से की है—इन दोनो के जीवन और रचनाओ मे काफी सादृश्य पाया जाता है। 'हैनेल' की तुलना 'दि लिटिल ड्रीम' से 'माइकेल क्रेमर' की 'ए बिट आफ लव्ह' से और 'दि वीवर्स' (जुलाहा) की 'स्ट्राइक'[1] से की गई है। दोनो ही नाटककार सामाजिक बन्धन का अतिक्रमण करते है, दोनो ही सामाजिक समस्याओ को सुलझाने की चेष्टा करते है और दोनो ही की विचार-सरणि तथ्यवादिता की ओर झुकी हुई है—दोनो ही ने सदाचार का मूल्य बढाया है। हॉप्टमैन ने पात्रो के चित्रण मे अधिक दिलचस्पी ली है और गॉल्सवर्दी ने पात्रो के सम्वन्धो के चित्रण मे। दोनो ही लेखक आदर्शवादी है और वे भौतिक एव आध्यात्मिक सत्य का अन्वेषण करते है।

हॉप्टमैन की अन्तिम रचनाओ मे 'ए विण्टर बैलाड' और 'दि फेस्टिवल प्ले' अधिक उल्लेखनीय है। अग्रेजी के पाठको ने हॉप्टमैन के उपन्यास अधिक पसन्द किए है और उनकी 'दि फूल इन दि क्राइस्ट', 'एटलाटिस', 'फैण्टम' और 'हेरेटिक ऑफ सोवाना' आदि रचनाए अधिक पढी जाती है। इनमे चरित्र-चित्रण अधिक जानदार और व्यग्यपूर्ण है। सामाजिक समस्याओ का हॉप्टमैन प्राय सर्वत्र सुलझाते है। 'दि आइलैण्ड ऑफ दि ग्रेट मदर' उनके बाद के उपन्यासो मे से है। इनका देहान्त १९४६ ई० मे हुआ। नये लेखको पर उनकी रचनाओ का काफी प्रभाव मालूम होता है। उनके 'दि हेरेटिक ऑफ सोवाना' को ससार की आधुनिक रचनाओ मे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है और उनके सभी समकालीन लेखक इस बात को स्वीकार करते है कि उनकी यह रचना उत्कृष्ट कोटि की है।

---

१. जान गॉल्सवर्दी के इस नाटक का अनुवाद हिन्दुस्तानी एकैडमी, इलाहाबाद ने 'हडताल' के नाम से प्रकाशित किया है। —लेखक

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१९१३ ई० का नोबल पुरस्कार भारत के महाकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को मिला। पुरस्कार-पत्र मे इनकी रचनाओ की विशेषता का वर्णन करते हुए लिखा गया है कि इनकी काव्य-रचना की आभ्यन्तरिक गहराई और उच्च उद्देश्य ऐसे है तथा प्राच्य विचारो को इन्होने पाश्चात्य वर्णन-शैली मे ऐसी सुन्दरता और नवीनता के साथ व्यक्त किया है कि वे वास्तव मे नोबल पुरस्कार पाने के अधिकारी थे।

श्री रवीन्द्रनाथ का जन्म ६ मई, १८६१ ई० को कलकत्ते के जोडासाको भवन मे हुआ था। उनका घराना प्राचीन काल मे ही सम्पन्न माना जाता है और उनके यहा पूर्वकाल से लक्ष्मी के साथ-साथ सरस्वती की भी उपासना होती आई है। उनके पितामह द्वारकानाथ ठाकुर तथा पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर बगाल के प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्तियो मे गिने जाते थे। उनकी माता का नाम शारदादेवी था।

किन्तु ठाकुर वश के इतना प्रतिष्ठित होते हुए भी मुसलमानी नवाबो के साथ घनिष्ठता होने के कारण उसका तत्कालीन ब्राह्मणसमाज ने पतित कहकर बहिष्कार कर दिया था और समाज मे पतित समझे जाने के कारण जिस समय राजा राममोहन राय ने ब्राह्मसमाज की स्थापना की उस समय इस घराने ने समाज के प्रति विद्रोहात्मक भावना रखने के कारण तत्काल उसमे भाग लिया और समाज मे दबकर रहने के बदले इसने नई स्फूर्ति प्राप्त की। सामाजिक बाधा न होने के कारण ठाकुर परिवार विलायत-यात्रा आदि की सुविधा सर्वप्रथम प्राप्त कर सका और इसीसे धर्म, दर्शन, विचार-स्वातन्त्र्य, साहित्य, सगीत और कला के सम्बन्ध मे उनके विचार नई और क्रान्ति-युक्त भावना के प्रतिपादक बने।

ठाकुर वश भट्ट नारायण की सन्तान है। भट्ट नारायण बगाल के निवासी नही थे, वरन् वे उन पच कान्यकुब्जो मे से थे जिन्हे आदिशूर ने कन्नौज से बुलाकर बगाल मे बसाया था और वहा पर्याप्त सम्पत्ति प्रदान कर प्रतिष्ठित किया था। पहले उनके वश की अल्ल 'ठाकुर' नही थी, पर जब वे लोग यशोहर से आकर गोविन्दपुर मे बस गए तो वहा के पार्श्ववर्ती निम्न जाति के लोग इन्हे 'ठाकुर' कहकर पुकारने लगे, जो बगाल मे ब्राह्मणो के लिए एक प्रचलित सम्बोधन है।

रवीन्द्रनाथ का बचपन बडे ही स्वाभाविक वातावरण मे व्यतीत हुआ था। वे

आरम्भ मे ओरियण्टल सेमीनरी मे पढने के लिए भर्ती किए गए। वहा बच्चो पर जितना शासन था, उसे देखकर बालक रवीन्द्र घबरा उठे और उन्होने वहा से अपनी जान छुडाई। इसके बाद उन्हे नॉर्मल स्कूल मे भर्ती करा दिया गया। वहा बच्चो से अग्रेजी गान गवाया जाता था। उन्हे यह बात पसन्द नही आई। एक शिक्षक के अपशब्द कहने पर रवि बाबू इतने अप्रसन्न हो गए कि उससे कभी बात तक नही की।

सात वर्ष की अवस्था मे ही बालक रवीन्द्र ने कविता लिखनी शुरू कर दी थी। अग्रेजी पढने मे इनका मन नही लगता था और ये कविता लिखने की ओर अधिक झुकने लगे। नॉर्मल स्कूल से छुडाकर इन्हे 'बगाल एकैडमी' नामक एग्लो इण्डियन लडको के स्कूल मे भर्ती किया गया। रवि बाबू को आधुनिक पाश्चात्य विद्वानो ने 'नदी का कवि' कहा है। वास्तव मे बालक रवीन्द्र का बचपन प्रकृति के निकट और नदी के किनारे अधिक व्यतीत हुआ है, इसलिए उनकी कविता पर प्रकृति की छाप है और स्थल-स्थल पर नदी का सौन्दर्य और उसके प्रवाह एव तरगो की मनोहरता दीखती है।

जिस समय रवीन्द्रनाथ की अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी उस समय उनकी कविता 'भारती' मे निकलने लगी थी। 'भारती' मे उनकी सर्वप्रथम कृति 'कवि-कथा' नाम से निकली थी, जो पीछे पुस्तकाकार छपी। कुछ दिनो बाद 'वन-फूल' नाम से उनका दूसरा काव्य-सग्रह प्रकाशित हुआ। बीस वर्ष की अवस्था होने के पूर्व ही उन्होने 'गाथा' नामक पुस्तक लिखी जो खण्ड-काव्य है। इन्ही दिनो उन्होने 'भानुसिहसगीत' के बीस गाने भी लिख डाले थे। बीस वर्ष की अवस्था मे रवि बाबू का यथार्थ साहित्यिक जीवन आरम्भ हो गया।

पहली बार सोलह वर्ष की अवस्था मे ही २० सितम्बर, १८७७ ई० मे वे विलायत गए और १८७८ ई० के नवम्बर मास मे भारत लौटे। उन्होने अपने यूरोप-भ्रमण का वृत्तान्त 'भारती' मे प्रकाशित कराया था जिससे यह मालूम होता है कि वह यात्रा उन्हे रुची नही।

इसके पश्चात् उनका 'करुणा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ और उसके कुछ ही दिनो बाद 'भग्न-हृदय' नामक पद्यबद्ध नाटक भी छपा। इन दोनो रचनाओ मे ससार के दु ख और दाह का सुन्दर चित्रण है। तेईस वर्ष की अवस्था तक रवि बाबू कोई उद्देश्य स्थिर नही कर सके थे और उनका मन भी चचल रहता था। १८८१ ई० से उनका मन स्थिर हुआ और १८८७ ई० तक उन्होने सुन्दर रचनाए की। उन दिनो जब उनकी 'सन्ध्या-सगीत' प्रकाशित हुई तो समस्त बगाल मे इनकी कीर्ति व्याप्त हो गई। इनकी नवीन कविता और नवीन विचारधारा ने सबको अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। 'वाल्मीकि-प्रतिभा' और 'काल-मृगया' नामक दो सगीत-काव्य भी उन्ही दिनो लिखे गए।

'सन्ध्या-सगीत' लिखते समय रवि बाबू का विचार प्रभात-सगीत लिखने का भी था और बाद मे चलकर उन्होने 'प्रभात-सगीत' लिखा भी। 'प्रभात-सगीत' ने बग-

साहित्य मे धूम मचा दी और वहुतो ने उनकी [illegible] ।
सभी दृष्टियो से यह उनकी अनूठी रचना है—भाव और भाषा सभी सुन्दर है । इसमे
ओज और प्रवाह भरा हुआ है । उसी समय उनका 'विविध-प्रसग' प्रकाशित हुआ ।
'वह ठकुरानीर हाट' भी उन्ही दिनो की रचना है ।

१८८३ ई० मे रवि वावू कुछ दिनो के लिए कारवार नामक [illegible] मे
रहे । यहा उन्होने सुख और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत किया । वहा का प्राकृतिक [illegible]
उन्हे वहुत भाया । उसी साल दिसम्वर मास मे उनका विवाह हो गया ।

'प्रकृतिर परिशोध' लिखने के पश्चात् [illegible]
उन्ही दिनो उन्होने 'छवि ओ गान' नामक पुस्तक लिखी । निर्धन [illegible] का जीवन और
उनकी दैनिक स्थिति देखकर कवि के हृदय मे करुणा का ऐसा स्रोत उमडा कि उन्होने
उन दिनो 'नलिनी' नामक दुखान्त नाटक लिख डाला । दूसरा दुखान्त नाटक 'मायार
खेल' भी इसी प्रसग को लेकर लिखा गया था ।

उन दिनो 'आलोचना' नामक पत्रिका मे उनके कई निवन्ध प्रकाशित हुए जिनसे
उनकी समालोचना-शक्ति का पता लगता है । उन्ही दिनो उनका 'राजर्षि' नामक
उपन्यास भी प्रकाशित हुआ जो पीछे से नाटक के रूप मे वदलकर 'विसर्जन' के नाम
से प्रकाशित किया गया । उन दिनो वगाल मे वकिम वावू की धाक जमी हुई थी ।
उनकी प्रतिभा से रवि वावू भी आकर्षित हुए । रवि वावू की वकिम वावू से मित्रता
हो गई, किन्तु कुछ ही दिनो वाद दोनो मे घोर विवाद आरम्भ हुआ । रवि वावू
ने 'हिन्दू-विवाह' पर जो वक्तृता दी उससे दोनो मे विवाद खडा हो गया । यह वात
१८८७-८८ ई० की है । इन दिनो एक कविता लिखकर रवि वावू ने 'वाल-विवाह'
की अच्छी खवर ली थी ।

१८८७ ई० मे रवि वावू गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) गए और वहा के प्राकृतिक
दृश्यो से आकर्षित होकर उन्होने 'मानसी' के अधिकाश पद्य वही लिखे । 'मानसी' भाव
एव रस की दृष्टि से विविधात्मक है —इसमे 'भैरवी' जैसी भाव-प्रवण कविता है और
गुरु गोविन्द' एव 'सूरदासेर प्रार्थना' जैसी शान्तरस की कविताए भी । इसमे हास्य-
रस की कविता का भी अभाव नही है—'वगवीर' इसका एक उत्तम उदाहरण है ।

मानसी' के पश्चात् रवि वावू का 'राजा ओ रानी' प्रकाशित हुआ । यह रवि
वावू के उच्चकोटि के नाटको मे गिना जाता है । गाजीपुर से लौटने के वाद रवि वावू
ने पिता की आज्ञानुसार अपनी जमीदारी की देख-भाल शुरू कर दी । उस समय रवि
वावू की अवस्था ३३ वर्ष की हो चुकी थी । उन दिनो रवि वावू राष्ट्रीय ढग की
शिक्षा देने के सम्वन्ध मे निवन्ध लिखने लगे और देश को नये ढग से शिक्षित करने के
आन्दोलन मे लग गए । उनके भाषण 'भारती' मे प्रकाशित होने लगे और वे राज-
नीतिक और दार्शनिक भावनाओ के केन्द्र-से वन गए । जमीदारी का कार्य करते समय
उन्हे नौका पर अपनी जमीदारी मे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना पडता था ।

इससे उन्होने बहुत-से प्राकृतिक दृश्य देखे और प्रजा की वास्तविक अवस्था का निरीक्षण किया। नदी के सम्बन्ध मे कवि ने जो कविताए लिखी है, वे पद्मा नदी के पर्यवेक्षण के फलस्वरूप लिखी गई प्रतीत होती है।

जमीदारी के प्रबन्ध मे लगे रहने पर भी उन्होने लिखना जारी रखा और 'चित्राङ्गदा' नाटक इन्ही दिनो मे तैयार कर लिया। सौन्दर्य की दृष्टि से इसके जोड का दूसरा नाटक रवि बाबू ने नही लिखा। इस नाटक का अग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ और इसकी खूब चर्चा हुई। बगाल के प्रसिद्ध कवि और नाटककार स्वर्गीय श्री० द्विजेन्द्रलाल राय ने इसकी आलोचना करते हुए लिखा कि 'चित्राङ्गदा' का सौन्दर्य-वर्णन आदर्श की दृष्टि से हेय और भ्रष्ट है, क्योकि इसमे पौराणिक भावनाओ की रक्षा करने का विचार रवि बाबू ने बिलकुल नही किया। इसके पश्चात् 'सोनार तरी' नामक छायावादात्मक काव्य प्रकाशित हुआ। इसमे रवि बाबू ने एक नवीन विचारधारा प्रवाहित की। कुछ दिनो बाद 'चिना' प्रकाशित हुई—इसमे सौन्दर्य का चरम विकास हुआ है। 'उर्वशी' नामक कविता की तो इतनी ख्याति है कि इसकी गणना ससार की सर्वोत्कृष्ट रचनाओ मे की जा सकती है।

१८६५ ई० मे उनकी 'साधना' प्रकाशित हुई। इसके बाद ही 'चैताली' मुद्रित हुई। १६०० ई० तक इनकी तीन और प्रसिद्ध पुस्तके—'कल्पना', 'कथा-काहिनी', और 'क्षणिका'— निकली।

१६०१ ई० मे रवि बाबू 'बग-दर्शन' के सम्पादक हुए। उसमे उन्होने फिर से जान डाल दी। उसी वर्ष बोलपुर शान्ति-निकेतन की नीव पडी और फिर रवि बाबू अपना अधिकाश समय वही व्यतीत करने लगे। कलकत्ता विश्वविद्यालय की शिक्षा-प्रणाली से घृणा करके उन्होने अपना यह शान्ति-निकेतन पूर्णत भारतीय सस्कृति के अनुकूल स्थापित किया।

१६०१ ई० से १६०७ ई० तक रवि बाबू ने उपन्यास लिखने की ओर विशेष मनोयोग दिया। १६०२ ई० मे उनकी स्त्री का देहान्त हो गया। इन्ही दिनो आपने 'गोरा' नामक उपन्यास लिखा और अपने छोटे बच्चे को बहलाने के लिए उन्होने 'कथा' और स्त्री के वियोग मे 'स्मरण' लिखा।

१६०३ ई० मे अग्रेजी मे 'दि रेक' प्रकाशित हुआ और १६०४ ई० मे उनके देश-भक्तिपूर्ण पद्यो का सग्रह। १६०५ ई० मे 'खेया' निकली। इन्ही दिनो उनके छोटे लडके की मृत्यु हो गई।

१६०५ ई० मे जब बग-भग का आन्दोलन शुरू हुआ, उन दिनो रवि बाबू के गीत बगाल के युवक-वृन्द मे खूब विख्यात हो गए और रवि बाबू ने बहुत-से राजनीतिक लेख भी लिखे।

रवि बाबू केवल कवि ही नही है, वे दार्शनिक, वक्ता, लेखक, नाटककार, उपन्यासकार, समालोचक, सम्पादक और अध्यापक भी है। अपने सुशिक्षित कुटुम्ब के

व्यक्तियो के ही लेखो से सयुक्त आपने 'भारती' नामक साहित्य-पत्रिका निकाली और उसका सम्पादन स्वय करने लगे। 'वग-दर्शन', 'प्रवासी' और 'भारतवर्ष' मे भी आपके लेख और कहानिया प्रकाशित होती रही। आपकी कृतियो से समस्त वगाल मे नव-जीवन का सचार हो गया।

वगाल मे यशस्वी हो चुकने के वाद आपने अग्रेजी मे भी लेख, कहानिया और कविताए लिखनी शुरू कर दी। इमसे सारे भारत और विदेशो तक मे उनका नाम फैल गया। अग्रेजी साहित्य मे भी आपका खूब स्वागत हुआ। रवि बाबू के 'मॉडर्न रिव्यू' मे प्रकाशित अग्रेजी लेख विदेशी पत्रो मे उद्धृत होने लगे उनकी अग्रेजी कहानियो का सग्रह लन्दन के एक प्रकाशक ने निकाला। वाद मे मैकमिलन कम्पनी ने इनकी अग्रेजी रचनाओ का विश्व-अधिकार ले लिया और पीछे उनके उपन्यास, नाटक और कविता-ग्रन्थ इसी कम्पनी ने प्रकाशित किए।

शान्ति-निकेतन की सुव्यवस्था करने के बाद रवि वावू फिर साहित्य-सेवा मे लग गए। उन्होने पुन विदेश-भ्रमण की तैयारी कर दी। अपने जिस अध्यात्म-प्रेम के कारण वे पहले से प्रसिद्ध हो चुके थे, उसका परिचय उन्होने 'गीताञ्जलि' लिखने मे दिया। वास्तव मे उनका यही ग्रन्थ-रत्न उन्हे नोवल पुरस्कार दिला सका। गीताञ्जलि क्या थी, यह वगाल की गीता बनकर निकली। घर-घर मे इसका पाठ होने लगा। रवि वाबू के मित्र श्री० सी० एफ० एण्ड्रयूज ने इसे सुना तो मुग्ध हो गए। इसका अग्रेजी अनुवाद करने के लिए रवि बाबू को उन्होने ही प्रेरित किया। पुस्तक अग्रेजी मे ज्यो ही प्रकाशित हुई त्यो ही रवि बाबू की गणना ससार की उच्चतम विभूतियो मे हो गई। सभी देशो के पत्रो मे इस रचना की चर्चा हुई। यूरोप की विख्यात साहित्यिक परिषदो ने इसको नोवल पुरस्कार के योग्य बतलाया और अन्त मे १६१३ ई० मे रवि वावू को यह पुरस्कार मिल गया।

इस पुरस्कार के वाद रवि वावू का नाम तो हुआ ही, साथ ही भारत का भी ससार मे अच्छा मान हुआ। ससार की सभी उन्नत भाषाओ मे गीताञ्जलि का अनुवाद प्रकाशित हो गया और विदेशियो ने भी देखा कि भारतीय प्रतिभा कैसी होती है। अमेरिका, जापान, चीन, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, इटली, फ्रास और इग्लैण्ड की साहित्यिक सस्थाओ ने उन्हे आमन्त्रित किया और रवि बाबू को अनेक बार विदेश-यात्रा करनी पडी। विदेशो मे व्याख्यान देकर रवि बाबू ने अपने आध्यात्मिक ज्ञान की धाक जमा दी।

गीताञ्जलि के कुछ पदो का हिन्दी-अनुवाद यहा देकर पाठको को रवि बाबू के आध्यात्मिक ज्ञान और उनकी प्रतिपादनशैली का परिचय करा देना अनुचित न होगा। अग्रेजी गीताञ्जलि के दो पदो का अनुवाद नीचे दिया जाता है

तेरी अनुकम्पा

तूने मुझे अनन्त वनाया है, तेरी ऐसी लीला है। तू इस नश्वर पात्र—शरीर -

को बार-बार रिक्त करता है और सदा इसे नवजीवन से भरता रहता है।

तूने बास की इस छोटी-सी बासुरी को पर्वतो और घाटियो पर फिराया है और तूने इससे ऐसी मधुर ताने अलापी है जो नित्य नूतन है।

मेरा यह छोटा-सा हृदय तेरे अमृतमय हस्त-स्पर्श से अपने आनन्द की सीमा को मिटा देता है और फिर उसमे ऐसे उद्‌गार उठते है जो अवर्णनीय है।

तेरे अपरिमित दानो की, मेरे इन क्षुद्र हाथो पर, सदैव वर्षा होती रहती है। युग पर युग बीतते जाते है और तू उन्हे वर्षाता जाता है फिर भी उन्हे भरने के लिए स्थान खाली ही रहता है।[१]

पूर्ण प्रणाम

हे मेरे परमेश्वर, मेरी समस्त इन्द्रिया एक ही प्रणाम मे तेरी ओर लग जाए और इस विश्व को तेरे चरणो पर पडा जानकर उससे ससर्ग करे।

जिस प्रकार सावन-घन बिन बरसे हुए जल के भार से नीचे की ओर झुक जाता है, वैसे ही मेरा सारा मन एक ही प्रणाम मे तेरे द्वार पर झुक जाए।

हे प्रभु, मेरे समस्त गानो की विचित्र राग-रागिनियो को एक धारा मे एकत्र होने दे और एक ही प्रणाम मे उन्हे शान्ति-सागर की ओर प्रवाहित कर दे।

जिस प्रकार अपने वास-स्थान के वियोग से व्याकुल हसो का झुण्ड अहर्निश अपने पर्वतीय निवास की ओर उडता हुआ लौटता है, उसी प्रकार मेरी आत्मा को एक ही प्रणाम मे अपने सनातन के वास-स्थान की ओर उडने दे।[२]

जिस समय रवि बाबू देश और विदेश मे विख्यात हो गए, उस समय भारत सरकार का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ, और उसने उन्हे 'सर' की उच्च उपाधि से विभूषित किया।

रवि बाबू कवि ही नही, गायक भी थे और वे अपने पदो को जिस लालित्य के साथ गाते थे, वह अपने ढग की अद्वितीय शैली थी। उन्होने अपने नाटको मे प्रधान पात्र का पार्ट भी किया था।

नीचे कवीन्द्र रवीन्द्र के दो पद्य उद्धृत किए जा रहे है—

अन्तर मम विकसित करो
अन्तरतर हे!
निर्मल करो, उज्ज्वल करो
सुन्दर करो हे!
जाग्रत करो, उज्ज्वल करो
निर्भय करो हे!

---

१. गीताञ्जलि का प्रथम पद।
२. गीताञ्जलि का अन्तिम पद।

मगल करो, निरलस करो
नि शसय करो हेऽ ।

× × ×

मेघेर परे मेघ जमे छे,
आधार करे आसे—
आमाय केनो वसिये राखो
एका द्वारेर पासे ।
काजेर दिने नाना काजे
थाकि नाना लोकेर माझे
आज आमिजे वसे आछि
तोमार आश्वासे । आमाय···

तुमि यदि ना देखा दाओ
करो आमाय हेला,
केमन करे काटे आमार
एमन वादल - वेला ।
दूरेर पाने मेले आँखि,
केवल आमि चेये थाकि
परान आमार केदे वेडाय
दुरन्त वातासे । आमाय···[1]

रवि बाबू सामाजिक और राजनीतिक सुधार के पक्षपाती थे और उन्होने अपने

---

१. इनमें प्रथम पद्य तो वगला में होते हुए भी हिंदी वालों के लिए स्पष्ट है, पर दूसरे पद्य का हिन्दी अनुवाद 'जीवन-साहित्य' और श्री मदनलाल जैन की अनुकम्पा से यहा दिया जा रहा है—

जमे मेघ पर मेघ-तिमिर,
सब घनीभूत हो आए—
द्वार अकेली बैठी हेर—
क्यों ना साजन आए ।
तुम दर्शन नहीं दो यदि
प्रियतम ! करो मेरी अवहेला ।
तो फिर कैसे कटे बताओ
ऐसी बादल वेला
दूर क्षितिज तक आख पसारे
बाट सजोया करती ।
चचल पवन सजल प्राणों में
पीर पिरोया करती ।

परिवार मे ये दोनो ही भावनाए भरी थी। देश-प्रेम प्रदर्शित करने मे आपने कभी पीछे पाव नही रखा। १९१८ ई० मे जब भारत सरकार ने महायुद्ध मे अत्यन्त कुर्बानी के साथ भाग लेने पर भी रौलट ऐक्ट पास करके भारतीयो को दुखी किया और नौकरशाही ने पजाब मे हत्याकाण्ड करके भारतीयो के साथ पशुतापूर्ण व्यवहार किया, तो रवि बाबू से यह नही देखा गया और उसके विरोधस्वरूप उन्होने अपनी 'सर' की उपाधि सरकार को लौटा दी और भाषणो तथा लेखो मे इन कुकृत्यों की घोर निन्दा की।

वृद्धावस्था मे भी रवि बाबू साहित्य-सेवा मे लगे रहे और देश-विदेश घूमकर भारत का नाम करने मे उन्होने आलस्य नही किया। सन् १९४१ मे इस मनीषी का स्वर्गवास हो गया।

रोम्यां रोलां

१९१४ ई० मे साहित्यक नोबल पुरस्कार किसीको भी नही प्रदान किया गया। और उसकी निधि सुरक्षित कोश मे रख दी गई। १९१५ ई० के पुरस्कार-विजेता फ्रास के नामी विचारक और 'जा क्रिस्तोफ' के रचयिता रोम्या रोला हुए। इनके नाम की घोषणा प्रकाशित होने पर साधारणत. सभी साहित्यिको ने प्रसन्नता प्रकट की। केवल इसी एक पुस्तक (जा क्रिस्तोफ) पर उन्हे पुरस्कार मिला और निर्णयकर्ताओ की तथा पाठको की दृष्टि इसी एक रचना पर विशेष रूप से आकर्षित हुई। रोम्या रोला की यह रचना फ्रेंच भाषा मे क्रमश १९०४ ई० से १९१२ ई० तक प्रकाशित हुई थी और अनेक भाषाओ मे अनूदित होकर आलोचको को आकर्षित कर चुकी थी। लोग इसे सामाजिक दशा का आईना कहने लगे। इस ग्रन्थ मे जीवन, सगीत, भावना, सघर्ष, प्रेम, पराजय, विद्रोह, मित्रता और दु खद किन्तु विजयी अन्त का दिग्दर्शन अत्यन्त प्रभावशाली ढग से वर्णित है। स्टीफन ज्विग नामक लेखक ने रोम्या रोला की जीवनी लिखते हुए कहा है कि पचास वर्ष की अवस्था तक तो रोम्या रोला चुपचाप अध्ययन करने और सगीत का आनन्द लेने मे लगे रहे, किन्तु सहसा इस पुस्तक के प्रकाशन ने उन्हे साहित्यक क्षेत्र मे प्रख्यात बना दिया।

रोम्या रोला का जन्म २९ जनवरी, १८६६ ई० मे फ्रास के क्लेमसी नामक छोटे-से कस्बे मे हुआ था। इनके पिता ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे और इनकी मा एक मजिस्ट्रेट की कन्या। उनकी मा सगीतज्ञा और धर्म-परायणा थी। वे अपने छोटे लडके मेडेलेन को बहुत प्यार करती थी। 'जा क्रिस्तोफ' मे उनके सुखमय घरेलू जीवन का अच्छा चित्रण किया गया है। लडकपन से ही रोमा रोला को सगीत मे अधिक रुचि हो गई और उनकी मा ने उन्हे सगीत सिखाया तथा बडे-बडे सगीतज्ञो की कहानिया सुनाई। जब उनकी स्कूली शिक्षा समाप्त हुई तो इनके पिता ने अपना काम छोड दिया और इनकी शिक्षा के लिए पेरिस चले गए। पेरिस मे उन्होने एक बैंक मे मुहर्रिर का काम इसलिए कर लिया कि इस-प्रकार वे अपने लडके को अच्छी शिक्षा दिलवाने मे सहायक सिद्ध होगे। बीस वर्ष की अवस्था तक तो रोला ने लीसी लुई-ली ग्रॉण्ड (विद्यालय) मे अध्ययन किया और इसके पश्चात् इकोल-नार्मल-सुपीरियर (महा-विद्यालय) मे प्रविष्ट हुए। वहा उन्होने इतिहास का विशेष अध्ययन किया। जैन्नील

मोनॉड नामक अध्यापक ने रोम्या रोला पर बहुत अधिक प्रभाव डाला। रोम्या रोला ने टॉल्सटॉय के प्रति विशेष अनुराग प्रकट किया और सुधारक तथा लेखक के रूप मे उनके प्रति श्रद्धा रखने लगे। शैक्सपियर के भी ये बडे प्रशसक हो गए—विशेषकर उनके ऐतिहासिक नाटको और प्रेम-गीतो के।

रोम्या रोला के समकालीन पॉल क्लॉडेल भी थे जिन्होने कैथोलिक सम्प्रदाय का इतिहास रहस्यपूर्ण ढग से लिखा था। रोला ने पहले ही से एक ऐसे एकाकी कला-विद् की कथा लिखी थी जिसने जीवन की चट्टान से चोट खाई हुई थी। उनकी यही रचना 'जा क्रिस्तोफ' नाम से प्रख्यात होकर उन्हे पुरस्कार दिलाने का कारण बनी। उन्हे नॉर्मल स्कूल की छात्रवृत्ति, फ्रेंच स्कूल के पुरातत्त्व एव इतिहास का वजीफा प्राप्त करके प्रसन्नता नही हुई थी। पुरातत्त्व एव इतिहास के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त करके वे अध्ययन के लिए रोम गए और वहा दो वर्ष तक ठहरे। वहा वे फ्रॉलिन मालविदावान-मेसेनबर्ग से मिले। ये महिला राजनीति, लेखन-कार्य और कला मे विशेषज्ञ थी। उनके साथ रोला 'वेरिउथ' जाकर अपना सगीत-सबन्धी ज्ञान बढाने मे सफल हुए। वहा एक दिन टहलते-टहलते उन्होने 'जा-क्रिस्तोफ' का कथानक सोचा किन्तु कई वर्षो तक उन्होने पुस्तक लिखने मे हाथ नही लगाया।

रोम से वापस आकर आप पेरिस मे नॉर्मल स्कूल के अध्यापक हो गए। इसके बाद उनका ध्यान ललित कला की ओर गया। रोम मे रहते हुए उन्होने 'आर्सिनो,' 'केलिगुला' और 'निवोबे' नामक तीन नाटक लिखे थे, किन्तु वे अभी तक प्रकाशित नही हुए थे। वे उनके प्रकाशन की ओर ध्यान न देकर नार्मल स्कूल तथा अन्य सस्थाओ मे सगीत के प्रति लोगो का प्रेम बढाने की ओर झुके। वे सगीत-सम्बन्धी सभाओ मे भाग लेने लगे और प्रख्यात सगीतज्ञो की जीवनी भी उन्होने लिखकर प्रकाशित कराई। उन्होने अपनी शादी माइकेल ब्रील नामक एक भाषातत्त्व-विशारद की लडकी से की। अपनी ससुराल मे इनका बडे-बडे साहित्यिको, वैज्ञानिको और कलाविदो से परिचय हो गया। उनकी स्त्री एक सुसस्कृत लडकी थी और रोला की जनसाधारण मे सगीत-प्रचार की भावना मे वह सहायक सिद्ध हुई। रोम्या रोला ने शिक्षा-सम्बन्धी अडचनो और राजनीतिक प्रतिक्रियाओ के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उन्ही दिनो उन्होने 'डैण्टन', 'फोर्टीन्थ ऑफ जुलाई'[१] 'ट्रम्फ ऑफ रीजन' और 'सेण्टलुई' की रचना की। उन्होने उन्ही दिनो यह आन्दोलन भी किया कि नाटकघर केवल अमीरो के लिए ही नही, सर्वसाधारण के लिए भी होने चाहिए। इस विषय पर लिखे हुए उनके निबन्धो का अग्रेजी अनुवाद 'दि पीपल्स थियेटर' नाम से प्रकाशित हुआ है। उन्होने नाटकघरो से सर्वसाधारण को तीन लाभ बतलाए है—(१) आनन्द-प्राप्ति, (२) शक्ति-सम्पादन और (३) ज्ञान-वर्द्धन।

१. इस नाटक का अनुवाद इस पुस्तक के लेखक ने 'विनाश की घडी' के नाम से किया है, जो पहले साहित्य-मण्डल, दिल्ली से प्रकाशित हुई थी।

राजनीतिक झगडो मे जब तक व्यक्तिगत कड़ुवाहट और मतभेद नही उत्पन्न हुआ तब तक वे उससे पृथक् नही हुए किन्तु जब उन्होने इस क्षेत्र मे गन्दगी देखी तो सार्वजनिक जीवन से पृथक होकर माइकेल ऐंजेलो, मिलेट तथा कुछ विख्यात सगीतज्ञो की जीवनिया लिखी। 'जा क्रिस्तोफ' का पहला परिच्छेद उन्होने 'कैहियर्स-दी-ला-क्विनजेन'-नामक साहित्यिक पत्रिका मे प्रकाशित कराया। पेरिस के माण्टपार्ने नामक भवन के पाचवे तल्ले पर दो कमरे रोम्या रोला ने अपने लिखने-पढने और रहने के लिए ले रखे थे। वे वही पुस्तके लिखते, पियानो बजाते, आगतो का स्वागत करते और दिल-बहलाव के लिए टहलते थे। बाहर से तो वे कुछ शान्त मालूम होते थे किन्तु भीतर ही भीतर ससार के छल-प्रपच पर कुढ रहे थे। उन्होने निष्प्राणता से मरते हुए स्वार्थपूर्ण ससार की अध्यात्मशून्यता पर 'जा क्रिस्तोफ' मे निराशा प्रकट की है और बतलाया है कि किस प्रकार केवल आध्यात्मिकता के ही द्वारा मानवता की रक्षा हो सकती है।

धीरे-धीरे बिना किसीकी सहायता के ही 'जां क्रिस्तोफ' का नाम होने लगा और आलोचको तथा पाठको द्वारा उसकी खूब चर्चा होने लगी। जर्मनी के पत्रकारो ने इसके गुणो की बडी कद्र की। स्वीडन के लेखक पॉल सीपल ने रोम्या रोला की जीवनी तथा आरम्भिक रचनाओ पर बहुत-कुछ लिखा। जून १९१३ ई० मे फ्रेंच एकैडमी ने रोम्या रोला को अपना महान पुरस्कार दिया। गिलबर्ट कैनन महोदय ने 'जा क्रिस्तोफ' का अनुवाद अग्रेज़ी मे किया और फिर इसकी आलोचना अधिक होने लगी। उन्ही दिनो रोला ने अपने विद्यार्थी-जीवन मे लिखे हुए नाटक भी प्रकाशित कराए जिनमे 'ले ट्रेजेडीज-डी-ला फाय' अधिक विख्यात हुआ, क्योकि वह बीसवी सदी के लोगो के आदर्श के अनुकूल था। 'वुल्वस' का भी अग्रेजी अनुवाद हो गया और वह न्यूनार्क मे रगमच पर भी खेला गया।

रोम्या रोला ने सगीतज्ञो और अपने साथियो के चरित्र-चित्रण के साथ जो कहानी लिखी है उसमे उन्होने समस्त ससार मे भावना और सामजस्य की परिव्याप्ति के लिए चेष्टा की है तथा स्थानीय वातावरण मे भी उसकी अनुभूति का उपदेश किया है। इस कहानी मे नायक अपनी भावना से प्रेरित होकर सारे ससार मे अन्वेषणात्मक दृष्टि मे घूमता-फिरता है। वह विभिन्न देश और जाति के लोगो से मिलना चाहता है। वह बीथोवेन, वागनर और ह्यूगो वुल्फ आदि कई सगीतज्ञो के वास्तविक जीवन का अनुभव प्राप्त करना चाहता है। वह आदर्शवाद और मानवता मे विश्वास का झण्डा ऊचा रखना चाहता है। लेखक की तरह वह (नायक) भी जीवन की कठोर वास्तविकता और भ्रम-भञ्जकता का शिकार बनता है। पुस्तक मे प्रसग अनेक है, किन्तु अन्त मे उन्हे पूर्ण स्वर-समन्वय के साथ मिश्रित कर दिया गया है। यह कथा सूत्र रूप मे १८९५-९७ ई० मे लिखी गई थी। इसके अश क्रमश फ्रास और इटली मे लिखे गए थे और नाटक के रूप मे पूर्ति स्विट्जरलैंड और इग्लैंड मे की गई थी। १९१२

ई० मे यह नाटक के रूप मे रगमच पर भी लाया गया था।

'जा क्रिस्तोफ' जैसा विशद उपन्यास ससार मे कदाचित ही दूसरा होगा। इसकी पृष्ठ-सख्या १५५० है और जिल्दे तीन है। इसमे अनेक स्थलो पर अपने ढग के अनोखे और अद्वितीय वर्णन है। इसके पात्रो मे से कुछ ऐसे है जिनमे जीवन भरा हुआ है, कुछ ऐसे है जो स्मृति को सदा ताजा रखते है। ऑलीवियर, ग्रैजिया, ऐण्टोने, सैबिन जैकलिन, इमैनुएल, डॉ० ब्रान और नायक के चरित्र ऐसे ही है। शेष बहुत-से अप्रधान पात्र ऐसे है जो स्मरण भी नही रखे जा सकते। पुस्तक का वर्तमान रूप लेखक की कल्पना के पूर्ण विस्तार का द्योतक है। इसके थोडे-थोडे अश भी सगीत की एक-एक कडी की भाति सुन्दर एव आनन्द-दायक है।

कुछ आलोचको ने एक बार रोम्या रोला पर यह आपत्ति की कि वे जर्मनी के प्रति शत्रुता के भाव रखते है। इसपर उन्होने उत्तर दिया कि मेरी जर्मनी से अणु-मात्र भी शत्रुता नही है, क्योकि जर्मनी की भाति मैने फ्रास की भी कई स्थलो पर निन्दा की है। उन्होने जर्मनी के सम्बन्ध मे लिखा है कि जर्मनी नैतिक शक्ति रखते हुए भी बीसवी सदी मे 'रुग्ण' हो रहा है, फ्रास भी दोषमुक्त नही है। दोनो देशो मे वीरतापूर्ण भावनाए है किन्तु इनमे से एक देश के निवासी दूसरे देशवासी को ठीक तौर से समझ नही पाते। जब तक ये दोनो देश एक-दूसरे को मित्र-भाव से समझने की चेष्टा नही करेगे तब तक युद्ध अवश्यम्भावी है, जो दोनो ही राष्ट्रो को छिन्न-भिन्न करके छोडेगा। 'जा क्रिस्तोफ' की यह भविष्यवाणी दो ही वर्ष बाद सच हुई और १९१४ ई० मे जर्मनी और फ्रास ने शत्रु के रूप मे यूरोपीय महासमर मे भाग लिया।

इस ऐतिहासिक उपन्यास का अन्तर्राष्ट्रीय विचारो पर स्थायी प्रभाव पडा है। इसमे एक साथ रूपक, अद्भुतता, मनोवैज्ञानिक अध्ययन और आदर्शवादी स्वप्न का सम्मिश्रण है। इसमे विशुद्धता, भावुकता और कल्पना-प्रवणता पाई जाती है। इस पुस्तक के अनुवादक (गिलबर्ट कैनन) ने लिखा है कि यह (जा क्रिस्तोफ) बीसवी सदी की पहली सर्वोत्कृष्ट पुस्तक है और इसमे वर्णित 'सन्त क्रिस्तोफ' का चरित्र अद्भुत और अपूर्व है। इसमे अनेक कथा-भाग ऐसे है जिनमे कला और वर्णन-सौन्दर्य का पूर्ण विकास हुआ है। 'ऐण्टोने', 'दि हाउस' (घर) और 'दि न्यू डान' (नव प्रभात) ऐसे ही अश है। लेखक ने अन्त मे भावी जगत और विशेषत युवक-समाज को इस प्रकार सन्देश दिया है—"हे वर्तमान जगत के मनुष्यो, आगे बढो, हमे पद-दलित करके आगे बढो। तुम हमसे अधिक प्रसन्न बनो।' जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म का पर्याय क्रम है। क्रिस्तोफ! हमे पुन जन्म धारण करने के लिए मरना अवश्य है।"

पुरस्कार-प्राप्ति के बाद रोम्या रोला ने 'कोला ब्रूगना' लिखा जो १९१९ ई० मे अग्रेज़ी मे अनुवादित होकर प्रकाशित हो गया। यह उपन्यास उनके पूर्वोक्त वृहत उपन्यास की अपेक्षा अधिक हलका रहा। यह स्विट्जरलैंड मे १९१३ ई० मे लिखा गया था। लडकपन से ही अपने मुख्य पात्र ओलिवियर की भाति रोम्या रोला युद्ध से

भय खाते थे। युद्ध के समय वे जेनेवा झील के निकट वेवी मे थे और उन्होने वही ठहरे रहने का निश्चय किया। वे फ्रास को प्यार करते थे, परन्तु युद्ध मे सम्मिलित होकर अपनी आत्मा को दु खित नही करना चाहते थे। उन्होने रेडक्रॉस सोसाइटी मे भाग लेकर सेवा-कार्य किया। युद्ध के सम्बन्ध मे उन्होने जो कुछ लिखा वह 'एबव्ह् दि बैटिल' नामक पुस्तक मे प्रकाशित हुआ है। उन्होने एक जर्मन नाटककार को पत्र लिखकर सद्भाव स्थापित करने की चेष्टा की थी। वुड्रो विल्सन को भी उन्होने इस सम्बन्ध मे पत्र लिखे थे और समस्त ससार के मस्तिष्क से काम करनेवालो के नाम एक गश्ती चिट्ठी लिखकर उनमे भ्रातृ-भाव स्थापित करने की चेष्टा की थी। इन्ही दिनो उन्होने महात्मा गाधी[1] पर भी एक पुस्तक लिखी।

इसके पश्चात् जब उन्हे अवकाश मिला तो उन्होने 'लिलुली' नामक एक हास्य-रसपूर्ण नाटक लिखा जिसकी प्रधान पात्री के रूप मे उन्होने माया का चित्रण किया। उन्होने 'क्लेरमबॉल्ट' नामक एक कहानी लिखी जिसमे युद्ध के समय एक स्वतन्त्र आत्मा की गाथा का चित्रण है। इसका अग्रेजी अनुवाद कैथेराइन मिलर ने किया है। इस कहानी के बहाने लेखक ने अपने भाव प्रकट कर दिए है और जीवन तथा सघर्ष के तत्त्वज्ञान पर अच्छा प्रकाश डाला है। इस कहानी का नायक क्लेरमबॉल्ट अपने जीवन मे अनोखे अनुभव करता है। उसके शान्तिपूर्ण ग्राम्य जीवन के आरम्भिक चित्र की उसके उस जीवन से तुलना की गई है जब वह पेरिस मे पहुचकर उन्मादपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगता है। नगर मे जाकर वह अपने पुत्र मैक्सिम को सेना मे भर्ती होने के लिए आग्रह करता और युद्ध मे जाकर मर जाता है। लेखक ने इस कहानी को क्लेरमबॉल्ट और उसकी स्त्री के लिए दु खान्तपूर्ण बनाया है, पर उसकी आत्मा की स्वतन्त्रता के लिए विजय-चिह्न सूचक है। इस मनोवैज्ञानिक कहानी मे आत्मचरित की झलक स्थल-स्थल पर मिलती है।

१९२२ ई० मे रोम्या रोला ने 'लेम एन्शैण्टे' लिखा जिसका अनुवाद बेन रे रेडमैन ने 'एनेट ऐण्ड सल्वी—दि प्रेल्यूड' नाम से किया है। इसकी दूसरी जिल्द 'समर' का अनुवाद एलीनोर स्टिमसन और वानविक ब्रुक्स ने किया है। इस पुस्तक मे विशेष प्रसग या सिद्धात न रखकर लेखक ने सत्य को प्राप्त करने के लिए सघर्ष दिखाया है और अन्त मे यह दिखाया गया है कि आत्मा का सामजस्य प्राप्त करके कितने आनद की प्राप्ति होती है।

रोम्या रोला ने भारतीय महापुरुषो और भारतीय आन्दोलनो की ओर विशेष अनुराग प्रदर्शित किया और श्रीरामकृष्ण परमहस तथा स्वामी विवेकानन्द की जीवनिया और उनके सिद्धान्तो पर पुस्तके लिखी है। महात्मा गाधी और कवि-सम्राट रविन्द्रनाथ ठाकुर से उनकी विशेष मित्रता थी और विगत द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेस के अवसर

१. Mahatma Gandhi The Man Who Became One With Universal Being

पर महात्माजी जब लन्दन गए थे तो लौटते समय रोम्या रोला के यहा सदल-बल ठहर-कर उन्होने उनकी मेहमानदारी स्वीकार की थी।

अपनी बाद की रचनाओ मे रोम्या रोला ने आदर्शवाद का स्पष्टीकरण किया जो उनके मत से भावना और क्रिया के सामजस्य और स्वतन्त्रता का नाम है। उनकी शैली कही-कही असगत और ठोस भी हो गई है, पर उसमे वास्तविकता का उच्च प्रकाश और महान सौन्दर्य सन्निहित है। अपने जीवन मे उन्होने अनेक ऐसे सघर्षो का अनुभव किया, जिनका उनके कोमल मन पर और शुद्ध आत्मा पर गम्भीर प्रभाव पडा है। उन्होने अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता और आध्यात्मिक ऐक्य के लिए शुद्ध भाव से लेखनी उठाई थी और उन्हे इसमे काफी सफलता मिली।

गेटे और बीथोवेन के सम्बन्ध मे इन्होने 'गेटे एण्ड बीथोवेन' नामक सुन्दर पुस्तक लिखी है जिसमे उनके सगीत-प्रेम और सगीत-ज्ञान का सुन्दर परिचय मिलता है। इसमे पाच निबन्ध अत्यन्त कौशलपूर्ण ढग से लिखे गए है।

रोम्या रोला १९४४ ई० मे स्वर्गवासी हुए।

हेइदेन्स्ताम

१९१६ ई० का नोबल पुरस्कार स्वीडन के विख्यात कवि हेइदेन्स्ताम को मिला। इनका पूरा नाम वर्नर-फॉन हेइदेन्स्ताम था। पुरस्कार प्राप्त करने के पहले ही स्वीडन मे ये अद्वितीय कवि माने जा चुके थे। उनके देश मे इनकी कविताओ का अद्वितीय मान है। इनकी कुछ रचनाओ का अग्रेजी अनुवाद भी हुआ है और चार्ल्स व्हार्टन स्टार्क, आर्थर जी० चाटर और कैरोलिन एम० नडसन ने इनकी रचनाओ का अग्रेजी मे अनुवाद करके इन्हे ससार के समक्ष लाने का श्रेय प्राप्त किया है।

वर्नर-फॉन हेइदेन्स्ताम का जन्म ६ जुलाई, १८५९ ई० को नार्क (स्वीडन) मे हुआ था। बचपन मे वे बडे लज्जालु स्वभाव के और दुर्बल थे किन्तु पढने-लिखने मे उनका मन बहुत लगता था—विशेपकर कविताए और वीरगाथाए वे बडे चाव से पढते थे। बचपन मे ही उन्हे फेफडे की बीमारी हो गई थी जिसके कारण उन्हे जलवायु-परिवर्तन के लिए दक्षिणी यूरोप भेजा गया। आठ वर्ष तक वे स्वीडन से दूर ही रहे और इटली, स्विट्ज़रलैण्ड, ग्रीस, तुर्की और मिस्र का भ्रमण करते रहे। उनके पूर्वजो मे से कुछ लोग पूर्वी देशो मे सरकारी नौकरिया कर चुके थे। उन देशो के सुन्दर दृश्य देखकर वे मुग्ध हो गए।

पहले-पहल उनके मन मे चित्रकार बनने की अभिलाषा उत्पन्न हुई थी। कुछ दिनो तक वे पेरिस के 'जेरोम'—चित्रकला-शिक्षणालय— के विद्यार्थी रहे थे। समालोचको ने उनकी कविताओ मे स्थल-स्थल पर उनकी चित्रकला-विज्ञता का आभास पाया है। फ्रास के अतिरिक्त इटली और दमिश्क मे भी उन्होने चित्रकला के उपकरण सग्रह किए थे। युवावस्था के आरम्भ मे ही इनका एक मध्यम श्रेणी की स्विस लडकी से प्रेम हो गया और इसके साथ उन्होने शादी भी कर ली थी। इसके बाद ब्रूनेग के एक पुराने किले मे ये एकान्तवास करने लगे जहा ये अपनी स्त्री और ऑगस्टस्ट्रिग बर्ग नामक मित्र के अतिरिक्त और किसीसे नही मिलते थे। स्ट्रिगबर्ग इस युवक कवि हेइदेन्स्ताम की प्रतिभा से आकर्षित हो गए थे और इसके प्रशसक बन चुके थे। हेइदेन्स्ताम ने अब निश्चय कर लिया कि वह चित्रकारी मे न पडकर साहित्यिक क्षेत्र मे पदार्पण करेगे। उन्होने अनेक कविताए लिखी और उनका सग्रह 'तीर्थयात्रा और भ्रमण के दिन'[1] नाम से किया। 'एकान्त विचार'[2] नामक काव्य सग्रह से इनके मातृभूमि के प्रेम और अन्याय के प्रति रोष

---

१. Pilgrimages and Wander Years   २. Thoughts in Loneliness

का परिचय मिलता है। बचपन के दृश्यो के सम्बन्ध मे उन्होने अनेक सुन्दर कविताए लिखी है जिनकी स्मृतिया अत्यन्त मनमोहक है। इन कविताओ मे उन्होने अपनी माता को स्मरण किया है। इनमे शोकोद्गार का पर्याप्त सम्मिश्रण है।

१८८७ ई० मे हेइदेन्स्ताम के पिता का देहान्त हो जाने के कारण उन्हे विदेशो के भ्रमण से स्वीडन लौट आना पडा और परिपक्वावस्था तक उन्हे घर पर ही रहना पडा। 'तीर्थयात्रा और भ्रमण के दिन' के पश्चात् इनकी कविताओ का एक और सग्रह प्रकाशित हुआ जिसके कारण उनकी ख्याति स्वदेशवासियो मे और बढ गई। इस सग्रह मे 'एक पुरुष के एक स्त्री के प्रति अन्तिम शब्द'[1] अच्छी कविता समझी जाती है। इसके अतिरिक्त 'टिवेडन का जगल'[2] और गुस्ताफ फ्रोडिंग की अन्त्येष्टि-क्रिया'[3] भी उन्ही दिनो लिखी गई। स्वीडन मे इनकी कविताए इतनी अधिक प्रचलित हुई कि जगह-जगह लोग इनको गाने लगे। इनकी 'स्वीडन' नामक कविता तो सब जगह सामूहिक रूप से गाई जाने लगी। इसमे देशभक्ति का पर्याप्त पुट है। उनकी बाद मे लिखी हुई कविताओ मे भ्रातृ-भाव की छाप है और १९०२ ई० मे प्रकाशित उनके कविता-सग्रह मे ससार-मात्र मे समानाधिकार-स्थापन का शुभ सन्देश है। ब्योर्न्सन की तरह उन्होने भी आदर्श मे राष्ट्रवाद और विश्ववाद दोनो को स्थान दिया है। ब्योर्न्सन की मृत्यु पर उन्होने जिस शोक-काव्य की रचना की है, वह अपना विशेष स्थान रखता है। उसमे ब्योर्न्सन को उन्होने 'नार्वे का पिता' लिखा है।

वर्नर-फॉन हेइदेन्स्ताम उपन्यासकार और कवि दोनो ही थे। उनका पहला उपन्यास 'एण्डीमियन' नाम से प्रकाशित हुआ, जिसका प्रसग पुराना होने पर भी शैली नवीन थी। एक चित्रकार की-सी सुकुमार कोमलता के साथ उन्होने यह प्रेम-कहानी लिखी थी। इसका वातावरण प्राच्य है और बीच-बीच मे पाश्चात्य सभ्यता का अवरोध है। कहानी मे तथ्यवाद के वे पूर्ण विरोधी थे और 'पेपिटाज वेडिंग' (पेपिटा का विवाह) मे उन्होने आदर्शवाद और आभ्यन्तरिक सत्य की खोज पर जोर दिया है। उनके उपन्यासो मे 'चार्ल्समैन' जिसमे चार्ल्स बारहवें की कहानी है, अधिक विख्यात है। इसमे बीच-बीच मे कविताओ की छटा भी खूब है। कथानक मे स्वीडन की वीरता का विशद वर्णन है। इनकी नाटकीय कहानियो मे से 'फ्रेचमॉन्स', 'सुरक्षित घर'[4] और 'कैदी'[5] अधिक ख्यातिप्राप्त है। समस्त जीवन रण-क्षेत्र मे रहकर भी नाली मे मरनेवाले सम्राट की उन्होने बडी ही करुणाजनक कहानी लिखी है।

हेइदेन्स्ताम के अन्य उपन्यास है 'सेण्ट जार्ज एण्ड दि ड्रैगन', 'सेण्ट विरगिटाज पिल्ग्रिमेज' और 'फारेस्ट मर्मर्स'। इनकी निबन्धमाला 'क्लासिसिज्म और ट्यूटानिज्म' के नाम से मुद्रित हुई है। सचमुच यह दुर्भाग्य की बात है कि उनकी रचनाओ मे से बहुत

---

१. A Man's Last Word to a Woman
२. The Forest of Tiveden
३. The Burial of Gustaf Froding
४ Fortified House
५. Captured

कम का अनुवाद अंग्रेजी मे हुआ है। उन्होने नरम दल के और सुधारक पत्रो मे भी लेख लिखे है। १९०० ई० मे उन्होने तीसरी बार विवाह किया और वाडस्टेना नगर के निकट रहने लगे जहा उन्होने अपने बचपन के दिन व्यतीत किए थे। उनकी स्त्री सुसंस्कृत और उच्च घराने की थी। १९१२ ई० मे वे स्वीडिश एकैडमी के सदस्य चुने गए और इसके चार वर्ष बाद उन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

उनकी पद्यात्मक रचनाओ मे से 'लोरी के गीत'[1] अच्छा नाम पा चुकी है। बच्चो के लिए कहानिया भी इन्होने लिखी है। स्वीडन के शिक्षा-विभाग के अधिकारियो ने उनसे शिक्षा-विभाग के लिए रीडरे लिखने के लिए भी कहा। उन्होने यह काम बडे प्रेम से किया। उनमे इन्होने वीरता की कहानियो का समावेश पर्याप्त रूप मे किया। अधिक उम्र के लडके-लडकियो और युवको के लिए उन्होने दो नाटक आधुनिक ढग के लिखे है जिनके नाम 'भविष्यवक्ता'[2] और 'भगवान का जन्म'[3] है। इनका अंग्रेजी अनुवाद कैरोलिन एम० नडसन ने किया है। इनमे से पहली रचना एक आर्केडियन कथानक के आधार पर लिखी गई है और दूसरी मिस्र की पौराणिक कहानियो के आधार पर।

इनकी 'दि ट्री ऑफ फोकग्स' का स्वीडिश से आर्थर जी० चार्टर नामक अमेरिकन ने अंग्रेजी मे अनुवाद किया है। इसमे इतिहास के साथ-साथ अनेक किम्वदन्तियो और कल्पनाओ का सम्मिश्रण है। हेइदेन्स्ताम की मृत्यु १९४० ई० मे हो गई।

---

१. Cradle Songs
२. Soothsayer
३ The Birth of God

हेनरिक पोण्टोपिदान

१९१७ ई० का नोवल पुरस्कार डेन्मार्क के प्रख्यात लेखक हेनरिक पोण्टोपिदान और कार्ल ग्येलेरुप दोनो को आधा-आधा मिला। अब तक पुरस्कार अन्य राष्ट्रो के साहित्यिक महारथियो को ही मिलता आया था और डेन्मार्क-वासी इससे वञ्चित थे। इसका एक कारण तो यह था कि इस देश के लेखको की रचनाओ के अनुवाद कम होने के कारण इनकी रचनाए साहित्यिक जगत् के सम्मुख उतनी नही आ पाई थी जितनी स्वीडन और नार्वे के लेखको की। केवल हान्स क्रिस्टियन ऐण्डर्सन और जॉर्ज ब्रैडिज ही अभी तक नाम पा चुके थे। डेन्मार्क की राजकीय नाट्यशाला एक शिक्षा-सम्बन्धी सस्था समझी जाती थी। होलवर्ग, ओहलेश्लैगर और एडवर्ड ब्राडेस नामक नाटककारो की रचनाए पहले भी आदर पा चुकी थी और अन्यदेशीय साहित्यिको ने उनकी रचनाए चाव से पढी थी। वर्गस्टार्म के नाटक 'कारेन बोर्नमैन'[1] का अग्रेजी अनुवाद एडविन जार्कमैन ने किया था।

हेनरिक पोण्टोपिदान का जन्म १८५७ ई० मे जटलैण्ड के फ्रेडरिका नामक स्थान मे हुआ था। उनके पितामह और पिता पादरी रह चुके थे। अभी बालक पोण्टोपिदान स्कूल मे ही पढ रहे थे कि उनका परिवार फ्रेडरिका से स्थानान्तरित होकर कैण्डर्स आ गया। यहा वे अपने परिवार के साथ तव तक रहे जव तक कि वे कोपेनहेगन जाकर पॉलीटेकनिक स्कूल मे इजीनियरी पढने नही चले गए। वे स्विट्जरलैण्ड की सैर को भी गए, जहा उन्होने पहले-पहल प्रेम-जगत् का अनुभव प्राप्त किया। उन्होने अपनी आरम्भिक रचना स्विट्जरलैण्ड मे ही की थी।

सन् १८८१ ई० मे डेन्मार्क मे उनका 'क्लिप्ड विंग्स' नामक कहानी-सग्रह प्रकाशित हुआ। इनमे गिरजाघर का जहाज'[2] कल्पना और नाटकीय केन्द्रीभूतता की दृष्टि से वहुत सुन्दर है। इसमे रहस्यमय ढग से यथार्थवाद का सम्मिश्रण किया गया है। १८९१ ई० मे वे कुछ समय के लिए ऑस्टवी मे रहे थे और कुछ ही वर्ष वाद अपनी दूसरी शादी करने के वाद वे कोपेनहेगन चले गए, जहा उन्होने ब्रैडिज से मित्रता की और शिक्षा-सम्वन्धी तथा साहित्यिक क्षेत्र मे नेतृत्व प्राप्त कर लिया। नये नाटककारों

---

१. Karen Bornman

२. Church Ship

और उपन्यासकारो को भी वे यथेष्ट आदेश दिया करते थे। उन्हे इब्सन का अनुगामी कहा जाता है। उनकी कहानियो मे दत्यो के मलिन प्रभाव की छाप दिखाई देती है। समालोचको ने तो यहा तक लिख मारा है कि इनकी रचनाओ मे स्थानीयता तथा आध्यात्मिकता अधिक होने के कारण बहुत सकीर्णता आ गई है।

पोण्टोपिदान की रचनाओ मे डेन्मार्क के ग्राम्य जीवन का सुन्दर चित्रण है। उनकी पहली पुस्तक 'दि प्रामिस्ड लैण्ड' मे तथ्यवाद का बाहुल्य है। इसमे दिखाया गया है कि इस भौतिक अभिलाषा के जगत् मे आदर्शवादियो के सघर्ष का वास्तविक रूप क्या होता है। यह पुस्तक बडी सावधानी के साथ तीन वर्ष मे लिखकर पूरी की गई थी और यह उनकी सफल रचना मानी जाती है। उनका दूसरा उपन्यास 'लकी पीटर' था। इसे भी उन्होने चार वर्ष मे लिखा था। इस उपन्यास का नायक भी लेखक की भाति पादरी का लडका और इजीनियर था। 'मृतको का साम्राज्य'[1] महायुद्ध के दिनो मे लिखा गया था और यह देशभक्ति के साथ-साथ एक विशेष आदर्श के प्रति निष्ठा उत्पन्न करके युद्ध से घृणा करा देता है। इसमे कोपेनहेगन का नागरिक एव ग्रामीण दृश्य सामने आ जाता है। इसके अतिरिक्त उनके 'दि अपाथेकैरीज डॉटर' का भी अनुवाद जी० नीलसेन महोदय ने अग्रेजी मे किया है।

पोण्टोपिदान की कहानियो के अग्रेजी अनुवाद मे से 'दि प्रामिस्ड लैण्ड' और 'इमैनुएल' या 'चल्ड्रन आफ दि स्वायल' पढ लेने से लेखक का उद्देश्य मालूम हो जाता है। इस कहानी-सग्रह का अनुवाद श्रीमती एडगर लुकास ने किया है। इनकी कहानियो का चित्रण नेली इरिचसेन ने किया है, जिन्होने 'डेन्मार्क के कृषक का विकास'[2] नामक परिच्छेद मे लेखक के वास्तविक उद्देश्य का चित्रण किया है। १८४९ ई० मे जब डेन्मार्क के किसानो को आजादी मिली और वे गुलाम से नागरिक बना दिए गए तो पोण्टोपिदान के शिक्षा-सम्बन्धी एव धार्मिक जीवन मे काफी बाधा और कोलाहल का समावेश हो उठा। राजनैतिक दल सगठित हुए। 'किसान-मित्र-सघ' ने नये-नये स्कूलो की स्थापना की। १८६६ ई० मे फिर उक्त स्वतत्रता के ऐक्ट मे सशोधन उपस्थित करके जब किसानो की स्वतत्रता का अपहरण हुआ तो उन्हे बडी ही निराशा का सामना करना पडा। वीलबी और स्किबरप नामक जिन दो गावो मे पोण्टोपिदान महोदय ने निवास कर शिक्षक का काम किया था, वहा का चित्रण बडी ही सजीव भाषा मे किया गया है और बतलाया गया है कि उनमे विद्रोह की भावना किस प्रकार जाग्रत हुई थी।

पोण्टोपिदान की कुछ छोटी कहानियो की वर्णन-शैली अद्भुत है। 'ईगल्स फ्लाइट' और 'मियासाज' ऐसी ही कहानिया है। वे शिक्षा-सम्बन्धी उन्नति विशेष रूप से चाहते है और इसके लिए स्वय भी सचेष्ट रहते है। वे राजनैतिक छल-प्रपच और झूठे समझौते सन्धियो के विरोधी है। उनकी भावना सदा से आदर्शवाद-मूलक रहती आई

---

१. The Kingdom of the Dead

२ The Evolution of the Danish Peasant

है। उनकी सबसे बडी विशेषता यह है कि उनका डेन्मार्क के ग्रामो और नगरो का वर्णन इतना तथ्यपूर्ण और सजीव है कि उन्हे साहित्यिक जगत् मे डेनिश-जीवन का फोटोग्राफर कहा जाता है। इनकी रचनाओ की अभी तक उतनी कद्र नही हुई है जितनी होनी चाहिए, किन्तु ज्यो-ज्यो इनकी रचनाओ का अंग्रेजी अनुवाद अधिकाधिक रूप मे होता जाएगा त्यो-त्यो इनकी ख्याति बढती जाएगी।

पोण्टोपिदान की मृत्यु १९४४ ई० मे हुई।

कार्ल ग्येलेरुप

१६१७ ई० का शेषार्द्ध पुरस्कार कार्ल ग्येलेरुप को प्राप्त हुआ था, क्योकि एकैडमी की दृष्टि मे यह महोदय भी बहुमुखी प्रतिभा के भावुक और उच्चादर्शपूर्ण लेखक थे। पोण्टो-पिदान की तरह कार्ल एडाल्फ ग्येलेरुप भी एक पादरी के लडके थे। उनका जन्म रोहोल्ट नामक स्थान मे १८५७ ई० मे हुआ था। अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए पहले तो उन्होने धर्मतत्त्व का अध्ययन किया, किन्तु उन्हे याजक बनने की इच्छा नही थी और उनका आधुनिक सिद्धान्तो की ओर अधिक झुकाव था। उन्होने डार्विन, ब्रैंडिज और स्पेसर की शिष्यता स्वीकार कर ली और बाद मे उससे भी मन फेरकर वे ऐतिहासिक अध्ययन मे लग गए। वे 'इडास' के अध्ययन मे खास दिलचस्पी लेते थे और लेखक बनने के पहले ही वे साहित्य की ओर आकर्षित हो गए। उन्होने अपने जीवन का अधिकाश ड्रेसडन मे व्यतीत किया, जहा वे अपने घर की अपेक्षा अधिक विख्यात हो गए थे।

ग्येलेरुप ने अनेक विषयो पर लेखनी उठाई है। कला और सगीत पर उन्होने कई पुस्तके लिखी है। उन्होने ऐसे नाटक लिखे है जिनमे आधुनिक ख्रिष्ट धर्म के तत्त्व का सामजस्य ग्रीक सौन्दर्य-प्रेम से किया है। इन्होने 'इडास' आदि पुराने कवियो की कहानियो का अनुवाद आधुनिक डेनिश भाषा मे किया है। उनकी दो कहानिया—'दि पिलग्रिम कामनिता' और 'मीन'—अग्रेजी मे अनूदित होकर प्रकाशित हुई है। उनके उपन्यासो मे 'एक आदर्शवादी'[1] और 'पास्ट मान्स' ऐसे है जिनमे व्यग्य और सजीव चित्रण भरे पडे है।

'दि पिलग्रिम कामनिता' का अनुवाद जान ई० लॉगॉ ने किया है और इसका स्पष्टीकरण दूसरा उपनाम 'ए लीजेण्डरी रोमास' लिखकर किया गया है। इसमे महात्मा बुद्ध की वह कहानी है जिसमे यह बतलाया गया है कि वे गगातट से होकर पच-पर्वत की नगरी को गए थे। इसमे कृष्ण-कुञ्ज के वृक्षो और पुष्पो का सुन्दर वर्णन है। पच-पर्वत की नगरी का प्राकृतिक वर्णन अत्याकर्षक है—वाटिका के मुकुलित वृक्षो, समतल चौगानो, और सुदूर तक फैली हुई पर्वतावलियो की चमक-दमक पुखराज और पद्मराग आदि मणियो की चमक को मात कर रही है। कामनिता इन पर्वतो मे अवस्थित अवन्ति नामक नगरी के एक व्यापारी का लडका था। वह स्फटिक की रगाई

१. An Idealıs

और वहुमूल्य रत्नो के उद्गम-स्थान को भी जानता था। बीस वर्ष की अवस्था मे वह कौशाम्बी के राजा उदयन के पास राजदूत बनाकर भेजा गया। यही से उसकी तीर्थ-यात्रा आरम्भ होती है और कहानी मे प्रेम और स्मृतियो का सम्मिश्रण होता है। रहस्यवाद और गूढ तत्त्वज्ञान को इसमे यथार्थवाद से मिला दिया गया है।

'मीना' एक उपन्यास है जिसका अग्रेजी अनुवाद नीलसेन ने किया है। इसका कथानक ड्रेसडन से सम्बन्ध रखता है। इसमे मीना और उसके दुखान्त जीवन के साथ वागनर, चोपिन और बीथोवेन के गान और सगीत सम्मिलित है। मीना को इसमे अत्यन्त भावावेग के साथ चित्रित किया गया है। इसमे लेखन ने स्थल-स्थल पर विख्यात कवि मूर की कविताए उद्धृत की हैं।

ग्येलेरुप को नोबल पुरस्कार मिलने पर जर्मनी मे खूब हर्ष मनाया गया, क्योकि उनकी कला और साहित्य का ड्रेसडन (जर्मनी) मे अच्छा प्रभाव था। उन्होने जर्मन-जीवन और जर्मन तत्त्वज्ञान को डेनिश भाषा मे लिखने मे काफी सफलता प्राप्त कर ली थी। उनके डेनिश स्वदेशवासी इनकी रचनाओ का यद्यपि पर्याप्त आदर करते हैं, पर उनकी दृष्टि से वे डेनिश भाषा के कोई मौलिक महान लेखक नही थे। उस देश के कुछ लोग अग्रगण्य साहित्यिक ग्येलेरुप की अपेक्षा जॉर्ज बाण्डस जैसे लेखक, बर्ग-स्ट्राम जेसे नाटककार या ड्राचमैन जैसे कवि या जे० वी० जैन्सन जैसे को नोबल पुरस्कार दिलाना अधिक पसन्द करते, फिर भी ग्येलेरुप की काव्यमयी अन्तर्दृष्टि और व्याख्या करने की अद्भुत क्षमता ऐसी है जिससे कोई भी इन्कार नही कर सकता।

कार्ल स्पिटलर

१९१९ ई० का नोबल पुरस्कार स्विट्जरलैण्ड के साहित्यिक कार्ल स्पिटलर को मिला था। अपने देश के अतिरिक्त फ्रास और जर्मनी मे इनका नाम प्रसिद्ध हो चुका था। १९१८ ई० का नोबल पुरस्कार किसीको भी नही दिया गया था। यद्यपि नीत्शे जैसे विद्वान ने भी स्पिटलर की प्रशसा की थी, किन्तु फिर भी इन्हे नोबल पुरस्कार मिलने के पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति नही प्राप्त हो सकी थी।

कार्ल स्पिटलर का जन्म १८४५ ई० मे लीस्टल मे हुआ था। इनके पिता डाकखाने की नौकरी करते थे और बाद मे खजाने के सेक्रेटरी हो गए थे। बैसेल विश्वविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करते समय कार्ल स्पिटलर पर जर्मन विद्वान विलहेम वैकरनागैल और इटैलियन इतिहासकार जैकब बर्खार्ट का विशेष प्रभाव पडा। उन्हे सगीत मे बडा प्रेम था और वे बीथोवेन का सगीत विशेप रूप से पसन्द करते थे। उन्होने कला-प्रेम का विशेप परिचय दिया और बाद मे वे ज्यूरिच और हीडेलबर्ग विश्वविद्यालयो मे इतिहास और कानून पढने गए। धर्मशास्त्र का अध्ययन करके धर्माचार्य बनने का विचार भी उन्होने किया था, किन्तु पीछे उन्होने अनुभव किया कि तत्त्वज्ञान और साहित्य की ओर उनका झुकाव अधिक है। उन्होने खूब भ्रमण किया और उनके मन मे महाकवि बनने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। उन्होने 'जॉन आफ अबीसीनिया' 'एटलाण्टिस' और 'थेसियस ऐण्ड हेराकिल्स' नामक पुस्तके लिखने का निश्चय करके उनका कच्चा ढाचा तैयार किया, किन्तु बाद मे बाल-चेष्टा समझकर इन्हे छोड दिया। आठ वर्ष तक वे रूस मे रहे और वहा एक रूसी अफसर के बच्चे के शिक्षक के तौर पर काम करते रहे। वहा वे कुछ काव्य-रचना भी करते रहे और 'प्रोमेथियस एपीमेथियस' नामक खण्ड-काव्य को पूरा कर लिया। पहले ये फेलिक्स टैडम के कल्पित नाम से प्रकाशित हुआ और दस वर्ष बाद उनके वास्तविक हस्ताक्षर के साथ मुद्रित हुआ। उनकी यह रचना प्रकाशित हो जाने पर बहुत-से आलोचको ने उनकी रचना को नीत्शे का अनुकरण बतलाया, पर उन्होने उसका विरोध किया और इसपर एक पुस्तक लिखकर सिद्ध किया कि उन्होने इस रचना के पूर्व नीत्शे का अध्ययन तक नही किया था।

स्विट्जरलैंड के बेरती और न्यूनस्टेट स्थान मे वे कुछ दिनो तक शिक्षक का कार्य करते रहने के बाद बैसेल जाकर पत्रकार का कार्य करने लगे। १८८३ ई० मे उन्होने

विवाह किया और उसी वर्ष उनकी 'एक्ट्रामण्डना' नामक एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमे उन्होने विनोदात्मक काव्य मे सृष्टिरचना का इतिहास वतलाया है। उनकी स्फुट कविताओ का एक सग्रह 'तितली' नाम से प्रकाशित हुआ जो प्रकृति-प्रेम और छन्द-प्रवाह की दृष्टि से वडी सुन्दर रचना कही जा सकती है। १८९७ ई० मे उन्हे कुछ पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हुई। इसके वाद उन्होने आजीविका के लिए लिखना तथा शिक्षक का काम करना छोड दिया। उसके पश्चात् वे लुसर्ने चले गए। वहा के प्राकृतिक दृश्यो ने उनकी काव्यमयी भावना को और भी जाग्रत कर दिया। यहा उन्होने 'हास्यात्मक सत्य' नामक एक निवन्ध-माला लिखी जिसमे व्यग्य और निश्छलता का सरस सामजस्य है। इसके वाद 'गस्टेव' तथा वच्चो के लिए 'टू लिटिल मिसोगिनिस्ट्स' नामक पुस्तके प्रकाशित हुई। यह दूसरी पुस्तक यद्यपि वच्चो के लिए उपयोगी है लेकिन इससे वडी उम्रवाले भी लाभ उठा सकते है।

१९०५ ई० मे उनकी कुछ कविताए 'वलाडेन' के नाम से प्रकाशित हुई और इसके वाद उन्होने 'इमागो' नामक कविता लिखी जिसमे प्रोमेथियस की वास्तविक घटना का विश्लेषण किया है। इसमे युवक कवि विक्टर का आत्मचरित है। लेखक ने जर्मनी के स्त्रीत्व का भी इसमे सुन्दर चित्रण किया है।

स्पिटलर के परिपक्व विचारो का परिचय पाठको को 'ओलम्पियन स्प्रिङ्ग' नामक पुस्तक मे मिल सकता है। यह १९०० से १९०५ ई० तक पत्रो मे धारावाहिक रूप मे प्रकाशित हुई थी। उनके एक पद्य के अग्रेजी अनुवाद का हिन्दी भावानुवाद यहा दिया जाता है :

"तुम्हारे राजमुकुट की ख्याति प्रतिदिन अधिकाधिक वढ रही है। तुम्हारी भावनाए उच्च है। श्रेष्ठ जनो की यही पहचान है।

"हे वीर, तुमने जो साहस किया है वह वीरो का कर्तव्य है।

"अपने कर्तव्य को पूरा करने के कारण आज तुम हज़ारो मे एक हो।"

उनकी कविताओ मे पौराणिकता और व्यग्य का वाहुल्य है। वहुत-से आलोचको ने उनकी इस रचना (ओलम्पियन स्प्रिङ्ग) को नई शताब्दी की दैवी रचना कह डाला है। कई आलोचको ने इस रचना की तुलना शेली की 'प्रोमेथियस अनवाउण्ड' और कीट्स की 'इन्डीमिअन' तथा अन्य महाकाव्यो से की है। अनांके को पौराणिक सृष्टिकर्ता मानकर लेखक ने उसके हाथो देवताओ को इरेवस मे कैद करवा दिया है। पीछे वह देवताओ को आज्ञा देता है कि वह ससार की यात्रा करे। अनाके की लडकी मोइरा जगत् मे आकर यहा के निवासियो को वसन्त और शान्ति प्रदान करती है, किन्तु जव वे उन देशो के निकट पहुचते है तो उनका आनन्द कष्ट के रूप मे परिणत हो जाता है।

स्पिटलर स्विट्ज़रलैण्ड मे जर्मन कविता के प्रतिनिधि समझे जाते है। उनके गद्य मे गेटे और शिलर की छाप है। महायुद्ध के समय उन्होने जर्मन-स्विट्ज़रलैण्ड की तटस्थता पर ज़ोर दिया, इसलिए वहुत-से जर्मन उनके विरुद्ध हो गए। इधर फ्रास मे

इसके कारण इनकी ख्याति बढ चली और सत्तर वर्ष की अवस्था मे फ्रेच एकैडमी ने उनका विशेष आदर किया। उनकी कविताओ मे सागीतिक विभिन्नता है जिनमे 'बेल साग्स' और 'बटरफ्लाईज' अधिक प्रसिद्ध है। अपनी बाद की रचनाओ मे उन्होने आध्यात्मिकता का सामजस्य और व्यापारिकता को नि·दा की है।

सन् १९३१ ई० मे स्पिटलर महोदय का लुसर्ने मे देहान्त हो गया। विडमैन ने इनकी 'प्रामेथियस' नामक रचना की आलोचना करते हुए लिखा है "उनकी कविता मे धर्म (पौराणिकता) और विचार (तत्त्वज्ञान) का जैसा सन्निवेश है वैसा और किसी की कविता मे नही पाया जाता।" यही महोदय 'बटरफ्लाईज' (तितलिया) के सम्बन्ध मे भी अपनी आलोचना मे लिखते है "उन आश्चर्यजनक नन्हे-नन्हे जन्तुओ का – जिनका रूपान्तर मनुष्य जाति की स्मृति पर रहस्यपूर्ण प्रभाव डालता है—भाग्य कवि ने अत्याकर्पक दु खान्त मे वर्णन किया है। इसी प्रकार अनेक आलोचको ने स्पिटलर की रचनाओ मे शक्ति, अनोखापन और आदर्श पाया है। रोम्या रोला ने भी उनकी रचनाओ की प्रशसा की है। उन्हे नोबल पुरस्कार मिलने के पूर्व ही रोम्या रोला ने उनके सम्बन्ध मे लिखा था. "मेरे ख्याल मे स्पिटलर इस समय यूरोप के सर्वश्रेष्ठ कवि है, और एक यही ऐसे कवि है जो प्राचीन कीर्ति को पहुच गए है।···आश्चर्य है कि दुनिया ऐसी अन्धी है कि ऐसी चमत्कृत ज्योति के निकट से गुजरकर भी उसके प्रकाश से वञ्चित है और उसके गुणो से अपरिचित है।"

नट हैमसन

१६२० ई० का नोबल पुरस्कार नार्वे के प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक नट हैमसन को मिला। इन्होने बीस से अधिक उपन्यास और नाटक ऐसे लिखे है जिनका अनुवाद विभिन्न भाषाओ मे हो चुका है। ससार के वर्तमान साहित्य-क्षेत्र मे नट हैमसन की रचनाओ का एक खास स्थान है और वे जगद्विख्यात साहित्यिक माने जाते है। वे कुछ समय शिकागो (अमेरिका) मे घोडा-गाडी हाकने का काम कर चुके थे, इसलिए उन्हे जब नोबल-पुरस्कार मिला तो अनेक अमेरिकन पत्रो ने बड़े-बडे शीर्षक देकर यह समाचार छापा, 'घोडा-गाडी हाकनेवाले को नोबल पुरस्कार' आदि, आदि। उनकी रचनाओ मे उनके निजी व्यक्तित्व का विकास जितना सुन्दर हुआ है उतना कदाचित ही किसी अन्य लेखक का हुआ हो।

नट हैमसन के माता-पिता किसान थे। उनका जन्म पूर्वी नार्वे के लोय नामक स्थान मे ४ अगस्त, १८६० ई० मे हुआ था। इनके घराने मे कारीगरी का काम हुआ करता था। इनके दादा धात का काम करनेवाले थे जिन्हे हिन्दुस्तान मे ठठेरा कहते है। किन्तु इस काम मे उन्हे विशेष आमदनी नही थी। जब हैमसन चार ही वर्ष के थे, उनका परिवार यहा का पहाडी प्रदेश छोडकर लोफोडेम द्वीप (नार्डलैण्ड) चला गया। यहा के वन्य दृश्य और मछुओ के कठोर कार्य को देखते-देखते बालक हैमसन ने युवावस्था प्राप्त की। कुछ समय तक वे अपने एक चाचा के साथ रहे जो राजकीय गिरजे के एक उपदेशक थे। उनके चाचा बडे कठोर हृदय थे। अपनी 'ए स्पूक' नामक कहानी मे हैमसन ने अपने चाचा के बेतो को अच्छी तरह याद किया है, जिनके भय से वे भागकर कब्रगाह और जगल मे छिप जाया करते थे। अपनी शिक्षा-सम्बन्धी भूख मिटा सकने के पूर्व ही नवयुवक हैमसन को बोडो मे जूते बनाने का काम सीखना पडा। तो भी वे निराश नही हुए और पढने-लिखने की ओर बराबर ध्यान रखने लगे। अन्तत. किसी प्रकार १८ वर्ष की अवस्था मे १८७८ ई० मे वे अपनी पहली रचना प्रकाशित कराने मे सफल हुए। यह रचना गम्भीर कविता के रूप मे थी और इसमे प्रकृति के विभिन्न रूप-रगो की प्रशसा की गई थी। इसका नाम 'पुनर्मिलन'[1] था। इसके बाद 'जोरगर' नामक कहानी छपी। यह एक प्रकार की आत्मकथा थी और ब्योर्न्सन की शैली पर

---

१. Meeting Again

लिखी गई थी।

बोडो मे रहकर जूते बनाने के काम से वे उकता गए। इसलिए उसे छोडकर कुछ दिन के लिए कोयले ढोने का, फिर सडक बनाने का, तत्पश्चात् अध्यापक का और तदनन्तर नगराध्यक्ष के सहायक का काम करते रहे। स्कैण्डेनेविया के अन्य युवको की भाति उन्होने भी अमेरिका-प्रवास करने का निश्चय किया। उन्होने अपने 'एक भ्रमणकारी का नीरव तन्त्री-वाद्य'[1] मे लिखा है कि अमेरिका मे भी ये अनेक तरह का काम करते फिरे, जैसे घोडा-गाडी हाकने, मजदूरी करने, मोदी की दुकान पर मुहर्रिरी करने तथा व्याख्यान देने के काम करते रहे। वे उस देश मे कुछ साहित्यिक कार्य करने की अभिलाषा रखते थे, किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हे उसका अवसर नही मिल सका। जिन लोगो को उनका शिकागो का जीवन याद है उनका कहना है कि घोडा-गाडी हाकने के समय भी उनकी जेबो मे कोई न कोई कविता की पुस्तक रहती थी। १८८५ ई० मे वे क्रिश्चियना लौट आए, पर १८८६ ई० मे पुन. अमेरिका लौट गए और 'करेण्ट इवेन्ट्स' नामक पत्र मे सम्वाददाता का काम करने लगे। पर इस काम से उन्हे काफी पैसा नही मिलता था, इसलिए काम चलाने के लिए वे शारीरिक परिश्रम करके भी कुछ उपार्जन करने लगे। कुछ दिनो तक वे एक रूसी के साथ नाव पर नौकरी करते रहे और उसके साथ न्यूफाउण्डलैण्ड के तट पर भी गए। इसके पश्चात् एक वर्ष तक वे मिनियापोलिस मे क्रिस्टोफर जॉनसन नामक नार्वे-निवासी एक पादरी के सेक्रेटरी का काम करते रहे। इस समय इनकी अवस्था अट्ठाईस वर्ष की हो चुकी थी और ये गुजारे के लिए उत्तरी डाकोटा के खेतो पर भी काम करते थे। वे मिनियापोलिस मे साहित्यिक विषय पर व्याख्यान देना चाहते थे, किन्तु उनकी अभिलाषा पूरी नही हुई और उन्हे कटु भावना के साथ अमेरिका छोडना पडा। इन्ही दिनो उन्होने 'आधुनिक अमेरिका का आध्यात्मिक जीवन'[2] नामक पुस्तक लिखी जो पीछे 'अमेरिका की सस्कृति'[3] के नाम से प्रकाशित हुई। 'सघर्षमय जीवन'[4] नामक कहानी-सग्रह मे उनके शिकागो के अनुभवो का सार है। 'ब्रशवुड' नामक कहानी-सग्रह मे जो १९०३ ई० मे प्रकाशित हुई थी, उन्होने उत्तरी डाकोटा के खेतो पर काम करते समय जो अनुभव किए थे, उन्हे भी लिपिबद्ध किया है।

अमेरिका से लौटकर वे कोपेनहेगन के एक दैनिक पत्र मे लिखने लगे। इसके बाद कोपेनहेगन की ही एक पत्रिका मे उन्होने 'क्षुधा'[5] नामक उपन्यास धारावाहिक रूप से लिखना शुरू किया। १८८८ ई० मे इनका 'नई भूमि'[6] भी प्रकाशित हुआ जो दो वर्ष बाद पुस्तकाकार छप गया। यद्यपि ये उनकी प्रारम्भिक रचनाएं ही है, परन्तु इनमे

---

१. A Wanderer Plays Muted Strings
२. The Spiritual Life of Modern America
३. American Culture
४. Struggling Life
५. Hunger
६. New Soil

पाठको को अपनी ओर आकर्षित करने के गुण है। कुमारी लार्सेन ने 'न्यू स्वायल' के सम्बन्ध मे लिखा है : "आदि, अन्त और कथानक मे कुछ न होते हुए भी इसमे भावावरोह (क्लाईमेक्स) की भरमार है।" प्रोफेसर वीहर ने लिखा है कि हैमसन ने अपनी भूतकाल की उन स्मृतियो को याद किया है जिन्होने उसके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला था। मिस लार्सेज ने 'एडीटर लिंज', 'सनसेट' और 'पैन' आदि की प्रशसा की है। 'विक्टोरिया' को लोग अपेक्षाकृत प्रगतिशील रचनाओ मे मानते है। इसमे चक्कीवाले का लडका जोहान्स नायक है जो प्रकृति से सदा सामजस्य रखता है। यहा तक कि प्रेम से निराश हो जाने पर भी वह दुखी नही होता। हैमसन के उपन्यासो मे पद्य की झलक है। उनकी 'मनकेन वेण्ट' नामक नाटकीय कविता बडी ही आकर्पक है। इसमे सीधे-सादे आवारा आदमी का चित्रण है। उनके 'हगर' नामक अग्रेजी अनूदित उपन्यास की भूमिका पढकर एडविन जार्कमैन के ये शब्द याद आ जाते है कि कलाकार और आवारा दोनो प्रारम्भ से ही हैमसन के रक्त मे मिले मालूम पडते हैं। दूसरे प्रकार के आदर्शात्मक उपन्यास लिखने के पूर्व हैमसन ने 'साम्राज्य के द्वार पर[1] नामक नाटक लिखा है जिसमे कैरोनो नामक दार्शनिक विद्यार्थी को नायक बनाया है। उसकी स्त्री मे उन्होने वासनावृत्ति अधिक दिखलाई है। इस नाटक मे लेखक ने जीवन के रूप और शासकवर्ग की करतूतो का आलोचनात्मक विश्लेषण कैरोनो द्वारा करवाया है। दस वप वाद उन्होने 'जीवन का खेल'[2] लिखा और उसके बाद तीसरा नाटक 'सूर्यास्त'[3]। ये तीनो नाटक शृङ्खलाबद्ध है। इनमे कैरोनो को पचास वर्ष की अवस्था मे विज्ञान मे सदेह करनेवाले तथा स्वतन्त्रता एव सत्य से प्रेम करनेवाले के रूप मे दिखलाया गया है। लेखक ने सच्चरित्रता के पेशेवर उपदेशको पर व्यग्य कसा है और कई और स्थलो पर ऐन्द्रिक विषयो को खुली और स्पष्ट भाषा मे लिखा है। उनके 'जीवन के चगुल मे'[4] नामक नाटक का अनुवाद ग्राहम और रासन ने १९२४ ई० मे किया था। इनके नाटको मे स्त्री-चरित्र को भावुकतापूर्ण दिखलाया गया है और उनमे प्रणय-पहेली का प्राधान्य है। लगभग सभी स्त्री-पात्र एक ही ढग के चित्रित किए गए है।

१९०९ ई० मे उनका 'समय की सन्तान'[5] प्रकाशित हुआ और उसके दूसरे ही वर्ष 'सेगेलफास नगर' और 'भूमिवृद्धि'[6] मुद्रित हुए। वे अब भी समाज को उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे। वे प्रजातत्रवाद के भी विरोधी थे और समाज मे एक नये विधान का स्वप्न देखते थे। अनेक उपन्यासकारो की भाति उन्होने भी एक परिवार का चित्रण करके अपने सामाजिक विचार प्रकट किए है। विलाज तृतीय नामक एक अवकाशप्राप्त लेफ्टिनेट को दिखाया गया है कि वह अपनी स्त्री से उच्च सामाजिक विधान के अनुसार सम्वन्ध रखता है और अपने पुत्र के साथ भी, जो सगीत-प्रेमी है, ऐसा ही व्यवहार रखता है।

---

१. At the Gate of the Kingdom
२. Life's Play
३. Sunset
४. In the Grip of Life
५. Children of the Age
६. Growth of the Soil

उसके सामाजिक वर्णन और रहन-सहन के द्वारा लेखक ने अपने समाज-सम्बन्धी विचार विकसित किए है।

'भूमिवृद्धि' के पहले ही हैमसन ने 'सेगेलफास टाउन' की रचना की थी। इन दोनो मे उन्होने अपनी आर्थिक दुरवस्था का अच्छा चित्रण किया है। इस कहानी मे व्यग्य और आर्थिक लोभ का अच्छा चित्र खीचा गया है। इसमे बार्डसन नामक एक टेली-ग्राफ-आपरेटर का चरित्र अत्यन्त साहसपूर्ण और दृढ दिखलाया गया है।

अमेरिका के विख्यात समालोचक श्री वरसेस्टर ने लिखा है कि 'भूमिवृद्धि' हैमसन की सर्व-श्रेष्ठ रचना है और यह अमेरिका तथा अन्य देशो मे बहुत अधिक पढी गई है। यद्यपि इसके देश-काल तथा पात्र एकस्थानीय है, फिर भी इसका प्रतिपादित विषय सार्वभौम है और समस्त मनुष्य जाति पर लागू होता है। नट हैमसन ने साहित्यिक कौशल क्रमश प्राप्त किया है और उनके उपन्यासो मे जोरदार और तथ्यात्मक चित्रण पाया जाता है। उन्होने जीवन के दार्शनिक पहलू और समाज की अन्तर्शक्ति की ओर भी पर्याप्त रूप से ध्यान दिया है। अपने ही अध्यवसाय के बल पर उन्होने शिक्षा प्राप्त की थी। एक अद्भुत धुन के आदमी थे। उनमे हास्यरस के उत्पादन की शक्ति भी थी। इन्ही सब गुणो के कारण उन्हे अच्छी सफलता मिल सकी। दूसरी ओर चूकि उनका इन्द्रियपरायणता और अश्लीलता की ओर विशेष झुकाव था, अत वे सुरूचि और सस्कृत विचारो के विरोधी थे। तो भी अपने व्यक्तिगत विचारो मे वे मूल चारित्रिकता को मानते थे। हैमसन के सम्बन्ध मे डॉ० वीहर ने एक जगह यह विचार प्रकट किया है कि उनके देशवासी तथा अन्य पिछडी हुई जातियो के लोग उनका आदेश कला-कौशल मे बढी हुई जातियो की अपेक्षा अधिक मानेगे।

हैमसन के आवारा[१] नामक उपन्यास की आलोचना-प्रत्यालोचना विशेष रूप से हुई है और इसकी चर्चा सबसे अधिक हुई है। इसमे नार्वे के समुद्र-तट के स्त्री-पुरुषो की टोलियो का दृश्य पाठको के सम्मुख आ जाता है। उनके मछली मारने, सुखाने और नमक लगाकर बेचने का दृश्य तथा उनके खाने, पीने, मजे उडाने एव सारी आमदनी खर्च कर डालने का वर्णन है। साथ ही यह भी दिखाया गया है कि इस देश के निवासी किस प्रकार धनार्जन के लिए अमेरिका का प्रवास करते है, और किस तरह लौटने पर उनकी आखे खुल जाती है। इस प्रकार की टोलियो के दो मुखिया इडीवार्ट और ऑगस्ट का चरित्र-चित्रण हैमसन के उपर्युक्त उपन्यास मे है। साथ ही जहाज डूबने और एनमेरिया नामक लडकी का ऑगस्ट को बचाने की शक्ति रखते हुए भी न बचा सकने आदि का रोमाचकारी वर्णन है। 'आवारा' के सातवे परिच्छेद मे तूफान का वर्णन अत्यन्त जोरदार और भावात्मक शैली मे किया गया है। नट हैमसन पुराने ढग की साहित्यिक शैली का विरोध जोरदार भाषा मे करते थे और मानव-भावनाओ को अच्छी तरह समझते थे।

सन् १९५२ मे नट हैमसन का देहान्त हो गया।

---

१. Vagabond

अनातोल फ्रांस

१६२१ ई० का नोबल पुरस्कार अनातोल फास को मिला। उनका जन्म १८४४ ई० में पेरिस मे हुआ था। वास्तव मे अनातोल फास का जन्म पुस्तको के ही घर मे हुआ था, क्योकि उनके पिता फासिस नोयल थिबाल्ट पेरिस के एक प्रसिद्ध पुस्तक-विक्रेता थे। उनके पितामह एक मोची थे और इन्होने अपने लडके को पढना-लिखना सिखाया था। अनातोल फास के पिता पहले सेना मे नौकर थे। बाद मे पुस्तक-विक्रेता का काम करने पर उन्होने अच्छे-अच्छे लेखको की पुस्तके सगृहीत की। वे राजनीतिक, साहित्यिक और धार्मिक सभी तरह की पुस्तके बेचते थे। वे राजभक्त और कैथोलिक थे। 'पीर नाजियर' नामक पुस्तक मे अनातोल फास ने अपने पिता का चित्रण अच्छी तरह किया है। 'दि ब्लूम आफ लाइफ' नामक पुस्तक मे अनातोल फास ने अपने बचपन का स्मरण किया है। इस पुस्तक मे उन्होने अपने पिता को लक्ष्य करके लिखा है कि वे पुस्तक 'बेचने' के बदले 'पढने' के लिए अधिक तत्पर रहते थे। बचपन मे ही अपनी पुस्तक की दुकान मे बैठने और उच्चकोटि के लेखको से परिचित हो जाने के कारण अनातोल फास को साहित्य पढने की बडी उत्कण्ठा हो गई होगी। अनातोल फास की मा एक भद्र घराने की लडकी थी। वे अपने लडके को अद्‌भुत कहानिया सुनाया करती थी। अनातोल फास को उनसे बडा प्रोत्साहन मिला। उन्हे स्कूल की पढाई और वहा का जीवन अच्छा नही लगता था। कॉलेज-जीवन मे मनोरजन के लिए साथी मिलने के कारण उनका मन लग गया था, पर फिर भी एकान्त जीवन उन्हे अधिक प्रिय था। वे प्रायः कॉलेज से अनुपस्थित रहा करते थे।

उनकी मा का उनपर ऐसा मोह और विश्वास था कि प्रोफेसर लोग जब उनके सम्बन्ध मे शिकायत करते थे कि वे पढने मे मन नही लगाते, तो भी वे अपने लडके से अप्रसन्न नही होती थी। उनके पिता अवश्य प्रोफेसर एम० डुवाई की इस शिकायत से क्षुब्ध होते थे कि लडका कला या विज्ञान मे कुछ भी सफलता नही प्राप्त कर सकेगा। उनकी मा उनसे कहा करती थी "बेटा, तुम्हारा मस्तिष्क अच्छा है, तुम लेखक बनो— इससे तुम इतनी उन्नति कर जाओगे कि लोगो की जबान बन्द हो जाएगी।" इस प्रकार उनके लेखक बनने मे उनकी मा सबसे प्रथम सहायक हुई। दूसरा प्रोत्साहन उन्हे पेरिस नगर से प्राप्त हुआ, जिसे वे बहुत प्रेम करते थे और बचपन मे ही उनकी स्मृति मे पेरिस

का चित्र घूमा करता था। उसके बाग-बगीचे, उसके कुज, उसकी विख्यात इमारते, उसके उपाहारगृह, उसकी पुस्तको की दुकाने और नोतरदेम आदि विख्यात जगहे उन्हे बहुत प्रिय थी। पेरिस के सभी श्रेणी के स्त्री-पुरुष, सडको पर काम करनेवाले मजदूर और बागीचो मे खेलनेवाले बच्चो आदि का दृश्य इनकी रचनाओ मे अत्यन्त आकर्षक ढग से चित्रित है।

१८६८ ई० मे जब अनातोल फ्रास कुछ भी विख्यात नही हुए थे, और केवल चौबीस वर्ष के किताबी कीडे और स्वप्नदर्शी युवक-मात्र थे, उन्होने अल्फ्रेड-डी-विग्नी नामक कवि की प्रशसा मे एक लेख लिखा। उन दिनो रू-डी-काण्डी मे बहुत-से युवक लेखक एकत्रित होकर कविताओ आदि की आलोचना किया करते थे। दो वर्ष बाद अर्थात् २६ वर्ष की अवस्था मे अनातोल ने सेना मे नौकरी कर ली और साहित्यिक जीवन को भूल जाने की चेष्टा करने लगे। इसके बाद उनका झुकाव राजनीति की ओर हुआ और उन्होने अपनी साहित्यिक प्रवृत्ति को राजनीति की ओर मोड दिया। वे राजनीतिक व्यग्य, और पुस्तको की भूमिकाए आदि लिखने लगे। 'लेमर' नामक एक प्रकाशक की पाण्डुलिपिया भी इन्होने सम्पादकीय दृष्टिकोण से पढी और लारूज के शब्द-कोश के सम्पादन मे भी सहायता दी।

फ्रास और प्रशिया के युद्ध के बाद लेमर ने एक छोटा काव्य-सग्रह प्रकाशित किया जिसके प्रकाशन के लिए अनातोल फ्रास ने बडा साहस और अनुराग प्रदर्शित किया था—साथ ही उसके लिए अनातोल फ्रास ने अपना समय भी पर्याप्त रूप से लगाया। इस सग्रह का नाम था—'पोयम्स आपरे' (नाट्याभिनय काव्य) किन्तु जनसाधारण का यह सग्रह कुछ भी आकर्षित नही कर सका। इसके तीन वर्ष पश्चात् उनकी 'कारिन्थ की दुलहिन'[1] प्रकाशित हुई जिससे मालूम हो गया कि लेखक की मूर्तिपूजा और आरम्भिक खीष्ट धर्म की व्याख्या कैसी तीव्र है। कुछ दिनो तक वे सिनेट के पुस्तकालय मे लिकोण्टी-डी-लिसिल के सहायक रहे थे। यहा उनकी कई उदीयमान कवियो से घनिष्ठता हो गई। इन मित्रो मे मेण्डे, कैलिया और बोनियर्स खास थे। बोनियर्स के घर पर अभिनेताओ, लेखको और गायको का खासा जमघट रहता था। अनातोल फ्रास का यहा बडे तपाक के साथ स्वागत होता था। १८८१ ई० मे उनका उपन्यास 'दि क्राइम आफ सिल्वेस्टर बोनार्ड' निकला जो चालीस वर्ष से अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक क्षेत्र मे अद्वितीय मान पाता रहा है। केवल इसी एक पुस्तक के द्वारा अनातोल फ्रास ससार-भर के पाठको के सुपरिचित लेखक बन गए। इसका कथानक बहुत सीधा-सादा है—इसमे घटना बाहुल्य नही है, पर यह है भावुकतापूर्ण। इसकी छाप हृदय पर स्थायी रूप से पडती है और इसके अन्दर सत्य, सौहार्द तथा आकर्षण है। दस वर्ष बाद अनातोल फ्रास अपनी इस रचना पर आश्चर्य करते थे कि वह इतना अधिक प्रख्यात कैसे हो गया।

---

१ The Bride of Corinth

इस पुस्तक के समालोचको ने भविष्यवाणी की कि इसका लेखक भविष्य मे असाधारण लेखक होगा। इसके चार वर्ष बाद उनकी 'मेरे मित्र की पुस्तक'[१] प्रकाशित हुई जिससे लेखक की भावुकता, मित्रता और बाल्यावस्था की स्मृतियो का अच्छा परिचय मिलता है। यह रचना 'दि क्राइम आफ सिल्वेस्टर बोनार्ड' से बिलकुल भिन्न है, क्योकि इसमे उनकी कविजनोचित्त उडान, बाल और युवावस्था की स्मृतिया और तरगे भरी हुई है। बचपन की बहुत-सी बाते इस पुस्तक के आरम्भिक परिच्छेद मे आई है—खिलौनो के लिए बच्चे की प्रबल उत्सुकता, व्यग्रता और हास्य का इसमे सुन्दर सम्मिश्रण है। इस पुस्तक के अग्रेजी अनुवाद की भूमिका मे लाफकाडियो हीर्न ने लिखा है . "यदि यथार्थवाद का अर्थ सत्य है, तो हमे अनातोल फ्रास को एक सुन्दर यथार्थ-वादी मानना पडेगा।"

१८८६ ई० के पश्चात् अनातोल फ्रास ने 'काजरी' नामक साप्ताहिक पत्रिका मे 'ऑन लाइफ ऐण्ड लेटर्स टू दि पेरिस टेम्प्स' लिखा जिससे उनकी साहित्यिक धाक जम गई और वे प्रबल आलोचक माने जाने लगे। मोपासा, ड्यूमा, बालजक, मेरी बास्कर्टसिव, फ्रासिस कॉपी, रेनन और जार्ज सैण्ड आदि विख्यात लेखको की रचनाओ की आलोचनाए उन दिनो बहुत प्रकाशित हुई। 'क्राइम आफ सिल्वेस्टर बोनार्ड' प्रकाशित होने के नौ वर्ष बाद लेखक ने पुन परिश्रमपूर्वक दूसरी पुस्तक लिखी। अनातोल फ्रास स्वय कहा करते थे कि इसके पहले वे सर्वसाधारण को प्रसन्न करने के लिए पुस्तक लिखा करते थे। 'मेरे मित्र की पुस्तक' के पश्चात् इनकी 'थाया'[२] अधिक विख्यात रचना सिद्ध हुई। फिर तो 'लाल कमल'[३], 'ऐट दि साइन आफ दि रीन पेडाक'[४], 'दि एमेथिस्ट रिग'[५], 'दि गाड्स आर एथर्स्ट' 'दि विकरवर्क वोमन,' 'पेगुइन आइलैण्ड,' 'दि रिवोल्ट आफ दि ऐजिल्स,' 'मैन हू मैरिड डम्ब वाइफ,' रचनाओ आदि का ताता बध गया और सक्षिप्त कहानियो मे 'क्रेकबाइल,' 'दि व्हाइट स्टोन,' 'दि सेविन वाइव्स आफ ब्ल्यूबर्ड' और 'टेल्स फ्रॉम दि मदर आफ पर्ल कास्केट' अधिक प्रशसा के साथ पढी गई।

अनातोल फ्रास की ऐतिहासिक योग्यता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनकी लिखी 'जॉन आफ आर्क' पढनी चाहिए। जब तक अनातोल फ्रास को नोबल पुरस्कार नही मिला, तब तक उनकी रचनाए पुस्तकालयो तक मे नही रखी जाती थी, क्योकि इनकी रचनाओ मे साम्यवाद की एक ऐसी झलक थी जिसका विरोध उन दिनो खूब हो रहा था, किन्तु पुरस्कार मिलने के बाद लोगो ने चाव से उनकी पुस्तके पढी। उन्होने युद्ध-प्रवृत्ति की घोर निन्दा की और जब वे नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के लिए स्टॉकहोम

---

१. My Friends Book
२. इस पुस्तक का अनुवाद हिन्दी में स्व० प्रेमचन्दजी ने किया था।
३. The Red Lilly
४. कुछ समालोचक इसे लेखक की सर्वोत्कृष्ट रचना मानते हैं।
५. इसका अनुवाद भी हिन्दी में हो चुका है।

गए तो वर्सेई की सन्धि के सम्बन्ध मे उन्होने कहा, "सन्धि के बाद युद्ध हुआ करता है और सन्धि शान्ति की नही, भावी अशान्ति की द्योतक है। यदि यूरोप अपनी परामर्श-सभाओ मे बुद्धिवाद को स्थान न देगा, तो इसका विनाश निश्चित है।" फ्रास के बहुत-से साहित्यिक तथा अन्य लोग उन्हे दार्शनिक मानते है, किन्तु वास्तव मे अनातोल फ्रास मे एक महान और अद्भुत पर्यवेक्षण-शक्ति थी और उन्होने जीवन का अध्ययन बहुत ध्यान से किया था।

वृद्धावस्था मे अनातोल फ्रास मे पुन बचपन-सा आ गया था। वे अपने पुराने सहपाठियो से मिलते-जुलते और स्कूल के दिनो की याद किया करते थे।

इनका शरीरान्त १९२४ ई० मे हुआ।

जाकिन्तो बेनावेन्ते

१६२२ ई० का नोबल पुरस्कार जाकिन्तो बेनावेन्ते को मिला था। यह स्पेन के नवीन पीढी के नाटककार माने जाते है क्योकि इनकी रचनाओ मे नूतनता का समावेश है।

बेनावेन्ते का जन्म १८६६ ई० मे स्पेन की राजधानी मैड्रिड मे हुआ था। उनके पिता एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे। बेनावेन्ते ने कानून को अपना पेशा बनाना चाहा था और उसका कुछ अध्ययन भी किया था, किन्तु बाद मे वे लेखन और रगमच की ओर झुके। उनको शुरू से ही नाटक और सरकस के प्रबन्ध का कुछ ज्ञान था और वे अभिनय करनेवालो तथा दर्शको की आवश्यकताओ को समझते थे। उनकी पहली रचना १८६३ ई० मे कविता के रूप मे प्रकाशित हुई। और उसके दूसरे ही साल 'तुम्हारे भाई का घर'[1] नामक नाटक मुद्रित हुआ। किन्तु इस प्रकार की रचनाओ से जनता का ध्यान उनकी ओर आकर्षित नही हुआ। १८६६ ई० मे 'समाज मे'[2] नामक नाटक निकला और उसके दो वर्ष बाद 'जगली जानवरो का भोज'[3] नामक नाटक प्रकाशित होने पर सर्वसाधारण का ध्यान उनकी ओर गया। उन्ही दिनो स्पेन और अमेरिका के युद्ध के बाद अपने देश मे समाज-सुधार का आन्दोलन उठाकर वे उसके नेता बन बैठे।

बेनावेन्ते स्पेन, फ्रास और रूस के बहुत-से समकालीन लेखको की अपेक्षा कम मौलिक है। वे परम्परा से घृणा नही करते, किन्तु उसके साथ वही तक चलते है जहा तक उसका जीवन और कला से सम्बन्ध है। उनकी रचनाओ मे अमीरो के प्रति व्यग्य और किसानो के प्रति सहानुभूति के भाव भरे है। वे अपने पाठको और दर्शको को इस बात के लिए बाध्य कर देते है कि वे विचार करे। उनकी 'सत्य'[4], 'पतझड के गुलाब'[5], 'एक घण्टे का जादू'[6] और 'एर्मिन का भूखड'[7] आदि रचनाओ मे भावावेश पर्याप्त मात्रा मे पाया जाता है।

१६१३ ई० मे बेनावेन्ते स्पेनिश एकैडमी के सदस्य चुने गए। शिक्षा-सम्बन्धी राजनीतिक और साहित्यिक मामलो मे उनकी रचनाए खूब उद्धृत की जाती है। उनका

---

१. Thy Brother's House
२. In Society
३. The Banquet of Wild Beasts
४. The Truth
५. Autumnal Roses
६ The Magic of An Hour
७ The Field of Ermine

स्वतन्त्रता-सम्बन्धी आदर्श वर्तमान स्पेन और समस्त यूरोप के आदर्शों से ऊचा है। उन्होने खूब देशाटन किया और जहा-जहा गए है, वहा-वहा अपने नाटको को अभिनीत होते देखा है। विशेष करके रूस, इगलैड, दक्षिण अमेरिका और सयुक्त राष्ट्र अमेरिका की यात्रा उन्होने सफलतापूर्वक की है। 'आसक्ति पुष्प'[१] उनका एक ऐसा दु खान्त नाटक है जिसमे किसानो के जीवन का भावपूर्ण चित्रण किया गया है। अमेरिका मे उनकी इस विख्यात कृति की फिल्म भी बन गई है। 'ब्याजी तमस्सुक'[२] नामक उनका नाटक न्यूयार्क के नाटक-घरो मे अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुका है। उनके नाटको मे प्राय गम्भीर विषयो की चर्चा नही की गई है। इनके 'एलहोमोन्नेसिटो' नामक नाटक मे नेव नामक नायिका का चित्रण बहुत सुन्दर किया गया है और बहुत-से लोग उसकी तुलना इब्सन के 'पुतलियो का घर' (डाल्स हाउस) नामक नाटक से करते है। वेनावेन्ते का विश्वास था कि नाटक का गूढार्थ पाठको और दर्शको के भावावेश के साथ प्रकट होना चाहिए। उनके 'गवर्नर की स्त्री'[3], 'पुस्तको का कीडा राजकुमार'[४], 'शनिवार की रात्रि'[५], 'दूसरी प्रतिष्ठा'[६] मे आकर्षण और प्रेम-वर्णन विशद रूप से किया गया है।

वेनावेन्ते के पात्र प्राय क्षणस्थायी होते है, और वे उनके उद्देश्य की पूर्ति करने के बाद सहसा लुप्त हो जाते है। 'ब्याजी तमस्सुक' नामक पुस्तक मे भी यही बात है। और 'एक घटे का जादू' मे भी मरवीरियस और इन्क्राएवुल नामक ऐसे ही पात्र रखे गए है जो जीवन, प्रेम, पुस्तको और पुष्प तथा कविता एव सगीत के सम्बन्ध मे लेखक के विचार प्रकट करके लुप्त हो जाते है। इस छोटे-से नाटक मे लेखक ने अपने उस आदर्श-वाद को बुन दिया है जो दुर्बल मनुष्यता और परकीय निजस्व के अतर को प्रकट करता है। इस आदर्श का सर्वापेक्षा गह्वर सम्बन्ध प्रेम से है। उन्होने जो सैकडो नाटक लिखे है उनमे विभिन्न स्थलो और अतर्द ष्टि का वर्णन किया गया है। इन्ही स्फुट विचारो के कारण वे नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के अधिकारी हुए है। उनके नाटको मे विभिन्न-विषय-प्रसग पाए जाते है। उनके बाद के लिखे हुए नाटको मे 'जूते का जोडा या सदिग्ध गुण'[७] नामक नाटक बडा ही मनोविज्ञानपूर्ण है। जान गैरेट अण्डरहिल ने कहा है कि वेनावेन्ते उच्चतम कोटि के आदर्शवादी है और उनके तत्त्वज्ञान का परिचय 'राज-कुमारियो का स्कूल'[८] और 'एर्मिन क्षेत्र'[९] नामक नाटको से मिल सकता है।

---

१. The Passion Flower
२ The Interest Bond
३ The Governor's Wife
४ The Prince Who Learned Everything Out of Books
५ Saturday Night
६. The Other Honour
७. A Pair of Shoes or Doubtful Virtue
८ The School of Princess
९ The Field of Ermine

यीट्स

१९२३ ई० का नोबल पुरस्कार आयर्लैण्ड के प्रसिद्ध कवि और नाटककार विलियम बटलर यीट्स को प्राप्त हुआ था। उनका जन्म १५ जून, १८६५ ई० को सैण्डी माउण्ट (डबलिन) मे हुआ था। इनके पिता जान बटलर यीट्स एक विख्यात चित्रकार थे। इनके पितामह धर्म-प्रचार का काम करते थे और इनके नाना स्लीगो के एक प्रसिद्ध व्यापारी और जहाज के मालिक थे। बालक यीट्स ने अपना समय इन दोनो (पितामह और नाना) के साथ समुद्र-तट पर स्थित उपर्युक्त नगर मे बहुत दिनो तक व्यतीत किया था। जब बालक यीट्स की अवस्था स्कूल जाने योग्य हो गई तो वे अपने माता-पिता के साथ लन्दन मे रहने और गोडोल्फिन स्कूल (हैमरस्मिथ) मे पढने लगे। पन्द्रह वर्ष की अवस्था मे वे डबलिन वापस आए और इरेसमस स्मिथ स्कूल मे पढने लगे। इन दिनो वे अपने स्लीगो के सम्बन्धियो के यहा रहने लगे थे। उनकी 'दि सेल्टिक ट्विलाइट' और 'जॉन शेरमैन' नामक रचनाओ मे उनके बाल्यकाल का परिचय अच्छी तरह मिलता है। 'जॉन शेरमैन' के चरितनायक की तरह यीट्स भी लन्दन के जीवन से तग आ गए थे और वे स्लीगो के वायुमण्डल मे श्वास लेने के लिए विकल हो रहे थे। वहा की परिचित गलिया और कुटीरो की पक्तिया उनके मानस-चक्षु के सामने घूमा करती थी। वहा की दन्तकथाए भी उनके लिए पर्याप्त आकर्षण रखती थी। अपनी कविताओ मे यीट्स ने पथरीली चट्टानो से टक्कर लेनेवाली इन्सफ्री द्वीप की लहरो और सूर्यास्त के समय अद्भुत शोभा देनेवाली सुदूरवर्ती पहाडियो का स्मरण बडे ही आकर्षक ढग से किया है।

यीट्स के पिता को यह आशा थी कि उनका लडका चित्रकारी सीखकर उन्ही-का कार्य सभालेगा। यीट्स ने कुछ दिनो तक चित्रकारी सीखी भी, किन्तु उसमे उनका मन नही लगा। उन्हे पुस्तकालयो मे गेलिक[1] कहानियो और कविताओ के अनुवाद पढने का बडा शौक था। उन्हे ग्रामीणो के पास बैठकर उनकी कहानिया सुनने का भी बडा चाव था। उन्होने १९०६ ई० मे अपनी कविताओ का जो सग्रह प्रकाशित कराया, उसमे उन्होने इस प्रकार उल्लेख भी दिया है—'उनके प्रति जिनके साथ अगीठी के पास बैठकर मैने बाते की है।'

---

१. आयर्लैण्ड के निवासी गेलिक और केल्टिक संस्कृतियों के हैं।

उन्नीस वर्ष की अवस्था मे यीट्स की पहली कविता 'मूर्तियो का द्वीप'[१] 'डब्लिन यूनिवर्सिटी रिव्यू' मे प्रकाशित हुई। यूनिवर्सिटी मे इनकी मित्रता एक भारतीय ब्राह्मण (दार्शनिक) से हो गई जो उन दिनो लन्दन मे रहते थे।[२] उन्होने उन भारतीय को डबलिन मे आमन्त्रित किया और उनसे दर्शन पढने लगे। यीट्स का झुकाव स्वभावत ही तत्त्व-ज्ञान की ओर था। उपर्युक्त दार्शनिक ब्राह्मण को वे प्रतिदिन चावल (भात) और सेब खिलाया करते थे और नित्य उनके व्याख्यान सुना करते थे।

श्रीमती कैथेराइन हिकसन नामक एक महिला ने अपने '२५ वर्ष के सस्मरण' लिखे है जिनमे उन्होने बतलाया है कि युवक यीट्स को अपनी कविताए पढकर सुनाने का बडा चाव था और इसके लिए वे रात-रात जागते थे। 'चेशायर चीज' मे उन्होने आर्थर साइमन्स, लाइनल जानसन और डब्ल्यू० ई० हेनली से मित्रता कर ली थी। इनके द्वारा उन्हे 'चेम्बर्स इसाइक्लोपीडिया' मे आयर्लैण्ड के सम्बन्ध मे कुछ मज़मून लिखने का काम मिल गया था। विभिन्न पथो और उनके चिह्नो पर यीट्स के विचार दृढ थे जिसका परिचय उन्होने अपनी 'दि विड एमग दि रीड्स' शीर्षक पद्यो और 'भले-बुरे का विचार' शीर्षक निबन्धो द्वारा अच्छी तरह दिया है।

श्री यीट्स महोदय गीति-काव्य-लेखक और नाटककार दोनो ही थे। नाटककार के रूप मे वे सारे ससार मे विख्यात हुए। जार्ज मूर, श्रीमती ग्रेगरी, और फारेस्ट रीड ने उनकी कृतियो की आलोचनाए की है और उनके जीवन के सम्बन्ध मे भी लिखा है। यीट्स महोदय को नाटकीय क्षेत्र मे श्रीमती ग्रेगरी, डगलस हाइड, विलियम फे और फ्लोरेस फार तथा कुमारी हार्निमैन से आर्थिक और अभिनय-सम्बन्धी पर्याप्त सहायता मिली। उन्होने ग्राम्य कथाओ को अपनी कविताओ मे स्थान दिया और इस प्रकार नये-नये कथानको की सृष्टि की। श्रीमती ग्रेगरी और एडवर्ड मार्टिन के सहयोग से उन्हे 'पॉट ऑफ ब्रॉथ', 'कैथेलीन-नी-हूलिहन', 'दि किग्स थ्रेशहोल्ड', 'दि लैण्ड ऑफ हार्ट्स डिजायर', 'डीरड्री' और 'आवर-ग्लास' नाटको मे पूर्ण सहायता मिली। यह अन्तिम नाटक पहले गद्य मे और बाद मे पद्य के रूप मे प्रकाशित हुआ। यह यीट्स के सदाचार-पूर्ण नाटको मे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसके पात्रो मे वाइज मैन' एक घण्टे मे मृत्यु को प्राप्त होता है। वह निराशापूर्वक ऐसे व्यक्ति की खोज मे जाता है जो परमात्मा और स्वर्ग मे विश्वास रखता हो, जिससे उसकी सहायता से वह भी स्वर्ग पहुच जाए। उसे 'टीग' नामक एक आदमी मिलता है, जो उसकी तरह स्कूल मे शिक्षाप्राप्त नही है, वरन् जगलो मे शिक्षित हुआ है। वहा 'वाइज मैन' को विश्वास होता है कि उसने मनो-वाच्छित व्यक्ति प्राप्त कर लिया है। लेखक ने इस पुस्तक के सस्करणो मे अद्भुत गैलिक छन्दो का समावेश किया है।

यीट्स की कविता स्वप्नदर्शी कवियो की सी नही है। उन्होने एक स्थल पर

---

१. The Island of Statue

२. सम्भवतः ये स्वामी विवेकानन्द थे।

कहा है कि यदि कवियो का स्वप्न सच निकले तो काव्य-रचना की आवश्यकता ही न हो। उनके 'दि सेल्टिक ट्विलाइट' और 'दि सैक्रेट रोज' मे उनकी कल्पना का सौन्दर्य पूर्णत विकसित हुआ है। 'बाइडिग ऑफ दि हेयर' उनकी इस प्रकार की कविताओ मे सर्वोत्कृष्ट समझी जाती है। 'दि विंग एमग दि रीड्स', 'इन दि स्कीन वुड्स', 'दि वाइल्ड स्वान्स ऐट कूल' और 'रिस्पासिबिलिटीज' मे प्रेम और सेवा के स्वप्न देखे गए है। इनका पृथक् सग्रह मैकमिलन कम्पनी के 'वर्क्स' मे प्राप्त हो सकता है। कीट्स और विलियम ब्लैक की तरह यीट्स पर भी आलोचको ने यह आक्षेप किए है कि वे मनुष्य के सम्पर्क मे कम रहते थे। उन्होने मानव-जाति की भावनाओ की अपेक्षा वायु के झकोरो, समुद्र की लहरो और वृक्षो का वर्णन अधिक किया है। उन्होने 'अपनी प्रेयसी के प्रति कवि के उद्गार'[1] मे आसक्ति-प्रदर्शन का वर्णन अत्यन्त उग्र रूप मे किया है। कुछ आलोचक उनकी रचनाओ की तुलना शेली की कविताओ से करते है।

'आयर्लैण्ड मे आदर्श'[2] नामक पुस्तक मे उसकी सम्पादिका श्रीमती ग्रेगरी ने लिखा है कि अग्रेजी के 'Æ' मिले हुए अक्षर का पुनरुद्धार करनेवालो मे यीट्स मुख्य थे। उन्हे पक्का आदर्शवादी कहा जा सकता है। उन्हे अनेक आलोचको ने सत्य-शोधक, उच्चाभिलाषी और आदर्शवादी कहा है। ब्योर्न्सन, मिस्त्राल, रवीन्द्रनाथ, मैटरलिक, सेल्मा लागरलोफ, हेइदेन्स्ताम और रोम्या रोला आदि को इसी आदर्श के कारण पुरस्कार मिले थे। ससार के परिष्कृत रुचि के पाठको ने यीट्स को भी इसी श्रेणी मे रखा है। श्रीमती ग्रेगरी ने उनकी कविताओ की सुन्दर समीक्षा करके उन्हे और भी चमका दिया है। 'आयर्लैण्ड मे आदर्श' नामक पुस्तक मे यीट्स ने अपने देश के साहित्यिक आन्दोलन का सक्षिप्त इतिहास भी लिखा है। उसमे उन्होने बतलाया है कि आयर्लैण्ड के ग्राम्य-गीतो का उद्धार होने पर उससे उसके आध्यात्मिक और सामाजिक विकास मे सहायता मिलेगी। यह पुस्तक सन् १८९९ ई० मे लिखी गई थी। इतने दिनो के बाद यीट्स महोदय का उपर्युक्त कथन क्रियात्मक रूप मे सत्य प्रमाणित हुआ। आयर्लैण्ड मे यीट्स ही सर्वप्रथम विद्वान थे जिन्होने ग्राम्य-गीतो के सौन्दर्य की परख की और उसमे वर्णित प्रेम और वीरता की कद्र की। आयर्लैण्ड के ग्राम्य-गीतो मे युद्ध-प्रेम तथा साधुओ की कथाओ का सुन्दर वर्णन है। यीट्स के गानो और नाटको मे जो सौन्दर्य और रहस्य-पूर्ण शृखला पाई जाती है तथा उनमे हास्य और आनन्द के सम्मिश्रण का जो विशिष्ट गुण पाया जाता है, वह आयर्लैण्ड के किसी भी पूर्व लेखक मे नही था। उनके 'हवा का मेज़बान'[3], 'चुराया हुआ शिशु'[4] और 'दि फिडलर ऑफ डूनी' नामक रचनाओ से उक्त बात का पता चल सकता है।

---

१. A Poet to His Beloved
२. Ideals in Ireland
३. The Host of the Air
४. The Stolen Child

यीट्स महोदय ने अपने नाटको के प्रत्येक सस्करण मे श्रीमती ग्रेगरी की सहायता के लिए उनका आभार माना है और श्रीमती ग्रेगरी की लिखी हुई 'परमात्मा और लडाकू आदमी'[1] की बडी प्रशसा की है। यीट्स ने यह बात स्वीकार की है कि ग्राम्य-गीतो के लिखने मे वे श्रीमती ग्रेगरी की रचनाओ से बहुत कुछ अनुप्राणित हुए है।

१९३९ ई० मे यीट्स इस ससार से चल बसे।

---

१. The Gods and Fighting Men

व्लाडिस्लॉ स्टेनिस्लॉ रेमॉण्ट

१९२४ ई० का नोबल पुरस्कार व्लाडिस्लॉ रेमॉण्ट को प्राप्त हुआ था। हेनरिक सीनकीविच के ऐतिहासिक और धार्मिक उपन्यास लिखने के बाद पोलैंड मे कोई भी विख्यात लेखक नही हुआ था। रेमॉण्ट के प्रादुर्भाव ने नई पीढी का गौरव बढाया और पोलैंड को पुनः ससार के समक्ष मान प्राप्त हुआ। पुरस्कार की घोषणा के कुछ सप्ताह पूर्व ही रेमॉण्ट के 'किसान'[1] नामक उपन्यास के पूर्वार्द्ध का अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ था जिसका नाम 'पतझड'[2] रखा गया था। अनुवादक माइकेल जिविकी थे, जो उन दिनो क्रैकाउ विश्वविद्यालय के अध्यापक थे। जब तक नोबल-पुरस्कार की घोषणा नही हो गई, इस पुस्तक की ओर लोग आकर्षित नही हुए थे।

रेमॉण्ट का परिवार मध्यवित्त श्रेणी का था। उनके पिता एक चक्की के मालिक थे और कोबियाला वीलका (जो उन दिनो रूसी पोलैड मे था) मे रहते थे। रेमॉण्ट का जन्म १८६८ ई० मे हुआ था। रेमॉण्ट खेती और पशु-पालन मे घरवालो को सहायता भी देते थे और गाव के स्कूल मे पढने भी जाते थे। इस प्रकार उनका आरम्भिक जीवन चरवाहो और गाव के खिलाडी लडको के साथ व्यतीत हुआ। वे पशुओ के एक बडे झुण्ड को चराया करते थे। उनके पिता ऑर्गन बाजा बजाने मे गाव मे सबसे कुशल समझे जाते थे। रेमॉण्ट हाई स्कूल की व्यायामशाला मे भी भर्ती हुए। उन्होने रूस के इस नियम का कि स्कूल मे पोलैड की भाषा नही बोलनी चाहिए, अनेक बार उल्लङ्घन किया। इसके कारण उन्हे एक बार स्कूल से निकाल भी दिया गया था।

कई तरह के काम करने और व्यापारादि का कुछ अनुभव प्राप्त कर लेने के कारण रेमॉण्ट अपनी कई कहानियो मे अपने इस ज्ञान का उपयोग भी कर सके है। स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद वे कुछ दिनो तक एक दुकान मे क्लर्क रहे। इसके बाद रेलवे मे काम करने लगे और कुछ ही दिनो पश्चात् तार का काम सीखकर टेलीग्राफ ऑपरेटर (तारयत्र-सचालक) बन गए। उनकी यात्रा करने की इच्छा बहुत प्रबल थी। 'स्वप्नदर्शी'[3] मे उनकी वह इच्छा पूर्णत प्रकट हुई है और उन्होने इस पुस्तक के नायक को यात्रा का अपना ही सा अभिलाषी बनाया है। कुछ समय तक उन्होने एक कम्पनी मे अभिनय

१ The Peasants
२. Autumn
३. The Dreamer

का काम भी किया था जिसके अनुभव का वर्णन उन्होने अपने 'दि कमेडिन एण्ड लिली' नामक रचना मे किया है। कुछ दिनो तक वे एकाध जगह काम सीखते और इस प्रकार उम्मीदवारी भी करते रहे थे। 'प्रतिज्ञाभूमि'[1] मे उन्होने पूजीपतियो और भूस्वामियो के विरुद्ध जो कुछ लिखा है, वह इन्ही दिनो के अनुभव के आधार पर लिखा गया है। 'किसान' मे रेमॉण्ट ने कृषको और ग्राम्य-जीवन का सच्चा चित्र खीचा है। टॉमस हार्डी और जॉर्ज मिरेडिथ की तरह रेमॉण्ट ने भी अपनी कहानियो और उपन्यासो मे प्रकृति को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उपकरण बनाकर लिखा है। उपर्युक्त पुस्तक मे रेमॉण्ट ने याग्ना का चरित्र-चित्रण बहुत ही सुन्दर किया है।

पोलैड के किसानो का वर्णन साहित्य मे लाना अकेले रेमॉण्ट का ही काम नही था। उनके अतिरिक्त व्लाडिस्लॉ आर्कन, जॉन फैसप्रोविज और स्टेनिस्लॉ ने भी इस प्रकार की रचनाए की है।

'किसान' नामक उपन्यास मे उन्होने गहन भावनाओ से पूर्ण दृश्य भी भरे है। इसे पोलैण्ड की लोकोक्तियो का खजाना भी कह सकते है। प्रेम, घृणा और परिशोध तथा लगातार मदिरा पीने के कारण दासतापूर्ण मानसिक वृत्ति एव भूस्वामियो का भय आदि बडे ही सुन्दर ढग से चित्रित किए गए है। साथ ही यह भी दिखाया गया है कि इन सबके पीछे क्राति की भावना किस प्रकार सो रही है। प्राकृतिक वर्णन मे खलियान और जगल की सोधी सुगन्ध, सुरभित हरियाली और मनोहर सूर्यास्त तथा भयानक तूफान आदि के वर्णन अत्यन्त आकर्षक है। 'पतझड'[2] के अतिम परिच्छेद मे अत्यन्त काव्यात्मक और आदर्शपूर्ण अश वह है जब विश्वासपात्र क्यूबा की आत्मा उसके बहुत दिनो तक कष्ट सहन और सेवा करने के पश्चात् शरीर से पृथक होती है।

पाठको की जानकारी के लिए उपर्युक्त वर्णन का कुछ दृश्य नीचे उद्धृत किया जाता है .

"और वह और भी उचाई पर उडती गई यहा तक कि उडते-उडते एक जगह जाकर उसे रुकना पडा।

"वहा न तो करुणापूर्ण क्रन्दन सुनाई देता है और न शोक-सतप्त आहे।

"वहा केवल कुमुदिनी अपने प्राण-पद सौरभ का प्रसार करती है, वहा पुष्प-वाटिकाए अपनी मधुमय सुगन्ध से वायुमडल को भर देती हैं, वहा उज्ज्वल नदियो की धाराए अगणित रगो से आवृत पिण्ड पर प्रवाहित होती है, वहा निशा का आगमन कभी नही होता—"

इस उपन्यास मे बहुत-से भावनापूर्ण और काव्यात्मक अश है। किन्तु वे अग्रेजो की रुचि के अनुकूल नही है। रेमॉण्ट ने इस उपन्यास मे पोलैड के कृषक-जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला है। इसमे मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि, यथार्थवाद और दृढ

१. The Promised Land

२. The Autumn

आदर्शवाद का पूर्ण सम्मिश्रण है। इसकी दो जिल्दो[1] मे जिन घटनाओ का वर्णन है वे अधिक सबल और सजीव है। रेमॉण्ट मे यह दोष अवश्य है कि वह वर्णन को सक्षिप्त रूप मे नही लिख सके। प्रोफेसर रोमन डिबनास्की ने अपने 'आधुनिक पोलिश साहित्य'[2] नामक पुस्तक के तीसरे परिच्छेद मे रेमॉण्ट की काफी समालोचना की है और उन्हे सीनकीविच की अपेक्षा नीचे दर्जे का लेखक माना है। जो हो, प्रेम, घृणा, यत्रणा और आह्लाद का वर्णन रेमॉण्ट ने जैसा किया है वह किसी भी पोलिश लेखक के वर्णन से निम्नश्रेणी का नही है और एक बार पढकर पाठक उसे भुला नही सकते।

१९२४ ई० मे नोबल पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात् वे विशेष कुछ नही लिख सके और ५ दिसम्बर, सन् १९२५ ई० को उनका देहान्त हो गया।

---

१. इस पुस्तक में कुल चार जिल्दें हैं।
२. The Modern Polish Literature

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

१६२५ ई० मे नोबल-पुरस्कार को पचीस वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य मे उत्सव मनाने का समारोह हुआ। इस वर्ष के पुरस्कार प्राप्तकर्ता आयर्लैण्ड के प्रसिद्ध नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ हुए। अभी तीन वर्ष पहले ही आयर्लैण्ड के प्रसिद्ध कवि और नाटककार विलियम बटलर यीट्स को यह पुरस्कार मिल चुका था, इसलिए आयर्लैण्ड की इस पुनरावृत्ति पर बहुत-से आलोचको ने कटाक्ष किया।

जिस समय बर्नार्ड शॉ के पास पुरस्कार की सूचना भेजी गई, उसके एक सप्ताह बाद तक स्वीडिश एकैडमी को उन्होने कोई जवाब नही भेजा, जिससे लोगो ने यह अनुमान लगाना आरम्भ कर दिया कि बर्नार्ड शॉ यह प्रतिष्ठा नही ग्रहण करेगे। कुछ पत्रो ने बर्नार्ड शॉ के इस विलम्ब के कारण उनकी भर्त्सना भी की। स्वीडन के एक दैनिक पत्र ने तो यहा तक लिखा कि शॉ महोदय शहर से बाहर जाकर कही एकान्त मे इस बात का विचार कर रहे होगे कि उन्हे पुरस्कार ले लेना चाहिए या नही। उस पत्र ने इस बात की भी सभावना प्रकट की कि शायद बर्नार्ड शॉ के मित्र उन्हे पुरस्कार ले लेने के लिए राजी करने मे लगे होगे। यद्यपि अन्त मे शॉ महोदय ने पुरस्कार स्वीकार कर लिया, किन्तु साथ ही उन्होने यह भी कहा कि मुझे और कीर्ति की आवश्यकता नही है। पुरस्कार मे जो धन प्राप्त हुआ है, उसका उपयोग स्वीडन और ब्रिटिश द्वीपो के बीच साहित्यिक सामजस्य को प्रोत्साहन देने मे किया जाए।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का जन्म २६ जुलाई, सन् १८५६ ई० मे डबलिन मे हुआ था। वे अपने पिता कार शॉ की तीसरी सन्तान और एकमात्र पुत्र थे। उनके पिता अपनी कुलीनता की डीग बहुत हाका करते थे। किन्तु पुत्र बर्नार्ड शॉ मे यह गुण या दुर्गुण नही आया। अपने पिता से बर्नार्ड शॉ ने हास्यप्रियता का गुण अवश्य ही ग्रहण किया।

बर्नार्ड शॉ की मा अपने पति से बीस वर्ष छोटी थी। इनका नाम था लुसिण्डा एलिजाबेथ गर्ली। बर्नार्ड शॉ की ननिहाल एक गाव मे थी। उनकी मां सगीत का अच्छा ज्ञान रखती थी। जॉर्ज ली नामक एक सगीत-शिक्षक का माता और पुत्र दोनो ही पर प्रभाव पडा था। बर्नार्ड शॉ बचपन से ही बडी स्वतन्त्र प्रकृति के थे। बाद मे इनकी मा लन्दन के किसी स्कूल मे सगीत की शिक्षा देने लगी थी और सत्तर वर्ष की अवस्था तक उन्होने यह कार्य जारी रखा। 'कैण्डिडा' नामक नाटक मे बर्नार्ड शॉ ने

अपनी मा का आशिक चरित्र-चित्रण किया है। और 'तुम कदापि नही बता सकते'[1] मे उन्होने श्रीमती क्लैण्डन को अपनी माता के रूप मे पूर्णत चित्रित किया है।

अपनी व्यग्य और विद्रूपपूर्ण रचना मे उन्होने अपने बाल-जीवन का स्मरण किया है और उसे 'बेकारी और शैतानी की अवधि' कहा है। उनके चाचा डबलिन मे एक शिक्षक थे। इन्होने बर्नार्ड शॉ को लैटिन भाषा का व्याकरण पढाया था। किन्तु बालक बर्नार्ड शॉ ने चौदह वर्ष की अवस्था मे ही स्कूल छोड दिया। उसके बाद पाच वर्ष तक वे क्लर्की करते रहे। सोलह वर्ष की अवस्था के बालक के लिए यह कार्य कठिन ही था, किन्तु बर्नार्ड शॉ ने काफी योग्यता और अध्यवसाय का परिचय दिया।

१८७६ ई० से १८८५ ई० तक बर्नार्ड शॉ को विभिन्न परिस्थितियो का सामना करना पडा। उन्हे बहुधा कठिन परिश्रम करने के बदले बहुत थोडे पैसे मिलते थे और अपनी अभिलाषाओ को दबाकर रखना पडता था। उन दिनो वे जो कुछ लिखकर कही भेजते थे, वह प्राय: बिना छपे ही वापस आ जाता था। इन असफलताओ के बाद बर्नार्ड शॉ ने सामाजिक समस्याओ का अध्ययन आरम्भ कर दिया और इस कार्य मे अद्भुत साहस का परिचय दिया। बाद मे चलकर उन्होने अपने बचपन की पाच कृतियो की खिल्ली उडाई है और पहली कहानी के सम्बन्ध मे लिखा है कि वह इतनी बुरी थी कि उसे चूहो ने भी कुतरने से इन्कार कर दिया।

बर्नार्ड शॉ के आलोचको ने लिखा है कि उनकी रचना मे आदर्श जैसी कोई वस्तु नही है और उनके पुरस्कार मिलने पर भी यह प्रश्न उठाया गया, किन्तु यह कोई नई बात नही थी। अनातोल फ्रास और नट हैमसन के सम्बन्ध मे भी ऐसी ही आपत्ति की गई थी। किन्तु बर्नार्ड शॉ की कई रचनाओ मे आदर्शवाद की झलक मिलती है। 'मनुष्य और असाधारण मनुष्य'[2], 'कैण्डिडा' और 'श्रीमती वारेन का पेशा'[3] तथा 'मेजर बारबरा'[4] की कितनी ही पक्तियो से उपर्युक्त बात का प्रमाण मिलता है। 'शस्त्र और मनुष्य'[5] और 'फैनी का पहला खेल'[6] इस दृष्टि से पढी जा सकती है। बर्नार्ड शॉ की रचनाओ मे व्यग्य और विद्रूप का बाहुल्य है। उनका हास्य बडा प्रगाढ और विनोद मनुष्यतापूर्ण होता है। समाज पर जैसी चुटकी इन्होने ली है वे अपने ढग की अपूर्व है। 'सेब-गाडी'[7] नामक उनका नाटक बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। उन्होने अपने सम्बन्ध मे स्वय लिखा है कि जब मैं अपनी रचनाओ के सम्बन्ध मे गम्भीर बात करता हू तो लोग हसते हैं, और जब मैं विनोद करता हू तो मुझे महान दूरदर्शी समझते है।

बर्नार्ड शॉ की आदते विचित्र थी। सत्तर वर्ष से अधिक अवस्था हो जाने पर भी वे नित्य कई मील सुबह और कई मील शाम को टहलते और घण्टो पानी मे तैरा करते।

---

१. You Never Can Tell
२. Man and Superman
३ Mrs Warrens Profession
४. Major Barbara
५ Arms and Man
६. Fanny's First Play
७. The Apple Cart

इस अवस्था मे भी वे जवानो को मात करनेवाला स्वास्थ्य रखते थे। बहुत-से लोग उन्हे अक्खड-मिजाज साहित्यिक कहते है, क्योकि ये प्राय किसीसे मिलना-जुलना कम पसन्द करते थे। आयर्लैण्ड के निवासी होते हुए भी आप प्राय इग्लैण्ड मे ही रहा करते थे। आपने अपने निवासस्थान पर यह वाक्य लिखकर टाग रखा था .

'लोग कहते है। क्या कहते है ? कहने दो।'[1]

इसका साराश यह है कि दुनिया के कहने-सुनने की परवाह मत करो।

बर्नार्ड शॉ के उपन्यासो के प्रति लोगो की रुचि बाद मे बढ़ी—विशेषकर इनके 'युक्तिहीन ग्रन्थि'[2], 'कलाकारो मे प्रेम'[3] और 'कैशल बॉयरन का पेशा'[4] अधिक प्रसिद्ध हुए। इनमे से अन्तिम उपन्यास का नाटक बनाकर रगमच पर खेला जा चुका है। यद्यपि इन उपन्यासो मे अद्भुतता का सामजस्य पर्याप्त रूप से है, पर ये किसी न किसी आर्थिक और सामाजिक प्रश्न को लेकर लिखे गए है। इनमे से अन्तिम उपन्यास को पढकर स्टिवेन्सन ने विलियम आर्चर को लिखा था . "यह (उपन्यास) उन्माद और माधुर्य से परिपूर्ण है। लेखक मे स्कॉट और ड्यूमा की भाति शौर्य की रुचि तो है ही, साथ ही इसमे 'समाजसत्तावाद'[5] का पुट भी है। मेरा विश्वास है कि वे (लेखक) अपने हृदय मे सोचते होगे कि यथार्थवाद रूपी ठोस स्फटिक की खान खोदने का परिश्रम कर रहे है।" 'चैप-बुक' नामक पत्रिका के प्रतिनिधि से भेट करने पर बर्नार्ड शॉ ने नवम्बर, सन् १८९६ ई० मे यह अहम्मन्यतापूर्ण वक्तव्य दिया था कि मेरे भाग्य मे लन्दन को सुशिक्षित बनाना लिखा था, किंतु मैं अपने अनुगामियो को न तो अच्छी तरह समझ ही सका, न उन्हे अपने विचार समुचित रूप से समझा ही सका।

जिस समय वे 'पॉलमाल गजट' के समालोचको मे नियुक्त किए गए, उसी समय से उनके साहित्यिक जीवन मे एक अनोखा परिवर्तन आरम्भ हो गया। यह स्थान उन्हे विलियम आर्चर की सहायता से प्राप्त हुआ था। इसके पश्चात् उन्हे एडमण्ड यीट्स के द्वारा 'दि पर्ल' और 'दि स्टार' नामक पत्रिकाओ मे भी स्थान मिला। उन्होने सगीत, नाटक और चित्रकला की समालोचनाए लिखी और सामाजिक तथा आर्थिक प्रश्नो पर भी अनेक निबन्ध लिखे। इन्ही दिनो उनकी मित्रता क्लेमेण्ट शार्टर, डब्ल्यू० ई० हेनली और विलियम से हो गई। सामाजिक प्रसग को लेकर उन्होने अपनी लेखनी मे कार्ल मार्क्स, सिडनी वैब, एनी बीसेण्ट का प्रभाव दिखलाया और सार्वजनिक सभाओ मे बोलने का भी अभ्यास किया, यद्यपि इस अतिम कार्य मे उन्हे बडी कठिनाई का सामना करना पडा और उन्होने फैबियन सोसाइटी मे प्रति सप्ताह वक्तृता देने के नियम का पालन किया। १८८९ ई० मे उन्होने समाजसत्तावाद पर फैबियन सोसाइटी द्वारा प्रकाशित निबन्ध-माला का सम्पादन किया। बाद मे चलकर उनके विचार साम्यवाद के विरुद्ध हो

१. "They say What they say ? Let them say"
२. Irrational Knot
३. Love Among the Artists
४. Cashel Byron's Profession
५. Socialism

गए और इन्होने खुद लिखा कि मैं अब परिवर्तित हो चुका हू और सचमुच मै एक अद्भुत मनुष्य हू !

अपने व्याख्यानो, निबन्धो और उपन्यासो मे उन्होने कला, सगीत, विज्ञान और समाज के सम्बन्ध मे अपना विशेष अनुभव प्रकट किया है। अनेक स्थलो पर उन्होने ऐसे गर्व के साथ अपने विचार प्रकट किए हैं जिसके कारण आलोचको ने उनपर बडे ही व्यग्यपूर्ण आक्रमण किए है। 'दि रिव्यू ऑफ रिव्यूज' नामक पत्रिका के १६१६ ई० के अको मे जो व्यग्यचित्र प्रकाशित हुए है, उन्हे देखकर हसी रोकना कठिन हो जाता है। इन व्यग्यचित्रो का आलेखन मैक्स बीरवॉन ने किया है। इनमे एक स्थल पर उन्होने बर्नार्ड शॉ की प्रशसा करते हुए लिखा है कि शॉ महोदय का ऐसा आकर्षक व्यक्तित्व है कि वे लगभग सबपर अपना प्रभाव डाल देते है। वे अपने सम्बन्ध मे कही गई प्रत्येक बात बडे मनोयोगपूर्वक सुनते है। उनमे अहम्मन्यता का जो भाव प्रचुर मात्रा मे पाया जाता है उसका कारण यह भी है कि वे इसके द्वारा लोगो को बनाने की चेष्टा करते है, क्योकि इस प्रकार वे उन लोगो को, मन मे चुभनेवाली बाते कह आनन्दित होते है, जिनमे रसिकता का अभाव होता है। उनका गर्व उनकी रचनाओ मे भी कभी-कभी फूट निकलता है—'आचारवादियो के लिए तीन नाटक'[१] की भूमिका मे यह स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ है। आप लिखते है . "अधिकाश नाटककार अपनी रचनाओ की भूमिका स्वय इसलिए नही लिखते कि वह लिख ही नही सकते, क्योकि नाटककारो मे आध्यात्मिक चेतनता और दार्शनिकता का अभाव होता है। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि मै अपनी प्रशसा करनेवाले के लिए दूसरे लेखक से भूमिका क्यो लिखवाऊ जबकि मैं स्वय अपनी प्रशसा कर सकता हू और मै उसे लिखने के लिए अपने को अयोग्य नही पाता। आलोचना करने मे मैं सभी समालोचको को छकाने की भरपूर शक्ति रखता हू। रही दार्शनिकता, सो तो मैने ही इन आलोचको को पढाई है, जो मेरी ही भरी बन्दूक लेकर मुझपर निशाना लगा रहे है। वे लिखते है कि मैं इस प्रकार लिखता हू जैसे मनुष्यो मे बुद्धि बिना इच्छाशक्ति या हृदय के ही हो। मैं कहता हू कि 'इच्छाशक्ति' और 'बुद्धि' का अन्तर समझने की ओर उनका ध्यान बर्नार्ड शॉ ने ही आकर्षित किया है—शोपेनहॉर ने नही—।" इसी भूमिका मे आपने अपने उस आरम्भिक दिन का भी स्मरण किया है जब हाइड पार्क मे आपने पहले-पहल ब्रिटिश जनता को अपना व्याख्यान सुनाया था। इसी भूमिका मे आपने लिखा है कि मैं स्वभावत ही साहसी और सबपर प्रभाव जमा लेनेवाला पैदा हुआ हू।

'रडुओ के घर'[२] नामक पुस्तक उन्होने १८६२ ई० मे विलियम आर्चर के सहयोग से लिखी थी। यह इनकी नाट्य-रचना की आरम्भिक सफलता थी। इस रचना से साम्यवादियो मे बडी प्रसन्नता फैली क्योकि इसमे कपटाचारी जमीदारो के प्रति काफी उद्गार

१. Three Plays for Puritans
२. Widower's Houses

प्रकट किए गए है। १८६८ ई० मे 'प्रिय और अप्रिय नाटक'[1] प्रकाशित हुआ जिससे श॰ महोदय हास्य, व्यग्य, दर्शन और साहसपूर्ण विचारो के उत्तम लेखक मान लिए गए। पीछे जब 'दि फिलेण्डरर', 'श्रीमती वारेन का पेशा', 'कॅण्डिडा', 'शस्त्र और मनुष्य', 'भाग्यवान पुरुष'[2] और 'आप कभी नही बतला सकते' आदि नाटक छपे तो इनके नाट्य-कला ज्ञान की धाक जम गई। इसके तीन वर्ष पश्चात् 'आचारवादियो के तीन नाटक', 'शैतान का शिष्य'[3] 'सीजर और किल्योपाट्रा' और 'कप्तान बॉसबाउण्ड का धर्म-परिवर्तन'[4] आदि रचनाए प्रकाशित हुई। 'शैतान के शिष्य' मे शॉ महोदय ने डिक डजियन नामक एक अद्भुत पात्र की सृष्टि की है। इसमे क्रूरता और दार्शनिकता से पूर्ण चरित्र भी चित्रित किए गए है। 'भाग्यवान पुरुष' और 'सीजर और क्लियोपाट्रा' मे से दोनो ही अपेक्षाकृत घटिया श्रेणी के नाटक है।

'मनुष्य और असाधारण मनुष्य'[5] १६०५ ई० मे रगमच पर अभिनीत हुआ था। इसमे वार्तालाप लम्बे है और नाटकीय भाव कम है। 'जानबुल का दूसरा द्वीप' की तरह यह भी एक विचार-प्रधान नाटक है। 'मनुष्य का नया पतन'[6], 'मेजर बरबारा', 'आलो-चको की प्राथमिक सहायता का निबन्ध'[7] और 'फैनी का पहला नाटक' आदि व्यग्य और उपदेशपूर्ण नाटक है। लेखक ने बडे जोरदार शब्दो मे दरिद्रता को सुस्ती के लिए एक पौष्टिक औषध बतलाया है। किन्तु इनमे से अन्तिम नाटक मे आध्यात्मिक तर्क होते हुए भी नाटकीय गुण लुप्त नही हुए है।

इन गम्भीर तत्त्वो से पूर्ण नाटको के अतिरिक्त बनार्ड शॉ ने कुछ हल्के नाटक भी लिखे है, जिनका प्रचार विशेषत कॉलेज के विद्यार्थियो और शौकिया तौर पर अभिनय करनेवालो मे हुआ है—साथ ही पेशेवर अभिनेताओ मे भी इनका पर्याप्त रूप से प्रचार हुआ है। इस प्रकार के नाटको मे 'ऐण्ड्रोक्लीज़ एण्ड दि लायन', 'पिगमैलियन' और 'बैक टू मेथ्यूसिला' अधिक प्रसिद्ध है।

बर्नार्ड शॉ की रचनाओ मे अद्भुतता का अभाव होता है। उनकी आरम्भिक रचनाओ—'कैण्डिडा', 'श्रीमती वारेन का पेशा' और 'शस्त्र और मनुष्य'— मे यही बात है और इनमे दिखाऊ रूढिवाद को लेखक ने एक प्रकार की चुनौती-सी दी है। ऐतिहासिक नाटको—'भाग्यवान पुरुष', 'सीजर और किल्योपाट्रा' तथा 'सेण्ट जोन' मे इसे और भी पुष्टता के साथ व्यक्त किया गया है। इनमे से पहले दो नाटको की कटु समालोचनाए हुई है। 'सेण्ट जोन' के सम्बन्ध मे तो एक समालोचक ने यहा तक लिख मारा है कि लेखक ने जैसे यह पुस्तक नोवल पुरस्कार प्राप्त करने के ही उद्देश्य से लिखी थी, क्योकि इसमे नोवल पुरस्कार के लिए विघोषित विशिष्ट गुणो—आदर्श और मानवता—का

१. Plays, Pleasant and Unpleasant
२. The Man of Destiny
३. The Devil's Disciple
४. Captain Brassbounds Conversion
५. Man and Superman
६. A New Fall of Man
७. Essay as First Aid to Critics

समावेश किया गया है। इसमे सजीव व्यग्य और विलक्षण काव्यगुण सन्निविष्ट है। इसमे सभी नाट्यकौशलोपयोगी गुणो को चरम सीमा पर पहुचा दिया गया है और चरित्र-चित्रण अन्तर्दृष्टि का उपयोग करते हुए किया गया है। जोन नामक एक ऐसी कृषक युवती की कल्पना की गई है जो मध्यकालीन युग के लोगो की भाति ईश्वर और सन्तो मे विश्वास करती है। लेखक ने उसके अन्दर ऐसा आकर्षण दिखाया है जो सर्वसाधारण को अपनी ओर खीच लेता है—साथ ही उसमे सैनिक-कौशल का भी अभाव नही है। जोन मे वे समस्त आकर्षण मौजूद है जो एक सुन्दर नाटक की नायिका मे होने चाहिए।

अद्भुतता के अभाव मे शॉ महोदय ने अपनी रचना मे व्यग्य को शैली के रूप मे व्यवहार किया है जिसके कारण कभी-कभी व्यग्य ऐसे तीव्र दुर्वाक्य के रूप मे प्रयुक्त हो गए है जिन्हे अवाञ्छनीय कह सकते है। शेक्सपियर की आलोचना मे उन्होने अनेक स्थलो पर ऐसी ही व्यग्यपूर्ण शैली का उपयोग किया है। शॉ महोदय मिथ्या और भ्रमात्मक धारणा के शत्रु-से थे। उनकी रचनाओ मे एक बडा सघर्ष पाया जाता है और वह है व्यक्तिगत इच्छा और सामाजिक प्रणाली का, जिसके कारण इच्छा की स्वतन्त्रता को बडा भारी धक्का पहुचता है।

उपर्युक्त बात उनकी 'कैण्डिडा' नामक रचना पर पूर्णत लागू होती है जहा मार्च बैंक नामक एक प्रणय का भूखा कवि बालक पुरुष के रूप मे परिवर्तित होकर मॉइकेल नामक एक गर्वीले गृहस्थ से कहता है, 'क्या आप यह समझते है कि स्त्री की आत्मा आपके युक्तियुक्त उपदेश पर जीवित रह सकती है ?" 'श्रीमती वारेन का पेशा' नामक नाटक मे भी इस प्रसग पर विचार किया गया है। पाठक को कपटता-पूर्ण रूढिवाद और विरोधवाद मे से एक को चुनना और अपनाना पडता है। इसमे विवी नामक लडकी पहले अपनी मा की प्रकट प्रतिष्ठा के सम्बन्ध मे उत्सुक होती है और फिर उससे विद्रोह करती है। वह कहती है, "मा, यदि तुम्हारी जगह मै होती, तो मै भी तुम्हारा जैसा काम ही कर सकती थी, पर मैं यह न पसन्द करती कि मै विश्वास तो कुछ और करू और जीवन दूसरे ढग से व्यतीत करू।"

'मनुष्य और शस्त्र' नामक नाटक मे बर्नार्ड शॉ ने एक सुखान्त घटना का चित्रण ऐसे ढग से किया है कि उसे अद्भुतता-रूपी मूर्खता पर एक प्रबल व्यग्य का नाम दिया जा सकता है। इसमे सैनिक ढग की वीर-पूजा की भावना भी भरी गई है। बर्नार्ड शॉ ने अपनी इस रचना मे युद्ध-विरोधी भाव उससे बहुत पहले ही सन्निविष्ट किए थे जब शान्ति-सम्बन्धी आन्दोलन ने जोर पकडा था। 'सेब-गाडी' नामक नाटक मे उन्होने प्रजावाद के विरुद्ध भी बहुत-सा विष उगला है। इसकी भूमिका मे लेखक ने इस नाटक के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा है। जिन लोगो ने इसे रगमच पर अभिनीत होते देखा है, उन्होने इसे पाठको की अपेक्षा अधिक पसन्द किया है। इस नाटक की गणना बर्नार्ड शॉ के व्यग्यात्मक सुखान्तो मे है। इसमे वार्तालाप के द्वारा सम्राट् और प्रधान सचिव के शासन की असफलता दिखलाई गई है और यह दिखलाया गया है कि सरकार वास्तव

मे क्या कर सकती है। भूमिका मे भी इसपर काफी प्रकाश डाला गया है। नाटक के बाईसवें पृष्ठ पर लिखा गया है "ऐसी अवस्था मे प्रजातन्त्र राज्य प्रजा के द्वारा नही, वरन् प्रजा की स्वीकृति से होता है।" इस सम्बन्ध मे विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए लेखक ने अपनी 'बुद्धिमती स्त्रियो के लिए साम्यवाद और पूजीवाद'[1] नामक पुस्तक पढने का आदेश किया है, जिसमे उन्होने प्रजावाद की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया है।

जिस समय नये विचारो के लिए बर्नार्ड शॉ की प्रशसा की गई तो उन्होने उसका खडन करते हुए लिखा "मैं दूसरो के मस्तिष्क की चोरी करने मे अकुशल नही हू और अपने मित्रो मे सबसे अधिक भाग्यवान रहा हू।" अपनी समस्त रचनाओ मे उन्होने लोकमत का सदैव विरोध किया है। उनकी रचनाओ को पढकर पाठको को ऐसा प्रतीत होता है मानो उन्होने कोई निश्चित सत्य का उल्लेख न करके ऐसी ही बाते अधिक लिखी है जो विरोध-भाव उत्पन्न करने के लिए चुनौती भी मानी जा सकती हैं। उन्होने सोवियत रूस के सम्बन्ध मे भी ऐसी ही निन्दात्मक बाते लिखी है। जिन लोगो से उनकी अधिक घनिष्ठता है उनके प्रति समय पर दयालुता और सहृदयता दिखाने मे भी ये नही चूकते। कला-कौशल के प्रत्येक क्षेत्र मे काम करनेवाले सच्चे और उत्साही कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहन देने मे कभी नही हिचकते। अपने घर पर वे लोगो का अच्छा आगत-स्वागत करते थे। उन्होने चालीस वर्ष की अवस्था मे विवाह किया था और उनकी स्त्री बडे ही सयत स्वभाव की और घरेलू मामलो मे कोमल व्यवहार-वाली थी। अर्नेस्ट ब्वायड का कथन है कि बर्नार्ड शॉ को अपनी जन्मभूमि आयर्लैण्ड से लन्दन भाग आने मे अधिक लाभ हुआ है क्योकि यहा उन्हे अधिक स्वतन्त्रता मिल गई थी और उनके अन्दर एक ऐसी निरपेक्षता आ गई थी कि वे अपने शत्रु की भी प्रशसा कर देते थे, आयर्लैण्ड मे रहकर वे ऐसा नही कर सकते थे। देशभक्ति के भावो से शॉ महोदय द्रवित नही होते थे और अपने विचार के अनुसार ही अनुकूलता या प्रति-कूलता ग्रहण कर लेते थे।

विलियम लॉयन फेल्प्स ने कहा है कि समाज-विज्ञान और सामाजिक इतिहास के विद्यार्थियो के लिए बर्नार्ड शॉ के नाटको का अध्ययन अनिवार्य है।

शॉ का शरीरान्त १९५० ई० मे हुआ।

---

१. Intelligent Women's Guide to Socialism and Capitalism

ग्रेज़िया डेलेडा

१९२६ ई० का नोबल पुरस्कार सार्डीनिया (इटली) की विख्यात कहानी-लेखिका ग्रेजिया डेलेडा को मिला। वे दूसरी स्त्री थी जिन्हे नोबल पुरस्कार पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, क्योकि १९०९ ई० मे सेल्मा लागरलोफ को भी यह पुरस्कार मिल चुका था। इटली को यह नोबल पुरस्कार दूसरी बार मिला, क्योकि इसके पहले १९०६ ई० मे कवि कार्डूची को भी यह सम्मान मिल चुका था। पुरस्कार प्राप्त होने के पहले ही ग्रेजिया की बहुत-सी कहानियो का अनुवाद स्कैण्डेनेवियन भाषा मे हो चुका था, किंतु जब तक उन्हे पुरस्कार नही मिला तब तक अन्य देशो मे उनका नाम नही हो पाया था। स्टॉकहोम स्थित नोबल पुरस्कार के निर्णायको ने पुरस्कार प्रदान करने के दो वर्ष पहले ही सार्डीनिया की इस लेखिका की रचनाओ का पूरा परिचय प्राप्त कर लिया था और उन्हे पुरस्कार के योग्य भी मान लिया था। ग्रेजिया डेलेडा का जन्म-स्थान नूरो था। ग्रेजिया के पिता ने कानून का अध्ययन किया था, किंतु उन्होने कृषि और व्यापार की ओर ही अपना मन लगाया। वे तीन बार अपने शहर नूरो के मेयर बने। वे कभी-कभी स्वान्त सुखाय काव्य-रचना कर लिया करते थे। उनके घर अच्छे-अच्छे किसानो, पुरोहितो, कलाकारो और धर्माचार्यो का जमघट लगा रहता था और उनके पास एक सुन्दर पुस्तकालय भी था। ग्रेजिया को सार्डीनिया की साधारण लड-कियो की अपेक्षा अच्छी शिक्षा दी गई थी और उन्होने हाईस्कूल मे इटालियन भाषा का अध्ययन किया था। जब वे १२ वर्ष की थी उसी समय 'ट्रिब्यूना' नामक पत्रिका मे एक सुन्दर लेख लिखने के कारण उन्हे ५० लीरा का एक चैक मिला। इसके बाद उनके परिवारवालो ने उन्हे उच्च शिक्षा की स्वीकृति दे दी।

ग्रेज़िया ने अपने सम्बन्ध मे स्वय लिखा है कि मै सदा लोगो से अपनी अवस्था अधिक बतलाया करती थी। उदाहरण के लिए जब मै तेरह वर्ष की थी तो अपने को सोलह वर्ष की इसलिए बतलाती थी कि लोग मुझे निरी बालिका न समझे। ग्रेजिया ने केवल सत्रह वर्ष की अवस्था मे 'सार्डीनिया का फूल'[१] नामक पुस्तक लिखी जिसने बाहर के लोगो को भी अपनी ओर आकर्पित किया। इसके बाद 'एनीम ओनेस्ट' (साधु आत्मा) नामक उपन्यास लिखा, जिसकी भूमिका 'रोजी रो बोधी' नामक प्रसिद्ध

१. Flower of Sardinia

इटालिन साहित्यिक ने लिखी। ग्रेजिया ने लिखा है कि यदि मैं इस पुस्तक का अधिकार दूसरे प्रकाशक को न देकर स्वय छपवा लेती, तो मुझे लाखो की आमदनी होती।

आरम्भ मे उन्होने कुछ सक्षिप्त कहानिया और कविताए लिखी थी और इसके बाद बडे उपन्यास लिखे। अपनी रचनाओ मे 'हवा मे सरकडे के फूल'[1] उन्हे सबसे अधिक प्रिय थी। इस पुस्तक मे प्रतिपादित किया गया है कि मनुष्य का जीवन हवा मे स्थित सरकडे के फूल के शदृश है जिसके भाग्य का निर्णय हवा के रुख पर निर्भर है। उनकी दूसरी कहानी जिसमे इनके भावो का काफी समावेश है, 'मिस्र मे उडान'[2] है। गद्य और पद्य दोनो ही मे ग्रेजिया ने सार्डीनिया-निवासियो का सुन्दर चित्रण किया है। सार्डीनिया के सबध मे ग्रेजिया ने स्वय लिखा है "मै सार्डीनिया को अच्छी तरह जानती और उससे प्रेम करती हू। इसके निवासी मेरे निजी आदमी है। इसके पर्वत और इसकी घाटिया मेरे ही अग है। जब नाटक के सभी उपकरण हमारे निकट आख खोलते ही मिल जाते है तो हम उन्हे ढूढने के लिए दूर के क्षितिज पर दृष्टि क्यो डाले। वास्तव मे हमे उन्ही विषयो को ग्रहण करना चाहिए जो हमारे अनुभव मे आ चुके है।

जब तक ग्रेजिया ने विवाह नही किया तब तक वे सार्डीनिया छोडकर और कही नही गईं। पीछे जब लोम्बार्डी-निवासी महाशय मदेसानी के साथ उनका विवाह हो गया तो उन्हे अपने पति के साथ रोम जाना पडा, क्योकि वहा मदेसानी महोदय को सेना-विभाग मे सरकारी नौकरी मिल गई थी। रोम मे उनका मकान शहर से बाहर देहात मे था। इनके दो पुत्र विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट होकर निकले। ग्रेजिया ने जितनी पुस्तके लिखी है उनका हिसाब लगाने पर एक साल मे एक पुस्तक का औसत पडता है। स्टेनिस रूइना नामक व्यक्ति से ग्रेजिया ने एक बार कहा था कि "मैने लिखना शौक से शुरू किया था और अब भी शौक से ही लिखती हू। सार्वजनिक प्रशसा और आर्थिक सफलता ये सब बाद की चीजे है। जिस समय मैं कोई उपन्यास लिखने बैठती हू तो उसका अत पहले से नही सोच रखती।" ग्रेजिया का कहना था कि उनका ईश्वर पर दृढ विश्वास है और वे यह मानती है कि ईश्वर सदा दुर्वृत्ति को पराजय देता है। कुछ समय के लिए यह भ्रम हो सकता है कि दुर्वृत्ति और पाप की विजय हो रही है, किन्तु यह भ्रम क्षणिक होता है। उनकी कहानियो मे दु खान्त की प्रधानता है। इसका कारण यह है कि ग्रेजिया ने बचपन ही से दु.ख और विपत्ति के भयानक दृश्य देखे थे। उनके पिता चूकि मेयर थे इसलिए बहुत-से दु खी लोग उनके घर आकर बहुत-सी गाथाए सुनाया करते थे। बालिका ग्रेजिया के कोमल मनोभावो पर उनका स्थायी प्रभाव पडा था।

डाकुओ और चोरो द्वारा त्रस्त होकर खून-खराबी के शिकार बने लोगो के प्रति

---

१. Reeds in the Wind २. Flight into Egypt

ग्रेजिया की रचनाओ मे गहरी सहानुभूति है । उनकी 'माता'[१], 'नोस्टाल्जिया' और 'राख'[२] मे ऐसे ही भाव प्रकट और गुप्त रूप से व्यक्त हुए है। इनमे से 'माता' नामक उपन्यास उनकी सारी रचनाओ की अपेक्षा अधिक विख्यात है। 'नोस्टाल्जिया' मे भी मानवता की गहरी छाप है । 'राख' नामक कहानी मे विषाद की गहरी छाप है। उसमे यह दिखलाया गया है कि सार्डीनिया के एक युवक के हृदय पर रोम के नैतिकताशून्य वातावरण का कैसा प्रभाव पढता है । यह युवक एक किसान का गैरकानूनी पुत्र होता है और नगर-निवास तथा विश्वविद्यालय के जीवन से आकर्षित होकर रोम मे रहने की अभिलाषा करता है। वहा वह नैतिक और सामाजिक सघर्षो से घिर जाता है । चूकि उसका व्यक्तित्व आकर्षक और चरित्र दुर्वल होता है, इसलिए उसे अनेक दुर्घटनाओ का सामना करना पडा है । जब उसकी मा सार्डीनिया से चलकर उससे रोम मे मिलने के लिए आती है तो उस युवक को यह देखकर बडी लज्जा आती है कि उसकी नागरिक स्त्री के सामने उसकी मा कैसी सीधी-सादी और अज्ञानी है । कहानी दु खान्त है क्योकि अन्त मे वह युवक इन दोनो ही स्त्रियो (मा और स्त्री) का विश्वास खो बैठता है और इस प्रकार खाक मे मिल जाता है । इस कहानी की फिल्म भी वन गई थी और अमेरिका मे सफलतापूर्वक दिखलाई गई थी। ग्रेजिया की आरम्भिक रचनाओ मे से कुछ हार्पर्स मैगजीन मे प्रकाशित हो चुकी है । उनका 'घृणा' नामक नाटक रग-मच पर सफलतापूर्वक खेला जा चुका है। उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियो मे से 'चमत्कार'[3] मुख्य है जो 'ससार की सर्वश्रेष्ठ कहानिया'[४] नामक पुस्तक मे प्रकाशित हो चुकी है। अपने देश इटली मे इनका वडा सम्मान है और वे १९२६ ई० मे इटली के राष्ट्र-नायक मुसोलिनी द्वारा स्थापित 'इटालियन एकैडमी ऑफ इम्मार्टल्स' नामक सस्था के सदस्यो मे चुनी गई थी। मुसोलिनी ग्रेजिया के परम प्रशसक थे । किन्तु यह सब सम्मान प्राप्त होते हुए भी ग्रेजिया सामाजिक सम्मेलनो मे कम भाग लेती थी और एकान्त-जीवन ही अधिक पसन्द करती थी।

ग्रेजिया को भली भाति समझने मे सार्डीनिया और रोम के लोगो ने बहुत भूल की। 'ट्रिब्यूना' नामक पत्रिका के समालोचक को एक पत्र लिखते हुए ग्रेजिया ने अपने आरम्भिक दिनो को इस प्रकार याद किया है "मैने आरम्भ मे ही सार्डीनियन चित्र चित्रित किया था जिसे केवल सार्डीनियन ही होने के कारण वहुतो ने पसन्द नही किया। उस समय मेरी अवस्था केवल १३ वर्ष की थी। मैंने समझा था कि मैं यह लिखकर अपने देशवासियो को प्रसन्न कर सकूगी, किंतु मेरी सारी अभिलाषाओ पर तुषारापात हुआ और बहुत-से लोग मुझसे इतने अप्रसन्न हो गए कि पुस्तक प्रकाशित होने पर मैं पिटते-पिटते वची।"

इसी पत्र मे आगे चलकर ग्रेजिया ने लिखा है : "जो पुरुष मेरी उस रचना को

१. The Mother
२. Ashes
३ Two Miracles
४. The Best Short Stories of The World

कारण अप्रसन्न हुए थे, वे स्त्री को द्वन्द्वयुद्ध के लिए न ललकार सकने के कारण मुझसे और तरह से बदला लेने की सोचने लगे और मुझे दुर्वाक्य कहकर, चोट पहुचाकर तथा यह कहकर भी कि मैने दूसरो से लिखवाकर अपने हस्ताक्षर कर दिया करती हू, मुझसे बदला लेने लगे। फिर भी मैने हिम्मत नही हारी और गद्य-पद्य दोनो ही लिखती गई।"

पद्य की अपेक्षा ग्रेजिया की गद्य-रचना अधिक सुन्दर है, यद्यपि उनकी पद्य-रचना मे भी कही-कही सुन्दर पक्तिया देखने मे आती है।

उनके उपन्यासो मे 'तलाक के बाद' का अग्रेजी अनुवाद अब अप्राप्य हो गया है। यद्यपि इसके कथानक और चरित्र-चित्रण मे अनेक त्रुटिया है फिर भी इसमे आकर्षण काफी है। इसमे दिखलाया गया है कि इवा नामक एक स्त्री के पति को राजनीतिक अपराध मे सत्ताईस वर्ष की जेल हो जाती है और बाद मे सार्डीनिया मे एक कानून घोषित होता है कि जिन स्त्रियो के पति राजनीतिक अपराध मे सजा भोग रहे है वे दूसरे पुरुषो से विवाह कर लेने मे स्वतन्त्र है। इसके विरुद्ध ग्रेजिया ने उपन्यास की नायिका इवा से यह कहलाया है · "यह कैसे विचार है ? भला ईश्वर के अतिरिक्त कोई शादी को भी रद्द कर सकता है !"

इस पुस्तक मे गिवोवनी का चरित्र बडा ही मार्मिक है। वह निराशा से अपना सिर हिलाती और हताश हो खिडकी-रहित कमरे मे बैठी गोधूलि वेला मे सुदूरवर्ती एकमात्र तारे को निरखती है, जिसकी क्षीण और पीली किरणो की चमक उसकी दृष्टि मे पहुचती है। दूसरा आकर्षक चरित्र ब्राण्टू का है जिसके लिए ससार मे दो ही प्रेम की वस्तुए है—एक मदिरा और दूसरी परम सुन्दरी गिवोवनी जो उसके लिए मदिरा से भी अधिक नशा करनेवाली है। आण्ट मार्टिना गिवोवनी के प्रति उसके प्रेम को और भी उकसाती है, किंतु गिवोवनी को उसकी मा और उसका जेलवासी पति—कासटैण्टिनो—ब्राण्टू से प्रेम करने को मना करते है और कहते है कि ऐसा करना पाप है। किंतु परिस्थिति से बाध्य होकर गिवोवनी का पतन होता है और उसे ब्राण्टू से एक दूसरा बच्चा पैदा होता है, यद्यपि गिवोवनी को अब भी कास्टैण्टिनो से प्रेम है। इसके बाद जब कास्टैण्टिनो जेल से छूटकर आता है, तो वह पहले तो कही भाग जाना चाहता है, पर अन्तत अपनी स्त्री के प्रेम से आकर्षित होकर विदेश नही जाता, यद्यपि उसकी स्त्री पराई हो चुकी होती है। वह अपनी विषय-वासना को तृप्त करने के लिए एक दूसरी अर्द्ध-विक्षिप्त लडकी मैटिया से प्रेम करने लगता है। पीछे वह गिवोवनी से मिलकर कहता है "मै प्रतिदिन तुम्हारी प्रतीक्षा करता हू, पर जब तुम देखती भी हो तो मुझपर शिकार की चिडिया की तरह दृष्टिपात करती हो।"

इधर ब्राण्टू एक वर्ष के लिए बाहर चला जाता है और वापस आने पर मरणासन्न हो जाता है। स्थानीय परम्परा के अनुसार मदर वैंचीसिया कास्टैण्टिनो से कहती है "कहावत है कि परमात्मा शनिवार को मरनेवाले को मुक्ति नही देता—बेचारा ब्राण्टू आज मर रहा है।" कहानी यद्यपि दु खान्त है, फिर भी अन्त मे उसका वाता-

वरण इस प्रकार सुदर बना दिया गया है · "वसत का सुखद, सुदर और कोमल दिवस है। ऊपर सुनील नभमण्डल शोभा दे रहा है। नीचे गाव के चारो ओर अनाज के खेत ऐसे लहरा रहे है जैसे हरे जल से परिपूर्ण सागर मे वायुवेग से लहरे उठ रही हो।"

ग्रेजिया डेलेडा की १८९१ ई० से १९३१ ई० तक कुल चवालीस पुस्तके प्रकाशित हुई है जिनमे से अधिकाश उपन्यास है। उनकी रचनाओ मे से अधिकाश का अनुवाद, स्कैंडेनेवियन, जर्मन और फ्रेच भाषाओ मे हो गया है। अग्रेज़ी मे उनकी कम पुस्तको का अनुवाद हुआ है। प्राय. उनकी सभी कथाओ का घटनास्थल सार्डीनिया है। फ्रेडरिक मिस्त्राल की तरह ग्रेजिया ने भी अपनी रचनाओ मे किम्वदन्तियो, रीति-रिवाजो और इतिहास का आधार लिया है और उन्हे अपने द्वीप की ही भाषा मे लिखा है। जिस प्रकार फ्रेडरिक मिस्त्राल ने प्रॉवेन्स का, कार्ल स्पिटलर ने स्विट्जरलैण्ड का और यीट्स ने आयर्लैण्ड का चित्रण किया है और जिस तरह सिग्रिड अण्डसेट ने मध्यकालीन नार्वे का गुणगान किया है, उसी प्रकार ग्रेजिया ने भी उच्च आदर्श और मानवता से प्रेरित होकर सार्डीनियन भाषा और अपने देश की परम्परा का जीर्णोद्धार किया है। अन्य देशवालो से भी अधिक ग्रजिया की रचनाओ की प्रशसा खास इटलीनिवासियो ने ही की है। उनकी रचनाओ मे नोबल पुरस्कार के आदर्शानुकूल गुण है—तथ्यवाद होते हुए भी उनमे आदर्शवाद और मनुष्य-जाति की भलाई का पूर्ण समावेश है। गत तीस वर्षों मे यूरोपीय साहित्य मे नई धारा बहानेवाले साहित्यिको मे ग्रेजिया का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

एक इटालियन समालोचक ने उस देश की एक पत्रिका मे ग्रेजिया के सवध मे लिखा था कि उनको साहित्यिक शैली सुबोधिनी है किन्तु उनके पात्र साधारण पाठको की समझ मे आ जाते है। उनकी रचनाओ पर विदेशी साहित्यिको का प्रभाव नही पडा मालूम होता। उन्होने न तो किसी विशिष्ट साहित्यिक की शैली का अनुकरण किया है, न दूसरे लेखको के वर्णन को ही अपनाया है। उनकी साहित्यिक चेतना अपने-आप जाग्रत् हुई है और उन्होने अपनी निराली शैली को आद्यन्त अक्षुण्ण रखा है। उनकी रचनाए यद्यपि आधुनिक है, पर उनमे मनोवैज्ञानिकतापूर्ण प्राचीनता का आभास मिलता है। उनकी कविताओ को उनकी मातृभूमि मे जैसा आदर मिला है वह भी अपने ढग का विलक्षण है। इनकी 'इपोपे' शीर्षक कविता तो सार्डीनिया मे अत्यधिक विख्यात हो गई है। लीगी पिरडेलो नामक इटालियन ने उनकी प्रशसा करते हुए कहा था कि वर्तमान इटली मे 'ला माद्रे' (माता) जैसी कोई भी कहानी नही लिखी गई।

वे असाधारण लेखिका थी, पर यह मानना पडेगा कि सारे पात्र और घटनास्थल सार्डीनियन होने के कारण पाठको को उन्हे सम्यक रूप से समझने मे कठिनाई होती है।

अर्नेस्ट बॉयड का कहना है कि ग्रेज़िया डेलेडा मे कहानी का वर्णन करने का

अद्भुत कौशल है और उनमे पूर्ण सजीवता है। इटली के विख्यात आलोचक डिनो मैण्टोवनी ने इस प्रकार लिखा है . "ग्रेजिया ने दोस्तोव्स्की और गोर्की का अध्ययन अच्छी तरह किया है और उनके कतिपय पात्रो के वार्तालाप मे उसकी झलक भी आ गई है। वर्णन मे भी जहा उन्होने दुखियो के क्लेशपूर्ण जीवन का चित्रण किया है, वहा उक्त लेखको की हल्की छाया का आभास मिलता है। ग्रेजिया ने जो मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है, वह अश उतना सुदर नही हुआ है जितना होना चाहिए। कितु बाह्य जगत् का जैसा सुदर और तद्रूप वर्णन उन्होने किया है, वह अत्यन्त शुद्ध और प्रभावोत्पादक है। वह पाठको मे यौवनावस्था की ऐसी सनसनी भर देता है जो हमे लिवोपार्डी और टॉल्स्टाय की रचनाओ मे ही मिल सकती है।

सन् १९३६ मे उनका देहान्त हो गया।

हेनरी बर्गसन

१९२७ ई० मे नोबल पुरस्कार हेनरी वर्गसन नामक प्रसिद्ध दार्शनिक, विचारक और उपदेष्टा को मिला। १९०८ ई० मे यूकेन महोदय को भी इन्ही गुणो के कारण पुरस्कार मिल चुका था। बीस वर्ष बाद पुन उसी प्रकार की योग्यता के दार्शनिक को यह सम्मान प्राप्त हुआ। इन दोनो ही महानुभावो ने मौलिक और रचनात्मक विचारो की सृष्टि करके मनुष्य-जाति के ज्ञान का भण्डार बढाया है और दोनो ही ने जडवाद का विरोध किया है।

हेनरी बर्गसन का जन्म १८ अक्तूबर, १८५९ ई० मे पेरिस मे हुआ था। उनके पूर्वज पोलैड के प्रसिद्ध यहूदी परिवारो मे से थे। उनकी मा ने बचपन मे ही उन्हे अग्रेजी पढाई थी और पढने-लिखने मे काफी प्रोत्साहन दिया था। नौ वर्ष की अवस्था मे वे स्कूल मे बैठाए गए। उन दिनो गणित की ओर उनकी विशेष रुचि थी और उन्हे गणित की योग्यता के लिए पुरस्कार भी मिला था। यह पुरस्कार 'एनल्स-डि-मैथेमेटिक्स' मे प्रकाशित एक सवाल को हल करने के लिए प्रदान किया गया था। 'इकोल-नार्मेल सुपीरियर' नामक पाठशाला मे उनपर रैविसा का बहुत अधिक प्रभाव पडा और बाद मे उन्होने 'फ्रेच एकैडमी ऑफ मॉरल एण्ड पोलीटिकल साइस' नामक सस्था मे व्याख्यान देते समय रैविसा को 'कलाकार या कवि की आत्मा' तक कह डाला है।

ग्रेजुएट होने के पश्चात् पहले उन्होने ऐगर्स, क्लेमाण्ट और अन्य स्थानो पर दर्शन के आचार्य का कार्य किया और फिर वे इकोल नार्मेल सुपीरियर मे अध्यापक नियुक्त होकर आ गए। १९०० ई० मे वे कॉलेज-डी-फ्रास मे अध्यापन-कार्य कर रहे थे। दूसरे ही वर्ष वे इन्स्टीट्यूट के लिए चुन लिए गए और १९१४ ई० मे फ्रेच एकैडमी के सदस्य वन गए। उनके शिष्य उनकी अध्यापकीय योग्यता के परम प्रशसक हुए और उनकी अध्यापन-शैली की उत्तमता की चर्चा फैल गई। उनके कॉलेज के लेक्चर वडे चाव से सुने जाते थे, और वाद मे उनके श्रोताओ मे पर्याप्त वाद-विवाद और आलोचनाए हुआ करती थी।

एडविन ई० स्लॉसन महोदय ने 'मेजर प्रोफेट्स ऑफ टु डे' नामक पुस्तक मे वर्गसन के तत्त्वज्ञान और उपदेश का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि उनके स्वर मे सगीत

भरा है और उनके शिष्यो ने तो उनकी उपमा लवा पक्षी से दी है, जो जितना ही ऊपर उडता है, उतनी ही मधुरता के साथ गाता है। अध्यापक के रूप मे उनके आकर्षक प्रभाव की प्रशसा भी स्लॉसन महोदय ने खूब की है। उनका उनके शिष्यो पर स्थायी और मधुर प्रभाव पडा है। वे चाहे पेरिस मे हो या ग्रीष्म के दिनो मे अपने स्विट्जरलैण्ड स्थित मकान मे हो, उनके यहा सदा मिलने-जुलने के लिए आनेवालो का तांता लगा रहता है और उनका समस्त परिवार आगतो का यथेष्ट सत्कार करता है। वे व्याख्यान देने के लिए अनेक बार अमेरिका से आमत्रित होकर वहा गए है और उनका बडा आदर हुआ है।

उनके दार्शनिक सिद्धान्त मुख्यतया विकासवाद-सम्बन्धी है, यद्यपि उनमे अनेक विषयो का समावेश है। आरम्भ मे वे एक जडवादी और निर्धारित विज्ञान के परम भक्त थे। वे यत्रो की ओर बहुत आकर्षित हुए थे और हर्बर्ट स्पेसर के तत्त्वज्ञान को आगे बढाने के अभिलाषी थे। उन्होने यात्रिक सिद्धान्तो का अध्ययन करके जब उन्हे सृष्टि की व्याख्या पर लागू करने की चेष्टा की, तो उन्हे अपर्याप्त पाया—उदाहरणार्थ उन्होने भौतिक विज्ञान मे 'काल' के विचार को विवादयुक्त माना। उनकी धारणा है कि वास्तविक 'काल' 'स्थूल व्यवधान' की तरह मापा नही जा सकता। घडी या पचाग से उसकी माप नही हो सकती, हमारी चेतना के अनुसार उसमे विभिन्नता हो सकती है। 'निर्दिष्टवादी'[1] से वे 'उदारतावलम्बी'[2] हो गए और अपने इस परिवर्तन की सफाई मे उन्होने 'काल और स्वतत्र इच्छा'[3] तथा भौतिक पदार्थ और स्मृति'[4] नामक पुस्तके लिखी।

इस प्रकार के आरम्भिक निर्णय के द्वारा वे इस सिद्धान्त पर पहुचे कि मन पचभूत से भिन्न वस्तु है और उसपर आशिक रूप से निर्भर करता है। इसके बाद जब उन्होने मानसिक धारा और इन्द्रियो का अध्ययन किया तथा सस्कार एव सहज बुद्धि पर विचार किया तो उन्हे 'सृष्टि-विकास'[5] नामक दूसरी पुस्तक लिखनी पडी। कहने की आवश्यकता नही कि उन्होने ये पुस्तके अपनी मातृभाषा फ्रेंच मे लिखी थी और उनका अग्रेजी अनुवाद बाद मे प्रकाशित हुआ था। अनुवाद बर्गसन की आज्ञा से आर्थर माइकेल ने किया था। लेखक ने इस पुस्तक मे प्रोफेसर विलियम जेम्स के प्रति कृतज्ञता प्रकाशित की है, क्योकि उन्हे उनसे अनुवाद मे बडी सहायता मिली है। कई स्थलो पर विलियम जेम्स ने अन्धकारमय विषयो पर प्रकाश डाला है और कुछ ऐसे शब्दो और वाक्यो का प्रयोग किया है जिनका कि अग्रेजी मे मिलना कठिन था। होरेस मेयर केलेन ने 'विलियम जेम्स और हेनरी बर्गसन— उनके जीवन के व्यतिरेका-

---

१. Determinist
२. Libertarian
३. Time and Free Will
४. Matter and Memory
५. Creative Evolution

त्मक मत का अध्ययन [१] नामक एक पुस्तक लिखी है, जिसमे उन्होने उन दोनो के दार्श-निक मतो मे विशेष भिन्नता का दिग्दर्शन कराया है और दोनो को भली भाति समझकर उनकी व्याख्या की है।

'सृष्टि-विकास' मे बर्गसन ने दार्शनिक परम्पराओ की प्रयोजनीयता को स्वीकार किया है और आधुनिक ढग की वाक्यावली और शैली का प्रयोग किया है। उन्होने प्लेटो और अरस्तू से लेकर डेस्कार्टिस, स्पिनोजा लाइबनित्ज, स्पेसर और केट तक के प्रधान दार्शनिक तत्त्वो की खोज की है। इनके अन्तर्निहित विचारो का विकास जडवाद से अध्यात्मवाद की ओर इस प्रकार प्रकट किया गया है जिससे ऐसा ज्ञात होता है कि वे जडवाद के विरोधी है -- अर्थात् उनका कहना है कि भौतिक पदार्थ एक और सूक्ष्म मूलतत्त्व अथवा स्पन्दन के साथ आवेष्टित है, क्योकि जहा तक निष्क्रिय जड पदार्थ का सम्बन्ध है, हम कोई भी भीषण भूल किए बिना उसकी प्रवाहशीलता की उपेक्षा कर सकते हैं। हम कह चुके है कि जड पदार्थ रेखागणित के बोझ से दबा है। और जड पदार्थ का अस्तित्व, उसकी अध पतित अवस्था मे, वास्तविकता का रूप तभी धारण करती है जब उसका उसकी ऊर्ध्वगति के साथ सम्बन्ध हो। परन्तु जीवन और चेतनता ही ऊर्ध्वगति है।[२]

हेनरी बर्गसन के गम्भीर और प्राणप्रद विचार ऐसी स्पष्ट भाषा मे व्यक्त किए गए है कि उनकी रचनाओ को पढकर आनन्द मिलता है। उन्होने दृष्टात दे-देकर अपने विचारो को पाठको के लिए ऐसा बोधगम्य बना दिया है कि पाठको की कल्पना और तर्कशक्ति एकसाथ काम करती है। इस दृष्टि से बर्गसन यथार्थवादी विलियम जेम्स से बहुत मिलते-जुलते है। फ्रास मे बर्गसन की ऐसी धाक जम गई है कि उनकी शैली जिस किसी कला या साहित्य मे पाई गई, उसे बर्गसोनियन कला या बर्गसोनियन साहित्य कहने लगे है — यही नही, धार्मिक और श्रमजीवी क्षेत्र मे भी बर्गसन का नाम इतना हो चुका है कि 'बर्गसोनियन प्राचीन ईसाई' और 'बर्गसोनियन मज़दूर आन्दोलन' कहकर इनका नाम उससे सम्बद्ध किया जाता है। बर्गसन के कट्टर शिष्यो मे एडवर्ड-ली-रॉय का नाम लिया जा सकता है, जो एक कैथोलिक है और जिन्होने बर्गसन के तत्त्वज्ञान मे धार्मिक प्रकाश का आभास पाया है। यद्यपि बर्गसन ने सीधे रूप मे न तो धर्म की ही शिक्षा दी है न आर्थिक आन्दोलन पर ही कुछ लिखा है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि उप-रचनाए भी मुख्य कृतियो के समान मूल्यवान और चित्ताकर्षक होती हैं। 'स्वप्न'[3] और 'हास्य'[४] नामक दो साहित्यिक कृतियो की उप-रच-

१. William James and Henri Bergson A Study in Contrasting Theories and Life

२. इसका तात्पर्य यह है कि आध्यात्मिक जीवन चैतन्य से सम्बन्ध रखता है जिसकी ऊर्ध्व गति होती है और जड इस ऊर्ध्व गतिशील चैतन्य के साथ सम्बन्ध रखकर ही अपना अस्तित्व रख सकता है। —लेखक

३. Dreams ४. Laughter

नाए भी ऐसी ही है। इनमे से पहली का अनुवाद एडविन स्लॉसन ने किया। इसमे बतलाया गया है कि स्वप्न भी चेतना का अश है और निद्रा प्रत्याहार की अवस्था है। इसमे स्वप्न के कारणो और पुनरावृत्तियो पर भी विचार किया गया है, और उसकी यथासाध्य व्याख्या करने की चेष्टा की गई है। बर्गसन ने सुपरिचित और प्रबल उपमाओ का व्यवहार किया है। उदाहरणार्थ नीचे उनका उपमालकार देखिए "हमारी स्मृतिया एक दबाव मे उसी प्रकार दबी रहती है, जैसे ब्वॉयलर मे वाष्प। हमारी स्मृतिया इस प्रकार ठूस-ठूसकर भरी हुई है जैसे ब्वॉयलर मे वाष्प ठूसी होती है। अत्यधिक दबाव से ब्वॉयलर के फटने का डर होने के कारण एक छोटा-सा द्वार बना रहता है जिनमे से उपयुक्त सीमा से अधिक वाष्प निकल जाती है। इसी प्रकार स्मृतियो के अतिरिक्त दबाव को कम करने के लिए स्वप्न की आवश्यकता है।"

मनोविज्ञान के पूर्ववर्ती आचार्यो ने जो कुछ खोज की है, उसको सहृदयतापूर्वक स्मरण करते हुए और पुस्तको तथा क्रियात्मक प्रयोगो की प्रचुर व्याख्या करते हुए बर्गसन पूछते है कि क्या साधारणत स्वप्न के द्वारा नये विचार की सृष्टि हो सकती है ? साथ ही वे अठारहवी शताब्दी के वाद्य-विशेषज्ञ तारतिनी जैसो को असाधारण मानते है, जिन्हे स्वप्न मे ऐसी रागिनी सुनाई पडी थी जिसकी स्वरलिपि उन्होने जागकर बनाई और जिसका नाम 'शैतान का सगीत' रखा। स्वप्न स्मृतियो से उत्पन्न होते है। स्मृतिया प्राय अदृश्य छाया की अवस्था मे रहती है पर कुछ (स्मृतिया) ऐसी भी होती है जो रूप और वाणी का आश्रय लेकर स्थूल रूप मे प्रकट होने का प्रयत्न करती है और इस कार्य मे वे ही सफल होती है जो दृश्यमान ढग के अणुओ के साथ अपने को मिला सकती है और जो उन बाह्य और आन्तरिक इन्द्रियानुभूतियो के साथ—जिनकी हम उपलब्धि करते है—सम्बन्ध रखती है।

बर्गसन ने भावी मनोविज्ञान के लिए, मानसिक अन्तर्विनिमय का समाधान तथा स्वप्न और चेतनता के अध स्तर के अन्य रहस्यो पर उसके प्रभाव को सुलझाने के लिए छोड दिया है।

'हास्य' का अनुवाद रूसी, पोलिश, स्वीडिश, जर्मन, हगेरियन और अग्रेजी भाषाओ मे हो चुका है और यह पुस्तक बहुत व्यापक रूप मे पढी गई है। इसमे हास्य का अर्थ समझाने के लिए निबध लिखे गए है। इसमे हास्य पर जिन तीन लेखो का सग्रह है वे 'दि रयू-डि-पारी मे पहले प्रकाशित हुए थे। इसमे तीन परिच्छेद इस प्रकार है—साधारण हास्य और हास्य के तत्त्वो के रूप और गति, परिस्थितियो और शब्दो मे हास्य तत्त्व, नैतिक चरित्र से हास्यरस का सम्बन्ध, हास्य का अर्थ क्या है ? स्वप्न मे जो रूप-रग आदि दिखाई देते है, बर्गसन का यह मत है कि आखो के बन्द करने पर (विशेष करके अधकार मे विभिन्न रग के जिन सूक्ष्म अणुओ का नृत्य दिखाई देता है) उन्हीके परस्पर गतिशील सम्बन्ध से परिवर्तनशील रूप मे वे दीखते है और धारणा के साधन मे वे प्रथम स्तर है। सुखासन मे बैठकर मेरुदण्ड को सीधा रखकर

अमूर्त की कल्पना की चेष्टा करते हुए अधकारपूर्ण स्थान मे नेत्रो को वद करके जो विकीर्णित अणु दिखाई देते है, उनमे से कुछ अणु तो ज्योतिमान है और कुछ ज्योतिरहित है। उनपर ध्यान रखकर उनके विभिन्न प्रकार के स्पन्दन का अध्ययन किया जाता है।

"जिस वस्तु पर हम हसते हैं उसका आधारभूत तत्त्व क्या है?" आदि स्तम्भित करनेवाले प्रश्न है। इसमे इस बात का समावेश भी है कि हास्य मानवीय क्षेत्र के वाहर नही होता, क्योकि कोई भूभाग या जानवर नही हसता, केवल मनुष्य ही हसता है। भावावेग हास्य का शत्रु है, क्योकि गहरे भावो के साथ वास्तविक हास्य कभी-कभी ही देखने मे आता है। विवेक हास्यरस की प्रतिध्वनि है।

जहा बर्गसन ने हास्य के सम्बन्ध मे यह दिखाया है कि सामाजिक भावभगी के रूप मे उसका क्या स्थान है, वह स्थल अधिक मनोरजक है। अपने सिद्धान्त की पुष्टि मे लेखक ने मौलियर, लाबिश, डिकिन्स और मोशिए-डी-स्टाल का उद्धरण दिया है। बर्गसन ने हास्य की जो यह व्याख्या की है उसमे जार्ज मिरेडिथ-रचित हास्यरस और उसके मूलतत्त्व से कुछ समानता है। बर्गसन का यह भी कहना है कि हास्यरस ही अहभाव की एकमात्र औषध है। बर्गसन के हास्यरस के अध्ययन मे जो अतिम मीमासा दी गई। वह विचारणीय है। उन्होने कहा है कि हास्य का सबसे बडा कार्य है साम्य-स्थापना। इस विषय मे भी अन्यान्य विषयो की भाति प्रकृति ने असत् का उपयोग सत् की पूर्ति के लिए किया है।

इडविन जॉर्कमैन ने अपनी 'क्या ससार मे कोई ऐसी नई वस्तु है?' नामक पुस्तक के निबधो मे जो प्रश्न किए थे उनका उत्तर उन्हे 'हेनरी वर्गसन – वास्तविकता के दार्शनिक' नामक पुस्तक मे मिल गया। इसी प्रकार जार्ज सन्तायन ने भी बर्गसन पर 'साम्प्रदायिकता की बयार' नामक पुस्तक लिखी है जिसमे उन्होने स्पष्ट लिखा है कि हेनरी बर्गसन जीवित दार्शनिको मे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह सब होते हुए सन्तायन बर्गसन के दर्शन का निदान करते हुए लिखते है कि वे शब्द-प्रयोग करने मे कुशल, निर्णय करने मे समीचीन है और उनकी रचनाओ मे भावो और रसो का आभास मिलता है, किन्तु इसपर भी उनकी विद्वत्ता मे कठिन प्रयास की झलक पाई जाती है। सतायन ने उनकी ऐसी प्रशसा करते हुए भी उनकी तीक्ष्ण आलोचना की है। इस प्रकार उन्होने उनकी न्याय-विरोधिनी तर्कनाशक्ति, ऐतिहासिक निर्णयो मे भ्रम और रहस्यवाद तथा सृष्टि-विकास की उलझनो मे पडने की भूले वताई है। सतायन का यह भी कहना है कि जव वर्गसन गणित और पदार्थ-विज्ञान छोडकर काल्पनिक और आध्यात्मिक विचारो पर लिखते है तो ज्ञात होता है कि ये समझते तो हैं पर भय से कापते है—अमानुषीय विचारो से वे डरते है।

पहले कहा जा चुका है कि हेनरी वर्गसन के सवसे वडे प्रशसक, भक्त और

शिष्य मोशिए ली राय है । ली रॉय महोदय ने 'हेनरी बर्गसन का नवीन दर्शन'[1] नामक पुस्तक लिखकर बर्गसन के दार्शनिक विचारो को समझाने की चेष्टा की है । साथ ही उन्होने दर्शन की प्राचीन और अर्वाचीन पद्धति पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार भी किया है । हेनरी बर्गसन के अनेक अनुयायी है । टेन और रेनन की तरह उनके विचारो का प्रभाव बहुत व्यापक हुआ है । उपर्युक्त दोनो दार्शनिको के अपेक्षाकृत जडतावादी और असत्वादी विचार होने के कारण नई पीढी के लोग उनसे ऊब चुके है । इसलिए लोग बर्गसन की ओर शीघ्रतापूर्वक आकृष्ट हुए है । महासमर के पश्चात् उनके विचारो का प्रभाव जनता पर अधिक पडा और उनकी ख्याति बहुत बढ गई । इसीलिए उन्हे पुरस्कार भी कुछ शीघ्र मिल गया । पुरस्कार-पत्र मे ये शब्द लिखे गए थे कि उनके मूल्यवान जीवनप्रद विचारो तथा उस सुन्दर कला के लिए उन्हे यह पुरस्कार दिया गया जिसमे उन्होने वे विचार व्यक्त किए है और साहित्यिक कौशल को पूर्णत निभाया है । विलियम जेम्स ने हेनरी बर्गसन से मतभेद रखते हुए भी यह लिखा है "यदि कोई वस्तु कठिन को सरल बना सकती है तो वह बर्गसन की शैली है । उनके प्रत्येक पृष्ठ मे एक नया क्षितिज खुलता है । जो कुछ किताबी कीडे—प्रोफेसर—दुहराते है, उसे ही कहने के बदले वे हमे वास्तविकता के सच्चे रूप की ओर ले जाते है ।"

सन् १६४१ मे इस महान विचारक और दार्शनिक का देहावसान हो गया ।

---

१. The New Philosophy of Henri Bergson

सीग्रिद उण्डसेत

१९२८ ई० मे नोबल पुरस्कार नार्वे की सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका सीग्रिद उण्डसेत को प्रदान किया गया था। पुरस्कार दिए जाने के पहले ही साहित्यिक जगत् मे उनका नाम हो चुका था और साहित्यिको मे यह चर्चा थी कि उन्हे शीघ्र ही विश्वविख्यात पुरस्कार मिलेगा। पाठकगण उण्डसेत की प्रतिभा से पहले ही स्तम्भित हो चुके थे, क्योकि वे उनके मोटे-मोटे उपन्यास भी चरित्र-चित्रण की विचित्रता के कारण बडे चाव के साथ पढते थे और उनमे एक अद्भुत सजीवता का अनुभव करते थे। उन उपन्यासो का कथाकाल चौदहवी और पन्द्रहवी शताब्दी और घटनास्थल नार्वे होने पर भी उनमे सार्वजनिक मनोरजन कम नही था। इस रमणी के अद्भुत चरित्र-चित्रण पर मुग्ध होकर पाठक उत्सुक हो उठे और उनके मन मे स्वभावत यह जिज्ञासा हुई कि यह चमत्कारपूर्ण रमणी है कौन और उसके उपन्यासो मे उसका व्यक्तित्व और उसकी भावनाए कहा तक छिपी हुई है।

सीग्रिद उण्डसेत का जन्म डेन्मार्क के कैलेण्डबोर्ग नामक नगर मे १८८२ ई० मे हुआ था। उनके पिता इगवाल्ड मार्टिन उण्डसेत प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद थे। उन्होने बचपन से ही नार्वे का इतिहास पढा था और उसे हृदयगम कर लिया था। उनकी मा डेनिश थी। सीग्रिद ने ओसलो के महिला महाविद्यालय मे शिक्षा पाई थी। कहानिया लिखने की रुचि उन्हे विद्यार्थी-जीवन से ही थी, पर उन दिनो उनकी कोई विशेष ख्याति नही थी। इनके सम्बन्ध मे लिखे गए लेखो से यही प्रतीत होता है कि वे अकस्मात् एक अत्यन्त प्रकाशमान नक्षत्र की भाति साहित्यिक नभ-मण्डल पर उदय हुई और जब १९२८ ई० मे उन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो लोग उनका विशेष परिचय प्राप्त करने की चेष्टा करने लगे। उनके आरम्भिक उपन्यास 'फ्रू मर्था आउली' (१९०८ ई०) और 'आनन्दावस्था'[1] है। इसके बाद १९११ ई० मे उनकी पहली कहानी 'जेनी' प्रकाशित हुई जिसने पाठको को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। इसके कुछ ही समय पश्चात् उन्होने ए० सी० स्वार्सटेड नामक एक चित्रकार से शादी कर ली और दाम्पत्य एव मातृत्व का आनन्दोपभोग करते हुए भी उपन्यास-लेखन जारी रखा। १९२१ ई० से वे लीलेहैमर नामक स्थान मे रहने लगी और फिर प्रकाशक भी उनकी पुस्तको की माग करने लगे।

---

१. Happy Age

यद्यपि वे लिखती बहुत धीरे-धीरे रही, पर लिखने का क्रम बराबर जारी रहा। वे अपने पात्रो के चरित्र के साथ तल्लीन-सी हो जाती और उनके सम्बन्ध मे सदा विचार करती रहती थी इसलिए यद्यपि उन्होने लिखा बहुत थोडा, पर जो कुछ लिखा उसमे जीवन और वास्तविकता की गहरी छाप है। उनके पात्रो के अकृत्रिम सुख तथा उनके मानसिक एव आध्यात्मिक द्वन्द्व का चित्र पाठको के मन पर खिच जाता है। उनकी आरम्भिक रचनाओ से उनकी पर्यवेक्षण और वर्णन-शक्तियो का पता लगता है। बाद मे उन्होने मध्यकालीन नार्वे के कथानक लेकर जो उपन्यास लिखे है उनमे उन्होने जीवन का निश्चित आयोजन और सिद्धान्त स्थापित कर लिया था। इनका साधारण झुकाव दुखान्त की ही ओर था - जब किसी पात्र ने जाति-बन्धन और नैतिक विधान का उल्लघन किया है तो ग्रीक नाटको के पात्रो की तरह उसका परिणाम दुखद हुआ है और अन्तिम दृश्य परिताप या परिशोधयुक्त हुआ है। उनके बाद के उपन्यासो मे उन्होने अध्यात्मिक क्लेश का शमन शान्तिपूर्ण धार्मिक मठो मे और गिरजाघरो की क्रियात्मक और आत्मबलिदान-युक्त सेवा करने मे बतलाया है। उनकी रचनाओ से मानवीयता के प्रति उनकी कल्याणेच्छा प्रतिबिम्बित होती है।

सीग्रिद ने नार्वे के मध्यवर्ती श्रेणी के लोगों का चरित्र-चित्रण किया है। कथानक चौदहवी और पन्द्रहवी शताब्दी का है। किसानो और बाज़ार मे काम करनेवाले अन्य श्रमजीवियो के घरेलू और अल्पविस्तृत जीवन का इस लेखिका ने ऐसा सजीव चित्रण किया है कि पाठक उनके छोटे स्वार्थो और बडी समस्याओ मे भाग लेने लगता है। इनके पात्रो मे वह शक्ति है कि उनके परिचय के साथ तत्कालीन वातावरण भी आखो के सामने आ जाता है। वातावरण का वर्णन सीग्रिद ने छोडा नही है बल्कि उन्होने उसे इतने सूक्ष्म विवरण के साथ किया है कि उसके द्वारा पात्रो का चरित्र प्रकाश मे आ जाता है। सीग्रिद उण्डसेत ने इश कौशल के साथ चौदहवी सदी के ग्रामीण नार्वे का दृश्य समुपस्थित किया है कि पाठको के लिए वह वैसा ही सुगम-ग्राह्य है जैसा बीसवी सदी का दृश्य। इन्होने गद्य के साथ-साथ तत्कालीन गाने और धर्माचार्यो के थोडे-बहुत दार्शनिक उपदेश भी अपनी रचनाओ मे सम्मिलित कर लिए है।

किन्तु ऐतिहासिक उपन्यासो मे हाथ लगाने के पूर्व उण्डसेत ने वर्तमान समाज के युवक-युवतियो और उनके सघर्षमय और असन्तोपजनक विवाह-सम्बन्ध आदि सामाजिक समस्याओ का सफल वर्णन करने के लिए 'अपरिचित'[1] नामक उपन्यास लिखा। किन्तु उनके ऐतिहासिक उपन्यासो की सफलता के बाद भी उनका 'जेनी' नामक उपन्यास जिस चाव के साथ पढा गया वैसा अन्य कोई नही। इसका कारण है उनकी साहित्यिक कला और करुणरस-प्रधानता। इसका कथानक आधुनिक है और उसमे एक ऐसी गुणवती और कोमल स्वभाव की स्त्री का चित्रण किया गया है जो नार्वे छोड़कर कला-कौशल का अध्ययन करने रोम चली जाती है। किन्तु अट्ठाईस वर्ष की अवस्था मे

१. A Stranger जो अब The Happy Age नामक पुस्तक का एक अंग बन गया है।

उसके हृदय मे एक नई आकाक्षा का उदय होता है और वह (हृदय) प्रणय तथा प्रणयी की कामना करता है। हेल्ज, जो उसके अभिलाषापूर्ण स्वभाव को जाग्रत् करता है, जेनी से मानसिक और नैतिक साहस मे दुर्बल है—वह उसके प्रति ऐसा स्नेह रखती है जिसमे पत्नी और मातृ-प्रेम का सम्मिश्रण होता है। वह जब नार्वे अपने घर लौटकर आती है तो उसे निराशा होती है। अन्त मे वह पुन रोम जाने को तैयार हो जाती है और कला मे पुन अपने को तल्लीन करके प्रेम की निराशा भुला देना चाहती है, किन्तु फिर भी वह अपनी असफलता को कुछ दिनो तक सहन करती है और अन्त मे जाकर उसका दु खद अन्त होता है। इसका अन्तिम दृश्य ऐसा दु खद है कि सहृदय पाठक का हृदय द्रवीभूत होकर आहे भरे बिना नही रह सकता। इसके कथानक मे करुणा रस का पूर्ण विकास हुआ है। जेनी ने गनार-हेगेन से कुछ ही शब्दो मे उन स्त्रियो की दशा का वर्णन किया है जिन्हे कोई प्रेम नही करता और जो द्वन्द्वपूर्ण स्वभाव की हो जाती है।

जेनी के पश्चात् सीग्रिद उण्डसेत ने विवाहित स्त्रियो की कहानिया लिखी और यह दिखलाया कि प्रेम करने मे उन्हे सघर्ष और अडचनो का सामना करना पडता है। उनके 'वसन्त' नामक उपन्यास का अग्रेजी अनुवाद अभी तक नही प्रकाशित हुआ है, अत उसके सम्बन्ध मे हम कुछ लिखने मे असमर्थ है। उनके 'दि स्प्लिटर ऑफ दि ट्राल मिरर' मे कई कहानियो का सग्रह है।

सीग्रिद उण्डसेत ने कितनी ही छोटी कहानिया भी लिखी है जिनका सग्रह 'पुअर फेट्स' नालक एक जिल्द मे हुआ है। इसमे से 'साइनसेन' नामक कहानी को 'नार्वे की सर्वोत्तम कहानिया'[1] मे स्थान मिला है। 'बुद्धिमती किशोरी'[2] मे स्त्री के आत्म-बलिदान की भावना काव्यमयी भाषा मे व्यक्त की गई है। लेखिका की सबसे प्रसिद्ध कहानी है 'क्रिस्टिन लैवरासडैटर'। अपनी कहानियो मे लेखिका ने बहुधा डेनिश माता का ही चित्रण किया है। वास्तव मे लेखिका की माता भी डेनिश—डेन्मार्क की—थी। उनके पात्र-पात्री प्राय मध्यम श्रेणी के तथा शिथिल स्वभाव के हुआ करते है, किन्तु होते ऐसे है कि उन्हे परिश्रम करना ही पडता है।

सीग्रिद उण्डसेत ने आधुनिक जीवन का उपन्यास लिखते-लिखते मध्यकालीन उपन्यास लिखना क्यो शुरू कर दिया, यह प्रश्न हो सकता है। किन्तु प्राचीन कथानको और प्राचीन गीतो का उनका प्रेम नया नही था – उन्होने आधुनिक उपन्यासो मे भी प्राचीन गीतो का समावेश करना पहले ही से आरम्भ कर दिया था। १९०९ ई० मे ही उन्होने 'विगो-जॉट और विवाडस' नामक उपन्यास नार्वे के प्राचीन कथानक पर लिखा था। १९१५ ई० मे उन्होने सम्राट आर्थर और उनके मुसाहवो की कहानी लिखी।

क्रिस्टिन लारेण्डेटर की कहानी लिखते समय उण्डसेत के मस्तिष्क मे दो बातें

१. The Best Short Stories of Norway २ Wise Virgins

जम गई थी—एक यह कि चौदहवी शताब्दी के स्त्री-पुरुष बीसवी शताब्दी के मानवता-युक्त स्त्री-पुरुषो से मिलते-जुलते थे, दूसरी यह कि सही और गलत, पाप और उसके परिणाम उदारतावाद के आधुनिक विचारो और क्रियाओ की प्रवृत्ति मे घटाए नही जा सकते। इस सिद्धान्त की कि 'प्रत्येक बात को समझने का अर्थ है उसका त्याग देना' उन्होने बडी निन्दा की है और कहा है कि यह उन कायरो के लिए एक शरणस्थल है जो अपने आदर्शो के अनुकूल जीवन नही व्यतीत कर सके है। १९१९ ई० मे इनका 'एक स्त्री का दृष्टिबिन्दु'[1] नामक अपना निबन्ध-सग्रह प्रकाशित कराया जिसमे यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि मध्यकाल मे प्रेम का विवेचन तीन रूपो मे किया जाता था—उच्च परन्तु ध्वसक वासना, नीच और भीरुतापूर्ण क्रियाओ का प्रलोभन और सामाजिक शक्ति। उण्डसेत की राय मे प्रेम के सम्बन्ध मे आधुनिक विचारको ने कोई भी नई बात नही मालूम की है।

सीग्रिद उण्डसेत के उपन्यासो और उनकी कहानियो का विषय-प्रसग प्रधानत: स्त्रीत्व ही रहा है। उन्होने अपनी आरम्भिक कहानियो मे स्त्रियो को पुरुषो की अपेक्षा कही अधिक श्रेष्ठ चित्रित किया है। अपने एक कथानक मे उन्होने नायिका— क्रिस्टिन लावरेसडेटर - के बचपन, परिपक्वावस्था और अन्तिम दिनो का वर्णन इस ढग से किया है कि वह पाठको के हृत्पटल पर आकर्षक रूप से जम जाता है। क्रिस्टिन के साथ उसकी मा रैनफ्रिड का भी चित्रण किया गया है, किन्तु उसका व्यक्तित्व 'वधू-माल'[2] के अन्तिम दृश्य तक आगे न लाकर पीछे ही रखा गया है। इस अन्तिम दृश्य में रैनफ्रिड अपनी बेटी क्रिस्टिन का विवाह हो जाने पर उसके पति से अपने जीवन के अनुभव बतलाती है और कहती है कि उसके जीवन मे क्या छुपा हुआ था और उसने भावावेश मे तथा पति के लिए क्या-क्या कष्ट उठाए है। क्रिस्टिन की मा की अपेक्षा उसके पिता का चरित्र अधिक योग्यतापूर्वक चित्रित किया गया है। लावरेस जार गल्फसन नार्वे के प्रतिष्ठित घराने के गृहस्वामी चित्रित किए गए है और उन्होने अपनी मध्यकालीन परम्परा को ठीक तौर से निभाया है तथा ख्रिष्टीय धर्म की दीक्षा पाकर उनमे और भी कोमलता और धैर्य का समावेश हो गया है। उनका पत्नी और पुत्री-प्रेम, उनका अपने दामाद एर्लेण्ड के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार लगातार स्थिर रहा है और उन्होने एक वीर पिता की तरह कर्तव्य-पालन किया है। आधुनिक रचनाओ मे ऐसे प्रभावशाली अग कुछ ही मिलेगे जिनमे वैसा प्रभाव और सौन्दर्य हो जैसा पिता के अपनी पुत्री क्रिस्टिन के साथ पर्वत को जाने के वर्णन मे मिलता है। जिस समय वह अपने पालतू घोडे - गुल्ड्स्टवीमिन— पर चढता है तो उसका वर्णन लेखिका इन शब्दो मे करती है "घोडा मजबूती और तेजी के कारण सारे देश मे विख्यात था, पर अपने मालिक के सामने वह मेमने—भेड के बच्चे— के सदृश नम्र बन जाता था और लावरेस कहा करता था कि वह घोडा उसे छोटे भाई के सदृश प्यारा है।

१. A Woman's Viewpoint २. The Bridal Wreath

सात वर्ष की लडकी क्रिस्टिन भी अपने पिता के साथ उसी घोडे पर चढकर यात्रा के आनन्द और उत्ताप का अनुभव करती है।" घाटियो और गुलाबी फूलो के सौन्दर्य और हवा मे भरे हुए पहाडी घासो के सौरभ का वर्णन बडी ही सजीव भाषा मे किया गया है। लडकी के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लेखिका ने लिखा है "छोटी लडकी कुमुदिनी-सी मालूम होती है और उसके चेहरे से ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी शूर की लडकी है।" पुस्तक मे वह प्रकरण और भी सुन्दर है जहा गुल्ड्सबीमिन के साथ क्रिस्टिन के महोद्यम का वर्णन किया गया है और एक ठिगनी लडकी के सम्बन्ध मे उसकी कल्पना का विस्तार दिखाया गया है।

क्रिस्टिन और एर्लेण्ड के विवाह के समय जो भोज दिया जाता है उसका वर्णन काव्यात्मक परम्परा और सुन्दरता से गुथा हुआ है। यह युगल जोडी प्रकाश के पीछे छिपे हुए अन्धकार की भाति वासना के पीछे छिपी हुई सन्तान लालसा रखती है और समझती है कि यह बात उन्होने अपने मेहमानो और पडोसियो से छिपा ली है। एर्लेण्ड साहसी और आकर्षक युवक है—वह महोद्यमी है और उसे तो अपने कृत्यो से आनन्द मिलता है साथ ही क्रिस्टिन को भी, पर कभी-कभी उन्हे पश्चात्ताप भी होता है। दूसरी जिल्द[१] मे यह दम्पति भावुकता की चरम सीमा पर पहुच जाता है। अन्त मे जब एर्लेण्ड एक राजनीतिक षड्यन्त्र मे फस जाता है तो साइमन एण्ड्रसन, जिसके साथ क्रिस्टिन की एर्लेण्ड से पूर्व सगाई हुई थी, उसे उस मामले से छुडाता है, यद्यपि एर्लेण्ड को उस राज्य (हसबी) से निकल जाना पडता है।

क्रिस्टिन मे स्त्रीत्व और मातृत्व पूर्ण अश मे है। जिस समय उसके बच्चा पैदा होता है उसी समय से उसे अपने दोनो ही कर्तव्यो का पूर्णत पालन करते देखा जाता है। वह अपने अव्यवस्थित पति के प्रति भक्ति-भाव रखती है और अपने उदीयमान बच्चो के प्रति वात्सल्य-प्रेम। जब उसके लडको का विवाह हो जाता है और एर्लेण्ड के जीवन का अन्त हो जाता है, तो क्रिस्टिन ससार के झझटो से छुट्टी लेकर एक मठ मे निवास करती है और इस प्रकार जन्म-भर दूसरो की सेवा करते हुए अन्त मे परलोकगामिनी होती है।

उण्डसेत ने मानवीय भावनाओ—आह्लाद और शोक—का मिश्रण सुन्दर रूप मे किया है। भावो की उच्चता और शब्दो की सरलता एव सामजस्य उनकी विशेषता है। कई आलोचको का कहना है कि उनकी बाद की रचनाए—विशेषत 'हेस्टविकेन के स्वामी'[२] जिसके अन्तर्गत 'कुल्हाडी'[३] 'साप का बिल'[४] 'अरण्य मे'[५] और 'प्रतिशोधक का पुत्र'[६] है—उपर्युक्त रचना की अपेक्षा अधिक प्रौढ और भावापन्न है। किन्तु थोडी-बहुत सूक्ष्म त्रुटियो के होते हुए भी इनके उपन्यासो मे सजीवता और मानवीय समस्याओ

---

१. The Mistress of Husaby
२. The Master of Hestviken
३. The Axe
४. The Snake Pit
५. In the Wilderness
६. The Son at Avenger

का समावेश प्रशसनीय ढग से किया गया है। इनमे मध्यकालीन इतिहास की दन्त-कथाओ का आकर्षक सन्निवेश है और इन्हे क्रमपूर्वक पढकर पाठक लेखिका के कौशल की सराहना किए बिना नही रहेगे।

'हेस्टविकेन के स्वामी' मे ओलेव ऑडेन्सन नामक व्यक्ति नायक है। उसकी स्त्री का नाम है इनगन। इनगन का चरित्र क्रिस्टिन से बिल्कुल भिन्न है—उसके व्यक्तित्व और साहस मे क्रिस्टिन के व्यक्तित्व और साहस से बडा पार्थक्य है। जिस प्रकार लॉवरेंस को भूखण्ड मे प्रेम था वैसे ही ओलेव को समुद्र से प्रेम है। उसकी जीवन-गाथा नार्वे के व्यापारिक महोद्योगो से भरी हुई है। ओलेव के चरित्र को विकसित करने के लिए उसके साथ दूसरा पात्र ईरिक रखा गया है जो इनगन के पहले पति टीट से पैदा हुआ पुत्र है। ओलेव ने टीट को मारकर इनगन को प्राप्त किया था। बहुत दिनो तक ओलेव अपने कुकृत्यो पर झुझलाकर बेचारे दुर्बल और विक्षिप्त युवक ईरिक से घृणा करता रहा, किन्तु धीरे-धीरे समय बीतता गया और वह स्थिति आ गई जब ओलेव को पक्षा-घात (लकवा) की बीमारी हो गई और एकाकी और रुग्णावस्था मे उसके हृदय मे ईरिक के प्रति स्नेह उत्पन्न होने लगा। ईरिक ने ओलेव की सेवा-शुश्रूषा करने के कारण अपनी सौतेली बहन सेसीलिया की भर्त्सना भी की थी। सेसीलिया का चरित्र लेखिका ने उसकी मा इनगन के विपरीत चित्रित किया है। कुमारी अवस्था मे सेसीलिया को उसका बाप 'प्रभात के ओसकण के समान शीतल और शुद्ध तथा सन्मार्ग से विचलित न होनेवाली' समझता था। किन्तु स्त्रीत्व प्राप्त करने और अपने पति जॉरण्ड तथा प्रणयी एस्लाक से आकर्षित होकर उसमे वासना की आग ऐसी धधक उठती है कि वह पिता के प्रति अपने कर्तव्य को भूलने लगती है और प्रेम, घृणा एव कर्तव्य के सघर्ष मे उसका चेहरा परिवर्तित और शोकाकुल हो जाता है। वह न कभी अपने बच्चो को खिलाती और न हसती-बोलती है, उसके नेत्रो का सौन्दर्य जाता रहता है।

उण्डसेत के उपन्यासो मे गार्हस्थ्य जीवन का सुन्दर चित्रण है। गृहस्वामी, स्त्री-बच्चे, नौकर-चाकर सभीका चरित्र-चित्रण सुन्दर एव स्वाभाविक है। सभी परिवार और समाज की भलाई के लिए कार्य करते दिखलाए गए है। ओलेव जब समुद्र-यात्रा करके लन्दन से लौटता है तो वह वहा की अपेक्षा अपने घर के सीधे-सादे जीवन मे अधिक शान्ति का अनुभव करता है। उण्डसेत के उपन्यासो मे दैनिक जीवन का विवरण अधिकता से पाया जाता है - हरे-भरे खेतो और पर्वतावलियो का वर्णन भी उनकी रचनाओ मे प्राय: आता है। उनकी रचनाओ मे घटना-विकास बहुत धीरे-धीरे होता है और उन्हे धीरे-धीरे अधिक समय मे पढने मे ही आनन्द आता है। उनमे आध्यात्मिकता और गिरजाघरो को काफी महत्त्व दिया गया है। उनके पात्रो ने कुकृत्यो के लिए पश्चात्ताप भी खूब किए है। फिर भी लेखिका का यह विचार मालूम होता है कि ससार मे निष्पाप जीवन हो ही नही सकता, क्योकि उन्होने ईरिक के मुह से एक जगह कहलवाया है कि बिना पाप किए कोई मनुष्य जीवन व्यतीत कर ही नही सकता।

नोबल पुरस्कार प्राप्त करनेवाली दोनो लेखिकाओ—सेल्मा लागरलोफ और सीग्रिद उण्डसेत—मे पूरा वैपरीत्य है। १६३० ई० मे जब इन दोनो लेखिकाओ की दो रचनाए—जिनके नाम क्रमश 'लावन्सकोल्ड्स की अगूठी' और 'प्रतिशोधक का पुत्र'—प्रकाशित हुई तो इनकी तुलनात्मक आलोचना विख्यात पत्र-पत्रिकाओ ने की—'प्रतिशोधक का पुत्र' मानवीय भूल, कष्ट-सहन, पारिवारिक प्रेम और क्षमाशीलता की कहानी है तो 'लावन्सकोल्ड्स की अगूठी' प्रमोदमय, उत्कट कल्पनापूर्ण और आशावाद की गाथा है।

ऐतिहासिक उपन्यास लिखने मे सीग्रिद उण्डसेत ने जो सफलता प्राप्त की है, वह केवल कुछ ही लेखको को प्राप्त हो सकी है। उन्होने दिखा दिया है कि बीसवी शताब्दी के लोग सात सदी पहले के लोगो की भावनाओ और समस्याओ को समझने की योग्यता रखते है। उण्डसेत मे यह योग्यता योही नही आ गई—उन्होने पन्द्रह वर्ष तक मध्यकालीन इतिहास का अध्ययन करके तब इस विषय पर लेखनी उठाई थी। वे यथार्थवादी और भावना-प्रवण महिला थी और उन्होने ऐतिहासिक चरित्र-चित्रण और तत्कालीन वातावरण का दिग्दर्शन कराने मे अपनी अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है। अपने इन्ही गुणो के कारण उण्डसेत को बीसवी शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ लेखको मे स्थान मिला है। उनकी उन्नति आकस्मिक रूप मे और यकायक न होकर क्रमवद्ध रूप मे हुई थी, यद्यपि इनकी आरम्भिक रचनाओ मे 'फ्रू मर्था आउलिन' और 'जेनी' मे भी उनकी प्रतिभा झलकती थी। कुमारी लार्सन ने उनकी प्रशसा मे कहा है कि उण्डसेत ने जीवन-युद्ध और उसके परिवर्तनो का सुन्दर अनुभव किया था।

उनकी आधुनिक काल के विषय-प्रसग पर की गई रचनाओ मे 'दि वाइल्ड आर्चिड' को उच्च स्थान प्राप्त है। इसके परिशिष्ट के रूप मे उन्होने 'बर्निग बुश' लिखी जो उनकी नवीनतम पुस्तक है।

सन् १६४६ मे सीग्रिद उण्डसेत ने अपना यह पार्थिव शरीर त्याग दिया।

टॉमस मान

१६२६ ई० का साहित्यिक नोबल पुरस्कार जर्मन लेखक टॉमस मान को मिला था। यह पुरस्कार उन्हे केवल उनके एक उपन्यास पर मिला था जिसका नाम 'बडन ब्रुक्स' है। पुरस्कार-प्राप्ति के बहुत पहले ही यह रचना सामयिक साहित्य मे उच्च स्थान प्राप्त कर चुकी थी। इस प्रकार नोबल पुरस्कार के इतिहास मे चौथी बार यह पारितोषिक जर्मन विद्वान को मिला। टॉमस मान की प्रतिष्ठा जर्मनी के पहले तीन नोबल पुरस्कार-विजेताओ की अपेक्षा स्वदेश और विदेश के साहित्यिको—आलोचको, प्रगतिशील और पुराने लेखको—मे विशेष रूप मे थी। युद्ध के बाद जर्मन भाषा और साहित्य के प्रति यूरोप और अमेरिका के कुछ प्रदेशो ने उपेक्षा-भाव प्रदर्शित किए थे। विश्वविद्यालयो तक मे उसका मान घट चला था, किन्तु सत्रह वर्ष पश्चात् टॉमस मान को उपर्युक्त पुरस्कार मिलने पर पूर्वभावना पुनर्जीवित हो उठी। गेटे, शिलर और हीन की रचनाए पुन पढी जाने लगी। इन्ही दिनो एमिल लडविग नामक प्रसिद्ध जर्मन लेखक ने गेटे की जीवनी नये ढग से लिखी और लिविस आर० ब्राउन ने हीन की। ये पुस्तके विद्यार्थियो और साहित्यिको ने बडे चाव से पढी।

टॉमस मान के पिता हैसियाटिक लीग के कैपिटल के सिनेटर (सभासद) तथा ल्यूवेक नगर के मेयर रह चुके थे। उनकी फौजी सलामी के साथ इज्जत की जाती थी। टॉमस मान का जन्म १८७५ ई० मे हुआ था। उनपर अपने पिता की अपेक्षा माता का अधिक प्रभाव पडा था। उनके भाई हीनरीच के चरित्र पर भी माता का बडा प्रभाव पडा था। उनकी माता का जन्म ब्रेज़िल मे हुआ था और वे एक जर्मन बगीचेवाले की लडकी थी। उनका नाम जूलिया सिल्वा था। उन्होने ल्यूवेक मे ही शिक्षा प्राप्त की थी और इसी स्थान को अपनी मातृभूमि मान लिया था। फिर भी उन्हे अपनी वास्तविक जन्मभूमि नही भूली और वे प्राय. अपने पुत्र (टॉमस) मे ब्रेजिल के दृश्यो का वर्णन प्रशसात्मक शब्दो मे किया करती थी। बिना किसी विशेष प्रयास के व्यापारिक और राजनीतिक नेता का बेटा प्रकाण्ड साहित्यिक बन बैठा।

पाठशाला मे पढते समय टॉमस मान की गणना प्राय मन्द बुद्धि के विद्यार्थियो मे हुआ करती थी। उन्होने सगीत और किम्वदन्तियो के प्रति शुरू मे ही विशेष अनुराग प्रदर्शित किया था। कुत्ते पालने का शौक भी उन्हे था। पुतलियो का खेल भी उन्हे

बहुत प्रिय था। उन्होने अपनी रचनाओ - विशेषतः बडन ब्रुक्स— मे अपनी इन बाल-प्रवृत्तियो और अपने सुन्दर घर का चित्रण अच्छे ढग मे किया है।

जिस समय वे ल्युबेक के स्कूल मे पढ ही रहे थे, तभीसे उन्होने पाठशाला की मासिक पत्रिका के लिए पॉल टॉमस के नाम से लेख लिखकर अपनी उर्वर कल्पना-शक्ति का परिचय दिया था। १८६३ ई० से उन्होने अपने नाम—टॉमस मान—से लिखना आरम्भ किया था। उनकी पहली कविता लिपजिग की 'जेसिलशाफ्ट' नामक पत्रिका मे १८६४ ई० मे छपी थी। उपन्यासकार बन जाने पर भी उन्होने कविता लिखना बिलकुल बन्द कभी नही किया।

बालक टॉमस की अवस्था जब पन्द्रह वर्ष की हुई तभी उनके पिता का देहान्त हो गया। इसके बाद उनकी आर्थिक अवस्था पूर्ववत् सम्पन्न नही रही। जब वे उन्नीस वर्ष के हो गए तो अपनी माता के साथ म्यूनिच चले गए और वही रहने लगे। पारिवारिक परम्परा के अनुसार उनका व्यापारिक क्षेत्र मे पडना आवश्यक था, किन्तु उन्होने उस ओर कभी उत्साह नही प्रदर्शित किया। फिर भी धैर्य के साथ वे दिन मे अपने आग के बीमावाले ऑफिस मे आधे मन से काम करते रहे। रात को या जब कभी समय मिलता वे अध्ययन करने या लिखने मे लग जाते थे। धीरे-धीरे उन्होने शुभ सयोग प्राप्त किया और १८६४ ई० मे पहला उपन्यास 'जेफालेन' नाम से प्रकाशित किया जिसमे इन्हे पर्याप्त लाभ भी हुआ। इसके बाद उन्होने बीमे का काम छोड दिया और वे उत्सुकता-पूर्वक इतिहास, साहित्य और कला के अन्वेषण मे लग गए। इसके पश्चात् वह समय आ गया जिसका स्वप्न टॉमस मान देखा करते थे और जो एक अप्राप्य कल्पना-सी मालूम होती थी—यह स्वप्न था इटली देश का दर्शन। एक वर्ष तक वे इटली मे आनन्द प्राप्त करते हुए अपनी कल्पना-शक्ति को विवर्द्धित करते रहे। इसके बाद उनके अन्दर अपनी माता की तरह मातृभूमि-प्रेम जाग्रत् हुआ और वे उत्तरी यूरोप के आकाश और समुद्र की याद करने लगे। उनकी माता उनके बचपन मे जिन दृश्यो का वर्णन किया करती थी वे उनके लिए बडे ही आकर्षक और सुखप्रद सिद्ध हुए। अपने पारिवारिक इतिहास के अध्ययन के फलस्वरूप ही उन्होने 'बडन ब्रुक्स' लिखा। इसके बाद टॉमस मान ने अपना साहित्यिक भविष्य बना लिया। 'बडन ब्रुक्स' के जर्मन भाषा मे पचास सस्करण दस वर्ष के अन्दर हो गए थे और अब तक सौ सस्करण से भी अधिक हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त इसके अनुवादो के भी अनेक सस्करण हो चुके है। इस पुस्तक का कुछ अश इटली मे लिखा गया था। दक्षिण के सौन्दर्यमय दृश्यो को देखकर टॉमस मान ने इस रचना मे उसका जो समावेश किया है, वह साहित्य की एक स्थायी वस्तु बन गई है। इसमे एक जर्मन परिवार की तीन पीढियो का वर्णन है। इन पीढियो के भावो तथा आर्थिक परिवर्तनो के सघर्ष का वर्णन बहुत ही सफल हुआ है। लगभग सत्तर वर्ष के परिवर्तन का मनोवैज्ञानिक वर्णन टॉमस मान की इस रचना मे है। इसमे वर्णित प्रत्येक पात्र मे ऐसी सजीवता और विशेषता है कि किसी एक को लेकर उसकी आलो-

चना करना व्यर्थ है—सारी की सारी पुस्तक वर्णन-चातुर्य से पूर्ण है। पुस्तक लम्बी और घटना-विकास की न्यूनता से युक्त होते हुए भी वर्णन मे सजीवता और आकर्षण से शून्य नही है—कही भी पाठक को इसमे शिथिलता और अवसाद दिखाई नही देता। 'बडन ब्रुक्स' मे क्रिश्चियन के शब्द स्मरणीय है। वे पाठको के हृदय-पटल पर अङ्कित-से हो जाते है। पुस्तक की दूसरी जिल्द मे विगत पीढी के व्यक्तियो मे बडे दिन का त्यौहार किस प्रकार मनाया जाता था, इसका रोचक वर्णन है। इसमे टॉमस बडन ब्रुक्स की विधवा गर्डा की उस अवस्था का वर्णन पाठको के हृदय मे करुणा उत्पन्न करता है जब वह अपने पति और पुत्र से विहीन होकर अपने वृद्ध पिता के घर लौटती है। गर्डा के चरित्र को इस प्रकार का चित्रित किया गया है जिससे वह जर्मन परिवार के लिए उपयुक्त और अनुकूल नही जान पडती।

टॉमस मान की दूसरी उल्लेखनीय रचना 'कॉनिगलिशे होहीट' है जिसका अग्रेजी अनुवाद 'रायल हाईनेस' के नाम से हुआ है। इसमे जर्मन दरबार के जीवन का सुन्दर चित्रण है। सारी पुस्तक मे सैनिक वातावरण है। इसके मुख्य पात्र क्लाज हीनरीच को प्राय. परम्परागत बातो का विरोध करना पडता है। इनकी साधारण रचनाओ मे 'एक आदमी और उसका कुत्ता'[१] विशेष उल्लेखनीय है। इसका जर्मन से अग्रेजी मे अनुवाद १९३० ई० मे हर्मन जार्ज शेफार ने किया था। यह कुत्ते पर लिखी हुई सर्वश्रेष्ठ कहानी है। कुत्ते का नाम बाशन है जो छोटे बालोवाला सुन्दर और शिकारी श्वान है।

टॉमस मान की नौ कहानियो का सग्रह 'बच्चे और मूर्ख'[२] नाम से प्रकाशित हुआ है जिसका अनुवाद हर्मन जार्ज शेफार ने १९२८ से १९३० ई० तक किया है। इनमे पहली कहानी 'विकृति और सन्ताप'[३] मे पारिवारिक जीवन का सुन्दर चित्रण किया गया है। इसमे पिता और बच्चो के सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध का वर्णन बडा ही आकर्षक है। युद्ध के पूर्व का जर्मनी सघर्ष और कठिनाइयो मे पडकर किस प्रकार परिवर्तित हुआ है, इसका चित्र इस पुस्तक द्वारा पाठको के सम्मुख उपस्थित हो जाता है।

टॉमस मान ने अपनी सर्वोत्कृष्ट पुस्तक—'जादू का पर्वत'[४]—लिखने के पहले जीवन-चरित्र और तत्त्वज्ञान पर निबन्ध लिखे थे। उनके 'गेटे और टॉल्सटॉय' नामक निबन्ध का अनुवाद १९२९ ई० मे एच० टी० लो-पोर्टर ने किया था। उन्होने गेटे, शिलर, टॉल्सटॉय और दास्तोव्स्की का तुलनात्मक अध्ययन करके सुन्दर निबन्ध लिखे थे।

समालोचको ने उनके 'जादू का पर्वत' की तुलना 'पिल्ग्रिम्स प्रोगेस' और रोम्या रोला के 'जीन क्रिस्टोफ' से की है। इसमे नागरिक सभ्यता से दूर पर्वत के अन्तराल मे विभिन्न स्त्री-पुरुषो की अवस्थाओ का वर्णन है। जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध मे इन लोगो के विचारो का प्रभावोत्पादक वर्णन पुस्तक मे मिलता है। हैस कैस्टार्प नामक

---

१. A Man and His Dog २. Children and Fools
३. Disorder and Sorrow ४ The Magic Mountain

व्यक्ति, अपने एक रिश्तेदार से मिलने के लिए आल्प्स (पर्वतमाला) की यात्रा करता है और मानसिक तथा शारीरिक बाधाओ के कारण वही रुक जाता है, और सात दिन, सात सप्ताह, या सात मास नही—सात वर्ष तक नही लौट पाता ।

लेखक ने यात्रा मे आनेवाले दृश्यो का वर्णन जैसी मधुर भाषा मे किया है वह सहृदय पाठको को मुग्ध किए बिना नही रह सकता । हैस कैस्टार्प भाग्य पर भरोसा करके अपने साथियो के स्वार्थो की ओर अधिक ध्यान देने लगता है । एक असावधान युवक से हैस एक महान विचारक बन जाता है । वह विभिन्न व्यक्तियो --वैज्ञानिक, दुरात्मा[1] मानव-स्वभाव के पारखी[2] और इन्द्रिय-परायण[3] की बाते सुनता है और उनके आधुनिक विचारो का सम्मिश्रण और सन्तुलन करता है ।

टॉमस मान प्राय अपने म्यूनिच के घर मे ही रहते थे और उनकी स्त्री अपने सद्गुणो द्वारा उन्हे अधिकाधिक लिखने की प्रेरणा दिया करती थी । कला और साहित्य के साथ ही उनका आधुनिक अर्थशास्त्र-ज्ञान भी बहुत विस्तृत था ।

नोबल पुरस्कार की घोषणा हो जाने पर जिस समय टॉमस मान उसे प्रथा-नुसार लेने के लिए स्टॉकहोम गए, तो उन्होने अपने सलज्ज स्वभाव और देशभक्ति का परिचय दिया । उन्होने अपने भाषण मे सम्राट तथा अन्य उपस्थित सम्भ्रान्त व्यक्तियो को सम्बोधन करते हुए कहा कि वह कोई व्याख्यानदाता नही है । उन्होने यह भी कहा कि उन्हे जो पुरस्कार प्राप्त हुआ है उसे वे अपने देश और देशवासियो के चरणो मे अर्पित करते है ।

टॉमस मान की कुछ और कहानियो का अग्रेजी अनुवाद 'मेरिओ और जादूगर'[4] नाम से हुआ है । यह एक कुबडे और एक जादूगर की अनोखी कहानी है । इसमे मनो-विज्ञान और नाटकीय कला का पर्याप्त सम्मिश्रण है । एक सम्मोहिनी विद्याविशारद[5] मेरिओ पर अपनी विद्या का प्रयोग करके उसे एक घृणित जीव से प्रेम करने के लिए विवश करता है । कहानी दुखान्त है । इसमे व्यग्य का भी विश्लेषण है । इस कहानी का घटनास्थल इटली है । इसमे रोमन अमीरो के चरित्र भी उत्तम रीति से चित्रित किए गए है ।

टॉमस मान ने कहानी के बहाने युद्ध के पूर्व पाश्चात्य सस्कृति की दुरवस्था और पाश्चात्यो के मस्तिष्क और आत्मा की बीमारी का मार्मिक ढग से वर्णन किया है ।

टॉमस मान की प्रसिद्ध रचना 'रिफ्लेक्शन्स' प्रकाशित हुई जिसकी प्रशसा भाषा, शैली और विचारो की गुढ़ता के कारण सर्वत्र हुई ।

टॉमस मान की रचनाओ मे जान वेक और रिचार्ड वाग्नर का उल्लेख विशेष रूप मे मिलता है । इनकी गद्य-शैली सम्पूर्ण जर्मन साहित्य मे अद्वितीय मानी जाती है ।

---

१. Cynic
२. Humanist
३. Sensualist
४. Mario and the Magician
५. Hypnotist

टॉमस मान की रचनाओ मे 'बडन ब्रुक्स', 'दि मैजिक माउण्टेन' (जादू का पहाड) और 'डॉक्टर फास्टस' नामक तीन उपन्यास बहुत प्रसिद्ध है। इनकी रचनाओ पर बाइबल का विशेष प्रभाव है। वर्तमान युग के लिए पुराने साहित्य और विचार को उपयोगी ढग मे उपस्थित करना टॉमस मान की विशेषता हे जो बहुत कम लेखको मे पाई जाती है। उन्होने मानवीय भावनाओ को ऊपर उठाने के लिए श्रेष्ठ प्रतीक पेश किए है और इस प्रकार अपने साहित्य को शानदार ही नहीं, यशस्वी और उपयोगी भी बनाया हे। पाश्चात्य सस्कृति को जिस लाक्षणिक रूप मे उन्होने प्रदर्शित किया वेसा कोई भी एक लेखक नही कर सका। नोवल पुरस्कारदात्री समिति ने उनके इन्ही विचारो और गुणो को दृष्टि मे रखते हुए उन्हे परिष्कृत किया।

टॉमस मान ने पहले यूरोपीय महासमर के कारणो पर विचार प्रकट करते हुए जर्मनी को ही पाश्चात्य या यूरोपीय सस्कृति के रहस्य का अधिष्ठाता माना है। उन्होने यत्रवाद और हिसा की निन्दा की है और सच्चे मानवतावाद का समर्थन किया है। वर्तमान सभ्यता और उसके विकास को उन्होने कृत्रिम माना है। उन्होने कठोरतम कसौटी और कटुता के सामने अपने देशवासियो के विचारो का विरोध कर नीत्शे की परम्परा का समर्थन किया और उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की है।

देश से दूर रहने पर भी उन्होने अपने देश के महान विचारको की परम्परा की प्रशसा से मुख नही मोडा। सघर्ष का सामना करके भी उन्होने यूरोपीय सस्कृति के सद्-गुणो का सतत गान किया और अपने इस प्रयत्न मे निरन्तर लगे रहे।

प्रथम महायुद्ध मे जब जर्मनी सारे ससार को नष्ट करने पर तुला दीखता था, टॉमस मान ने उसके उग्र रुख की—हिसात्मक विचार और युद्ध की—निन्दा की और ब्रिटेन, फ्रास, इटली और जारशाही रूस के साथ-साथ बिस्मार्क के जर्मनी की भी खूब खबर ले डाली। उन्नीसवी सदी के आरम्भ से ही जर्मनी मे यह विचार फैलता जा रहा था कि प्रत्येक आदर्श की सृष्टि जर्मन क्षितिज पर होती है और भगवान ने उसी-पर ससार के उद्धार का भार डाला है। इस विचार ने जर्मनी को एक अद्भुत दर्प से मढ दिया और वह सभीको तुच्छ समझने लगा। कैसर मानो इस नये वाद का युगावतार बनकर आया और उसने प्रथय महायुद्ध को अस्तित्व मे लाने का काम द्रुत वेग से किया।

टॉमस मान पहले तो जर्मन विजय मे विश्वास रखते थे और उसे औचित्य की परिसीमा मानते रहे, पर बाद मे चलकर उन्होने अन्य तथ्यो का पर्यवेक्षण किया, और १९१८ मे जब जर्मनी परास्त होकर धराशायी हो गया तो टॉमस मान के विचारो को बल मिला। उन दिनो वे 'बडन ब्रुक्स' लिख रहे थे जिसमे जर्मन और यूरोपियन भावना के परिपूर्ण उद्गार सन्निविष्ट है। उन्होने इस उपन्यास मे अपने देशवासियो की भर्त्सना अच्छी तरह की है और उनके औद्योगिक जडवाद की निन्दा घोर रूप मे कर डाली है। उन्होने इस जडवाद मे निहित मिथ्या आडम्बर को विनाशक दुर्गुण बताया है।

इसीलिए उन्हे बिस्मार्क के जर्मनी के पराजय पर आश्चर्य नही हुआ। जर्मनी की इस हार के बाद तो उन्हे और भी इस प्रकार के विचार प्रकट करने का प्रोत्साहन मिला। लेनिन और पोयकारे के बुद्धिवाद के बीच खडा होने का सुअवसर मिल गया। यही नही, उन्होने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए जैसे उन्हे जर्मनी के इस पराभव का पूर्वज्ञान था।

टॉमस मान ने 'जादू का पहाड' (मैजिक माउण्टेन) लिखकर जर्मन गणतंत्र को समुचित स्थल पर स्थापित करने का प्रयत्न किया, यद्यपि इस पुस्तक मे कृत्रिमता की भरमार है। उन्होने पाश्चात्य सस्कृति की जो व्याख्या की है वह रूसी साम्यवाद का विरोधाभास है। इस पुस्तक मे शरीर को राष्ट्र का एक प्रतीक मानकर विवेक द्वारा उसके रोगो के शमन का उपाय सोचा गया है। १९१८ ई० मे पहला विश्वयुद्ध समाप्त होने पर जर्मनी के नवविधान का पर्यवेक्षण मान ने जिस रूप मे किया था, उसके आधार पर ही उन्होने राष्ट्र के भविष्य की कल्पना की और नीत्शे के सिद्धान्त पर आकर सर्वोत्तम के चुनाव मे नये नमूने को प्रश्रय दिया। हरमन और कैसरलिग भी टॉमस मान के समकालीन थे और वे भी इसी विचार-शैली से प्रभावित हुए।

जर्मनी का आर्थिक ढाचा १९२० से १९२४ तक बहुत बिगड गया और शासक-वर्ग पुरानी गलतिया दुहराने से तब भी बाज़ नही आया। टॉमस मान ने देखा कि जर्मनी तो पाश्चात्य जगत् की अपूर्णताओ और साम्यवाद के खतरे के बीच भूल रहा है।

टॉमस मान पहले लेखक थे जिन्होने व्यक्ति को राष्ट्र का हथियार-मात्र मानने से इन्कार किया और उसे सैन्यवाद के हाथो की कठपुतली बनने का विरोध किया। उनका कहना था कि इस प्रकार का गणतन्त्र तो हमारी सभ्यता और सस्कृति के विनाश का कारण होगा। राजनीतिक परिपक्वता गणतन्त्रीय दीवालियेपन के द्वारा नही प्राप्त हो सकती, इसका अनुभव जर्मन लेखको ने नही किया था, जिससे जर्मनी का समूचा इतिहास ही इस विचार से वचित रह गया और वहा १९३० से १९३३ तक गणतन्त्र के नाम पर सैनिक तानाशाही और गुप्त शस्त्रास्त्र की तैयारिया जारी रही।

मार्शल हिंडेनबर्ग के अधिकारारूढ होने पर हिटलर का दल आगे बढता गया। मान ने इस बर्बरता के द्वारा जर्मनी के सामाजिक और आर्थिक सकट का दृश्य जैसे पहले ही से देख लिया। उन्होने बिना हिचक और पूरी दृढता से इसका विरोध किया और कहा कि इससे तो राष्ट्र की बेकारी और बर्बादी बेहद बढ जाएगी।

१९३० ई० मे जब चुनाव मे नाज़ियो की विजय हो गई तो उन्होने इस घटना को 'गुप्त पडी हुई और उपेक्षित शक्तियो का विभ्राट' बताया। मान ने युद्ध के बाद भी जर्मनी का नाम शेष रहने देने के लिए मित्र-शक्तियो ब्रिटेन, फ्रास और अमेरिका—की सराहना की। जर्मनी के पराभव का भविष्य पहले से निर्भीक भाव से कह देने के कारण मान को अपने सर्वस्व से हाथ धोना पडा था और उन्हे हिटलर के रोप का शिकार बनना पडा था। इसीलिए उन्हे जर्मनी से भागकर सयुक्त राष्ट्र अमेरिका

जाना पडा था। वहा से वह रेडियो पर अपने देशवासियो को सम्बोधन कर उनके कर्तव्य का ज्ञान कराते रहे, और उन्हे शैतानी, वर्बरता का भक्ष्य बनने से बचने का प्रयत्न करते रहने का आदेश करते रहे। मान ने हिटलर के इस दावे का विरोध किया कि जर्मनी पर यूरोप और ससार के उद्धार का भार है और उसे इमे पूरा करने का प्रयत्न करना ही चाहिए। मान चाहते थे कि जर्मनी से हिटलरवाद तो समाप्त हो जाए, पर वह राष्ट्र के रूप मे जीवित, सजग और प्रवल बना रहे।

युद्ध के दिनो से ही मान ने जो विचार व्यक्त किए और युद्धोत्तरकाल मे उनके इन विचारो का ससार को जो परिचय मिला, उसके परिणामस्वरूप उन्होने 'डाक्टर फास्टस' लिखा जिससे उनकी ख्याति और बढी। इस उपन्यास मे उन्होने जर्मनी का वौद्धिक इतिहास ही कूट-कूटकर भर दिया। उनकी लेखन-शक्ति पुरानी होने पर भी उसमे सस्कृति और सगीत को विशेष रूप मे मुखरित किया गया है। १९४३ ई० से वे इस प्रकार की विशिष्ट और अर्द्धराजनीतिक रचनाओ मे लग गए। 'वडन ब्रुक्स', 'दि मैजिक माउण्टेन' (जादू का पहाड), 'जोजेफ और उसके भाई' आदि उपन्यास कथा-प्रधान है। इसके वाद मान फ्रेंकफर्ट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० अडर्नो के साथ सगीत के उस पूर्ण तत्त्वज्ञान के समर्थन मे लग गए, जिसके लिए शोपेनहावर, वाग्नर और नीत्शे इतना अधिक लिख गए थे।

१९४५ के वाद जर्मन लोकमत टॉमस मान के विरुद्ध हो गया जिसका मुख्य कारण राजनीतिक था। लोगो ने 'डॉ० फास्टस' की वस्तुकथा और वर्णन का मनमाना अर्थ लगाना शुरू कर दिया। किन्तु फ्रास मे उनका और उनकी रचनाओ का पूरा स्वागत-सत्कार हुआ। फिर तो हैम्बर्ग के वुद्धिवादियो ने भी उनकी रचनाओ की कद्र की। उनकी ताजातर रचना 'फेलिक्स कुल' का वहा और भी सम्मान हुआ। १९५५ मे उन्होने स्ततगार्त मे अपने विचार पूरी स्पष्टता से व्यक्त किए। उन्होने जर्मनो की आध्यात्मिक एकता पर वहुत जोर दिया।

१९५५ मे टॉमस मान का देहान्त होने पर उनके शव को स्विस भूमि मे दफनाया गया। लेखक ने 'डाक्टर फास्टस' मे जो विचार व्यक्त किए है, उनकी व्याख्या अव जर्मनी तथा अन्य देशो का राजनीतिपरक विद्वत्समाज अनेक ढग से कर रहा है।

सिंक्लेयर लेविस

अमेरिकन साहित्य के तीन समय-विभाग किए जा सकते है—पहला वह जो औपनिवेशिक है और विद्रोह से सम्बन्ध रखता है, किन्तु जो बहुत अल्प परिमाण मे प्राप्य है, दूसरा वह जिसे साहित्यिक मध्यकाल का ठोस साहित्य कह सकते है और तीसरा समय-विभाग उसे कहा जा सकता है जो उन्नीसवी सदी के अन्तिम तथा बीसवी शताब्दी के आरम्भिक दस वर्षो मे लिखा गया है। इस अन्तिम अवधि मे अधिकाधिक लेखको का प्रादुर्भाव हुआ है। यह बात नही है कि इस अन्तिम काल मे केवल लेखको की सख्या ही बढो हो, प्रत्युत अभूतपूर्व लेखको और समालोचको ने इसे पूर्व की अपेक्षा अधिक प्रख्यात बना दिया है। इस अन्तिम श्रेणी के लेखको मे सिक्लेयर लेविस का एक खास दर्जा है। तीस वर्ष से नोबल पुरस्कार का प्रचलन होते हुए भी अमेरिका के इस विख्यात लेखक को १६३० ई० मे पुरस्कार इसलिए प्रदान किया गया कि इस अद्वितीय लेखक की ओर समस्त ससार—विशेषत पश्चिमी यूरोप—का ध्यान पूर्णत आकर्षित हो गया था, और इनकी रचनाओ के अनुवाद भी अनेक भाषाओ मे हो चुके थे।

सिक्लेयर लेविक का जन्म सॉक सेण्टर (मिनेसोटा) मे ७ फरवरी, १८८५ ई० मे हुआ था। सॉक सेण्टर अमेरिका के मिडिल वेस्ट प्रदेशान्तर्गत एक गाव है जिसकी जनसख्या ढाई हजार से अधिक नही है। लेखक की 'मुख्य मार्ग'[1] नामक पुस्तक मे इस गाव का वर्णन सुन्दर रीति से हुआ है। सिक्लेयर लेविस विशुद्ध अमेरिकन वश के है। उनके पूर्वज कृषि, व्यापार और चिकित्सा आदि विभिन्न कार्य करते थे। उनके पिता भी उनके नाना की भाति देहाती चिकित्सा का कार्य करते थे। उनके चाचा और भाई भी चिकित्सा का ही पेशा करते थे। बचपन मे वे अपने पिता के साथ देहात मे घूमा करते थे और चिकित्सा-कार्य मे उनके सहायक बनकर औजार आदि ले जाने का कार्य करते थे।

स्कूल मे उन्होने लावेल और लागफैलो की रचनाओ को पढाए जाने का विरोध किया। साथ ही उन्होने फ्रेंच और बाइबल के जोना और ह्वेल जैसे 'सत्य' के पढाए जाने का भी कम विरोध नही किया। उन्होने अन्य विद्यार्थियो की तरह आख मूदकर वही पढने के बदले मिनेसोटा विश्वविद्यालय मे भर्ती होने का निश्चय कर लिया और

१. Main Street

कुछ लोगों का विरोध करने पर भी दाखिल हो गए।

बाद मे पिता की आज्ञा लेकर सिक्लेयर 'एल' चले गए, जहा वे एक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन करने लगे। वे सर्वत्र अपने सहपाठियो और साथियो मे पृथक् व्यक्ति मालूम होते थे। प्राय सभी विषयो मे उनका सबसे मतभेद रहता था और उनमे समालोचना की विशेष प्रवृत्ति देखी जाती थी। ग्रेजुएट होने के पश्चात् सिक्लेयर लेविस ने अपने मित्रो और सहपाठियों से कहा था कि उनकी इच्छा अमेरिकन जीवन का परिचायक एक सुन्दर उपन्यास लिखने की है। ग्रेजुएट होने के पूर्व ही उन्होने इसके लिए ज्ञान-सम्पादन आरम्भ कर दिया था। उन्होने उपटन सिक्लेयर द्वारा सचालित हेलिकन (न्यू जर्सी) स्थित समाजसत्तावादी उपनिवेश मे भाग लिया। सचालको ने उसे 'स्वर्ग' का नाम दे रखा था। किन्तु सिक्लेयर को इस सस्था से सतोष और आशातीत अनुभव नही प्राप्त हुआ और वे इसे छोडकर अपने एक साहित्यिक मित्र के साथ मैनहैटन मे रहने लगे। उन्होंने 'लाइफ' और 'पक' नामक पत्रिकाओ के लिए हास्यात्मक लेख लिखे जो गद्य और पद्य दोनो ही मे थे। कुछ समय तक वे 'ट्रास एटलाण्टिक टेल' नामक पत्रिका के सहकारी सम्पादक रहे। इसके पश्चात् उन्होने जहाज द्वारा पनामा की यात्रा करने का निश्चय किया। इसके पूर्व उन्होने जानवरो को ले जानेवाले जहाजो पर कॉलेज की छुट्टियों के दिनो मे इग्लैण्ड की यात्रा की थी। उन्होने पनामा नहर पर कोई नौकरी प्राप्त करने की चेष्टा की थी, किन्तु काम न मिलने पर 'एल' वापिस आ गए। १६०८ ई० मे वे ग्रेजुएट हो गए थे।

सिक्लेयर लेविस की अभिलाषा उच्चकोटि का लेखक बनने की थी। उन्होने वाटरलू, आइवा, सेन फ्रासिस्को और वाशिगटन मे अनेक स्थानो पर सम्पादन-कार्य किया, पर अधिक समय के लिए वे कही भी नही ठहरे। कैलीफोर्निया मे वे छः मास तक विलियम रोज वेनेट के साथ रहे और उनके साथ लेखन-कार्य करते रहे, किन्तु दर्जनो कहानियो मे से वे केवल अपनी 'जज' नामक आख्यायिका का स्वत्वाधिकार बेच सके और फिर न्यूयार्क लौटकर वहा अपनी साहित्यिक सफलता के लिए चेष्टा करने लगे।

सबसे अधिक समय के लिए सिक्लेयर लेविस फ्रडरिक ए० स्टोक्स कम्पनी (न्यूयार्क) के सम्पादकीय विभाग मे ठहरे। यहा वे कुल दो वर्ष रहे। आरम्भ मे उन्हे साढे बारह डॉलर प्रति सप्ताह वेतन मिलता रहा। १६१२ ई० तक वहा रहकर उन्होने सबसे विशेष उल्लेखनीय सफलता यह प्राप्त की कि उनकी 'हाइक और वायुयान'[1] पुस्तक प्रकाशित हुई। इसके लिए आर्थर हचिन्स ने दोरगे चित्र भी बनाए थे और उसका समर्पण लेखक ने अपने सबसे पुराने मित्र एडविन और इसाबेल लुई को किया था। उसमे एक सोलह वर्षीय बालक हाइक ग्रिफिन की मनोरजक कहानी सरल और स्पष्ट भाषा मे लिखी गई है। इसमे बचपन और युवावस्था के

---

१ Hike and the Aeroplane

अनुभवो का सुन्दर चित्रण है। इस कथानक का घटनास्थल कैलीफार्निया है। हाइक एक प्रसिद्ध फुटबाल-खिलाडी लडका है। उसके साथी का नाम टॉरिंगटन डर्वी था जिसका स्कूली नाम 'पूडिल' या 'पूड' भी था। ये दोनो खिलाडी लडके वायुयान के अर्द्धविक्षिप्त आविष्कर्ता मार्टिन प्रीस्ट को उसके अधूरे हवाई जहाज को लेकर आश्चर्य मे डाल देते है। ये दोनो उदीयमान बालक लेफ्टिनेण्ट एडलर और हवाई बेडे के बोर्ड को आश्चर्यचकित कर देते है। इन दोनो लडको ने वायुयान के उडाने मे आविष्कर्ता को जो सहायता दी और डेढ सौ मील प्रति घण्टा उडने का जो महोद्योग किया वह वास्तव मे प्रशसनीय है। इस पुस्तक मे यह भी दिखाया गया है कि हाइक जैसे एक पराक्रमी बालक के उद्योग से विद्रोही लोगो के आक्रमण से वार्सटन के रैंचो (Rancho) की रक्षा किस प्रकार की जा सकी। हाइक हवाई जहाज उडाकर उससे पहरा देने का काम करता है।

इस पुस्तक के पश्चात् सिक्लेयर लेविस ने 'एडवाचर' नामक पत्रिका का सम्पादन आरम्भ किया और फिर वे जार्ज एच० डोरान कम्पनी के विज्ञापन-मैनेजर और एक पत्र-प्रकाशन-सस्था मे सम्पादन का कार्य करते रहे। इन दिनो उन्हे आठ घण्टे से भी अधिक काम करना पडता था। इतना काम करते हुए भी वे रात को या बचे हुए समय मे 'हमारे श्री० रेन'[1] नामक उपन्यास लिखते रहे, जो १९१४ ई० मे हार्पर एण्ड ब्रदर्स ने प्रकाशित किया। परिपक्वावस्था के पाठको के लिए यह उनका प्रथम उपन्यास था। लेखक के, जानवरो को ले जानेवाले जहाज मे, इगलैण्ड जाने का अधिकाश अनुभव इस पुस्तक मे आ गया है। इसमे न्यूयार्क के एक मुहर्रिर और उसके परिवर्तित भाग्य का दिग्दर्शन कराया गया है। इस पुस्तक के लिखे जाने के बाद सिक्लेयर लेविस ने अपना विवाह ग्रेस लिविंग्स्टन हेगर से कर लिया। 'हमारे श्री० रेन' की साधारण सफलता से उत्साहित होकर उन्होने दूसरे वर्ष (१९१५ ई० मे) 'दि ट्रेल आफ दि हॉक' नामक उपन्यास लिख डाला। इसका कथानक भी उसी ढग का है जैसा बच्चो के लिए लिखी गई 'हाइक और वायुयान' का है। इसके पश्चात् उन्होने 'नौकरी'[2] नामक उपन्यास लिखा जिसमे न्यूयार्क की स्त्रियो के व्यापारिक जीवन का सफल चित्रण है।

सिक्लेयर लेविस के जीवन का महत्त्वपूर्ण समय १९१५ ई० का ग्रीष्म-काल है जब वे पत्रकार और पुस्तक-सम्पादक से एक स्वतन्त्र लेखक बन गए। छुट्टी के दिनो मे जब वे अपनी स्त्री के साथ केप कोड का पैदल भ्रमण कर रहे थे, उन्हीं दिनो एक सक्षिप्त कहानी लिखकर उन्होने उसे 'सैटर्डे ईवनिग पोस्ट' को, जो अमेरिका का सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक समझा जाता है, भेजने का निश्चय किया। उन्हे आश्चर्य हुआ, क्योकि पहले की भाति उपर्युक्त पत्र ने छापने से इन्कार न करके उसे छाप दिया। यही नही, जॉर्ज होरेस लॉरीमर ने उनसे और भी ऐसी कहानिया लिखने का अनुरोध

१. Our Mr Wrenn   २. The Job

किया। इसपर सिक्लेयर लेविस ने तीन और कहानियां लिख भेजी जो तीन मास के अन्दर स्वीकृत हो गई। इसपर उन्होंने पत्रो और पुस्तक-प्रकाशको के दफ्तरो मे काम करना बिलकुल बन्द कर दिया। उपर्युक्त पत्र मे ही उन्होने धारावाहिक रूप मे 'स्वतंत्र वायु'[1] नामक उपन्यास लिखना आरम्भ किया जिसमे महोद्योग की बाते प्रचुर मात्रा मे भरी हुई हैं। इसमे व्यग्य और श्लेष का भी अभाव नही है। इस कहानी का नायक गैरेज (मोटर किराये पर रखने का घर) किराये पर चलाता है। इसमे लेखक ने अपने उस जीवन के अनुभव का चित्रण किया है जब वे नौकरी के उम्मीदवार होकर इधर-उधर मारे-मारे फिरते थे।

जिन दिनो सिक्लेयर लेविस अपनी स्त्री के साथ भ्रमण कर रहे थे, उन्ही दिनो उनके मन मे उपन्यासकार बनने की प्रबल अभिलाषा जाग्रत् हो रही थी। जाडे के दिन उन्होने वाशिंगटन मे काटे। यही ठहरकर उन्होने 'मुख्य मार्ग' नामक उपन्यास के प्रधान अश लिख डाले थे। अब से पन्द्रह वर्ष पूर्व कॉलेज की छुट्टियो मे ही उन्होने इस उपन्यास का कथानक सोच लिया था। इसका मुख्य पात्र उन्होने एक वकील को चुना था जिसका नाम गुई पोलक था। इस उपन्यास का दूसरा नाम उन्होने 'दि विलेज वीरस' भी चुना था। इस कथानक का मसविदा उन्होने तीन बार लिखा और बराबर इसके सम्बन्ध मे सोचते रहे। इसके सम्बन्ध मे निरन्तर यही निश्चय करते रहे कि उन्हे यह उपन्यास अवश्य लिखना है। उन्होने यद्यपि इस पुस्तक की अधिक बिक्री की आशा नही की थी, किन्तु फिर भी इसे वे अपनी उन्नति का सोपान समझते थे। एक वर्ष तक उन्होने इसके लिखने और विकसित करने मे पूर्ण परिश्रम किया। १९२० ई० के अक्टूबर मास मे यह उपन्यास प्रकाशित हो गया। 'मुख्य मार्ग' का नायक आकर्षण और उत्सुकता का केन्द्र बन गया। दो ही मास मे इसकी ५६,००० प्रतियां बिक गई—दो वर्ष मे इसकी ३,९०,००० प्रतियां बिकी और जर्मन, डच, स्वीडिश और फ्रेंच भाषाओ मे इसके अनुवाद भी प्रकाशित हो गए।

'मुख्य मार्ग' सिक्लेयर लेविस का प्रथम महत्त्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। इसमे उन्होने अपनी लेखन-शैली को विकसित किया है और वातावरण उपस्थित करने के लिए आवश्यक वर्णन विस्तारपूर्वक किया है। फिर भी चूकि पुस्तक मे समय-समय पर अनेक परिवर्तन और परिवर्द्धन किए गए हैं और यह एक बडे अर्से के बाद तैयार हो पाई है, इसलिए इसके ढाचे मे त्रुटियां रह गई हैं। प्रसिद्ध समालोचक डॉक्टर हेनरी सीडेल कैनबी का कहना है कि पुस्तक के ढाचे मे अनेक स्थल कमजोर हैं और इसकी प्रधान नायिका के चरित्र मे भी ऐसी ही त्रुटियां पाई जाती हैं फिर भी अमेरिकन कस्बे का वातावरण जिस उत्तमता के साथ इसमे उपस्थित किया गया है वह पाठको को अपनी ओर आकर्षित करने की विशेष क्षमता रखता है।

इसके पश्चात् सिक्लेयर ने देश के बाहर जाकर 'बैबिट'[2] लिखा। साधारणतः

---

१. Free Air   २. Babbitt

साहित्यिको का इसके प्रकाशन-काल से अब तक यही मत रहा है कि 'बैबिट' ही लेखक की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसका कथानक 'मुख्य मार्ग' के कथानक से अधिक ठोस और दृढ है तथा इसके सम्वाद और चरित्र-चित्रण मे भी पहले की अपेक्षा अधिक प्रगतिशीलता पाई जाती है। इस उपन्यास द्वारा लेखक ने पाठको की क्षमता की भी परीक्षा ले डाली है, क्योकि इसमे वर्णित व्यग्य और हास-परिहास सबकी समझ मे नही आ सकते। इस पुस्तक के प्रकाशित होते ही सिक्लेयर लेविस का नाम देश-विदेश मे सर्वत्र फैल गया। इग्लैण्ड के साहित्यिको ने इनको डिकेस, थैकरे और वालजक के जोड का लेखक माना। कुछ समालोचको ने 'वैबिट' को 'अत्यधिक अमेरिकन' कहकर उसके चरित्र-चित्रण मे अत्यधिक आचलिकता होने का दोपारोपण भी किया, और यह कुछ अशो मे ठीक भी है, क्योकि अमेरिकन रीति-रिवाज और स्थिति से नितान्त अनभिज्ञ पाठक, लेखक के अति विस्तृत स्थानीय वर्णन से अवश्य उकता जाएगे—किन्तु इससे पुस्तक के महत्त्व मे कमी नही आती—हा, यह अवश्य कहा जा सकता है कि यदि पुस्तक मे स्थानीय वर्णन इतना अधिक न होता तो शायद अन्य देशो मे इसका और भी अधिक व्यापक रूप मे प्रचार होता।

'बैबिट' के बाद सिक्लेयर ने 'ऐरोस्मिथ' की रचना की। 'बैबिट' मे जहा लेखक ने उसके मुख्य पात्र मि० बैबिट के साथ समय-समय पर सहानुभूति दिखाई है, वहा 'ऐरोस्मिथ' मे मार्टिन ऐरोस्मिथ के प्रति वे निश्चित रुख नही रख सके है। इसी प्रकार सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के सामाजिक जीवन और चिकित्सको के पेशे के प्रति भी निर्धारित मत नही प्रदर्शित कर सके है। इसमे १९२० ई० के सयुक्त राष्ट्र अमेरिका का सजीव चित्रण पाया जाता है।

विदेशो का भ्रमण करके तथा सयुक्त राष्ट्र की छब्बीसो मुख्य रियासतो मे भ्रमण करने के पश्चात् सिक्लेयर लेविस ने किसी छोटे नगर मे बस जाने का निश्चय किया। उन्होने हार्टफोर्ट मे देहात से मिलता हुआ एक मकान ले लिया और वहा परिचय बढाने लगे—विशेषत मजदूरो से उन्होने बडी घनिष्ठता बढानी शुरू कर दी। दूसरा उपन्यास लिखने की इच्छा उन्हे थी, किन्तु एक विशेष प्रेरणात्मक घटना तक वे रुके रहे। एक दिन न्यूयार्क जाते हुए अपना उपन्यास लिखने का उपकरण उन्हे मिल गया—वह एक ऐसे आदमी से मिले जिसके ढग का प्रधान नायक वे अपने नये उपन्यास मे रखना चाहते थे। उनके इस प्रधान का नाम डॉक्टर पॉल-डि-क्रूफ था। महायुद्ध के दिनो मे इस डॉक्टर ने अमेरिकन सेना मे डॉक्टर का काम किया था। इसने गैस (विषाक्त वायु) सम्बन्धी कुछ खास आविष्कार किए थे और बाद मे रॉकफेलर इन्स्टीट्यूट मे भी कई आविष्कार करने मे सफलता प्राप्त की थी। लेखक ने जिस व्यक्तित्व की कल्पना अपने मन मे की थी उसकी पूर्ति डॉक्टर क्रूफ द्वारा होती थी। इसीलिए उपर्युक्त डॉक्टर की सहायता मे लेखक ने महामारी की चिकित्सा का वर्णन अत्यन्त सफलता के साथ किया है। इसके विभिन्न अश क्रमश लन्दन और फाण्टेन-ब्ली मे

लिखे गए थे। इसके लिखने मे लेखक ने दिन-रात परिश्रम किया। इसकी आवृत्ति लेखक ने तीन बार की। अन्त मे मार्ग मे जहाज पर ही वह समाप्त हुई और १९२५ ई० मे जाडे के दिनो मे वे अमेरिका वापस आ गए। 'ऐरोस्मिथ' मे चरित्र-चित्रण सुन्दर हुआ है। इसमे आधुनिक धूर्तता का श्लेषात्मक वर्णन किया गया है और वैज्ञानिक अन्वेषण के मार्ग मे आनेवाली कठिनाइयो पर आक्रमण किया गया है। चरित्त-नायक की सबसे बडी अभिलाषा वैज्ञानिक उन्नति की ओर है। इन सब गुणो के होते हुए भी इस उपन्यास मे नाटकीय गुणो की प्रौढता का अभाव है। इस उपन्यास मे शैल्पिक उपयोग मे आनेवाले वैज्ञानिक अन्वेषणो का जो विरोध किया गया है बहुत-से वैज्ञानिकतापूर्ण मस्तिष्क रखनेवाले पाठक उसे पसन्द नही करते। अन्तिम दृश्य मे 'ऐरोस्मिथ' के वर्षो के अन्वेषण का बाह्य दुखान्त प्रदर्शित किया गया है।

'ऐलमर जेण्ट्री' नामक इनका बाद का उपन्यास समाज के लिए एक फोडे के चीरने के सदृश है और वह भी कोमल अग के फोडे के समान। पुस्तक क्या है, समाज पर भीषण प्रहार है। इस पुस्तक के लिखने के पश्चात् सिक्लेयर की 'डाड्स्वर्थ' नामक रचना प्रकाशित हुई। इसमे सैम डाड्स्वर्थ का चरित्र चित्रित किया गया है। डाड्स्वर्थ का चरित्र वैबिट से अधिक परिष्कृत चित्रित किया गया है। वह पचास वर्ष की अवस्था मे मोटर के व्यापार मे धन कमाकर अवकाश ग्रहण करके यूरोप की प्राचीन सस्कृति का आनन्द लेने का निश्चय करता है। उसके साथ उसकी स्त्री फ्रान भी होती है। उसकी स्त्री उसकी अपेक्षा दस वर्ष कम अवस्था की और पुश्चली युवती है—साथ ही वह कुछ मन्द-बुद्धि और स्वार्थ-परायणा भी है। दोनो पति-पत्नी मे प्राय वाग्युद्ध हुआ करता है। उनके वार्तालाप से उनकी शिक्षा और परिष्कृति का पता चलता है। यूरोप के नगरो और वहा के समाज पर भी सिक्लेयर ने व्यग्य किया है। कई समालोचको ने इस उपन्यास की तुलना १९३१ ई० मे प्रकाशित स्ट्रदर्स वर्ट के 'त्योहार'[१] नामक उपन्यास से, जिसमे अमेरिकन व्यापारी का चरित्र-चित्रण बडी सफलतापूर्वक किया गया है, की है। सिक्लेयर की अन्य कहानियो मे 'मैण्ट्रप' और 'कूलिज को जाननेवाला मनुष्य'[२] अधिक प्रसिद्ध है। ऊपर जिन चार प्रसिद्ध उपन्यासो का वर्णन किया गया है वे एक प्रकार से सामाजिक इतिहास कहे जा सकते है। इनमे सामाजिक विषयो का विश्लेषण सुन्दर रीति से किया गया है। अमेरिका की भौतिक पदार्थो की उपासना को इनमे व्यग्यात्मक ढग से चित्रित किया गया है। इन सबमे 'मुख्य मार्ग' की प्रशसा 'वैबिट' से कुछ ही घटकर हुई है। फिर भी सिक्लेयर लेविस को समझने के लिए उनकी सभी रचनाओ को पढने की आवश्यकता है।

सिक्लेयर लेविस की मृत्यु १९५१ ई० मे हुई।

---

१. Festival २. The Man Who Knew Coolidge

एरिक एक्सेल कार्लफेल्ट

१६३१ ई० का नोबल पुरस्कार प्रसिद्ध स्वीडिश कवि और गायक डॉक्टर कार्लफेल्ट को मिला। अब तक स्वीडिश एकैडमी ने जितने व्यक्तियो को पुरस्कार प्रदान किए थे, वे सभी जीवित थे और उन्होने अपने जीवन-काल मे ही पुरस्कार प्राप्त किया था, किन्तु डॉक्टर कार्लफेल्ट के देहान्त के पश्चात् उनके पुरस्कार की घोषणा हुई। यद्यपि १६२० ई० से ही उन्हे अनेक बार यह पुरस्कार प्रदान करने का प्रस्ताव किया गया, किन्तु उन्होने इसे लेने ने साफ इन्कार कर दिया। इसका कारण यह था कि डॉक्टर कार्लफेस्ट स्वीडिश एकैडमी (पुरस्कार-दात्री-समिति) के सदस्य और मन्त्री रह चुके थे। ऐसी अवस्था मे उन्होने यह आदर ग्रहण करने से बराबर इन्कार ही किया। उनका शरीरान्त होते ही १६३१ ई० मे समिति ने उन्हे पुरस्कार दिए जाने की घोषणा कर दी और पुरस्कार की रकम उनके तीनो बच्चो के नाम कर दी। इसपर साहित्यिक ससार ने एकैडमी के इस कार्य पर कुछ आपत्ति भी की और अल्फ्रेड नोबल के उद्देश्यानुकूल पुरस्कार दिया गया या नही, इसे विवाद का विषय बना लिया गया और कहा गया कि नोबल महोदय का उद्देश्य यह था कि पुरस्कृत व्यक्ति धन पाकर अपने क्षेत्र मे मानव-जाति की अधिकाधिक सेवा करने के लिए दत्तचित्त हो और इस प्रकार यह रकम उन्हे प्रोत्साहन के लिए दी जानी चाहिए, न कि मरे हुए व्यक्ति को पुरस्कार देकर भावी उन्नति की आशा से वञ्चित होना ! यह भी प्रश्न हुआ कि यह पुरस्कार भूतकाल मे की गई सेवाओ के लिए ही होता है या भविष्य मे भी उत्तेजन या प्रोत्साहन देने के लिए ? उत्तर-प्रत्युत्तर मे यह बात भी कही गई कि पहले जिन व्यक्तियो को बुढापे की मरणासन्न अवस्था मे पुरस्कार प्रदान किया गया था उनके द्वारा भी मानव-जाति की और अधिक सेवा होने की सम्भावना नही थी।

कुछ भी हो, यह बात तो निर्विवाद है कि एरिक एक्सेल कार्लफेल्ट की काव्यमयी प्रतिभा प्रशसनीय थी। दो दशाब्दी से वे स्वीडन के सर्वाग्रणी जीवित कवि समझे जाते थे। स्वीडन के १८६५ ई० के महान राजनीतिक परिवर्तन और कृषक-समुदाय की अधिकार-प्राप्ति ने उस देश के साहित्य मे जीवन फूक दिया। प्राचीन सस्कृति की उच्चता के द्योतक अद्भुतालय खोले गए—तत्कालीन साहित्य के प्रकाशन मे दिलचस्पी ली गई और सेलमा लागरलोफ, ऑस्कर लिवरटिन तथा गस्टाफ फ्रॉडी ने ससार मे उसकी ख्याति

बढाने मे अद्भुत कार्य किया। कार्लफेल्ट ने भी अपने देश की प्राचीन सस्कृति और कृषक-जीवन का चित्रण करने मे अपनी कला का परिचय दिया है। पूर्णवर्ती स्वीडिश कवियो की भाति उन्हे भी अपने कृषक-वश और प्रकृति-शोभा-सयुक्त देश पर बडा गर्व था।

कार्लफेल्ट का जन्म २० जुलाई, १८६४ ई० को फोकारना मे हुआ था। स्थानीय स्कूल मे शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होने उपसाला-विश्वविद्यालय मे उच्च शिक्षा प्राप्त की। कुछ समय तक शिक्षक का कार्य करने के पश्चात् १९०३ ई० मे उन्होने कृषि-इस्टीट्यूट के पुस्तकालय मे पुस्तकालयाध्यक्ष का काम किया। वे बडी ही कोमल प्रकृति के थे और शातिपूर्वक अपने उद्देश्य-पूर्ति के लिए कार्य किया करते थे। उन्होने कभी भी सार्वजनिक जीवन मे ख्यातिप्राप्त बनने की चेष्टा नही की। वे कई बार शिक्षा-सम्बन्धी कमीशनो मे चुने गए। १९०४ ई० के पश्चात् स्वीडिश एकैडमी के सदस्य हो गए। इस प्रकार उनका ससर्ग ससार के प्रमुख विद्वान आगन्तुको और लेखको से हो गया जिन्होने उनकी कविताओ की प्रशसा की। इससे उन्हे पर्याप्त प्रोत्साहन मिला, किन्तु अभी तक स्कैंडेनेविया के बाहर उनका नाम थोडे ही पाठको मे सुपरिचित था। उनकी रचनाओ का अग्रेजी अनुवाद करनेवाले और उनके लिए दुभाषिये का काम करनेवाले चार्ल्स व्हार्टन स्टॉर्क ने उनके काव्य और व्यक्तित्व दोनो ही की प्रशसा की है।

उनकी पहली पुस्तकाकार रचना एक जिल्द मे 'प्रेम और अरण्य के गीत'[1] उस समय प्रकाशित हुई थी जब कार्लफेल्ट की अवस्था इकत्तीस वर्ष की थी। इसमे उन्होने अपने देश के गावो और उनके स्त्री-पुरुषो की गम्भीर भावनाओ का कलापूर्ण वर्णन किया है। १८९८ और १९०१ ई० मे इस पुस्तक की दूसरी और तीसरी जिल्दे प्रकाशित हुई। स्टॉर्क का कथन है कि उनकी इन जिल्दो मे व्यक्तित्व की अपेक्षा सामूहिकता का विशेष चित्रण है—लेखक ने जनता के मनोभावो का अध्ययन करके उसे सुन्दर रूप मे प्रकट करने की चेष्टा की है।

दूसरी और तीसरी जिल्दे बाद मे 'फ्रिडोलिन का काव्य'[2] नाम से सयुक्त रूप मे प्रकाशित हुई। इस काव्य का नायक एक कृषक है जो प्रेमी, हसोड तथा दयालु प्रकृति का आदमी है। कवि की भाति नायक—फ्रिडोलिन—ने भी विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त की थी, किन्तु प्रौढावस्था मे वह कृषि-कार्य करने लगा था और उसमे पूरा आनन्द लेता था। वहा बाल्यावस्था की स्मृति उसे मुग्ध कर देती थी। कार्लफेल्ट का ग्राम-जीवन का सादा किन्तु कवित्वपूर्ण वर्णन उनकी तुलना बर्न्स और टेनिसन से कराता है।

'प्रतीक्षा'[3] शीर्षक कविता का नमूना देखिए—

प्रतीक्षा की सुमधुर घडिया।
विपुल जल-राशि-सदृश जाती,

---

१. Songs of Love and Wilderness
२. Fridolin's Poetry, or The Songs of Fridolin
३. Time of Waiting

सुकोमल कलिका-सी भाती,
जिन्हे विकसाती पखडिया। प्रतीक्षा की० ॥

× × ×

मई के दिन होते सुन्दर,
मनोहर आकर्षक मृदुतर,
बुरी एप्रिल की दुपहरिया। प्रतीक्षा की० ॥

× × ×

आर्द्र वन है अतिशय शीतल,
जुडाते है सबके हृत्तल,
वृक्ष करते है रगरलिया। प्रतीक्षा की० ॥

नई पीढी के कवियो की भाति कार्लफेल्ट ने पद्य के साथ ही गद्य लिखने की चेष्टा नही की। उन्होने नाटक भी नही लिखे। उनकी कविताओ की कुल छ: जिल्दे प्रकाशित हुई है जिनमे से अन्तिम १९२७ ई० मे प्रकाशित हुई है जिसका नाम 'पतझड की घटी'[1] है। उनकी अन्तिम कविता 'शीतकाल का वाद्य' मानी जाती है। अपने देश-वासियों के आखेट और नृत्य-गान-प्रेम को भी उन्होने भली भाति प्रदर्शित किया है। उनमे आरम्भिक भावावेगो, प्रवल भावनाओ और हास्य-प्रेम का भी सुन्दर दिग्दर्शन कराया गया है। उनकी एक और कविता का नमूना देखिए—

तुम्हारा जीवन है कैसा ?
कहो, क्या यह है झझावात ?
वेदना का निष्ठुर सघात ?
वना है या यह अति दुष्ताप—
युद्ध के दारुण दु.ख जैसा ? तुम्हारा० ॥

× × ×

हुआ है यह बुझती लौ-सा,
व्यर्थ आशा के शैशव-सा,
सूर्य-से लडनेवाले मेघ,
और उसके क्षण-वैभव-सा।
किन्तु है सुखी आज कैसा ! तुम्हारा० ॥

इनकी 'एजम्पशन ऑफ एलीजाह' शीर्षक कविता भी अत्यन्त सजीव भाषा मे लिखी गई है।

विश्वव्यापी महासमर से कार्लफेल्ट को भी वैसा ही दु.ख हुआ था जैसे अन्य वहुत-से भावुक कवियो को हुआ था। उनके काव्यमय गद्य का नमूना देखिए :

"युद्ध मे व्यस्त मानव-मेदिनी पागलो का-सा कार्य कर रही है। ऐसे जगत् को

---

१. The Horn of Autumn

छोड़कर हमें वहां चलना चाहिए जहां हम एक-दूसरे से पहले मिले थे और देखना चाहिए कि वहां वसन्त ऋतु किस प्रकार आगे बढ़ रही है।···तू वायु के ताजे झोंके के सदृश है, मुझे वही स्नेह प्रदान कर जिसे मैं पहले प्राप्त कर चुका हूं।···मुझे बगुलों की भांति स्वतन्त्र करके मुक्त भ्रमण करने दे। मुझे शोक और हास्य का वह सौख्य प्रदान कर जो जीवन और मृत्यु की शक्ति देता है।

डॉक्टर एक्सेल अपवाल ने डॉक्टर कार्लफेल्ट की कविताओं की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि कार्लफेल्ट ने रूसी लेखक तुर्गनेव की भांति निर्जीव पदार्थों में भी जीवन डाल दिया है। पृथ्वी को उन्होंने 'पृथ्वीमाता' के रूप में याद किया है। स्वीडिश कवि बेलमैन की भांति उनकी रचना की प्रत्येक पंक्ति संगीतमय है।

कार्लफेल्ट की मृत्यु १९३१ ई० में हुई।

जॉन गॉल्सवर्दी

१९३२ ई० का नोबल पुरस्कार ब्रिटेन के विख्यात उपन्यासकार और नाटककार जॉन गॉल्सवर्दी को प्राप्त हुआ था।

गॉल्सवर्दी का जन्म १४ अगस्त, सन् १८६७ ई० को सरी के कूम्ब नामक स्थान मे हुआ था। उनकी शिक्षा हैरो और ऑक्सफोर्ड मे हुई थी। ऑक्सफोर्ड के न्यू कॉलेज के भी वे सदस्य रह चुके थे। पहले उनकी इच्छा बैरिस्टर बनने की थी, किन्तु साहित्यिक आकर्षण के कारण वे उसमे सफल नही हुए और शीघ्र ही उन्होने पुस्तक-लेखन आरम्भ कर दिया। तीस वर्ष की अवस्था मे उन्होंने अपना प्रथम उपन्यास 'जोसिलिन'[1] लिखना शुरू किया था।

उनका 'सम्पत्तिशाली'[2] १९०६ ई० मे प्रकाशित हुआ। उस समय गॉल्सवर्दी की अवस्था चालीस वर्ष की हो चुकी थी। इसी उपन्यास के बाद साहित्यिक क्षेत्र मे उनका नाम हुआ। बाद मे यह उपन्यास 'दि फॉर्सीट सागा'[3] के नाम से प्रकाशित हुआ। इसके नये सस्करण मे एक ही जिल्द मे दो-तीन उपन्यास प्रकाशित हुए हैं जिनके नाम 'सम्पत्तिशाली,' 'इन चान्सरी'[4] और 'टु लेट'[5] है। इनके मध्य मे, 'इडियन समर ऑफ फॉर्सीट' और 'जागृति'[6] नामक दो एकाकी प्रहसन भी है। इस जिल्द की अब तक कई लाख प्रतिया बिक चुकी है। वास्तव मे इसी जिल्द मे 'ऑन फॉर्सीट चेज' भी जुडना चाहिए था। इस पुस्तक की भूमिका लिखते हुए जॉन गॉल्सवर्दी कहते है "बहुत माग और आलोचनाओ के पश्चात् मै यह जिल्द पाठको के हाथ मे दे रहा हू।"

उनकी दूसरी प्रसिद्ध जिल्द 'ए मॉडर्न कमेडी' (आधुनिक सुखान्त) मे भी तीन उपन्यास सम्मिलित है जिनके नाम 'सफेद बन्दर'[7], 'चादी का चम्मच'[8] और 'हस-गान'[9] है। उनके मध्य मे भी दो एकाकी प्रहसन 'मूक प्रेम'[10] और 'बटोही'[11] है। 'हस-गान' के

---

१. Joscelyn
२. The Man of Property
३. The Forsyte Saga
४. In Chancery
५. To Let
६. Awakening
७. The White Monkey
८. The Silver Spoon
९ Swan Song
१०. A Silent Wooing
११. Passersby

वाद गॉल्सवर्दी ने युद्ध के पूर्व की सामाजिक अवस्था से युक्त वर्णन लिखकर फॉर्साइट के नाटक को पूरा किया था।

१९१० ई० मे जब उनका 'न्याय'[1] प्रकाशित हुआ तो उनका नाम आधुनिक नाटककारो की प्रथम श्रेणी मे आ गया। इसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका मे उन्हे ऐसा पहला अग्रेज नाटककार लिखा गया है जिनका नाटकीय सम्वाद स्वाभाविकतापूर्ण है और जिनकी शैली वर्नार्ड शॉ की शैली से मिलती-जुलती है। किन्तु हम 'इसाइक्लोपीडिया' के विद्वान सम्पादको के इस अन्तिम कथन से सहमत नही है कि उनकी सम्वाद-प्रणाली वर्नार्ड शॉ की सम्वाद-प्रणाली से मिलती है। इग्लैण्ड जैसे प्रोपेगेण्डा-प्रधान देश मे रहकर ही जॉन गॉल्सवर्दी ने ख्याति प्राप्ति की, और इसी कारण उन्हे नोवल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अन्य देश के ऐसे लेखक को कदाचित् यह पुरस्कार कभी न मिलता। गॉल्सवर्दी जैसे लेखक है, उसका परिचय पाठक उनकी हिन्दी मे अनूदित पुस्तके[2] पढकर जान सकते है। कुछ भी हो, जॉन गाल्सवर्दी थे एक परोपकारी वृत्ति के मनुष्य और उन्होने अपनी उदारता का परिचय अनेक वार दिया है।

उनकी रचनाओ मे यह विशेषता अवश्य है कि उन्होने नैतिक और चारित्रिक दृष्टिकोण से कभी कुछ ऐसा नही लिखा जिसकी एक पक्ति भी आपत्तिजनक कही जा सके। १९२९ ई० मे उन्हे 'सर' की उपाधि मिल रही थी, पर उन्होने यह पदवी स्वीकार नही की। वास्तव मे उन्हे पुरस्कार 'दि फार्साइट सागा' के लिए मिला है जो उनकी सर्वश्रेष्ठ और उच्चकोटि के साहित्य मे स्थान पाने योग्य रचना है।

इनकी रचनाओ की सूची इस प्रकार है

१ दि आइलैण्ड फैरिसीज (The Island Pharisees)
२ दि कट्री हाउस (The Country House)
३ फ्रैटर्निटी (Fraternity)
४ दि पैट्रीशियन (The Patrician)
५ दि डार्क फ्लावर (The Dark Flower)
६ दि फ्री लैण्ड्स (The Free Lands)
७ बियोण्ड (Beyond)
८. फाइव टेल्स (Five Tales)
९ सेण्ट्स प्रोग्रेस (Saint's Progress)
१० दि फोर्साइट सागा (The Forsyte Saga)
११ दि माडर्न कामेडी (The Modern Comedy)
१२ कारावान (Caravan)

---

१. Justice

२. हिन्दुस्तानी एकैडमी, प्रयाग द्वारा प्रकाशित 'हड़ताल' और 'चादी की डिबिया' नामक इनके दो अनुवाद छप चुके है।

१३ कैप्चर्स वर्सेज ओल्ड एण्ड न्यू (Captures Verses Old and New)
१४ एड्रेसेज इन अमेरिका (Addresses in America)
१५ मेमारीज (Memories)
१६ मेड-इन-वेटिग (Maid-in-Waiting)
१७ फ्लावरिग वाइल्डरनेस (Flowering Wilderness)
१८ ओवर दि रिवर (Over The River)

इनके अतिरिक्त इनके सारे नाटक एक या आठ जिल्दो मे भी प्रकाशित हुए है। गॉल्सवर्दी का शरीरान्त ९३३ मे हुआ।

ईवान एलेक्ज्येविच बुनिन

रूसी लेखक ईवान एलेक्ज्येविच बुनिन को १६३३ ई० मे नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया था। सोवियत रूस के एक साहित्यिक को पहले-पहल ही यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि उसे स्विस एकैडमी ने पुरस्कार प्राप्त करने के योग्य समझा। यह बात निस्सन्देह कही जा सकती है कि रूस का साहित्य और उसके लेखको की प्राच्य एव पाश्चात्य विचार-धाराओ से युक्त भावनाए बहुत पहले से ही ससार मे बेजोड रही है, किन्तु नोबल महोदय के वसीयतनामे मे 'आदर्शयुक्त' साहित्य पर पुरस्कार देने का जो उल्लेख है उसका अर्थ एकैडमी ने यही लगाया था कि जिन रचनाओ मे आध्यात्मिकता और धार्मिकता का पुट न हो उन्हे आदर्शयुक्त नही कहा जा सकता। इसी कारण रूस की इतने दिनो तक उपेक्षा की गई। वैसे तो पुश्किन, टॉल्सटॉय, तुर्गनेव, चेखव और गोर्की के मुकाबले के लेखक ससार मे उत्पन्न हुए या नही, यह साहित्यिको मे विवादास्पद बात है, फिर भी उनकी रचनाओ को एकैडमी ने पुरस्कार योग्य नही समझा और रूस की ओर ध्यान ही नही दिया। रूस ही क्यो, पश्चिमी यूरोप के देशो को छोडकर अन्य देशो को यह पुरस्कार बहुत कम मिला है। अमेरिका और भारत को यह पुरस्कार एक ही बार मिला और चीन को —जिसमे आदर्शयुक्त साहित्य उत्पन्न करने की एक विशेषता है— एक बार भी नही। आरम्भ मे तो पश्चिमी यूरोप के मिशनरी लेखको का ही इस पुरस्कार पर एकाधिकार-सा रहा है। धीरे-धीरे साहित्यिक आलोचको की आलोचनाओ के कारण इसे कुछ-कुछ असकीर्ण बनाया जाने लगा है। फिर भी ससार मे इस समय ऐसे लेखको का समूह विद्यमान है जो पुरस्कार-प्राप्त लेखको से आदर्शवाद, तथ्यवाद और कला की दृष्टि से कही आगे है।

ईवान एलेक्ज्येविच का जन्म १० अक्तूबर, सन् १८७० ई० मे वोरानेश नामक स्थान मे हुआ था। उनकी रचनाओ मे उनकी ख्याति का कारण है उनकी कविताए। अपनी श्रेष्ठ कविताओ के कारण इनके पूर्व भी उन्हे रूस का 'पुश्किन पुरस्कार' प्राप्त हुआ था जो उस देश का सर्वोच्च साहित्यिक पारितोषिक माना जाता है।

बुनिन महोदय को अग्रेजी कविताओ से बड़ा प्रेम है। उन्होने लागफेलो, बॉयरन और टेनिसन की सुन्दर रचनाओ का अनुवाद रूसी भाषा मे किया है। उन्होने कविताओ के अतिरिक्त सुन्दर यथार्थवादी उपन्यास भी लिखे है। उनके उपन्यासो का अग्रेजी

अनुवाद हो चुकने के कारण वे इग्लैण्ड मे पहले ही प्रख्यात हो चुके थे। उनके कथा-साहित्य मे 'सेनफ्रासिस्को के सज्जन'[1], 'ग्राम'[2], 'दि वेल ऑफ डेज'[3] और 'पन्द्रह आख्यायिकाए'[4] अधिक प्रसिद्ध है। इनकी समालोचनाए पत्रो मे प्रकाशित हुई है जिनमे इनके गुण-दोषो का विवेचन सुन्दर रीति से किया गया है।

रूस मे राज्यक्रान्ति होने के बाद से बुनिन फ्रास मे रहने लगे थे। बुनिन की कविताए गीत-काव्य न होकर वर्णनात्मक है—किन्तु उनमे जीवन, सामजस्य और सादगी इतनी अधिक है कि उनकी गणना उच्चतम कोटि की कविताओ मे हो सकती है। उनमे बारीक पर्यवेक्षण और अनुभूति पूर्णत सन्निविष्ट है।

बुनिन के उपन्यासो मे सीधे-सादे तौर पर रूसी चरित्र-चित्रण किया गया है। उनमे रूसी जीवन के दोनो—उत्तम और निकृष्ट—पहलू दिखलाए गए है। लगभग इनकी सभी रचनाए दुखान्त है। उनकी 'वसन्त का सायकाल'[5] और 'चाग का स्वप्न और अन्य कहानिया' भी उल्लेखनीय आख्यायिकाए है।

बुनिन की मृत्यु १९५३ ई० मे हुई।

---

१. The Gentleman From San-Fransisco
२. The Village
३. The Well of Days
४. Fifteen Tales
५. An Evening in the Spring

लुइजी पिराण्डेलो

१९३४ ई० का नोवल पुरस्कार इटली के नाटककार एव उपन्यासकार सिनोर लुइजी पिराण्डेलो को मिला है। पिराण्डेलो का जन्म २८ जून, १८६७ ई० मे सिसिली मे गिरीगेण्टी के निकटवर्ती एक गाव मे हुआ था। १९ वर्ष की अवस्था मे वे रोम गए थे और १८९१ ई० तक वही रहकर पढते रहे। १८९१ ई० मे वे जर्मनी गए और वहा के वोन विश्वविद्यालय से तत्त्वज्ञान की डिग्री प्राप्त की। जर्मनी से वापस आकर पहले-पहल उन्होने रोम मे कन्या पाठशाला के अध्यापक के रूप मे काम किया और १९२३ ई० तक वही कार्य करते रहे। अध्यापन-कार्य करते हुए उन्होने कुछ साहित्यिक निवन्ध लिखे जो १८८९ ई० मे 'माल जियोकोण्डो' नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हो गए।

उनका पहला उपन्यास 'लिसलुसा' इनके एक मित्र के आग्रह पर १८९४ ई० मे प्रकाशित हुआ, किन्तु उसमे चूकि कुछ कठोर सत्य था अत वह वहुत प्रसिद्ध नही हो सका। उन्होने सक्षिप्त कहानियो का लिखना भी आरम्भ कर दिया था, किन्तु उनकी ख्याति तव तक नही हुई जव तक कि उन्होने 'इल फु मटिया पास्कल' नामक उपन्यास नही प्रकाशित कर दिया। यह एक आदमी की असाधारण कहानी है जो अपने आदमियो पर यह प्रकट करता है कि वह मर गया है और फिर वह एक नये क्षेत्र मे नये ढग और परिवर्तित नाम से काम करना आरम्भ करता है। और उसे असफलता मिलती है।

पिराण्डेलो ने १९१२ ई० मे नाटक लिखना आरम्भ किया था। नाटक लिखने मे उन्हे सफलता भी शीघ्रतापूर्वक मिली। उनके नाटको मे मध्यम श्रेणी के व्यक्तियो का चित्रण विशेष रूप से है। आरम्भ मे कुछ समालोचको ने इनके नाटको मे जीवन का यथार्थ रूप चित्रित न करने का आक्षेप किया था। १९२५ ई० से रोम मे पिराण्डेलो का एक अपना थिएटर हाल था।

उनकी रचनाओ मे से मुख्य-मुख्य का अनुवाद अनेक भाषाओ मे हो चुका है। अग्रेज़ी मे उनके उपन्यासो मे 'शूट' (दागो!) और 'पुराना और नया'[1] नाटको मे 'तीन नाटक'[2] तथा 'तीन और नाटक'[3] अधिक प्रसिद्ध है।

पिराण्डेलो का देहावसान १९३७ ई० मे हुआ।

---

१. The Old and the New २. Three Plays ३. Three Further Plays

यूजेन ओ' नील

१९३५ ई० का साहित्यिक नोबल पुरस्कार किसीको भी नही दिया गया। नोबल-समिति ने इस वर्ष किसीकी रचना को इसके योग्य नही ठहराया और उसकी रकम सुरक्षित रख दी।

१९३६ ई० का पुरस्कार अमेरिकी नाटककार यूजेन ओ' नील को प्राप्त हुआ। यह एक विलक्षण बात है कि उनकी रचनाए उनकी मृत्यु के चार वर्ष बाद ही रगमच पर चमक सकी। उनके ऐसे तीन नाटक थे—'रात्रि मे दिन की लम्बी यात्रा'[1], 'मिस बिगाटन के लिए एक चांद'[2] और 'वर्फ का आदमी आता है'[3], जिसे 'शहर मे नई लडकी'[4] का शीर्षक दिया गया।

ओ' नील के अभिनीत नाटको की सख्या कोई चालीस के लगभग पहुचती है, अत. उन्हे अन्य अमेरिकियो की अपेक्षा विशेष रूप मे पुरस्कार मिला है। उनके नाटको के लिए उन्हे पुलिट्जर-पुरस्कार भी मिला था। १९२० ई० मे उन्हे 'क्षितिज के उस पार'[5] के लिए, १९२२ ई० मे 'अन्ना क्रिस्टी' के लिए और १९२८ ई० मे 'अनोखा विश्राम' पर पुरस्कार मिल चुके थे। १९३६ ई० मे इन्हे नोबल पुरस्कार मिला तो इनका नाम अन्य देशो मे अधिक हो गया। ये पहले अमेरिकी नाटककार है जिन्हे यह सम्मान प्राप्त हुआ।

ओ' नील का जन्म १८८८ ई० की १६ अक्तूबर को न्यूयार्क के बैरेट हाउस मे हुआ था जो उस जमाने मे एक पारिवारिक होटल था। इनके पिता जेम्स ओ' नील उन दिनो के प्रसिद्ध अभिनेताओ मे थे। सात वर्ष तक तो बालक ओ' नील अपने पिता के साथ उनके अभिनय के सिलसिले मे स्थान-स्थान पर घूमते रहे। गर्मी मे इनके माता-पिता न्यू लन्दन मे रहते थे। इनकी मा का नाम इला क्विनयान था।

१९०७ ई० मे ही ओ' नील की शिक्षा समाप्त हो गई और उन्हे प्रिस्टन विश्वविद्यालय से कोई अच्छे अक और दर्जा भी नही मिला और पढाई बीच मे ही छोड देनी पडी। १९०९ ई० मे ये सोने की खोज मे अन्य अमेरिकियो की तरह दक्षिण अमेरिका के स्पेनी क्षेत्र मे गए। जब वे वहा से लौटकर अन्त मे न्यूयार्क आए तो वे एक मल्लाह के

---

१. Long Days Journey into Night
२. A Moon For Miss Bigotten
३. Iceman Cometh
४. New Girl in the Town
५. Beyond the Horizon

काम मे भर्ती होकर साउथम्पटन गए। यह अगस्त १६११ की बात है। उसके बाद तो अपने पिता के काम 'काउण्ट ऑफ माण्टीक्रिस्टो'[1] के लेखन कार्य मे लग गए और थोडी-बहुत यात्रा की। इसके बाद वे 'न्यूलन्दन टेलीग्राफ' के सवाददाता बन गए। किन्तु कुछ ही दिनो मे उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। २४ दिसम्बर, १६१२ को वे वालिगफोर्ड गेलार्ड फार्म सेनिटोरियम मे भर्ती किए गए क्योकि उनपर क्षय रोग का आरम्भिक और हल्का आक्रमण हो गया था।

यह वह समय था जिसे ओ' नील ने अपना पुनर्जन्म कहा है क्योकि यही उन्हे विचार करने का मौका मिला और यही उन्होने एकाग्रतापूर्वक नाटककार बनने का निश्चय किया। वहा से निकलकर उन्होने नाटक लिखने का पक्का इरादा कर लिया था और उन्होने 'मकडी का जाला'[2] लिखना शुरू भी कर दिया। १६१४-१५ मे ये प्रोफेसर जॉर्ज पियर्स बेकर के विद्यार्थी बन गए जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध आचार्य थे।

१६१६ ई० की गर्मियो मे वे प्राविस्टाउन (मैसाचुसेट्स) गए जहा के अभिनेताओ ने इनका एक नाटक 'बाउण्ड ईस्ट फार कार्डिफ' रगमच पर खेला। इसकी अच्छी समालोचना और चर्चा हुई जिसमे ओ' नील शीघ्र ही रगमच के प्रसिद्ध आचार्य गिने जाने लगे।

ओ' नील की विधवा पत्नी का नाम कारलोटा माण्टरी है जिसके साथ उनका विवाह १६२६ ई० की २२ जुलाई को हुआ था। इसके पहले उनकी जो दो शादिया हुई थी उनमे उनके तीन बच्चे हुए थे। १६०६ मे उन्होने कैथलीन जेनकिन्स से शादी की थी जिनमे पैदा हुआ लडका ओ' नील जूनियर ग्रीक भाषा का बडा पडित बन गया था पर १६५० ई० मे उसने आत्मघात कर लिया। पहली शादी की पत्नी को उन्होने १६१२ ई० मे तलाक दे दिया था और छ वर्ष बाद एजनद बोलटन से शादी की जिससे दो बच्चे हुए जिनमे से उनकी लडकी ऊना ने चार्ली चैपलिन मे शादी की और अब भी जीवित है।

१. यह पुस्तक 'माणिक्य का खजाना' नाम से हिन्दी में निकल चुकी है।
२ Web

यूजेन ओ' नील

१९३५ ई० का साहित्यिक नोबल पुरस्कार किसीको भी नही दिया गया। नोबल-समिति ने इस वर्ष किसीकी रचना को इसके योग्य नही ठहराया और उसकी रकम सुरक्षित रख दी।

१९३६ ई० का पुरस्कार अमेरिकी नाटककार यूजेन ओ' नील को प्राप्त हुआ। यह एक विलक्षण बात है कि उनकी रचनाए उनकी मृत्यु के चार वर्ष बाद ही रगमच पर चमक सकी। उनके ऐसे तीन नाटक थे—'रात्रि मे दिन की लम्बी यात्रा'[1], 'मिस बिगाटन के लिए एक चांद'[2] और 'बर्फ का आदमी आता है'[3], जिसे 'शहर मे नई लडकी'[4] का शीर्षक दिया गया।

ओ' नील के अभिनीत नाटको की सख्या कोई चालीस के लगभग पहुचती है, अत. उन्हे अन्य अमेरिकियो की अपेक्षा विशेष रूप मे पुरस्कार मिला है। उनके नाटको के लिए उन्हे पुलिट्जर-पुरस्कार भी मिला था। १९२० ई० मे उन्हे 'क्षितिज के उस पार'[5] के लिए, १९२२ ई० मे 'अन्ना क्रिस्टी' के लिए और १९२८ ई० मे 'अनोखा विश्राम' पर पुरस्कार मिल चुके थे। १९३६ ई० मे इन्हे नोबल पुरस्कार मिला तो इनका नाम अन्य देशो मे अधिक हो गया। ये पहले अमेरिकी नाटककार है जिन्हे यह सम्मान प्राप्त हुआ।

ओ' नील का जन्म १८८८ ई० की १६ अक्तूबर को न्यूयार्क के बैरेट हाउस मे हुआ था जो उस जमाने मे एक पारिवारिक होटल था। इनके पिता जेम्स ओ' नील उन दिनो के प्रसिद्ध अभिनेताओ मे थे। सात वर्ष तक तो बालक ओ' नील अपने पिता के साथ उनके अभिनय के सिलसिले मे स्थान-स्थान पर घूमते रहे। गर्मी मे इनके माता-पिता न्यू लन्दन मे रहते थे। इनकी मा का नाम इला क्विनयान था।

१९०७ ई० मे ही ओ' नील की शिक्षा समाप्त हो गई और उन्हे प्रिस्टन विश्वविद्यालय से कोई अच्छे अक और दर्जा भी नही मिला और पढाई बीच मे ही छोड देनी पडी। १९०९ ई० मे ये सोने की खोज मे अन्य अमेरिकियो की तरह दक्षिण अमेरिका के स्पेनी क्षेत्र मे गए। जब वे वहा से लौटकर अन्त मे न्यूयार्क आए तो वे एक मल्लाह के

---

१. Long Days Journey into Night
२. A Moon For Miss Bigotten
३. Iceman Cometh
४. New Girl in the Town
५. Beyond the Horizon

काम मे भर्ती होकर साउथम्पटन गए। यह अगस्त १६११ की बात है। उसके बाद तो अपने पिता के काम 'काउण्ट ऑफ माण्टीक्रिस्टो'[1] के लेखन कार्य मे लग गए और थोडी-बहुत यात्रा की। इसके बाद वे 'न्यूलन्दन टेलीग्राफ' के सवाददाता बन गए। किन्तु कुछ ही दिनो मे उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। २४ दिसम्बर, १६१२ को वे वालिगफोर्ड गेलार्ड फार्म सेनिटोरियम मे भर्ती किए गए क्योंकि उनपर क्षय रोग का आरम्भिक और हल्का आक्रमण हो गया था।

यह वह समय था जिसे ओ' नील ने अपना पुनर्जन्म कहा है क्योंकि यही उन्हे विचार करने का मौका मिला और यही उन्होने एकाग्रतापूर्वक नाटककार बनने का निश्चय किया। वहा से निकलकर उन्होने नाटक लिखने का पक्का इरादा कर लिया था और उन्होने 'मकडी का जाला'[2] लिखना शुरू भी कर दिया। १६१४-१५ मे ये प्रोफेसर जॉर्ज पियर्स बेकर के विद्यार्थी बन गए जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्राचार्य थे।

१६१६ ई० की गर्मियो मे वे प्राविस्टाउन (मैसाचुसेट्स) गए जहा के अभिनेताओ ने इनका एक नाटक 'काउण्ड ईस्ट फार कारडिफ' रगमच पर खेला। इसकी अच्छी समालोचना और चर्चा हुई जिसमे ओ' नील शीघ्र ही रगमच के प्रसिद्ध आचार्य गिने जाने लगे।

ओ' नील की विधवा पत्नी का नाम फारलोटा माण्टरी है जिसके साथ उनका विवाह १६२६ ई० की २२ जुलाई को हुआ था। इसके पहले उनकी जो दो शादिया हुई थीं उनसे उनके तीन बच्चे हुए थे। १६०६ मे उन्होने कैथलीन जेनकिन्स से शादी की थी जिनमे पैदा हुआ लडका ओ' नील जूनियर ग्रीक भाषा का बडा पडित बन गया था पर १६५० ई० मे उसने आत्मघात कर लिया। पहली शादी की पत्नी को उन्होने १६१२ ई० मे तलाक दे दिया था और छ वर्ष बाद एजनद बोलटन से शादी की जिससे दो बच्चे हुए जिनमे से उनकी लडकी कोना ने चार्ली चैपलिन से शादी की और अब भी जीवित है।

---

१ यह पुस्तक 'मोतियों का खजाना' नाम से हिन्दी मे निकल चुकी है।

२ Web

रोजे मार्ते दु गार

१६३७ ई० का नोवल पुरस्कार फ्रास के साहित्यकार मार्ते दु गार को मिला ।

गार का जन्म न्यूली-सर-सीन मे १८८१ ई० मे हुआ था और इनकी प्रारम्भिक लिखाई-पढाई ह्कोल-डिस-चार्टे मे हुई थी । विद्यार्थी-जीवन से ही उन्हे साहित्य का शौक लग गया और १६०६ ई० मे इनका जुमेजी के पुरातत्त्व-सम्बन्धी अध्ययन पर ग्रन्थ प्रकाशित हो गया ।

१ १३ ई० मे इनका पहला सफल उपन्यास 'फीनर्वरोई' प्रकाशित हुआ । फ्रास मे उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे जो नैतिक और बौद्धिक सघर्ष हुए और उससे फ्रास का जो विभाजन हुआ उसपर अपने विचार लेखक ने बडी खूबी से व्यक्त किए । प्रथम विश्व-महायुद्ध मे चार वर्ष तक सैनिक-सेवा करने के बाद इन्होने एक लम्बा धारावाहिक उपन्यास लिखना शुरू किया जिसका नाम 'लेथीबाल्ट' हुआ । यह आठ भागो मे प्रकाशित हुआ ।

वास्तव मे इस रचना ने ही गार को नोवल पुरस्कार-विजेता बनाया । उन्होंने बडे ही चिन्तनपूर्ण और गम्भीर ढग से फ्रासीसी समाज का चित्रण किया है । १६४० ई० मे इस ग्रन्थ का उपसहार भी प्रकाशित हुआ ।

मार्ते दु गार के अन्य उपन्यास और कहानिया इस क्रम से प्रकाशित हुई · 'कान्फीडेन्स अफ्रिकेन' (१६३१ ई०), 'बीली फ्रान्स' (१६३३ ई०), दो प्रहसन (ले टेस्टा-मेट डू पीयर लेलू, १६१४, ला कान्फिल, १६२८ ई०) और एक नाटक (अनटैसोट्यून १६३१ ई०) ।

पर्ल वक

१६३८ ई० मे अमेरिका की पहली महिला पर्ल सिडनट्राइकर वक को नोवल पुरस्कार मिला। इनके उपन्यासो की ख्याति उस समय तक काफी हो चुकी थी। उन्होने चीनियो के जीवन का वहुत निकट से और गहराई के साथ अध्ययन किया और उन्हे जातीय सम्वन्धो की समस्या की अद्वितीय जानकारी प्राप्त हो गई।

पर्ल का जन्म पश्चिमी वर्जीनिया के हिल्सवोरो स्थान मे हुआ था। उनके माता-पिता ईसाई धर्म-प्रचारक थे। पर्ल का वचपन चिगकिआग मे वीता जिससे उन्हे चीनी भापा सीखने और वोलने का अच्छा अवसर मिल गया—यहा तक कि अग्रेजी का लिखना पढना उन्होने चीनी के वाद मे ही सीखा। उनकी पहली रचना 'शघाई मर्करी' अग्रेजी मे प्रकाशित हुई। १६१४ ई० मे रैडाल्फ मैकान कालेज से स्नातक होकर वे फिर चीन लौटी। उसी साल उन्होने एल० वक से विवाह कर लिया जो कृपिशास्त्र के अध्यापक थे। पाच वर्ष तक वे पति के साथ रही। चीन मे वचपन विताने के कारण उन्हे उसकी सजीव स्मृति वनी रही। उसीके आधार पर उन्होने 'गुड अर्थ' या 'धरतीमाता' उपन्यास लिखा जिसे १६३१ ई० मे पुलिट्जर-पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस उपन्यास का अनुवाद अनेकानेक भापाओ मे हुआ। वाद मे इस उपन्यास के आधार पर नाटक और चित्रपट भी वने।

पर्ल वक की सबसे प्रसिद्ध रचना उनका चीनी भापा से 'ई हू चुआन' 'सभी मानव भाई-भाई है' का अनुवाद है, जो चार वर्ष के सतत् परिश्रम का परिणाम है।

यद्यपि पर्ल ने १६३५ ई० मे दूसरा विवाह जे० वाल्श से किया, जो जॉन डे कम्पनी (प्रकाशक) के अध्यक्ष थे, पर वे पर्ल वक के नाम से अधिक प्रसिद्ध हुई। नये पति के साथ ये पेसिलवेनिया के कृपिक्षेत्र मे रही। यहा इनके पाच दत्तक वच्चे भी इनके साथ रहे। सवसे वडी लडकी का मानसिक विकास रुक गया तो उन्होने ऐसे अक्षम वच्चो की सेवा का कार्य हाथ मे लिया। १६४६ ई० मे उन्होने अपने स्वागत-गृह का निर्माण कराया। यह एक ऐसी सस्था वन गई जो अमेरिका और एशियावासियो के सयोग से उत्पन्न वच्चो को गोद लेकर उनकी देखभाल की व्यवस्था मे लग गई। वाद मे पर्ल वक पेसिलवेनिया मे शिक्षण-कार्य मे लग गई है और वे अमेरिका के साहित्य-कला-केन्द्र की सदस्या और हार्वर्ड विश्वविद्यालय की सदस्या वन गई है।

बक की रचनाओं मे उनकी आत्मकथा 'मेरे अनेक ससार' (माई सेवरल वर्ल्डस[1]) और 'गुड अर्थ'[2] (धरतीमाता) उपन्यास—अधिक प्रसिद्ध है । इस उपन्यास मे चीन के देहाती जीवन का जैसा सजीव वर्णन है वैसा कही अन्यत्र देखने मे नही आता । स्वय चीनी भी अपने देशवासियो का ऐसा चित्रण नही कर सके है जैसा पर्ल बक ने किया है। उनके वर्णन मे चीन के आन्तरिक जीवन के विविध पहलुओ का स्पर्श पूरी सफलता के साथ किया गया है । उन्होने अमेरिकी और चीनी जीवन की तुलना करते हुए एक जगह लिखा है . "अमेरिका का छोटा-सा घर, स्वच्छ धार्मिक वातावरण का जीवन, जिसमे वह प्यारे माता-पिता के साथ थी और चीन की विस्तृत अतिस्वच्छता से विहीन किन्तु प्रेमपूर्ण जिन्दगी" । दोनो ही मे उसने बडे सुख मे जीवन के दिन काटे । कई वर्ष बाद चीन तो क्रान्ति के कारण खण्डित हो गया और पर्ल बक ने चीनी जीवन के कुत्सित और बर्बर एव सुख-दु ख के प्रति उदासीन पहलू को भी देखा । कई बार तो पर्ल बक मौत के मुह मे जाते-जाते बची और घायल हो गई । किन्तु पर्ल बक चीन तक ही सीमित न रही और उन्होने रूस तथा यूरोप की भी यात्रा की । उसके बाद अमेरिका लौटकर जब वे कॉलेज मे गई तो उन्हे ऐसा लगा जैसे वे विदेश मे और किसी भिन्न वातावरण मे पहुच गई है। वे जब चीन लौटी तो उनकी मा मरने के करीब थी । जापान मे उन्होने निर्वासिता की तरह जीवन व्यतीत किया । फिर अमेरिका आकर न्यूइग्लैण्ड मे खेत खरीदे और अवा छित बच्चो की मदद मे लग गई । अन्त मे नोबल पुरस्कार प्राप्त होने पर किस प्रकार उनके जीवन मे एक आमूल-चूल-परिवर्तन आया, इसका वर्णन उनकी आत्मकथा मे सनसनी-भरे शब्दो मे किया गया है ।

वे पहले १९२३-२४ ई० मे 'एटलाटिक मथली' और 'फोरम' मे अपनी रचनाए प्रकाशित कराती रही । फिर 'न्यूयार्क टाइम्स' और 'टाइम' मे भी उनकी रचनाए १९२२ ई० के आसपास प्रकाशित हुई । बाद मे उनकी आत्मकथा पुस्तकाकार प्रकाशित हुई ।

पर्ल बक के उपन्यासो मे 'गुड अर्थ' सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त है क्योकि उसका अनुवाद ससार की अनेकानेक भाषाओ मे प्रकाशित हो चुका है और यह माना जाता है कि चीन के देहाती जीवन का चित्रण उससे अधिक सुन्दर रूप मे और कही नही मिल सकता, पर उनके अन्य उपन्यास भी प्रकाशित होकर नाम पा चुके है । हिन्दी मे उनके अन्य उपन्यासो के अनुवाद उपलब्ध नही है इसलिए अभी तो अग्रेजी जाननेवाले ही उनसे लाभ उठा सकते है । उनके उपन्यासो की नामावली इस प्रकार है

१ कम, माई बिलवड (मेरे प्रिय, आओ)

२ हिडेन फ्लावर (गुप्त प्रसून)

३ गॉड्स मेन (भगवान के आदमी)

---

१ 'मेरे अनेक ससार' राजपाल एण्ड सज द्वारा प्रकाशित ।

२ इसका अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित हो चुका है । इसपर अग्रेजी में इसी नाम का चित्रपट भी निर्मित होकर ख्याति प्राप्त कर चुका है ।

४ दि बोण्ड मेड (क्रीत दासी)
५. पैवीलियन आफ वोमेन (महिलाओं का चत्वर)
६ पोर्टेट आफ ए मैरिज (एक विवाह का चित्रण)
७ दि प्राउड हार्ट (गर्वीला हृदय)
८ ईस्ट विंड वेस्ट विंड (पूर्वी हवा-पश्चिमी हवा)
९, दि मदर (माता)
१० किनफोक (अपने लोग)
११ फार एण्ड नियर (दूर और निकट)
१२ दि प्रामिस (प्रतिज्ञा)
१३ ड्रैगन-सीड (अजगर-बीज)
१४ टुडे ऐण्ड फार एवर (आज और सदा)
१५ अदर गॉड्स (अन्य देव)
१६ दि पैट्रियट (देशभक्त)
१७ ए हाउस डिवाइडेड (विभाजित घर)
१८ दि फर्स्ट वाइफ (पहली पत्नी)
१९ सन्स (बेटे)
२० फाइटिंग ऐंजेल (युद्धरत देवदूत)
२१ एक्जाइल (निर्वासित)

एमिल सिलांपा

१६३६ मे नोवल पुरस्कार एमिल सिलापा को मिला। वे फिनलैण्ड के एकमात्र साहित्यिक थे। उनका जन्म १८८८ ई० मे हुआ था। पश्चिमी फिनलैण्ड के निवासी होने के कारण उन्होने अपने उपन्यासो मे वही के पात्र और पृष्ठभूमि लेकर उनका चित्रण किया है। उनके उपन्यास अधिकाशत ग्राम-जीवन से सम्वन्ध रखते है और मात्र अपने जिले या क्षेत्र से वाहर नही जाते। फिर भी सीमित पृष्ठभूमि मे उनकी रचनाए ऐसी सजीव है कि पाठको को वहुत आकर्पित करती है।

इनके पिता फिनलैण्ड के एक किसान थे। उन्होने पश्चिमी फिनलैण्ड के कृषक-जीवन पर वहुत थोडी अवस्था मे ही अध्ययन कर लिखना आरम्भ कर दिया था।

सिलांपा के उपन्यासो मे 'विनम्र देन'[1] (१६१६), और 'वचपन से ही निद्राग्रस्त'[2] (१६३१ ई०) अधिक प्रसिद्ध है और इनका अनुवाद अग्रेजी मे हो चुका है, पर इनकी तीसरी प्रसिद्ध कृति 'पुरुप का ढग'[3] (१६३२ ई०) है।

आरम्भ मे सिलापा के उपन्यासो की ख्याति उनके देश तक ही सीमित रही, पर जव उनकी ख्याति स्वदेश मे वहुत हो गई तो उनका अनुवाद वाद मे अनेक यूरोपीय भापाओ मे हो गया। उनके सभी उपन्यासो मे 'दि मैड सीलजा' अधिक प्रसिद्ध और सर्वप्रिय हुआ है। उनकी अन्य रचनाओ मे 'पवित्र कप्ट', 'एक मनुष्य का मार्ग' और 'युवावस्था की निद्रा' अधिक पसन्द की गई।

सिलापा को पुरस्कार मिलने के वाद ही गत महायुद्ध मे, रूस ने फिनलैण्ड पर आक्रमण कर दिया था और सिलापा वडी कठिनाई से अपने देश की सीमा पारकर पुरस्कार प्राप्त करने के लिए स्टॉकहोम पहुच सके थे।

कृषक जीवन पर सुन्दर उपन्यास लिखने के अतिरिक्त उन्होने निवन्ध-रचना और कहानिया लिखने मे भी कुशलता दिखाई।

---

१. Meek Heritage

२. Fallen Asleep While Young

३. Man's Way

जोहान्स जेन्सेन

द्वितीय विश्वव्यापी महायुद्ध के दिनो मे—१६४० ई० से १६४३ ई० तक किसीको भी साहित्यिक पुरस्कार नही दिया गया और इन वर्षों की रकमे मूल कोषो मे जमा कर दी गई।

१६४४ ई० का नोबल पुरस्कार डेन्मार्क के प्रसिद्ध साहित्यकार जोहान्स विल्हेम जेन्सेन को प्राप्त हुआ। इनकी विशेष ख्याति इसलिए है कि उन्होने अपनी भाषा मे नये मुहावरो का समावेश किया।

जेन्सेन का जन्म उत्तरी जटलैण्ड के हिम्मरफैण्ड शहर मे हुआ। इनके पिता पशु-चिकित्सक थे। इन्होने वहा के कैथेड्रल स्कूल से मैट्रिक पास किया और फिर डॉक्टरी की पढाई के लिए कोपेनहेगन गए। परिवार बडा होने के कारण इन्हे अपनी पढाई का खर्च खुद कमाना पडा। १८६३ ई० मे इन्होने डॉक्टरी पढना शुरू किया और १८६५ ई० से ही कहानिया लिखने लगे जिससे इन्हे वहा के ४५ सिक्के मासिक की आमदनी हो गई और इनकी कथामाला चल पडी। १८६७ ई० मे उन्होने डाक्टरी की पढाई छोडकर अपने-आपको पत्रकारिता और साहित्य-सेवा मे लगा दिया। क्योकि १८६३ ई० मे ही इनकी पहली पुस्तक 'डैन्सकेयर' की अच्छी बिक्री हुई और उससे जो धन मिला उसे खर्च कर वे अमेरिका चले गए जिसका उनपर अच्छा प्रभाव पड़ा। १८६८ ई० मे स्पेन-अमेरिका युद्ध मे ये युद्ध-सवाददाता के रूप मे स्पेन भेज दिए गए। उसके बाद वे एक डेनिश पत्र के विशेष सवाददाता के रूप मे पेरिस की विश्व-प्रदर्शनी मे भेजे गए जहा के नये वातावरण ने उनपर बडा प्रभाव डाला।

उनकी औपन्यासिक कृतियो मे सबसे पहले 'कोर्गेन्स फाल्ड' था जिसका अग्रेजी अनुवाद १६३३ ई० मे प्रकाशित हुआ। यह डेनिश भाषा का सर्वप्रथम प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास बन गया। इसमे पुराना कृषक-जीवन और उसके विरोधी दृष्टिकोण का सुन्दर चित्रण है। इसमे सम्राट क्रिश्चियन द्वितीय के शासन-काल का सुन्दर वर्णन है जो अन्त मे अनिश्चितता और सन्देह का शिकार हो जाता है। सम्राट की यह बीमारी न केवल उसीके पतन का कारण बनती है बल्कि डेन्मार्क के जागीरदार द्वारा सेवा मे जोते गए जर्मन भाडे के टट्टुओं द्वारा डेन्मार्क पराजय का मुह देखता है और उसमे पराजय की भावना छा जाती है। जो किसान अपनी सादगी और विश्वास के कारण सम्राट के पक्ष

से विद्रोह करने से उन्हे भी मुह की खानी पडती है।

जेन्सेन ने आगे चलकर अपने उपन्यास मे बताया है कि किसान को पराजयवाद से मुक्ति पाने के लिए प्रकृति से निकट सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए क्योंकि केवल इसी प्रकार उसे मुक्ति मिल सकती है। उनकी हिम्मरलैण्ड की कहानियो मे भी वहा के निवासियो के पराजयवाद की भावना से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न किया गया है।

जेन्सेन की रचनाओ मे केवल स्थानीय रग ही नही भरा गया है बल्कि साहस, महोद्यम भी भरा हुआ है जिससे प्रतीत होता है कि उनके मन मे ये प्रवृत्तिया पर्याप्त रूप से क्रियाशील थी। उनकी अमेरिका और मिस्र की यात्राओ ने उनके जीवन और रचनाओ पर काफी प्रभाव डाला है और उन्होने उन यात्राओ के फलस्वरूप केवल पुरानी कहानिया ही नही लिखी, बल्कि लेख, कहानिया, यात्रा-विवरण आदि भी लिखकर पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित कराए।

उनकी रचनाओ के बारे मे 'दि अमेरिकन स्कैडिनेवियन रिव्यू' मे कहा गया है "उनके उपन्यास पुराने युग के है, पर वे अपने युग के समाज के दर्पण-से है। इसमे कथानक की ओर उतना ध्यान देने की आवश्यकता नही पडती जितना सामयिक चित्रण की ओर।" किन्तु जेन्सेन नवयुग के चमत्कार की ओर इशारा करने से भी नही चूके है। उन्होने 'गाथिक पुनर्जन्म' और 'डेम वर्डेज' मे इसका अच्छा परिचय दिया है।

'जुलेट' और 'मैडम डिओरा' मे भी इसी प्रकार के चरित्र-चित्रण मिलेगे।

जेन्सेन ने अपनी आत्मकथा के रूप मे अपनी अमेरिका (यात्रा) की कहानी भी लिखी है। जब जेन्सेन ७६ वर्ष के हो गए थे तो उन्होने 'अफ्रीका' भी प्रकाशित कराया था। यह केवल यात्रा-वर्णन नही, बल्कि उनकी पत्रकारिता और सास्कृतिक ज्ञान का परिचायक है।

जेन्सेन ने अमेरिका मे अपने काफी मित्र और प्रशसक बनाए। उनके स्वदेशवासी अमेरिकावासी तो उनके पक्के भक्त बन गए। उन्होने यह चित्रण भी किया कि उनके स्वदेशवासी विदेश जाकर और विभिन्न सस्कृतियो के सम्पर्क मे आकर किस प्रकार 'आधुनिक' बन गए है। उनकी 'लम्बी यात्रा' मे नृवश-विज्ञान का अच्छा वर्णन है। उसका ऐतिहासिक क्रम भले ही उतना वैज्ञानिक न हो, पर उनकी अभिव्यक्ति बडी ही शक्तिशाली है।

इनके यात्रा-वर्णन के बारे मे आलोचको का कहना है कि उनपर डार्विन का ही नही, डेनियल डिफो के 'राबिन्सन क्रूसो' और किप्लिग के 'जगल-बुक' का भी प्रभाव पडा है। इनका 'माइथ' ('मनगढन्त') उपन्यास इस प्रकार के विचारो का केन्द्र है।

जेन्सेन का प्रभाव डेनिश भाषा पर विशेष रूप मे पडा क्योकि उन्होने कुल मिलाकर ७० पुस्तके लिखी और उनके लेखो की तो कोई सख्या ही नही आकी जा सकती। उनके अनेक विचार ऐसे है जिनके बारे मे मतभेद की गुजाइश है, परन्तु उनकी शक्तिशाली अभिव्यक्ति से कोई इन्कार नही कर सकता। उनकी अधिकाश रचनाओ मे

डारविन के विकासवाद के सिद्धान्त का समर्थन है। इस सिद्धान्त का वर्णन उन्होने विश्व के सौन्दर्य के साथ, जिसमे स्त्री का सौन्दर्य भी सम्मिलित और सन्निहित है, किया है। धरती से उनका अगाध प्रेम उनकी रचनाओ द्वारा अभिव्यक्त होता है --प्रेम की मृदुल शक्ति और सूक्ष्मतर जीवन-सौन्दर्य का वर्णन उन्होने जीवन के प्रति श्रद्धा और गहरे आदर्श के साथ किया है। श्रमजीवियो की प्रशसा की झलक उनकी रचनाओ के कथानको मे प्राय देखने मे आती है।

गेबरीला मिस्त्राल

१ ४५ ई० का पुरस्कार चिली की गैब्ररीला मिस्त्राल को मिला। इनका वास्तविक नाम लुसीला गोडाय है। इनका जन्म विकुना (चाइल) मे १८८६ ई० मे हुआ और देहान्त १९५७ ई० मे। इनके गीति-काव्य लैटिन अमेरिका मे आदर्श प्रेरणा भरते रहे है और उनके पाठक और कद्रदान वहा अब भी बहुत बडी सख्या मे मौजूद हैं।

मिस्त्राल के गीति-काव्यो मे सशक्त भावनाए भरी है। दक्षिण अमेरिका की यह पहली ही साहित्यकार थी, जिन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त करने का सम्मान मिला। इनको जिस रचना पर पुरस्कार प्राप्त हुआ, उसका नाम है—'मृत्यु-गीत'। यह रचना १९१४ ई० मे ही प्रकाशित होकर नाम पा चुकी थी। 'डोलोक' उनकी दूसरी रचना है जो १९२२ ई० मे निकली। यह भी एक दु खान्तपूर्ण काव्य-रचना थी। उनकी 'टर नूरा' (१९२४ ई०) और 'ताला' मे मानव-हित की विशालता का दिग्दर्शन कराया गया है। बच्चो और दलितो के प्रति मिस्त्राल की रचनाओ मे गहरी सहानुभूति पाई जाती है। उनकी गद्यात्मक रचनाओ की भाषा पर उनकी अपनी गहरी छाप है और उनमे प्रबल सवेदनशीलता देखी जाती है। बच्चो के लिए इन्होने जो कुछ लिखा है, उससे मातृत्व का वात्सल्य टपकता है। उनकी कविताओ के अनुवाद अग्रेज़ी, फ्रेंच, इटालियन, जर्मन और स्वीडिश भाषाओ मे हुए है। उनकी कविता सरल, प्रसादगुण-पूर्ण और साथ ही भावनाओ से ओत-प्रोत है, पर इनका गद्य भी कुछ कम नही है। उनकी चुनी हुई रचनाओ का चिलियन सस्करण सात जिल्दो मे १९५४ ई० मे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद १९५७ ई० मे हैम्पस्टीड (न्यूयार्क) मे इनका देहान्त हो गया।

हरमन हेस

१९४६ ई० का नोवल पुरस्कार स्विट्जरलैण्ड के प्रसिद्ध साहित्यकार हरमन हेस को मिला। हेस का जन्म २ जुलाई, १८७७ ई० मे जर्मनी मे हुआ और इनकी रचनाओ मे मानवीय आदर्शो की गुणात्मक शैली का सुन्दर समावेश है। हेस एक कवि के रूप मे भी प्रसिद्ध है।

हेस ने कितने ही उपन्यास लिखे है। इन्होने भारत की यात्रा की और उसका वर्णन भी लिखा है। १९४२ ई० मे उनकी कविताओ का सग्रह प्रकाशित हुआ है।

हरमन हेस के उपन्यासो और गेय गीतो मे उनके निजी जीवन की काफी झलक है। उन्होने जीवन मे जो सघर्ष किए थे और उन्हे जिस तरह आत्मिक चिन्तन करना पडा था उसका वर्णन उनकी रचनाओ—'पीटर कामेनजिद (१९०४ ई०) और 'अण्टर्म रैड' (१९०५ ई०) मे प्रकाशित हो चुका है। इनकी रचनाओ पर शॉपेन हार और नीत्शे का प्रभाव पडा है। यही नही, अध्यात्मिक उपदेष्टा सेण्ट फासिस असीसी और गौतम बुद्ध का भी इनपर स्पष्ट प्रभाव पडा है। चीन के प्राचीन तत्त्वज्ञान से भी इन्होने बहुत कुछ प्रेरणा प्राप्त की है। इनकी रचनाओ मे गहरी तात्त्विक मीमासा और परिणामगत ससार के प्रति निराशा के भाव भरे है।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद हरमन हेस के विचार काफी बदले है जिनकी कही-कही इनके उपन्यासो मे चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति है। उनकी रचनाओ मे अधिक द्रष्टव्य है—'डिमीन' (१९१९ ई०), 'फ्लिगसोर लेटजटर समर' (कहानी-सग्रह, १९२० ई०), 'सिद्धार्थ' (१९२२ ई०), 'डेर स्टेपेन वुल्फ' (१९२७ ई०), 'नार्जिस उण्ट गोल्डमण्ड' (१९३० ई०), 'निउ जेडिस्टे' (१९३७ ई०) और 'डैस ग्लासपरलेसमील' (१९४३ ई०)।

हेस स्विट्जरलैण्ड मे रहने लगे थे और १९४६ ई० मे जब उन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो वे वही थे।

आन्द्रे जीद

१९४७ ई० का नोबल पुरस्कार आन्द्रे जीद को मिला। आन्द्रे जीद एक ऐसे फ्रासीसी लेखक है जिन्हे फ्रास के बाहर लोग अच्छी तरह जानते है। किन्तु सच यह है कि फ्रास मे नोबल पुरस्कार मिलने तक उनका विशेष सम्मान नही हुआ। इसका कारण सम्भवत: यह था कि फ्रासीसी लोग आन्द्रे जैसे नैतिक दृष्टिकोणवाले और उपन्यास के द्वारा कोई न कोई सन्देश देने का प्रयत्न करनेवाले को विशेष महत्त्व नही देते।

आन्द्रे जीद का जन्म २२ नवम्बर, १८६९ मे हुआ था। इनके पिता पॉल जीद पेरिस विश्वविद्यालय मे कानून के अध्यापक थे। वे बडे धार्मिक थे और अपनी उन वृत्ति को ही उन्नति का कारण मानते थे।

आन्द्रे जीद का विद्यार्थी-जीवन कोई बहुत अच्छा नही रहा। स्कूल के दिनो मे उन्हे सगीत का बडा शौक हो गया। उन्हे स्नायविक बीमारी भी हो गई। वे परीक्षा मे भी असफल रहे। अन्त मे किसी प्रकार स्कूल के दिन तो पूरे कर लिए, पर कॉलिज मे पढने की नौबत न आई।

आगे पढाई न कर सकने के कारण उनके सामने यह प्रश्न था कि आखिर वे करे तो क्या करे। सगीत को पेशा बनाना उनके वश का नही था। इसमे वे लेखक बनने के लिए कृत-सकल्प हो गए। १८९१ ई० मे उन्होने अपनी पहली पुस्तक अपने ही खर्च पर छपाई, किन्तु वह इतनी अशुद्ध छपी कि रद्दी कागज के भाव पर बिकी। पुस्तक छपी उप-नाम से थी इसलिए उसमे उनकी प्रतिष्ठा बनने या बिगडने का कोई प्रश्न नही था।

किन्तु इससे जीद ने साहस नही छोडा। १८९१ ई० मे एक दूसरी पुस्तक 'ट्रेट दु नारसिस' प्रकाशित की। इस पुस्तक की भी कोई ख्याति न हुई और १८९३ ई० मे इनकी 'वायज यूरियन' (काल्पनिक लोक की माला) प्रकाशित हुई और उसी वर्ष 'ले तेतेतिव एमोर्स'।

इसी दौरान जीद ने उत्तर अफ्रीका की यात्रा की। उनके साथ उनका मित्र पाल एलबर्ट लारेन्स भी था जो चित्रकला का एक विद्यार्थी था। इस यात्रा मे उन्होने अपने नित्य के बाइबिल-पाठ का क्रम छोड दिया। जीद मे कुछ बुरी आदते थी। जीद वहा बीमार पड गए और उनकी बीमारी का हाल उनके दोस्त ने उनके मा-बाप को लिख भेजा। जीद की मा से न रहा गया और वे अपने बेटे को सम्भालने के लिए बिस्क्रा

के लिए रवाना हो गई। जीद का स्वास्थ्य कुछ सुधर जाने पर उनकी मा फ्रान्स लौट आई और दोनो दोस्त सिसली, रोम, फ्लोरेन्स तथा इटली के अन्य शहरो की सैर के लिए चले गए।

इटली से लौटकर पेरिस आने के बाद जीद ने 'पालुदिस' नामक उपन्यास लिखा।

१८९४ ई० मे जीद फिर अफ्रीका गए। इस बार वे अकेले थे। वहा वे उसी होटल मे ठहरे जिसमे उनके पूर्वपरिचित आस्कर वाइल्ड और लार्ड अलफ्रेड डगलस ठहरे थे। उन्होने विस्का मे उपन्यास लिखना आरम्भ कर दिया, पर १८९५ ई० मे उनकी मा ने उन्हे वापस बुला लिया। इसके बाद उनकी मा का देहान्त हो गया। इसका जीद पर बडा असर पडा और वे अपने अफ्रीका मे किए गए कुकृत्यो पर पछताए। इसके पश्चात् उन्होने 'साउल' नामक नाटक लिखा जिसमे उन्होने आत्मपतन का अच्छा दिग्दर्शन किया। इसके बाद जीद ने अपनी चचेरी बहन से शादी कर ली, यद्यपि उनके सभी सम्बन्धी इसके विरुद्ध थे।

जीद अपनी पत्नी को साथ ले छ महीने की लम्बी यात्रा पर गए और स्विट्‌जरलैंड, इटली और उत्तर अफ्रीका हो आए। रोम मे जीद को फोटोग्राफी का शौक जरूर हुआ।

१९९६ ई० मे फ्रान्स लौटने के बाद जीद ला रोक-बैंगनार्द के नगराध्यक्ष चुन लिए गए। उस समय उनकी अवस्था केवल २६ वर्ष की थी। १९१४ ई० मे उन्होने 'सुवेनीर-द-ला-कोर-द-असिसेज' नामक पुस्तक लिखी, जो उनके अपने अनुभव पर आधारित थी। १९२७ ई० मे उन्होने 'वायस ऑफ कागो' और 'रिटूर टु याद' दो यात्रा पुस्तके लिखी जिनमे उन्होने फासीसी उपनिवेशवाद की निन्दा की और इन देशो के मूल-निवासियो के प्रति उनके दुर्व्यवहार की तीव्र आलोचना की। इस राजनीतिक करवट ने उनकी प्रतिष्ठा बढा दी और उनका बाहरी जीवन सुखी प्रतीत होने लगा।

१८९७ ई० मे इनका 'ले नाडरिटर्स टेरेस्ट्रीज' प्रकाशित हुआ, पर उसकी केवल ५०० प्रतिया बिकी। इसके बाद छोटी-बडी कुछ और कृतिया प्रकाशित हुई, पर १९०२ ई० मे 'ले ह्म्मार लिस्ट' के प्रकाशित होने तक इनको ख्याति नही मिली। 'ला पोटी दट्रा इट' इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक थी जो १९१९ मे प्रकाशित हुई—इनकी 'सिम्फोनी पैरस्पेराल' को भी अच्छी ख्याति मिली।

अपने यात्रा-केन्द्र 'उन एट्री ई फुइट' पर भी इन्होने पुस्तक लिखी। १९१४ ई० मे उनकी 'ये केव्स द विटिकन' धारावाहिक रूप मे 'नावेल रिव्यू फ्रान्सीस' मे प्रकाशित हुई।

१९१४ ई० मे प्रथम महायुद्ध छिड जाने पर जीद सेना मे भर्त्ती होने के योग्य न होने के कारण रकेलोजियम के शरणार्थियो की सहायता का काम करने लगे। १९१६ ई० मे वे लौट आए।

जीद की अन्य रचनाओ मे 'कारीडन' उल्लेखनीय है, यद्यपि इसमे लेखक ने

प्रकारान्तर से अपनी विपरीत यौन-सम्बन्ध की आदत की सफाई दी है। इसको लेखक महोदय अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना कहते थे, यद्यपि आलोचकों ने उनपर बहुत-सी फब्तिया कसी। उनकी आत्मकथा जिसका फ्रेंच नाम 'सी-ले-ग्रेन-ने-मुर्त' है, उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओ मे है। उससे उनकी मनोवृत्ति का खाका सामने आ जाता है। उन्होंने अपनी अफ्रीका मे किए गए दुष्कृत्यों का वर्णन बहुत स्पष्ट रूप मे और प्रशसात्मक ढग से किया है। यह १९२६ ई० मे प्रकाशित हुई। इनका 'ले फाक्स-मोनायूर' १९६२ ई० मे प्रकाशित हुआ जिसे आन्द्रे जीद 'मेरा पहला उपन्यास' कहा करते थे। इसके बाद ही उनकी रचनाए अधिक नही पढी गई। 'लडकोले-दि-फ्रान्स' 'रॉबर्ट' और 'जेनेवीव' उनकी ऐसी रचनाए हैं जो अपनी पत्नी पर, अपने-आपपर और अपनी गुप्त पुत्री पर (जो नाजायज सम्बन्ध से रूस मे पैदा हुई थी) लिखी। बाद मे आन्द्रे जीद कम्युनिस्ट हो गए और रूस की भी सैर कर आए। दूसरे महायुद्ध के दरम्यान वे फ्रान्स मे ही रहे, केवल कुछ दिनो के लिए उत्तरी अफ्रीका गए जहा से उन्होंने 'लआर्क' के प्रकाशन मे सहयोग दिया। 'फार्नल' को पूरा करने के लिए वे बराबर लिखते रहे। उनकी 'थामस' १९४६ मे पहले सयुक्त राष्ट्र अमेरिका से फ्रेंच मे निकली। लडाई बन्द होने के बाद इन्हे नोबल पुरस्कार मिला। उसके बाद तो इन्हे आक्सफोर्ड से साहित्य-डॉक्टर की उपाधि भी मिली।

इनकी मृत्यु पेरिस मे १९ फरवरी, १९५१ ई० मे हुई। जीद की रचनाओ मे 'ले रिट्रर-डि-लेन फेण्ट प्रोडीग' बहुत पढी जाती है। यह १९०७ ई० मे प्रकाशित हुई थी। इसमे उन्होंने एक उडाऊ भूत की कहानी अपने विशिष्ट ढग से लिखी है। सब कुछ गवाकर भी उसको कोई पश्चात्ताप नही होता, परन्तु निराशा और विरोध के रुख मे आकर वह समझता है कि वह सफलता के निकट पहुचकर उससे वचित करके कष्ट मे ढकेला गया है। वह अपने छोटे भाई को भी अपने रास्ते पर लगाता है और उसके सफल होने पर उसकी सहायता प्राप्त करने की आशा में जीता है।

'ले इम्मारलिस्ट', 'ला सिम्फानी पैस्टोरेल', 'ला पोर्टइट्रू इट्राइट' और 'एट नक पैनेट इन दे' आदि रचनाए उनके प्रेम और घर-ससार की विफलताओ की प्रतीक हैं।

'फाउक्स-मोन्याउर्स' उनकी एक विस्तृत रचना है। उसकी कहानी एक उपन्यास-कार के जीवन से सम्बन्ध रखती है जो अपने चरित्र-चित्रण को वास्तविक जगत् का प्रतीक समझता है। यह कथा भी आन्द्रे जीद के व्यक्तिगत जीवन को ही चित्रित करती हैं।

जीद की अन्य रचनाए अनेक होने पर भी ऐसी नही है जिन्हे प्रथम श्रेणी के उपन्यासो मे रखा जा सके। इसलिए यहा उनका सक्षिप्त उल्लेख कर देना ही पर्याप्त होगा।

'ले केन्स-डु-विटिकन' को हास्यरस का उपन्यास माना जाता है। 'इसाबेले' मे रोमास-मात्र है। 'लोल-डिस-फीम्स-राबर्ट-जेनेवीव' भी उनकी सामान्य रचनाओ मे है।

परिपक्व अवस्था मे उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसमे से 'थामस' का सबसे अधिक

स्वागत हुआ है। इसके कारण ही उनकी गणना फ्रेंच साहित्य के उत्कृष्ट साहित्यिको मे हो गई। इस रचना मे सौन्दर्य का ही परिदर्शन नही होता, बल्कि एक ऐसे अनुभव का परिचय मिलता है जो आज भी ज्वलन्त सत्य पर आधारित प्रतीत होता है।

जीद ने अपनी रचनाओ मे अपने चारित्रिक-व्यवहार का औचित्य यह चित्रित और प्रदर्शित करके किया है कि जो 'असामान्य' है वही 'स्वाभाविक' है। इस सफाई का कारण यह भी है कि कही-कही जीद की रचनाए अपने विशिष्ट विषय के कारण ऐसी अरुचिकर हो उठती है कि पाठक उसे 'अपठनीय' कहकर छोड देता है।

उनकी 'सीले ग्रेन ने म्यूर्त' उनकी एक विलक्षण आत्मकथा है और उनकी डायरी के पृष्ठ उन्हे समझने के लिए अवश्य पढे जाने चाहिए।

टॉमस इलियट

१९४८ ई० मे नोवल पुरस्कार प्राप्त करने के वहुत पहले ही इलियट सारे अमेरिका मे एक अच्छे और नई पीढी के कवि के रूप मे विख्यात हो चुके थे। १९३१ ई० मे उन्होने 'दि वेस्टलैंड' (वीरान) के नाम से एक ऐसी कविता लिखी जिसकी आलोचना और चर्चा व्यापक रूप मे हुई। सवसे पहले जव यह कविता प्रकाशित हुई तो न्यूयार्क के 'हेराल्ड ट्रिव्यून' ने उसकी कटु आलोचना करते हुए उसे 'नये युग की प्रवचना' कहा। उसके पहले इलियट का कोई विशेष नाम नही हो पाया था। क्लाइव वेल नामक प्रसिद्ध अमेरिकन आलोचक ने इलियट को 'वहुत चालाक लेखक' कहकर प्रकारान्तर से उनकी रचनाओ का उपहास किया था।

टॉमस स्टेन्स इलियट अग्रेजी के उन साहित्य-स्रष्टाओ मे से है जिन्होने काव्य की रुचि उत्पन्न करने मे युग-प्रवर्त्तक का काम किया है। उन्होने ऐसी कविताए लिखी है जो सगीत के ही समान सीधे हृदय को वेध देती है।

इलियट के पूर्वजो मे एक का नाम एण्ड्रयू इलियट था जो सत्रहवी शताब्दी मे अमेरिका के समरसेट प्रदेश से मैसाचुसेट्स आ बसे थे। वे व्यापारी थे, पर वडी ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे जिससे वे पादरी के रूप मे प्रसिद्ध हो गए। १८३४ ई० मे इलियट के पितामह मिसूरी प्रदेश के सेण्टलुई स्थान मे जा बसे जहा उन्होने पहला यूनिटेरियल गिरजाघर स्थापित किया। ये व्यापारी होते हुए भी धर्म और शिक्षा के प्रति ऐसा अनुराग रखते थे कि आगे चलकर वाशिगटन विश्वविद्यालय के सस्थापक वन गए और उसके कुलपति के पद पर आसीन रहे। १८६८ मे उन्होने बोस्टन चार्लोट स्टर्न्स नाम की लडकी से विवाह किया। इलियट अपने परिवार की अन्तिम और सातवी सन्तान थे। उनका जन्म २६ सितम्बर, १८८८ ई० मे सेण्टलुई मे हुआ और वे सत्रह वर्ष तक वही रहे। वहा वे नदी के तट पर घूमते और उसके सुन्दर दृश्य से अनुप्राणित होते थे। उनकी कविताओ पर विशाल नदी का सुन्दर प्रभाव देखा जाता है। प्राकृतिक दृश्यो का वर्णन उनकी रचनाओ मे स्थान-स्थान पर मिलता है।

स्कूल की पढाई समाप्त कर उन्होने कॉलेज जाने की तैयारी की और दूसरे ही वर्ष हार्वर्ड चले गए, जहा से १९०९ ई० मे इन्होने कॉलेज की पढाई समाप्त कर उपाधि प्राप्त कर ली। इसके पश्चात् वे अध्यापन-कार्य करने लगे और समाज मे

'लजीली प्रकृति के युवक' प्रसिद्ध हो गए। इसके शीघ्र ही बाद ये आक्सफोर्ड गए और इग्लैंड ही मे बस गए। १९१५ मे इन्होने वीनियन हे नामक लडकी मे विवाह किया और इसके बाद स्कूल मे अध्यापन-कार्य करने के कुछ ही समय पश्चात् लन्दन के एक बैंक मे काम करने लगे। परन्तु कुछ भी हो, उनकी साहित्यिक प्रतिभा कही छिपने-वाली नही थी, इसलिए १९२३ ई० मे वे 'दि क्राइटेरियन' पत्र के सम्पादक हो गए। १९२७ ई० मे वे ब्रिटिश प्रजा बन गए। फिर तो वे लन्दन के साहित्य-क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गए। इस प्रकार एक अमेरिकन युवक लन्दन के भिन्न वातावरण मे अपने को खपाने की पूरी क्षमता दिखा सका और उसकी साहित्यिक प्रतिभा चमक उठी।

उनकी रचनाए तो अनेक और विभिन्न विषयो की है, पर कुछ ऐसी है जिनसे उनके गुणो का और साथ ही प्रगतिशीलता का पता चल जाता है। अपनी सास्कृतिक परम्परा को न भूलते हुए भी वे जहा और जिस समाज मे गए वही उसका पर्यवेक्षण उन्होने सुन्दर रीति से किया। अपना अमेरिकीपन न छोडते हुए भी वे दूसरे और विलग समाज मे घुल-मिल जाने की क्षमता रखते थे। 'कजिन नैन्सी' इसका एक नमूना है। उनके विश्वास-रक्षक 'मैथ्यू और वाल्डो' रचना भी ऐसी ही है। वास्तव मे इलियट एक ऐसे रहस्यपूर्ण अमेरिकन है जो इग्लैड मे बसकर अन्तत अग्रेज-से हो गए है और कैथो-लिक अर्थात् पुराने ढर्रे के आग्ल-ईसाई भी। फिर भी इग्लैड मे वे एक ऐसे विदेशी की भाति रहते है जो अग्रेजी भाषा लगभग पूर्णत शुद्ध बोलता है। उनकी रचनाओ से उनके बुद्धि-वैभव का पता लगता हे। उनकी प्रकृति-सम्बन्धी एक रचना की एक बानगी देखिए

प्रकाश कैसे फैलता है—
खुले मैदान मे—गलियो को छोडकर
(वृक्ष की) शाखाओ से छनकर—
अपगाह्य की अधियारी घिरी छाया मे—
उष्ण धुधले (वातावरण) मे—
प्रकाश की किरणे पूरे पत्थर से टकराकर
इस वातावरण मे लीन हो जाती है।

कवि इलियट की रचनाए पहले हार्वर्ड की 'ऐडवोकेट' पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी। उन्होने अपने एक लेख मे लिखा है "कविता का विषय व्यक्तित्व का प्रकाशन नही, उसका गोपन या उससे मुक्ति होना चाहिए—कविता चित्त के अन्तर्वेग का, उसकी भावनाओ का सगोपनपूर्ण मोड नही, उसकी मुक्ति है। व्यक्तित्व और चिन्तन के अन्तर्वेग या भावना को पूर्ण व्यक्ति ही जान सकता है। ऐसा मनुष्य ही जान सकता है कि इनसे मुक्ति का—बचने का अर्थ क्या है। बात यह है कि भावनाओ मे विद्रोह नही आना चाहिए—उनपर नियत्रण होना चाहिए।

१९३१ ई० मे केवल चालीस वर्ष की अवस्था मे इलियट की 'दि वेस्ट लैंड'

कविता प्रकाशित होने पर आलोचक एडमड विलसन ने 'ऐश वेन्सडे' पत्रिका मे लिखा कि केवल चालीस वर्ष की अवस्था मे कठोर कार्य के समान यह रचना नही करनी चाहिए थी, पर इलियट ने इसमे गर्व का अनुभव किया और लिखा कि "चालीस वर्ष का बच्चा कडे व्यक्तियो के समान परिपक्व और परिपूर्ण रचना कर दिखाए, यह तो गौरव की बात है।"

इलियट स्वय अपने बारे मे एक कविता मे लिखते है

इलियट से मिलना कैसा असुखकर है !
उसका पादरी का-सा चेहरा,
उसकी तनी भौहे—
उसका कपट-विनययुक्त मुह
उसकी सुन्दर सुनियन्त्रित बाते—
'अगर' 'मगर' और 'शायद' से भरे—ऐसे इलियट से मिलना —
कैसा असुखकर है—
फिर चाहे उसका मुह खुला हो या बन्द ।

उनकी एक और कविता का नमूना लीजिए

रिमझिम वर्षा होती है—
चिमनी की टूटी नाली पर।
और सडक के उस कोने पर—
बेचारा एकाकी मानव--
घोडा-गाडी लिए खडा है—
और अश्व अपनी टापो से
उसी सडक को पीट रहा है।
(फिर क्षण-भर मे) दीप प्रकाशित हो उठता है।

उनकी फुटकर कविताओ मे निम्नलिखित रचना अधिक सजीव है ·

चाह नही है स्वर्गलोक की—
क्योकि वहा सर फिलिप मिलेगे,
और कारिआकानस जैसे
वीर नरो से बाते होगी—

आगे चलकर वे फिर कहते है

नही जानता खुदा कौन है,
किन्तु हमारी यह श्रद्धा है—
यूरी नदी हमारी जो है
वह जनार्दन का स्वरूप है।

'खोखला आदमी' शीर्षक कविता मे वे कहते है

है दुनिया का अन्त यही तो—
शोर नही, दिल थाम सिसकना।

'ऐश वेन्सडे' की एक कविता है

नही जानते, नही समझते
अभिनय भी तो दुख है,
कष्ट झेलना दुख उठाना
यह भी तो अभिनय है।
अभिनेता को कष्ट न होवे --
रोगी यदि न दुख से रोवे,
किन्तु सदा ये दोनो रहते
अभिनय औ तरग मे डूबे।

'गिरजाघर मे खून' (मर्डर इन ए कैथेड्रल) मे उन्होने कहा है:

सहसा समृद्धिवान जो बनता,
चढता उच्च शिखर पर—
उसका दर्प चूर्ण हो जाता,
जब सकट आ जाता।
एक व्यक्ति कुलपति बन जाता—
पाता नरपति से सम्मान,
उसका गुण ही उसे बनाता—
वही उसे निष्पक्ष बनाता—
दर्प दयालु उसे कर देता—
यदि वह है सच्चा प्रभुभक्त!

प्रकृति-वर्णन मे तो कवि ने कमाल कर दिखाया है। मध्यशीत ऋतु का वर्णन करते हुए वह कहता है

मध्यशीत-ऋतु सदा अनोखी—
सूर्य ढले तक गीली धरती
छोटे दिन, कुहरे से पूरित
सूर्यदेव मध्यम प्रकाश से
हिम-सरोवरो और खाइयो
को देते है क्षीण प्रकाशन—
देता शीतभरे हृदयो को—
क्वचित् उष्णिमा और स्पन्दन—
यही वर्ष की धुधली ऋतु है।

भूमि गन्ध से हीन हो गई
सभी चराचर जीव सिकुडकर
जैसे उसमे समा गए हैं
सब कुछ जमकर ठोस बन गया।

× × ×

किन्तु वसन्त निकट आ पहुचा—
बर्फ गली—सूरज फिर चमका और झाडियो ने ली अगड़ाई
देखो सहसा पल्लव दल से
यह सुन्दर प्रसून खिल आया
और सुसौरभ से जगतीतल—
को फिर से इसने महकाया।

इलियट की जीवन-दर्शन-सम्बन्धी एक कविता बहुत प्रसिद्ध है 'मेरे अन्त मे ही मेरा आदि है' (इन माइ एड इज माइ बिगिनिग) जो उनकी अनन्त और अनन्य कालदर्शक ऐहिक भावना का परिचायक है।

अमेरिका मे गावो के किसान जब फसल तैयार होने पर नाचते-गाते और आनन्द मनाते है, उस अवसर का वर्णन इलियट ने स्पष्ट और खुले रूप मे इस प्रकार किया है

तालमेल के साथ नाचते—
औ' सजीव ऋतु को ये है अधिक सजीव बनाते।
नील गगन, नक्षत्र चमकते,
प्रचुर दूध गौओ से मिलता—
शस्य-श्यामला धरती ने है
प्रचुर अन्न-भण्डार भराए—
नर-नारी नित प्रेम-मुग्ध हो
अब स्वच्छन्द मौज करते है
चौपाये भी इन्ही दिनो—
मस्ती मे आकर खाते-पीते
और अन्त मे खाद बनाकर—
अपना जीवन पूरा करते।

इस प्रकार इलियट ने सासारिक और प्राकृतिक दोनो ही विषयो पर सुन्दर रचनाए की है और उनकी कविताए प्रसादगुण सम्पन्न होने के कारण ससार के अग्रेजी समझनेवाले प्रत्येक देश मे चाव से पढी जाती है।

विलियम फॉकनर

१९४९ ई० का साहित्यिक नोवल पुरस्कार विलियम फॉकनर को प्राप्त हुआ। पुरस्कार लेने के समय उन्होने जो भाषण किया था, वह स्वय एक उच्च कोटि का साहित्य था। वास्तव मे फॉकनर इस शताब्दी के उच्चतम लेखको मे गिने जाते है और उनकी साहित्य-सेवा अपनी पीढी और युग के अन्य साहित्यिको से भिन्न और निराली है। यद्यपि इन के साहित्य की कद्र बहुत विलम्ब से हुई, पर अन्तत उन्हे सम्मान मिला ही।

विलियम फॉकनर मिसीसिपी, दक्षिण अमेरिका के निवासी थे। इनकी रचनाओ मे वहा की किम्वदन्तियो का सुन्दर सामजस्य है। फॉकनर भूतकाल के गौरव का सम्मान करते थे और कहा करते थे कि भूतकाल कभी मरता नही, वह भूत होता ही नही। अपने एक पात्र के मुह से उन्होने यह वात कहलवाई भी है।

फॉकनर एक उपन्यासकार के रूप मे प्रसिद्ध हुए है। उनके पितामह का जन्म टेनेसी मे हुआ था। बाद मे उनका परिवार मिसूरी आ गया। उनके पिता की मृत्यु यही हुई थी। उस समय विलियम फॉकनर किशोरावस्था मे ही थे और उन्हीपर परिवार का भार आ पडा।

उनके प्रारम्भिक जीवन की घटनाओ मे एक यह है कि उन्होने किसी बात पर अपने छोटे भाई को इतना पीटा कि घरवालो के डर के मारे घर मे पैदल भागकर कई सौ मील चले और रिप्ली पहुचे जहा उनके चाचा रहते थे। वहा मालूम हुआ कि उनके चाचा जेल मे है। इससे वे घबराकर एक सराय के वाहर वैठकर रोने लगे और एक छोटी लडकी ने उन्हे ढाढस वधाकर मकान-मालिक से उन्हे उस समय के लिए खाने-रहने का प्रवन्ध करा दिया। पीछे जब वे लौटकर अपने घर आए और बाद मे विवाह का अवसर आया तो उन्होने रिप्ली जाकर उस लडकी को ही अपनी जीवन-सगिनी बनाया।

उनके चाचा की राम-कहानी भी निराली ही थी। वे जेल मे कानून पढते थे और जिस मुकदमे मे फसे थे, उसमे अपनी वकालत स्वय करते थे। बाद मे वे जब जेल से छूटे तो उन्होने अपने कानून के अध्ययन को पूरा कर लिया और उनमे परीक्षा देकर वकील वन गए। पीछे वे रिप्ली मे ही वकालत करने लगे। कुछ समय बाद उनकी वकालत ऐसी चमकी कि वे जज नियुक्त हो गए। बाद मे विलियम फॉकनर भी रिप्ली जाकर वकालत पढने के लिए अपने चाचा के दफ्तर मे वैठने लगे। वहा मैकनॉन नामक

एक अभियुक्त को उन्होने पकडवाया जिसने कुल्हाडे से एक समूचे परिवार की हत्या उसका घर लूटने के लिए कर दी थी। मैकनॉन की सारी जीवन-गाथा सुनकर फॉकनर ने उसका उपयोग अपनी एक कहानी की वस्तुकथा के लिए किया। मैकनॉन एक बार जीते जलाए जाने मे भी भागकर बच निकला था।

विलियम फॉकनर ने वकालत पढी और वकील भी बन गए। पर उनकी प्रवृत्ति लेखन-कार्य की ओर विशेष थी इसलिए पहले उन्होने मैकनॉन की जीवन-गाथा को ही कथा का आधार बनाया। अन्त मे मैकनॉन को अपने जघन्य कृत्यो के लिए फासी की सजा हुई, पर इसी बीच फॉकनर ने उसकी जीवन-गाथा पूरी लिखकर छपवा ली थी; इसलिए जिस दिन उसे फासी हुई उस दिन उस पुस्तक की हजारो प्रतिया हाथो-हाथ बिक गई जिससे फॉकनर को एक हजार डालर से अधिक का मुनाफा हुआ।

जब दक्षिणी अमेरिका का युद्ध (मैक्सिकन वार) छिडा तो फॉनकर उसमे भाग लेने को तैयार हो गए और फर्स्ट लैफ्टिनेंट के दर्जे पर नियुक्त होकर टिप्पा गए। वहा वे अपने सैनिक-कर्तव्य मे लगे हुए घायल हो गए जिससे उन्हे शारीरिक अक्षमता का जेबखर्च मिलने लगा।

मैक्सिको का युद्ध समाप्त हो जाने पर वे रिप्ली लौटे और वहा वकालत करने लगे। वहा उनपर एक गुण्डे हिण्डमैन ने व्यक्तिगत शत्रुता के कारण गोली चलाई और उसके दो निशाने व्यर्थ गए। तीसरी बार भी उसने प्रयत्न किया, पर इससे पहले ही फॉकनर ने एक कटार से उसका काम तमाम कर दिया। इस अभियोग मे फॉकनर जब जेल मे थे, उन्ही दिनो उनकी पत्नी के लडका पैदा हुआ जिसका नाम जॉन रखा गया।

फॉकनर के मामले मे जूरी ने यह निर्णय दिया कि उन्होने आत्मरक्षा के लिए प्रहार किया था अत. वे निर्दोष छूट गए। परन्तु जेल से निकलते ही उनके दुश्मन के भाई हिण्डमैन ने उनपर आक्रमण कर दिया। फॉकनर ने उसका पक्ष लेने वाले मॉरिस को उसी समय गोली से उडा दिया। फिर मामला चला और फिर आत्मरक्षा के आधार पर वे दोषमुक्त हो गए। अन्त मे हिण्डमैन-परिवार वहा से अर्कन्सास चला गया। इस बीच फॉकनर ने दूसरा विवाह कर लिया।

अमेरिका मे दूसरी बार गृहयुद्ध छिडने पर फॉकनर उसमे लडने भी गए। युद्ध समाप्त होने पर उन्होने कई पुस्तकें लिखी। उन्होने कुछ दिन तक नई रेलवे लाइन पोण्टोटोक और मिडिलटन के बीच खोलने का ठेका लिया, पर बाद मे उनके साझी-दार अलग हो गए तो उनका यह काम ठप्प हो गया। एक बार ये व्यवस्थापिका-सभा के लिए चुनाव मे भी खडे हुए और उन्होने अपने प्रतिपक्षी थरमाण्ड को हराया। अपने 'अपराजित' उपन्यास मे उन्होने इन घटनाओ का वर्णन अनोखे ढग से किया है।

विलियम फॉकनर का जन्म २५ सितम्बर, १८९७ ई० मे न्यू अलबानी मे हुआ था। स्कूल के दिनो मे वे एक अच्छे विद्यार्थी माने जाते थे। बचपन मे वे कहानिया बढा-

चढाकर कहते और अपने साथी विद्यार्थियो को आश्चर्यचकित कर दिया करते थे। हाईस्कूल के अध्यापको के लिए वे जरा कडे विद्यार्थी सिद्ध हुए। फुटबाल खेलते समय एक बार उनकी टाग मे गहरी चोट लगी। दसवी कक्षा मे पहुचते ही वे स्कूल छोडकर अपने पितामह के बैक मे काम करगे लगे।

विलियम को वहुत थोडी अवस्था से ही लिखने का शौक था। उन्होने पहले कुछ पत्र भी लिखे। सत्रह वर्ष की अवस्था मे उन्होने कविता लिखना प्रारम्भ किया। एल-निवासी फिलिपस्टोन का उनपर वडा प्रभाव पडा। स्टोन उनसे चार वर्ष वडा था और वह उनकी कविता और गद्य मे सशोधन किया करता था।

जव १९१८ ई० मे सयुक्त राज्य अमेरिका प्रथम विश्वव्यापी महायुद्ध मे सम्मिलित हुआ तो फॉकनर ने फिर सेना मे जाने का विचार और प्रयत्न किया। पहले तो वे एक शस्त्रास्त्र के कारखाने मे काम करने लगे। पीछे इग्लैण्ड जाकर अग्रेजो के लिए सैनिक भर्ती करने मे लग गए। इसके बाद वे हवाई उडान का अभ्यास करने लगे। युद्ध तो समाप्त हो गया और सेना भी भग हो गई, पर उन्हे आनरेरी सैकिण्ड लैफ्टिनेट का पद मिल गया। फिर तो वे लिखने के काम मे ही लग गए। उन्होने इस बीच अमेरिकन रग-ढग छोडकर अग्रेजी शिष्टाचार अच्छी तरह सीख लिया और वे अग्रेजो की ही तरह अग्रेजी बोलने के अभ्यस्त हो गए।

फॉकनर का पहला उपन्यास था 'सिपाही की तनख्वाह' (सोल्जर्स पे) जो न्यू-अर्लियन्स मे लिखा गया। फिर फ्रेंच क्वार्टर मे उन्होने 'छलिया' (डवलडीलर) और 'टाइम्स पिकायून' के कुछ अश लिखे।

१९२५ मे फॉकनर ने जेनेवा, इटली, फ्रास और जर्मनी के कुछ भागो की यात्रा की। इनके न्यूयार्क पहुचने तक 'सिपाही की तनख्वाह' उपन्यास प्रकाशित हो चुका था। इसके बाद मिसीसिपी जाकर इन्होने 'मच्छर' (मॉस्क्यूटोज) नामक उपन्यास लिखा जिसपर अल्डुअस हक्सले का प्रभाव था। १९२७ ई० मे यह प्रकाशित हुआ। इसकी आलोचना अच्छी हुई, पर 'सिपाही की तनख्वाह' की अपेक्षा इसकी प्रतिया कम बिकी।

उनका तीसरा उपन्यास 'सार्टरीज' था जिसमे व्यापारिक सफलता का सुन्दर दिग्दर्शन कराया गया है। यह सन् १९२९ ई० मे प्रकाशित हुआ। इसमे एक उडाके की कहानी है। वेयर्ड सार्टरीज युद्ध मे अपने उडाके भाई की मौत से दु खी होकर वायुयान मे उडाके का काम करता है और बार-बार वायुयान उडा-उडाकर आत्मघात का प्रयत्न करता है। अन्तत वह इसमे सफल हो मृत्यु-मुख मे जाता है और उसकी विधवा स्त्री तथा एक बच्चा उनके पीछे रह जाते है।

विलियम फॉकनर ने अव लेखन-कार्य को पूरी लगन और तत्परता के साथ करना आरम्भ कर दिया। इस बार तीन वर्ष के लम्बे श्रम के बाद उन्होने 'ध्वनि और आक्रोश' (साउण्ड ऐण्ड फ्यूरी) नामक सुन्दर उपन्यास लिखा। इस उपन्यास से ही विलियम फॉकनर सारे अमेरिका मे चमक उठे। इस उपन्यास मे फॉकनर के साहस का

सम्यक् रूप देखने को मिलता है। इस उपन्यास के चार भाग है जो धारावाहिक रूप मे चलते है।

इसके प्रथम भाग मे ७ अप्रैल, १६२८ ई० तक की घटनाओ का वर्णन है और इसमे आदि से अन्त तक सनसनी-भरी बातो का वर्णन है। दूसरे भाग मे एक नवयुवक मे ऐसी विकृत दुराग्रहपूर्ण अन्धता दिखाई गई है कि वह अपनी बहिन की ही इज्जत लेने को उतारू हो जाता है। किन्तु लेखक ने इस अवाछनीय युवक की आत्महत्या कराकर अपने नैतिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। इसके तीसरे भाग मे लेखक ने एक परिवार के पथभ्रष्टकर्ता जैसन काम्पसन जैसे स्वार्थी, चरित्रभ्रष्ट व्यक्ति का चित्रण किया गया है। अन्तिम भाग मे परिवार के इस मुखिया के चरित्र की बखिया अच्छी तरह उधेडी गई है। इस उपन्यास मे एक ओर तो चोरी, व्यभिचार और अनाचार का चित्रण कर उनके दुष्परिणाम दिखाए गए है और दूसरी ओर इसमे कुछ पात्र ऐसे है जो भोले, सच्चे और सुधरे चरित्र के है और जो सब कुछ सहकर भी मानव-चरित्र की उच्चता और सौदर्य का निर्वाह अच्छी तरह करते है। फॉनकर के चरित्र-चित्रण मे यह विशेषता है कि भ्रष्ट और दुष्ट की करतूत पर भी पाठक उसपर करुणा करता है और वह द्रवीभूत होकर उसपर दो आसू बहाए बिना नही रहता।

विवाह के बाद कुछ आर्थिक तगी मे आ जाने के कारण फॉकनर ने बिजली का कुछ काम किया जिसमे उन्हे प्रात चार बजे काम पर जाना पडता था। वहा बिजली के डायनमो की आवाज सुनते-सुनते उन्हे एक नया विचार आ गया और उन्होने केवल छ सप्ताह मे एक नया उपन्यास लिख डाला जिसका नाम रखा 'मरण शय्या पर'[1]—जिसको उन्होने अपनी सर्वोत्तम कृति कहा। समालोचको ने भी यही सम्मति प्रकट की। इस उपन्यास मे भी भले-बुरे का अद्भुत समावेश है। इसमे उन्होने मानव-स्वभाव की दृढताओ, भयकर भूलो, दुष्टताओ आदि के चित्रण मे कमाल कर दिया है। इसमे प्रेम, स्वार्थ, उत्तरदायित्व के बीच सघर्ष कराकर, कष्ट, कठोरता और विकट परिस्थितियो को जन्म दिया है। मनुष्य उग्र भावावेश मे किस प्रकार पागल हो उठता है और अपने अन्धतापूर्ण स्वप्न का परिणाम भोगता है, यह बात इस उपन्यास मे अच्छी तरह दर्शाई गई है। अन्त मे मानव को तब तक अन्धा ही दिखाया जाता है, जब तक वह अपने अच्छे-बुरे कर्मो की समीक्षा का दर्पण नही प्राप्त कर लेता। इस उपन्यास मे अनेक छोटे-छोटे परिच्छेद है और प्रत्येक मे एक व्यक्ति का विशिष्ट चरित्र चित्रित करते हुए उनके अन्तर-सम्बन्ध और घटनाओ के तारतम्य को निभाया गया है। इसमे ऐडी कण्ड्रेन नाम की स्त्री की मृत्यु का वर्णन है जो पहले एक शिक्षिका थी और बाद मे उसने एक किसान से विवाह कर लिया था। उससे उसे चार बच्चे पैदा हुए। एक पहले विवाह से था। ऐडी की इच्छा थी कि वह मरने पर जेफर्सन मे दफना दी जाए। उसकी लाश जेफर्सन ले जाने के लिए कितनी कठिनाइया पडती है—बाढ-पूरित नदी और ऊचे पहाड पार करने पडते है, जिससे उसके

१ As I Lay Dying

लडको मे से एक का पाव टूट जाता है। इसके अतिरिक्त दूसरे दिन वह लाश दफनाने के लिए रात को एक खलियान मे रखी जाती है तो खलियान मे ही आग लग जाती है और बडी कठिनाई से खतरे मे जान डालकर एक लडका लाश को बचा पाता है। इस दुखपूर्ण वर्णन मे भी लेखक बीच-बीच मे कही-कही सुख की—हास्य की झलक दिखा देता है जिससे यह करुण कहानी अपठनीय नही बनती। १९३० के अन्त मे यह पुस्तक प्रकाशित हुई और लोग इसकी ओर बहुत आकर्षित हुए।

इसके पश्चात् फॉकनर का 'पवित्र स्थल' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसमे भयकरतम काल्पनिक घटनाए भरकर लेखक ने आशा की कि उसकी बिक्री बहुत होगी। उसके प्रकाशक हेरिसन स्मिथ ने पहले तो उसे प्रकाशित करने से इन्कार कर दिया क्योकि उनका ख्याल था कि उसके प्रकाशक और लेखक दोनो को ही जेल की हवा खानी पडेगी। प्रकाशको और समालोचको का मत था कि फॉकनर क्रूरता और कठोरता के वर्णन मे सीमा को पार कर जाते है।

'पवित्र स्थल' मे उन्होने मिसीसिपी की एक ऐसी लडकी का चित्रण किया है जो सनसनी की ही खोज मे फिरा करती है। अन्त मे यह लडकी वेश्यालय तक पहुच जाती है और वहा के जीवन को पसन्द करती है। पात्रो की क्रूरता और घटनाओ की सनसनी के कारण कुछ पाठक इस उपन्यास से बेहद चौकते है, किन्तु जिस वातावरण और अचल के घटनाचित्र फॉकनर ने उपस्थित किए है, उनको देखते हुए यह अस्वाभाविक नही लगते। दूसरी बात यह है कि घटनाओ या पात्रो मे लेखक ने क्रूरता इसलिए नही भरी है कि वह कोई जासूसी उपन्यास लिखता है बल्कि इसलिए डाली है कि उस समाज मे उतनी क्रूरता भी अस्वाभाविक नही, बल्कि यथार्थतापूर्ण है। उनका यौन-सम्बन्ध और हिसा का समावेश भारत मे तो अनैतिक लगेगा, पर देशकाल और पात्र का ध्यान रखते हुए वह अयथार्थ और अनुचित नही है।

'पवित्र स्थल' प्रकाशित होते ही बहुत बिकी। इस कृति से फॉकनर की ख्याति इतनी बढी कि हॉलीवुड ने उसपर फिलम बनाना प्रारम्भ कर दिया। इससे फॉकनर को आर्थिक कष्ट सदा के लिए दूर होने की आशा हो गई और वे फिल्मो के लिए लिखने लगे।

१९३१ ई० मे फॉकनर की लघुकथाओ का सग्रह 'ये तेरह' (दीज थर्टीन) के नाम से प्रकाशित हुआ। अक्तूबर १९३६ ई० मे उनकी 'अगस्त मे प्रकाश' (लाइट इन अगस्ट) पुस्तक प्रकाशित हुई और १९३४ ई० मे 'हरित पल्लव' (ग्रीन बो) जो उनकी कविताओ का सग्रह था। इसके पश्चात् उनकी अन्य लघुकथाओ का एक सग्रह 'डा० मार्टीनो' के नाम से प्रकाशित हुआ। १९३५ ई० मे उनका 'पाइलोन' उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसमे तीन व्यक्तियो का चित्रण है जो एक फ्लाइग सर्कस मे काम करते थे। इसमे लेबर्न नामक छतरी (पैराशूट) से कूदनेवाली लडकी यौन-सम्बन्ध के भावावेश की प्रतीक बनाई गई है। उसके पीछे जो दो उडाके लगे थे उनमे विकट सघर्ष होता है और एक मारा जाता है।

१९३६ ई० मे उनका 'अवसालोम, अवसालोम' उपन्यास निकला जिसमे जेफर्सन का चरित्र चित्रिण किया गया है। १९३८ ई० मे इनका 'अपराजित' उपन्याम प्रकाशित हुआ जिसमे दक्षिण अमेरिका के गृहयुद्ध की घटनाओ का चित्रण है।

१९३९ मे उनका 'जगली ताड' (वाइल्ड पाम) प्रकाशित हुआ जिसमे दो लघु-उपन्यास हैं। उनके अन्य उपन्यास और कहानी-सग्रह भी है जिनमे हेमलेट', 'गोदाउन मासेज', 'इट्रूडर इन डस्ट', 'नाइट्स गैम्बिट' (१९४९ ई०) 'रिकिम फारनन' (१९५१ ई०) और 'ए फेकल' आदि उल्लेखनीय है।

इसी वर्ष, सन् १९६२ मे, इस कृती साहित्यकार का देहावसान हो गया है।

बर्ट्रेण्ड रसल

१९५० ई० का नोबल पुरस्कार ब्रिटेन के प्रसिद्ध दार्शनिक साहित्यिक अर्ल बर्ट्रेण्ड रसल को प्रदान किया गया। रसल केवल दार्शनिक ही नही, वैज्ञानिक और साहित्य-स्रष्टा भी है और हाल मे उन्होने शान्ति-आन्दोलन मे भी सक्रिय भाग लिया है। १९५७ ई० मे उन्हे भारत के कलिग प्रतिष्ठान (उडीसा) के सचालक श्री पटनायक के दान से दिया जानेवाला 'कलिग पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ। १९६१ ई० मे उन्हे अणवास्त्र-निर्माण विरोधी गतिविधि के कारण गिरफ्तार कर उनसे मुचलका मागा गया जिसके न देने पर एक महीने की सजा हुई।

बर्ट्रेण्ड रसल सारे ससार मे एक द्रष्टा के रूप मे प्रसिद्ध है। वे अन्य विषयो के विद्वान तो है ही, गणित के भी प्रशिक्षित अधिकारी है।

रसल इग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध अमीर (अर्ल) घराने से सम्बन्ध रखते है। उनकी बडो पट्टी के लोग सत्रहवी शताब्दी से ही वेडफोर्ड के ड्यूक के नाम से प्रसिद्ध है। राजनीति मे यह घराना सदा से मौलिक विचार रखता आया है। इनके पूर्वजो मे से एक लार्ड विलियम रसल को सम्राट चार्ल्स द्वितीय के विरुद्ध विद्रोह करने के अभियोग मे जान से हाथ धोना पडा था। ये महाशय बर्ट्रेण्ड रसल के पितामह थे। ये लार्ड जॉन रसल के नाम से मशहूर थे और वे अपनी श्रेणी मे पहले अर्ल थे जो सम्राज्ञी विक्टोरिया के प्रधान मत्री के रूप मे प्रसिद्ध थे और जिन्होने १८३२ ई० मे ही ब्रिटेन के शासन मे उल्लेखनीय सुधार किया था।

बर्ट्रेण्ड रसल का जन्म १८ मई, १८७२ ई० को हुआ था। उनके माता-पिता का देहान्त तभी हो गया था जब वे तीन वर्ष के बच्चे थे। उनका पालन-पोषण उनके पितामह को करना पडा। केम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज की पढाई मे बर्ट्रेण्ड इतने तेज़ निकले कि इन्हे खुली प्रतिस्पर्द्धा मे छात्रवृत्ति मिली और फिर उन्हे गणित और नीति-विज्ञान मे प्रथम श्रेणी का पुरस्कार मिला। उन्होने गणित पर पुस्तके लिखनी शुरू की और तर्कशास्त्र एव दर्शन पर ऐसी रचनाए की जो सर्वोत्तम मानी गई। इन्हे अपने ट्रिनिटी कॉलेज मे ही प्राध्यापक बनाया गया। १९०८ ई० मे ये रॉयल सोसाइटी के 'फेलो' (सहकर्मी) बना दिए गए जबकि इनकी अवस्था केवल छत्तीस वर्ष की थी। इसके पूर्व कोई इतनी कम अवस्था मे यह सम्मान नही प्राप्त कर सका था। अपने अन्य विद्वत्ता-

पूर्ण कार्यो के साथ-साथ उन्होने राजनीति मे दिलचस्पी लेनी शुरु कर दी और फेबियन सोसाइटी, स्वतन्त्र व्यापार आन्दोलन, और स्त्रियो के मताधिकार आदि मे रस लेने लगे। ये एक-दो बार पार्लियामेट के चुनाव मे भी खड़े हुए, पर सफल नही हो सके।

जब जर्मनी मे नाजी-आन्दोलन आरम्भ हुआ तो बर्ट्रेण्ड को अपना शान्तिवादी विचार बदलना पडा और प्रथम विश्वयुद्ध मे उन्हे अपने विचारो के कारण कष्ट उठाना पडा। उन्हे उनके प्राध्यापक पद से अलग कर दिया गया। १६१८ ई० मे उन्हे जेल भी जाना पडा और उन्होने जेल मे बहुत कुछ साहित्य लिखा। 'गणित-सिद्धान्त की भूमिका' नामक पुस्तक उन्होने ब्रिक्सटन जेल मे ही लिखी।

युद्ध के बाद बर्ट्रेण्ड रसल ब्रिटेन के श्रमिक दल के सदस्य के रूप मे एक प्रतिनिधि मण्डल मे रूस गए और रूस मे जो कुछ देखा, उसपर एक पुस्तक—'बोलशेविज्म का सिद्धान्त और उसका क्रियान्वय' नाम से लिखी। ट्रिनिटी कॉलेज ने उन्हे उनके प्राध्यापक पद पर बहाल करना चाहा, पर उन्होने इन्कार कर दिया। १६२० ई० मे वे चीन गए और वहा पेकिग विश्वविद्यालय मे आचरणवाद (बिहेवियरिज्म) पर एक व्याख्यानमाला के वक्ता बने। उन्होने चीनी जीवन और विचारो का अध्ययन किया और वहा से लौटने के बाद 'चीन की समस्या' नामक पुस्तक लिखी और बीसवी सदी मे चीन के सम्भावित कार्यो पर विश्लेषणात्मक तर्क उपस्थित किए।

बर्ट्रेण्ड रसल ने चालीस से अधिक पुस्तके लिखी है, जिनमे से अधिकाश गणित, दर्शन आदि विषयो पर है, पर कुछ ऐसी भी है जिनका सम्बन्ध सामाजिक समस्याओ से है। पहले विश्वयुद्ध मे उन्होने 'सामाजिक पुनर्रचना के सिद्धान्त' नामक पुस्तक प्रकाशित कराई थी। उनकी द्वितीय पत्नी का नाम डोरा रसल है जिनके साथ अपना नाम देकर उन्होने १६२३ ई० मे 'औद्योगिक सभ्यता की सम्भावनाए' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित कराई। शिक्षा मे उन्होने बडी दिलचस्पी ली और उसपर अनेक पुस्तके लिखी। हैम्पशायर मे पीटर्सफील्ड के पास उन्होने डोरा रसल के साथ लडके-लडकियो का एक सयुक्त स्कूल नये और अग्रगामी ढग का चलाया, जिसमे बच्चो को खेलने और काम करने की पूरी आजादी दी।

१६३१ ई० मे जब उनके बडे भाई का देहान्त हो गया तो बर्ट्रेण्ड रसल को तीसरे अर्ल की पदवी मिली। उन्होने पहले ही से भारत की स्वतन्त्रता के बारे मे बडी सहानुभूति के साथ लिखा और भाषण दिए। युनाइटेड किगडम मे स्थापित इण्डिया लीग के ये अध्यक्ष बनाए गए और उन्होने भारतीयो को स्वराज्य दिलाने की बडी हिदायत की।

दूसरे विश्वयुद्ध के कुछ पहले ये सयुक्त राज्य अमेरिका गए जहा इन्होने पहले-पहल शिकागो विश्वविद्यालय मे भाषण दिया। उसके बाद केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के लॉसएजिल्स मे भाषण देने गए। मार्च १६४० ई० मे उन्होने न्यूयार्क कॉलेज मे प्राध्यापक का पद स्वीकार किया। किन्तु सामाजिक मामलो मे उनके विचार इतने आगे

बढे हुए थे कि उनकी 'विवाह और नैतिक चरित्र' (१६२६ ई०) नामक पुस्तक प्रकाशित होते ही कुछ क्षेत्रो मे इनके प्रति विद्वेष की भावना भडक उठी और उनकी नई नियुक्ति के बारे मे वितण्डावाद खडा हो गया यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय ने उनकी नियुक्ति के पक्ष मे निर्णय दिया। इसके बाद लॉर्ड रसल सिलवेनिया के बार्नेस प्रतिष्ठान मे व्याख्यान-दाता होकर गए। दो वर्ष बाद उनकी नियुक्ति समाप्त कर दी गई। रसल ने प्रतिष्ठान पर दावा करके मुकदमा जीत लिया।

१६४४ ई० मे वे इंग्लैण्ड लौट गए। उनके पुराने ट्रिनिटी कॉलेज ने उन्हे अपना साहचर्य (फेलोशिप) पद प्रस्तावित किया और उन्हे कॉलेज मे व्याख्यान देने या न देने की छूट भी दे दी जिसे स्वीकार करके वे कई वर्ष के बाद केम्ब्रिज लौटे।

स्वदेश लौटकर वे अधिक सक्रिय बन गए। उनमे व्याख्यान देने की अद्भुत प्रेरक शक्ति है और उन्होने अनेक नये काम किए है। ब्रिटिश रेडियो ब्राडकास्टिग के ब्रिटेन ट्रस्ट के आप सदस्य है। १६४७ ई० मे उन्हे रीथ-व्याख्यानमाला के लिए आमत्रित किया गया। दूसरे युद्ध के बाद उनकी रचनाओ मे 'पाश्चात्य दर्शन का इतिहास' अधिक प्रसिद्ध है जो उनकी पचहत्तरवी वर्षगाठ पर प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ को इस शताब्दी की सर्वश्रेष्ठ रचना माना गया और यह प्रकाशित होने के पहले ही बिक गया। उन्होने कुछ लघुकथाए भी लिखी। १६५४ ई० मे उनकी 'नैतिकता और राजनीति मे मानव समाज' पुस्तक प्रकाशित हुई और १६५६ ई० मे 'स्मृति-चित्र' (मुख्यत आत्म-कथा के रूप मे) प्रकाशित हुई।

लॉर्ड रसल विश्व-शासन के ब्रिटिश ससदीय दल के सदस्य है और उन्होने सघीय शासन-आन्दोलन काग्रेस मे भाग लिया है। उन्होने आणविक अस्त्रो के निर्माण और परीक्षण का सदा से घोर विरोध किया है।

लॉर्ड रसल की चार शादिया हो चुकी है और उनके तीन बच्चे हुए। इनके उत्तराधिकारी वाइकाउण्ट एम्बरले का जन्म १६२१ ई० मे हुआ था। इनकी चौथी शादी पहली की तरह एक अमेरिकन एडिथफिच से हुई।

१६४६ ई० मे इन्हे 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' पुरस्कार प्राप्त हुआ था और दूसरे ही वर्ष नोबल पुरस्कार मिला।

बर्ट्रेण्ड रसल को आधुनिक 'वाल्तेअर' कहा जाता है और उन्होने अपने अध्ययन-कक्ष मे इस विख्यात फ्रासीसी की अधोवक्ष-मूर्ति रख छोडी है। दोनो मे आध्यात्मिक सान्निध्य के अतिरिक्त भौतिक एकरूपता भी दिखाई देती है।

बर्ट्रेण्ड रसल का मानवता मे बुनियादी विश्वास है और उनमे कितने ही अद्भुत गुण है। इस आणविक युग मे शान्ति-रक्षा के लिए प्रयत्नशील पाश्चात्यो मे उनका नाम सर्वोच्च और अग्रगण्य है। उन्होने मानवता के विकास मे 'स्वर्णयुग' के आने की भविष्यवाणी की है और वे सचमुच एक आधुनिक ऋषि है।

पार लागरक्विस्त

१६५१ ई० का नोबल पुरस्कार स्वीडन के साहित्यकार पार लागरक्विस्त को मिला जो अपनी कलात्मक शक्ति और मानसिक स्वातन्त्र्य के लिए विख्यात हुए।

लागरक्विस्त का जन्म २३ मई, १८६१ ई० को हुआ था। उनकी रचनाओ मे काव्य-कृतिया ही अधिक है, जिनके द्वारा उन्होने अनन्त-सतत प्रश्नो का समाधान करने का प्रयत्न किया है।

लागरक्विस्त की शिक्षा उपसाला विश्वविद्यालय मे हुई और उसके बाद कुछ वर्षो के लिए वे विदेश गए। वे बचपन से धार्मिक वातावरण मे रहे जिसका उनपर अच्छा प्रभाव पड़ा। वे बहुत ही सीधे-सादे और अकृत्रिम स्वभाव के है और उनके इस स्वभाव का असर उनकी रचनाओं पर भी पडा है। साहित्य मे उन्होने समानान्तर रूप से आधुनिक अभिव्यक्ति-कला का दिग्दर्शन भी कराया है। प्रथम विश्वव्यापी महासमर के दु:खान्त की अनुभूति उन्होने गहरे रूप मे की, जो उनके 'यत्रणा' (अगेस्त) और 'कैवोज' नाटको मे अभिव्यक्त हुई है जो क्रमश: १६१६ और १६१६ ई० मे प्रकाशित हुए है। ये लाक्षणिक भी है और तथ्यात्मक भी। इनमे आशा और निराशा की तरगे बहती है। लेखक मनुष्य के अन्दर दैवी तत्त्व मे विश्वास करता है।

जब १६३० ई० के बाद ही हिंसा के सिद्धान्तो की घोषणा हुई तो लागरक्विस्त उसके सकट से अवगत हो गए। उनकी रचनाओ मे 'जल्लाद' (बोडेलन) और 'बधी मुट्ठी' हिसा का प्रबल विरोध करती है। ये दोनो १६३४ ई० मे प्रकाशित हुई थी। १६४४ ई० मे उनका 'बौना' (ड्वारफेन) नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसमे यह दिखाया गया है कि मनुष्य की अन्दरूनी बुराई उसकी भलाई को नष्ट करने का किस प्रकार प्रयत्न करती है। ये १६४३ ई० मे स्वीडिश एकादेमी के सदस्य बने।

इनकी अन्य उल्लेखनीय रचनाओं मे, जो अग्रेजी मे अनूदित हुई है, 'बारब्बास', 'इविल टेल्स', 'मैरिज फीस्ट' (विवाह-भोज) 'गेस्ट ऑफ रियलिटी' (वास्तविक मेह-मान), 'आनेस्ट स्माइल' (सच्ची हसी) और 'मिड-समर ड्रीम इन दि वर्कहाउस' (कारखाने के मध्य ग्रीष्म का स्वप्न) अधिक प्रसिद्ध है।

फ्रांशुआ मारिआक

फाशुश्रा मारिश्राक को वहुत दिनो तक अन्तर्राष्ट्रीय जगत् मे कोई ख्याति नही मिली श्रौर उनकी रचनाए एक प्रकार से अपने देश मे ही सीमित रह गई। लेकिन १९५२ मे उन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मारिश्राक का जन्म १८८५ ई० मे वोर्डिड के एक मध्यवित्त श्रेणी के घराने मे हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा वोर्डिड विश्वविद्यालय के कैथोलिक स्कूलो मे हुई। बाद मे ये उच्च शिक्षा के लिए पेरिस गए। १९०९ ई० मे उन्होने अपनी एक कविता की किताव स्वय प्रकाशित की जिससे साहित्यिको और प्रकाशको का ध्यान उनकी ओर गया। बाद मे उनके और कई काव्य-सकलन और नाटक प्रकाशित हुए किन्तु उनकी वास्तविक ख्याति तब हुई जव उन्होने उपन्यास लिखे। उनका पहला उपन्यास १९१४ ई० मे प्रकाशित हुआ। उन्होने अपने उपन्यासो से फासीसी भाषा का भण्डार भरा।

मारिश्राक का प्रसिद्ध उपन्यास १९३२ ई० मे प्रकाशित हुआ था। उसके दूसरे ही वर्ष वे फ्रेंच एकादेमी मे चुन लिए गए। यद्यपि कुछ पुराने ढर्रे के साहित्यको ने उनके चुनाव का विरोध किया किन्तु अधिकाश नये साहित्यको को उनकी रचनाए वहुत पसन्द आईं। उनकी चर्चा और प्रशसा काफी हुई जिससे दूसरे ही वर्ष – अर्थात् १९३३ ई० मे उनका एक उपन्यास अग्रेजी मे अनूदित हो गया, किन्तु उस समय उसकी विक्री अधिक नही हुई जिससे उसे असफल माना गया। इसका कारण यह समझा गया कि वह उपन्यास जन-सामान्य की समझ के बाहर की चीज थी—उसमे बौद्धिको से अपील की गई थी। उनसे कहा गया था कि उनके पाठक साम्यवाद और स्पेन के गृह-युद्ध के चक्कर मे पडकर उनके उपन्यासो मे फ्रेंच-परम्परा के अनुसार मजा न ढूढे और उन्हे मनोविनोद का सहारा न मान बैठे। इससे फ्रेंच पाठको को उनकी इस रचना से, जिसमे राजनीति का गहरा पुट था, निराशा-सी हुई।

द्वितीय महायुद्ध का घोप निकट आ जाने के कारण लोगो ने उनकी ओर ध्यान नही दिया। उनकी रचनाओ मे ऐन्द्रिक परायणताओ को पोषण नही मिला जो युद्ध के दमामे बजने पर और भी उग्र बन जाया करती है।

फाशुश्रा मारिश्राक का जन्म वोर्डिड मे ११ अक्तूबर, १८८५ ई० मे हुआ था और वे अपने पिता की पाच सन्तानो मे सबसे छोटे थे। उनके तीन भाइयो मे से एक

गार्डिड विश्वविद्यालय के डीन बन गए थे। उनका घराना समृद्धिशाली उच्च मध्यम वर्ग का अर्थात् खाता-पीता था जिससे वे अपने चारो ओर सम्पत्तिशाली जीवन की झलक बचपन से ही पा सके थे और अपने उपन्यासो मे उसका चित्रण कर सके थे।

फ्राशुआ अभी दो घटे के भी नही हुए थे कि उनके पिता का देहान्त हो गया। उनके पितामह तब मरे जब ये पाच वर्ष के हो चुके थे। दोनो की मौते विचित्र ढग से हुई। पिता तो दिन-भर जायदाद का निरीक्षण करके शाम को घर लौटे तो सिर मे दर्द हो गया और दूसरे दिन समाप्त हो गए और पितामह गिरजाघर से लौटते हुए बेहोश होकर गिर गए। फ्राशुआ ने अपनी रचनाओ मे सहसा मृत्यु का चित्रण भी सम्भवत: उसी प्रभाव के कारण किया है। 'ले माल' उपन्यास मे फ्राशुआ ने अपनी माता को मेडम दे-सीमैरिज के नाम से चित्रित किया है और उन्हे परम धार्मिक सिद्ध किया है।

'कमेन्समेण्ट्स इन वी' मे वे लिखते है "ज्यो ही घडी मे नौ बजते, हमारी मा प्रार्थना के लिए उठ पडती और हम सब उसके पास इकट्ठे हो जाते। वह प्रार्थना के प्रथम शब्दो का उच्चारण करती—'भगवन्! तुझे साष्टाग दण्डवत् है! तुझे शतश: धन्यवाद है कि तूने मुझे ऐसा हृदय दिया जिससे मैं तुझे जान सकती हू और प्रेम कर सकती हू।...'"

पाच वर्ष की अवस्था मे फ्राशुआ किडरगार्टन स्कूल भेज दिए गए। उन्होने अपनी आत्मकथा मे लिखा है . "मैं एकान्त-सेवन का ऐसा प्रेमी था कि दस वर्ष की अवस्था मे घण्टो पखाने के अन्दर बैठा रहता था। मै ऐसे ही खेल-कूद मे भी लग जाता था, जो अकेले हो सकते थे।"

किडरगार्डन स्कूल से वे आगे पढने भेजे गए। हाईस्कूल मे उन्होने जिन अध्यापको से शिक्षा प्राप्त की उनके बारे मे उनका कहना है कि वे बडे ही समझदार और सहानुभूतिपूर्ण थे।

इसके बाद वे बोर्डिड विश्वविद्यालय भेज दिए गए जहा उन्होने 'लाइसेस ऑफ लेटर्स' की परीक्षा पास की और उसके पश्चात् १९०६ ई० मे वे आगे पढने के लिए पेरिस भेजे गए। वहा उन्हे ऐतिहासिक सशोधन के काम मे लगाया गया, यद्यपि उनकी उसमे कोई रुचि नही थी। परन्तु एक यही ऐसा विषय था जिसमे गणित का विषय अनिवार्य नही था इसलिए उनके लिए अधिक अनुकूल था।

प्रकाशन के कार्य मे प्रविष्ट होने पर उन्होने सोचा कि यदि प्रकाशक के पास उनकी पुस्तके प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त धन नही है तो उसके लिए वे अपनी पूजी लगाए। और उन्होने ऐसा ही किया भी। उनकी कविताए 'रेक्स प्रेजेण्ट' और 'ला रिव्यू-दला-फ्यूनेस' नाम की पत्रिकाओ मे प्रकाशित होने लगी। उनका पहला कविता-सग्रह 'ला मेम्स ज्वाइण्टिस' नामक पत्रिका मे १९०९ ई० मे प्रकाशित हुआ। 'ला रिव्यू-द-ला-फ्यूनेस' मे भी उनकी कविताए निकली। उनकी कवित्व-शक्ति निरन्तर विकसित होने लगी। उनकी कविता के प्रशसको और उनका उत्साह बढानेवालो मे मारिसबेरी

विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मारिस्राक की कविताओ का दूसरा सग्रह 'एड्यू ए-लेडोलेसेस' १९११ ई० मे प्रकाशित हुआ। तीसरी जिल्द' 'ओरामिरा' के नाम से १९२५ ई० मे निकली। तब तक तो मारिस्राक विख्यात उपन्यासकार भी बन चुके थे। इनकी चौथी काव्य-पुस्तक 'ले सैग द-एती' १९४० ई० मे प्रकाशित हुई।

मारिस्राक के पहले दो उपन्यास 'ले इफेन्द चार्ज द-चेनस' और 'ला रोष प्रिटेक्स्ट' क्रमश १९१२-१३ ई० मे निकले थे। बाद मे उनका विवाह जीनलाफोन से हो गया। फिर तो ये चार बच्चो के बाप हो गए।

पहले महायुद्ध मे उन्हे मेडिकल सर्विस मे सम्मिलित होकर सैलौनिका के मोर्चे पर जाना पडा, परन्तु वहा वे कोई ख्याति नही प्राप्त कर सके। युद्ध की समाप्ति के बाद वे लेखन-कार्य मे पूरे मन से जुट गए। उनके दो विख्यात उपन्यास—'ला चेअर एट ले सैग' और 'प्रिसिडेन्सेज' उन्ही दिनो प्रकाशित हुए।

मारिस्राक को अपने सभी समकालीन लेखको की अपेक्षा अधिक् शीघ्रतापूर्वक सफलता प्राप्त हुई और उनका विरोध भी कम हुआ। ये १९२२ से १९३२ ई० के बीच मे पूर्ण सफलता के शिखर पर पहुच गए। उनके पाच उपन्यासो ने फ्रेंच साहित्य मे इनकी धाक जमा दी। उनके उपन्यास 'ले बेसर आलिप्रे' (१९२२ई०), 'जेनेट्रिक्स' (१९२३ई०), 'ले डेजर्ट द-लेमोर' (१९२५ ई०), 'थेरीज डेस्क्वेको' (१९२६ ई०), और 'ले नाड द-वाइपरे' ने इनकी ख्याति मे चार चाद लगा दिए। लगभग इसी अवधि मे इन्होने चार और उपन्यास लिखे जिनमे 'ले डेजर्ट द-लेमोर' के लिए उन्हे 'ग्रेण्ड प्रिक्सडू-रोमन' पुरस्कार मिला। १९३२ ई० मे तो ये फ्रेंच साहित्य-सस्था के सभापति चुन लिए गए और उनका फ्रेंच एकेडमी मे प्रवेश हो गया।

इन ख्यातियो से उनकी साहित्यिक प्रतिभा निरन्तर व्यस्तता के साथ विकसित होती गई और उन्होने २५ उपन्यास लिख डाले जिनमे 'ले मिस्टरी फ्राण्टेना' (१९३३ ई०) की ओर विद्वान पाठको का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। अब तक तो लोग उनके उपन्यासो को एक ही शैली और तकनीक का मानते थे, पर इस उपन्यास ने लोगो की धारणा बदल दी और वे उनके रचना-कौशल के वैविध्य के कायल हो गए।

गत महायुद्ध के अन्त मे उन्होने साहित्य-जगत् को जो उपन्यास दिए उनमे तीन लघु उपन्यास अधिक पसन्द किए गए जिनके नाम 'ले सेगोइन' (१९५७ ई०), 'गलि-गाई' (१९५२ ई०) और 'ले एग्न्यू' (१९५४ ई०) उच्च श्रेणी के माने जाते है, परन्तु इनका सम्मान विद्वान् मण्डली मे ही होकर रह गया।

मारिस्राक ने नाटक भी लिखे, जिनमे 'आस्मोदी' १९३८ ई० मे रगमच पर लाया गया। बाद मे १९४५, ४८ और ५१ ई० मे भी इन्होने तीन सफल नाटक अभिनय के लिए लिखे जिनका सुन्दर प्रदर्शन हुआ और व्यापक चर्चा हुई। मारिस्राक ने समालोचनाए और जीवनिया भी लिखी, पर इनकी सर्वोच्च ख्याति उपन्यासकार के रूप मे ही हुई।

मारिश्राक ने राजनीति मे भी भाग लिया और जर्मनी के फ्रास पर अधिकार जमाने के समय उसका प्रबल प्रतिरोध किया। उन्होने 'ले फिगारो' पत्र मे अत्यन्त उग्र भाषा मे जर्मनी के विरुद्ध लेख लिखे।

६ नवम्बर, १६५२ ई० को उन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मारिश्राक की रचनाओ मे से कुछ उदाहरण देने का लोभसवरण हम यहा नही कर सकते, क्योकि उनमे ससार के नये लेखको—विशेषकर उपन्यासकारो के लिए मार्ग-दर्शन और सन्देश है :

"मै ऐसे उपन्यास की कल्पना नही कर सकता जिसके ढाचे का हर कोना मेरे मस्तिष्क मे बैठ नही जाता। उसके हर टुकडे, प्रत्येक भाग से मुझे अवगत हो जाना चाहिए और उसके चतुर्दिक की मुझे पूरी जानकारी हो जानी चाहिए— फालतू बातो को मैं उसमे घुसेडना नही चाहता। मेरे साथियो मे से कुछने किसी अज्ञात नगर मे जाकर वहा के किसी होटल मे एक कमरा लेने और फिर वहा का अध्ययन करके उपन्यास लिखने का क्रम चलाया है, परन्तु मै ऐसा नही कर सकता। मैं किसी भी देश के अज्ञात भाग मे जाकर वहा इस प्रकार के पर्यवेक्षण और अध्ययन से लाभ नही उठा सकता। मैं तो उसी वातावरण और उसकी घटनाओ का वर्णन सजीव रूप मे कर सकता हू जिसमे मैं पडा रहता हू और जो नित्य मुझे प्रभावित करती है। मै अपने पात्रो का निर्माण अपने नित्य के देखे हुए व्यक्तियो के चरित्रो से ही कर सकता हू। मै उनको स्पष्ट नही, तो छाया के रूप मे तो देख ही पाता हू, और मुझे उस स्थान की गध मिल जाती है जहा वे चलते-फिरते है। मैं उनकी प्रत्येक गतिविधि से परिचित होता हू।

"इससे मुझमें एक जैसे वातावरण के चित्रण तक ही सीमित रहने का दोष आ सकता है और एक उपन्यास के वातावरण के चित्रण से दूसरे के चित्रण मे साम्य आ सकता है। इससे बचने के लिए मै उन सभी मकानो और बगीचो को क्रमश लेता हू जहा मै बचपन से ही रह चुका हू। किन्तु इस काम के लिए अपना और अपने मित्रो का घर ही पर्याप्त नही होता। इसलिए मैं पडोसियो के घरो और उनके चतुर्दिक एव वातावरण को ले लेता हू। इस प्रकार बचपन से ही वृद्धा महिलाओ ने मेरे प्रति जो दयालुता और सौजन्य दिखाया है, प्रभातकाल से रात को सो जाने तक जो खाद्य, पेय मुझे दिए गए है और उन स्थानो मे प्रभात कैसे आया, सन्ध्या कैसे ढली, यह सब जो मैंने देखा है, उसका वर्णन निश्चय ही सजीव वातावरण उपस्थित करता है।··· मै ऐसे नाटक को सजीव नही कह सकता जिसकी कथा-वस्तु का अनुभव मेरे जीवन मे अभिनीत नही हुआ हो। मै अपने प्रत्येक पात्र से पूर्णत. परिचित होना चाहता हू और उसकी हर गतिविधि से भी।···मेरी आध्यात्मिकता ठोस रूप धारण करने को आतुर रहती है — मैं उसका प्रत्यक्ष और स्पर्श्य बोध कर लेना चाहता हू।

"प्राय. मै अपने समालोचको से लिखने की प्रेरणा प्राप्त करता हू, किन्तु मै अपने सधे-बधे पात्रो से भिन्न प्रकार का चरित्र-चित्रण नही कर पाता। मैं मानव की

कमजोरियो को उसके वास्तविक मे ही दिखाने के लिए वाध्य हो जाता हू और उसके गुणो को भी ।

"मै ऐसे पात्रो का चरित्र-चित्रण अपनी अनेक रचनाओ मे फिर-फिर इसलिए करता हू कि एक उपन्यास मे वह पात्र आकर भी समाप्त नही हो जाता । प्रत्यक्ष जगत् मे उसका पुनर्जन्म होता रहता है । मेरी रचनाओ मे एक पात्र के सम्पूर्ण चित्रण के लिए उसके पुत्र और पौत्र पैदा हो जाते है ।"

एक उपन्यासकार का जीवन अपनी रचना किस प्रकार सजाता है, इसकी स्वीकारोक्ति मारिग्राक ने उपर्युक्त शब्दो मे की है। उनके अधिकाश पात्र मध्यम वर्ग के सफेदपोश परिवारो के है और यह वर्ग आजकल ससार मे सबसे अधिक समस्याग्रस्त बना हुआ है। उच्च और निम्न श्रमजीवी-वर्ग के पात्र मारिग्राक के उपन्यासो मे कम उभरते है । फ्रासीसी उपन्यासकारो मे जहा एक ओर आन्द्रे जीद जैसे पुरुष-जाति के ही बीच परस्पर अप्राकृतिक सम्वन्ध के प्रबल समर्थक और धार्मिक भावना का उपहास करनेवाले हो गए है, वहा मारिग्राक जैसे धर्म-बधन की प्रतिष्ठा भग न करनेवाले भी हो गए है । मारिग्राक के अपने शब्दो मे ही 'वे सनातनी ईसाई परिवार मे पैदा होने के कारण जो प्रकाश परिस्थितिवश प्राप्त कर सके है, उसका त्याग नही कर सकते, क्योकि वे उसपर श्रद्धा करते और उसे सत्य समझते है ।'

मारिग्राक की गद्य-शैली का एक उदाहरण देना यहा अप्रासागिक नही होगा। वे कहते है

"हमारे सम्मुख फैला हुआ विस्तृत मैदान सूर्य की तपन के लिए भी उसी प्रकार खुला पडा है जिस प्रकार स्निग्ध चन्द्र-ज्योत्स्ना से आप्लावित होने के लिए ।

"देवदार और सिन्दूर-फल के वृक्ष दूरवर्ती कृष्णकुज के उस पार शोभायमान है और उनकी सुगन्ध से रात भर गई है ।..."

मारिग्राक ने अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारो मे बालजक, बादलेअर और रिम्बाद की प्रशसा की है और उनसे प्रभाव प्राप्त किया है, किन्तु उनकी रचनाओ पर सबसे अधिक प्रभाव रेसाइन[१] का पडा प्रतीत होता है क्योकि इनके उपन्यासो के पात्र रेसाइन की रचनाओ के पात्रो से बहुत मिलते-जुलते है । यद्यपि मारिग्राक के पात्रो मे ऐसे अधिक है जो धर्म के प्रति दिखाऊ आस्था रखते है, परन्तु वह आस्था मौखिक-मात्र है—व्यवहार मे अपने पारिवारिक जीवन, सामाजिक स्थिति और अपने वृक्षो एव अगूर के बगीचो और नगद-नारायण को अधिक महत्त्व देते है । इन पात्रो मे ऐसे व्यक्ति भी है जो उच्च सामाजिक स्थिति अथवा आर्थिक दुर्दशा को सुधारने के लिए अपनी वेटिया कथित उच्च वशोद्भव धनाढ्यो को विना हिचकिचाहट के सौप देते है । ऐसे एक प्रसग के वार्तालाप को मारिग्राक के ही शब्दो मे देखिए

"मैं उस आश्चर्य को कभी नही भूल सकता जो मुझे तुम्हारी बहन मरिनेट को

१. Resine

देखकर हुआ था—वह तुमसे एक वर्ष बडी थी, पर अपने लावण्य के कारण वह तुमसे छोटी लगती थी। उसकी सुन्दर और विपुल केशराशि और लम्बी गर्दन, बच्चो की-सी निरीह आखे ऐसी थी जो उसके सौदर्य को और भी बढाती थी। ऐसी भोली सुन्दरी लडकी को तुम्हारे पिता ने बैरन फिलियो को बिना आगा-पीछा सोचे, पद और धन के लोभ से, सौप दिया। मुझे उस घटना से गहरा धक्का लगा। साठसाला फिलियो के मरने के बाद मैने जाना कि वह बहुत ही दु खी व्यक्ति था। उसने अपनी बच्ची-सी पत्नी से अपना बुढापा छिपाने के लिए क्या नही किया होगा। वह कपडे बहुत कडाई से फिट कराकर पहनता—गले की झुरिया ऊची कालर मे विलीन करने का प्रयत्न करता। मूछो को रगते रहने मे उसे कितना श्रम और सावधानी करनी पड़ती और गलमुच्छो के द्वारा गालो की झुरिया छिपाने मे वह किस कौशल से काम लेता। वह जब तक घर मे रहता सदा शीशे की ओर देखने मे ही समय गुजारता और इस व्यस्तता के कारण वह कान पडी बात की ओर ध्यान भी नही दे पाता। निरन्तर अपनी शक्ल शीशे मे देखने की आदत डाल लेने से उस बुड्ढे की बडी हसी होती थी, पर वह इसकी परवाह नही करता था। वह कभी मुस्कराता नही था क्योकि उससे उसके नकली दात दिख जाते थे। अपनी दृढ इच्छाशक्ति से वह अपने ओठो को एक-दूसरे से बहुत विलग नही होने देता था। वह सिर के बाल बढाकर रखता और इसके लिए हैट का उपयोग आवश्यकता से कही अधिक करता था।"

इसी प्रकार एक और पात्र का जो बुढापे मे विवाह कर लेता है, चित्रित करते हुए मारिश्राक लिखते है · "इस युगल जोडी को देखते ही लोग शर्म से गड गए। जीन पेलोमरे ने अपने को सुन्दर और सुडौल दिखाने के लिए दर्पण के साथ लम्बा सघर्ष किया था। वह अपनी नवोढा के साथ जो भी व्यवहार करता उसीमे कृत्रिमता दिखाई देती और वह बेचारी उनके उन क्रिया-कलापो के प्रति कुछ भी ध्यान न देकर मृतवत् अडिग बनी रहती।"

वासना के अतिरेक का वर्णन करते हुए लेखक 'ले फिल्यू द-फ्यू' मे लिखता है

"वह कैसा मधुर किन्तु प्रचण्ड समय था जब दो प्राणी एक-दूसरे से प्रतिरोध करने का पाखण्ड करते हुए भी आत्मसमर्पण कर देते है। उनके मिश्रित अग नरक मे नही डूबे है, पर वे उसकी गहराई की ओर धसते हुए यह सकल्प करते दिखाई देते है कि ससार की कोई शक्ति उन्हे पृथक् नही कर सकती।"

उपन्यासो के नायको के बारे मे मारिश्राक कहते है।

"महान उपन्यासो के नायक, लेखक के इन्कार करने पर भी एक ऐसी सचाई से निर्मित होते है जिसे हम अपने जीवन पर लागू कर सकते है। ये एक ऐसे आदर्श जगत् की सृष्टि करते हैं जिसे लोग अपने ही हृदय मे अधिक सचाई के साथ देख सकते है।"

फ्रेच लेखको की यह विशेषता है कि वे सत्य की खोज मे अपने हृदय का मन्थन

करने की अधिक आकाक्षा अपनी रचनाओ मे प्रदर्शित करते है। माण्टेन से लेकर अब तक के लेखको मे यही प्रवृत्ति रही है। मारिआक मे गम्भीरता भी है और एकाकी चिन्तन भी। उनकी वह अन्तर्दृष्टि उनके उपन्यासो मे विशेष रूप मे परिलक्षित होती है जो फ्रेंच-परम्परा की एक विशेषता मानी जाती है। वे चितन मे काफी गहराई तक उतरते है। उनके धार्मिक विचार उनके चिंतन मे प्रेरक और सहायक होते प्रतीत होते है। इस दृष्टि से वे अपने सभी समसामयिको को पाठ सिखाने की क्षमता रखते है।

विन्स्टन चर्चिल

१९५३ ई० का नोबल पुरस्कार ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमन्त्री सर विन्स्टन स्पेन्सर चर्चिल को प्रदान किया गया। उन्हे यह पुरस्कार देते समय उनकी किसी विशिष्ट रचना का नाम तो नही लिया गया, परन्तु ऐसा समझा जाता है कि उन्हे यह पुरस्कार उनके द्वितीय महायुद्ध के इतिहास के लिए दिया गया। यद्यपि पुरस्कार के दाता का उद्देश्य यह था कि यह शान्ति-स्थापना के लिए किए गए महान प्रयत्नो के लिए दिया जाए। यह भी कहा जाता है कि पुरस्कार-समिति ने सर चर्चिल को सर्वश्रेष्ठ शान्ति-स्थापक माना। इस पुरस्कार के दिए जाने के समय सारे ससार मे इस बात की बडी चर्चा थी कि इस बार यह पुरस्कार शान्ति के महान प्रतीक महात्मा गाधी को दिया जाएगा। वास्तव मे सर विन्स्टन चर्चिल तो सारी जिन्दगी युद्ध ढूढते रहे है और अनेक वार उसके कारण बने है। युद्ध के कारण बनने के लिए ही वे इसके लिए क्यूबा, भारत की सीमा, सूडान और दक्षिण अफ्रीका के चक्कर काटते रहे है।

सर विन्स्टन चर्चिल का पूरा नाम डेविड चर्चिल समरवेल है। वे अपने पिता रावर्ट समरवेल के ज्येष्ठ पुत्र है। उनके पिता स्वर्गीय रावर्ट समरवेल ने अग्रेज़ी भाषा की शिक्षा अपने पुत्र को स्वय दी थी।

सर विन्स्टन चर्चिल तीसरे ब्रिटिश गद्य-लेखक थे जिन्हे नोबल पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनसे पहले रुडयार्ड किप्लिग और जॉर्ज बर्नार्ड शॉ को यह सम्मान प्राप्त हो चुका था। चर्चिल ने शान्ति स्थापित करने के लिए क्या लिखा, यह एक दूसरा ही विषय है जिसपर आगे विचार किया जाएगा।

चर्चिल ने राजनीतिक दृष्टि से अग्रेज़-जाति का कितना उपकार किया और राजनीति मे साम्राज्य-रक्षा को अपना ध्येय बनाकर क्या-क्या कहा और किया, इस सम्बन्ध मे विशेष कुछ लिखने की आवश्यकता यहा नही है। हमारा देश भारत तो ब्रिटेन का उपनिवेश-मात्र था और चर्चिल ने उसे ब्रिटिश-अधिकार मे बनाए रखने के लिए भारत और उसके नेताओ के विरुद्ध कितना विष-वमन किया है, इसे सभी भारतीय जानते है। यहा तो हम केवल इस बात पर विचार करना चाहेगे कि एक लेखक के रूप मे चर्चिल का क्या स्थान है। इसके सम्बन्ध मे अपनी ओर से विशेष कुछ भी न कहकर हम चर्चिल की 'मेरा आरम्भिक जीवन' (माइ अर्ली लाइफ) से तत्सम्बन्धी प्रकरण

उद्धृत करते है :

"लेखन-कार्य मे प्रविष्ट होने पर मैने उपन्यास से आरम्भ किया। मेरे विचार से एक बार आरम्भ करने पर मेरे उपन्यास का कथा-प्रवाह चल पडा। मैने किसी राज्य — बालकन या दक्षिण अमेरिका के जनतत्र मे विद्रोह की कल्पना की और वहा के मनमाने शासन का अन्त करनेवाले उदार दल के नेता को समाजवादी क्रान्ति का शिकार बनाया। मेरे अधिकारी भाइयो ने इस कथा के विकास मे आनन्द लिया और उसमे प्रेम-प्रसग के विकास का सुझाव दिया जिसे मैने स्वीकार नही किया। परन्तु क्रान्ति दबाने के लिए दर्रे-दानियाल का सा युद्ध कराया। लगभग दो ही महीने मे मैने यह उपन्यास समाप्त कर लिया जो पहले 'मेकमिलन मैगजीन' (पत्रिका) मे 'सावरोला' के नाम से प्रकाशित होकर बाद मे अनेक सस्करणो मे प्रकाशित हुआ, जिससे कई वर्षो मे मुझे रायल्टी द्वारा केवल कुछ सौ पौड की ही आमदनी हुई।"

चर्चिल की दूसरी रचना 'मालकन्द फील्ड फोर्स' थी। किन्तु साहित्यिक जगत् मे इसकी कोई बडी कद्र नही हुई। चर्चिल की रचनाओ मे उनकी 'आत्मकथा' और प्रथम महायुद्ध का इतिहास 'विश्व सकट' अधिक प्रसिद्ध हुई। इन रचनाओ पर चर्चिल की प्रशसा हुई है। इन दोनो की अपेक्षा उनकी 'नदी-युद्ध' (रिवर वार) और अधिक प्रसिद्ध हुई जिसमे मिस्र की नील नदी को घटना-प्रसग बनाकर वहा के १८८१ ई० के विद्रोह को ऐतिहासिक उपन्यास का रूप दे डाला गया है। इस उपन्यास मे (लार्ड) किचनर का चित्रण विस्मयजनक रूप मे किया गया है। फ्रास के साथ सघर्ष के बाद दरविश साम्राज्य का अन्त किस नाटकीय ढग से हुआ, इसका वर्णन सुन्दर ढग से किया गया है। यह पुस्तक पहले १८९९ ई० मे प्रकाशित हुई और इसकी पुनरावृत्ति १९०२ ई० मे हुई।

१९०० ई० मे चर्चिल अनुदार दल की ओर से ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के सदस्य चुन लिए गए। एक तो दक्षिण अफ्रीका के युद्ध मे चर्चिल ने क्रियात्मक रूप मे भाग लिया था, दूसरे इधर लेखक और पत्रकार के रूप मे उनकी ख्याति हो चली, इसलिए चर्चिल के राजनीति-प्रवेश का द्वार खुल गया। इसके पश्चात् चर्चिल ने लार्ड रेण्डाल्फ की जीवनी लिखी जिसकी उन दिनो अनुदार दलवालो को बडी आवश्यकता थी। यह वास्तव मे उनके पिता लार्ड रेण्डाल्फ चर्चिल की जीवनगाथा थी जो दो जिल्दो मे प्रकाशित हुई। उसके बाद यद्यपि उसका कोई तात्कालिक प्रतिफल चर्चिल को नही मिला, पर दो ही वर्ष बाद जब उदार दलवालो की सरकार बनी तो चर्चिल पार्लियामेण्ट के सदस्य-मात्र न रहकर तीस वर्ष की अवस्था मे ही मन्त्रिमडल के सदस्य बन गए। यहा उन्हे लायड जॉर्ज से मुकाबला करना पडा। अनुदार दल से अलग होकर भी चर्चिल का महत्त्व नही घटा और उन्होने शासन के कामो मे पहले लायड जॉर्ज के सहायक के रूप मे और फिर स्वतत्र रूप मे अनेक सुधार किए। इस प्रकार चर्चिल १९०५ से १९११ ई० के बीच जब आत्मोद्धार और आत्मविकास मे लगे थे उसी बीच जर्मनो ने युद्ध की

तैयारी कर ली और उसे उन्होने १९१४ मे एकाएक छेड भी दिया। चर्चिल की विलक्षण राजनीतिक प्रतिभा का परिचय उन्ही दिनो मिला। युद्ध मे ब्रिटेन की विजय लायड जॉर्ज और चर्चिल दोनो के पराक्रम का परिणाम थी और उसके बाद १९१९-२१ई० मे चर्चिल अच्छी तरह चमके। उन्होने न केवल भारत के असहयोग-आन्दोलन को दवाने मे काफी सफलता पाई, वल्कि वे रूस के वोलशेविज्म के विरुद्ध आन्दोलन और आयर्लैण्ड के गृहयुद्ध के कारण वने। वाद मे लायड जॉर्ज अनुदार दल से अलग हो गए तो उस समय चर्चिल का महत्त्व भी जाता रहा। चर्चिल जितना चमके थे, उतने ही धूम्राच्छादित हो गए। आस्टिन चेम्बरलेन और वोनार ला जैसे उच्च श्रेणी के लोगो ने कहा कि अब चर्चिल जैसे मूर्ख को सैनिक और नाविक विषयो मे टाग अडाने का अवसर नही दिया जाना चाहिए। इस प्रकार १९२२ई०मे चर्चिल कोराजनीतिसे अवकाश मिला तो वे 'विश्व-सकट १९१७-१८' ई० के शीर्षकान्तर्गत प्रथम महायुद्ध पर चार जिल्दो की वडी पुस्तक लिखकर प्रकाशित करने का अवसर पा गए। उन दिनो इस ग्रथ की वडी चर्चा हुई। प्रथम महायुद्ध का ऐसा सजीव और तथ्यात्मक वर्णन और कही प्रकाशित नही हुआ। आज भी उसकी घटनाओ का वर्णन पढने से लगता है कि द्वितीय विश्वव्यापी महायुद्ध वैसा भीषण नही था जैसाकि प्रथम महायुद्ध, क्योकि उस युद्ध मे सैनिको को शौर्य प्रदर्शित करने का अवसर मिला था जबकि द्वितीय महायुद्ध न्यूनाधिक रूप मे यात्रिक युद्ध सिद्ध हुआ जिसमे वैयक्तिक वीरता-प्रदर्शन की कोई गुजाइश नही थी—केवल यात्रिक एव सामूहिक सहार ही व्यापक रूप मे हुआ।

चर्चिल अपनी इस विख्यात पुस्तक के प्रकाशित होने के पहले ही अनुदार दल की सरकार मे फिर प्रविष्ट हो गए। इस प्रकार वे १९२४ से १९२९ ई० तक वाल्डविन की सरकार मे राज्यकोश के महामात्य बने रहे। १९२९ ई० के चुनाव मे अनुदार दल पराजित हो गया और श्रमजीवी दल की सरकार ब्रिटेन की अधिष्ठात्री बनी। मैकडॉनल्ड इसके प्रधान मत्री बने। भारत की स्वाधीनता का सवाल उन दिनो ब्रिटिश सरकार के सामने आया। मैकडॉनल्ड ने गोलमेज़ परिषद करके इस समस्या को हल करने का प्रयत्न किया। बाल्डविन भारत की स्वाधीनता के विरोधी बने। १९३१ ई० मे वाल्डविन और मैकडॉनल्ड का तो समझौता हो गया और उन्होने ब्रिटेन की सयुक्त राष्ट्रीय सरकार बना ली, पर चर्चिल को दूध की मक्खी की तरह निकाल वहार फेका गया। मैकडॉनल्ड और वाल्डविन के बाद चेम्बरलेन को प्रधानमत्रित्व मिला जिससे दस वर्ष तक चर्चिल को आगे वढने का अवसर नही मिला। उनकी बाते ब्रिटेन मे तव सुनी गई जब उन्होने अपनी लेखनी और वाणी द्वारा दस वर्ष बाद नाज़ी सकट की विभीषका से ब्रिटेन को चौकाया। पर हमे यह देखना है कि साहित्यिक चर्चिल ने इन दस वर्षो के अवकाशकाल मे क्या किया।

१९३० ई० मे चर्चिल ने अपने प्रथम पच्चीस वर्षो की जीवन-गाथा मेरा बाल्य जीवन' (माई अर्ली लाइफ) प्रकाशित कराया था, जो वास्तव मे एक वडी ही मनोरजक

और प्रमोदपूर्ण आत्म-कथा है यद्यपि उसकी बिक्री बहुत व्यापक रूप मे नही हुई। १९३२ ई० मे उनकी 'विचार और महोद्योग' (थाट्स एण्ड ऐडवेंचर्स) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, और १९३७ ई० मे 'महान समकालीन' (ग्रेट काटेम्पोरेरीज़) जिसमे चर्चिल ने पचीस प्रसिद्ध समकालीनो और पूर्ववर्तियो का परिचय सुन्दर भाषा मे लिखा। जर्मनी के सम्राट विलियम कैसर की जीवनी लिखते हुए उन्होने जो कुछ लिखा है उसका एक अल्पाश यहा दिया जाता है

"सम्राट विलियम द्वितीय का चरित्र लिखते हुए कोई यह नही सोच सकता कि वैसी स्थिति और अवस्था मे होने पर वह स्वय क्या करता। यदि आपका बचपन से ही ऐसे वातावरण मे पालन-पोषण होता, जिसमे आपपर यह छाप पडती कि आपको भगवान ने एक शक्तिशाली राष्ट्र का शासक नियुक्त किया है और आप जिस वश के है वह सामान्य नश्वर जीवो से ऊचा रहता आता है, यदि आपको तीस वर्ष की अवस्था के पहले ही बिस्मार्क की तीन विजयो का गौरव, प्रशसा और अधिकार-प्राप्त हो चुका होता, यदि आपकी सेवा मे निरन्तर वृद्धि, शक्ति-समृद्धि और अभिलाषा-प्राप्त जर्मन जाति होती, जनता आपकी वफादरी और कौशलपूर्ण चाटुकारिता और दरबारदारी का प्रदर्शन किया करती· तो प्रिय पाठक, क्या आप कैसर के समान ही न बन जाते।··· मुझे १९०६-१९०८ ई० मे उस समय सैन्य-व्यूह सचालन देखने का सौभाग्य एक मेहमान के रूप मे मिला था, जब वह अपने उच्चतम शिखर पर विद्यमान थी। बारह वर्ष बाद उसी व्यक्ति की क्या दशा होती है—उस सीमा के एक स्टेशन पर रेल के एक डिब्बे के अन्दर वह सिर झुकाए घण्टो पर घण्टे चुपचाप बिताने को बाध्य होता है और इस बात की प्रतीक्षा करता है कि उसे एक शरणार्थी के रूप मे वहा से उन लोगो के दुर्वचनो से बचता हुआ भाग निकलने दिया जाए, जिनकी सेनाओ का नेतृत्व करके उसने उनसे बेहद कुर्बानी करवाने के बाद उन्हे असीम पराजय दी थी।

"कैसा घोर दुर्भाग्य था। यह उसका अपराध था या अक्षमता ? कभी-कभी अक्षमता और अविवेक का ऐसा बुरा सम्मिश्रण बन जाता है कि उसे अपराध के सिवा और कुछ कह ही नही सकते। तो भी, इतिहास को उसके प्रति अधिक उदार दृष्टिकोण रखना चाहिए ··वह उसका दोष नही, भाग्य था।"

१९३९ ई० के सितम्बर महीने मे दूसरा विश्वव्यापी महासमर आरम्भ हो गया। इसमे चर्चिल अपने उसी पद पर पहुच गए जिसपर वे १९१४ ई० मे थे। वे ब्रिटिश नौसेना के सर्वेसर्वा बन गए। इस युद्ध मे जर्मन आक्रमण ने फ्रास, बेलजियम और हालैंड को तहस-नहस कर दिया। चेम्बरलेन प्रधान मन्त्री के पद से त्यागपत्र देकर अलग हो गए और चर्चिल को इस काल मे ब्रिटेन का प्रधान मन्त्री बनने का अवसर मिल गया, जिससे वे ब्रिटिश युद्ध-नीति के सम्पूर्ण सचालक बन गए। मई १९४५ ई० मे इस महायुद्ध का अन्त हुआ। इसके बाद एटली, बेविन आदि श्रमदलीय सदस्यो के अलग हो जाने के कारण चर्चिल ने ब्रिटिश सरकार का पुनर्निर्माण पूर्णत अनुदार दलीय ढग पर कर लिया।

किन्तु उसी साल के अन्त मे जब फिर चुनाव हुआ तो चर्चिल उसमे परास्त हो गए। इससे चर्चिल को राजनीति से अवकाश मिल गया और वे 'द्वितीय महायुद्ध' लिखने मे लग गए। १९४८ ई० मे इस ग्रन्थ का पहला भाग प्रकाशित हुआ और फिर क्रमशः पाच और भाग निकले। इस विस्तृत ग्रन्थ को लिखने के लिए चर्चिल को प्रचुर सामग्री उपलब्ध हुई और वे इस युद्ध के सचालको मे एक होने के कारण उसके सूत्रो और घटनाओ से बहुत निकटता के साथ परिचित थे। वास्तव मे उन्हे इस रचना के कारण ही नोवल पुरस्कार प्राप्त हुआ। चर्चिल ने युद्ध-काल मे कितने साहस और धैर्य के साथ दिन-प्रतिदिन सामने आनेवाली समस्याओ का हल किया और अन्त मे अपने राजनीतिक और सैनिक ज्ञान का उपयोग किया, यह इस ग्रन्थ के पढने से स्पष्ट हो जाता है।

यहा हम इस विस्तृत ग्रन्थ से युद्ध-समाप्ति-सम्बन्धी एक अनुच्छेद देकर चर्चिल की गद्य-रचना की बानगी पाठको को दिखाते है :

"जब मैं उस रात लगभग तीन बजे बिस्तर पर गया तो मुझे कष्ट-मुक्ति का अनुभव पूर्णरूप से हुआ। मुझे इस समूचे दृश्य (युद्ध मे आदेश) के सचालन का अधिकार था। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं भाग्य को साथ लेकर चल रहा हू और जैसे मेरा सारा पूर्व-जीवन मेरी इस घडी की परीक्षा के लिए तैयारी मे ही व्यतीत हुआ है। ग्यारह वर्ष की राजनीतिक व्याकुलता ने मुझे सामान्य दलगत विरोध से मुक्त कर दिया था। गत छ वर्षो मे मैंने जितनी विस्तृत चेतावनिया दी थी वे अब प्रकाश मे आ चुकी है और कोई मेरी इस बात का खडन नही कर सकता। मैं न तो युद्ध करने के लिए अपमानित किया जा सकता हू और न उसकी तैयारी के अभाव के लिए। मैं समझता था कि मैं उसके बारे में काफी जानता हू और मुझे निश्चय था कि मैं इसमे असफल नही हूगा। इसीलिए मैं प्रात.काल उठने के लिए अधीर होकर भी गहरी नीद सोया।"

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

अर्नेस्ट हेमिग्वे को १९५४ ई० का साहित्यिक नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके पहले ही वे अपनी लौह लेखनी के द्वारा एक प्रसिद्ध उपन्यासकार के रूप मे विश्वव्यापी नाम प्राप्त कर चुके थे। उन्हे अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना 'दि ओल्ड मैन ऐण्ड दि सी' (बुड्ढा आदमी और समुद्र) पर ही यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

पुरस्कार-प्राप्ति के पहले हेमिग्वे के सम्बन्ध मे तीन पुस्तके प्रकाशित हो चुकी थी और वे स्वय एक साहित्यिक सस्था बन चुके थे। १९५० ई० मे उनकी रचना 'एक्रास दि रिवर ऐण्ड इण्टू दि ट्रीज' (नदी पार के निकुज मे) प्रकाशित होने पर उनकी काफी चर्चा हो चुकी थी। एक अमेरिकन उपन्यासकार ने तो उन्हे शेक्सपियर के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण लेखक लिख डाला। इसपर पत्रो मे बडा विवाद छिडा और हेमिग्वे को अनायास ही पत्र-प्रसिद्धि प्राप्त हो गई। इसके पहले भी उनकी कहानियो पर चित्रपट तैयार हो चुके थे। उनके व्यक्तित्व की भी बहुत चर्चा हो चुकी थी। उनकी रचनाओ मे मुख्यत उनकी आत्मकथा निरन्तर झलकती रही है। जिन लोगो और स्थानो से उनका प्रेम था, वे ही उनके उपन्यासो मे प्रतिभासित होते है। उनके पाठक उनके आख्यायिका-पात्रो मे इस प्रकार उलझ जाते है कि उनसे अलग होना कठिन हो जाता है। उन्होने अपने सारे जीवन का, यहा तक कि अपनी भावी मृत्यु-शय्या तक का वर्णन दो उपन्यासो 'दि स्नोज़ ऑफ किलिमजारो' (किलिमजारो की बरफ) तथा नदी पार के निकुज' मे स्पष्ट रूप से कर दिया है।

अर्नेस्ट मिलर हेमिग्वे का जन्म अमेरिका के इलीनोई प्रदेश के ओक पार्क मे २१ जुलाई, १८९९ ई० मे हुआ था। उनके पिता एक देहाती डॉक्टर थे जिनका चरित्र-चित्रण उन्होने अपनी 'निक ऐडम्स' कहानियो मे किया है।

हेमिग्वे हाईस्कूल से कई बार भागे और उच्चशिक्षा के तो निकट भी नही गए। जब वे अठारह वर्ष के थे तो प्रथम महायुद्ध चल रहा था इसीलिए वे सेना मे भर्ती होना चाहते थे, पर डॉक्टर ने उन्हे अक्षम कहकर टाल दिया। इसके बाद वे कैन्सस सिटी मे पत्र-सवाददाता का काम करते रहे। १९१८ ई० मे रेडक्रास मे एम्बुलेस-ड्राइवर के काम मे लग गए और इटली के मोर्चो पर भेज दिए गए। 'शस्त्र-विदाई' (फेअरवेल टू आर्म्स) मे उन्होने अपने उस अनुभव का वर्णन बडे सुन्दर ढग से किया है और वह एक प्रत्यक्ष-

दर्शी का तथ्यात्मक वर्णन है। वे वेनिस से बीस मील पर एक नदी के किनारे घायल हो गए थे जिससे उन्हे मिलान के अस्पताल मे भेज दिया गया। इटली की सरकार ने उन्हे तमगा दिया और १९१९ ई० मे वे अमेरिका लौट आए। युद्ध के अनुभवो को लेकर हेमिग्वे ने 'ए वे यू विल नेवर बी' (जैसे आप कभी न होगे) मे 'निक ऐडम्स का जो चरित्र-चित्रण किया है उससे पाठको का अनुमान है कि युद्ध के आघात और आतकपूर्ण घटनाओ से उनमे एक सनक-सी आ गई थी। उसके बाद तो वे हिंसा और उससे उत्पन्न स्थितियो को कथा-वस्तु बनाकर ही उपन्यास लिखने लगे।

१९२० ई० मे वे फिर पत्रकारिता के क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए और इस बार उन्होने उसमे जमकर १९२६ ई० तक काम किया। बाद मे भी वे अनेक बार पत्रकारिता से सम्बद्ध रहे। शिकागो मे उनकी मुलाकात शेरवुड एण्डर्सन से हुई जो उनके प्रथम साहित्यिक गुरु बने। एण्डर्सन का प्रभाव इनकी बाद की रचनाओ—विशेषकर 'टारेण्ट्स ऑफ स्प्रिग' (वसन्त-प्रवाह) पर पड़ा।

इस रचना के बाद हेमिग्वे टोरटो चले गए और वहा एक विदेशी पत्र के सम्वाददाता के रूप मे काम करने लगे। पीछे पेरिस मे उन्होने जब हर्स्ट-पत्रमाला के लिए काम किया था तो वहा उनका परिचय कुमारी गरट्रूड स्टीन से हुआ जिन्होने अपने अनुभवो से उन्हे प्रभावित किया। एज़रा पाउण्ड ने भी इन्हे साहित्यिक सहायता दी और उपन्यासकार सिक मैडोक्स फोर्ड ने भी। जेम्स ज्वायस से भी इनका परिचय हो गया था। कुमारी स्टीन से इनकी घनिष्टता बढी, किन्तु हेमिग्वे ने उसका आत्म-चरित 'एलिस की आत्म-कथा' (आटोबायोग्राफी आफ एलिस टोकलाज) मे लिखते हुए जो कुछ लिख मारा है, वह अतिशय अतिरजित है अत. अविश्वसनीय भी।

हेमिग्वे ने पेरिस मे कुछ वर्ष गरीबी के साथ काटे और अमेरिका लौटकर एक साल और पत्र का काम करके उससे अलग हो गए और स्वतन्त्र लेखन मे लग गए। इस लेखमाला मे सबसे पहले १९२३ ई० मे उनकी 'थ्री स्टोरीज़ ऐण्ड टेन पोयम्स' (तीन कहानिया और दस कविताए) प्रकाशित हुई और १९२५ ई० मे 'इन आवर टाइम' (हमारे समय मे) शीर्षक कहानी। किन्तु इनमे से कोई भी आकर्षक न सिद्ध हुई। इसके बाद जब इन्होने १९२६ ई० मे 'सन आलसो राइजेज' (सूर्य भी उगता है) प्रकाशित कराया तो इन्हे आर्थिक सफलता मिली। इनका १९२० ई० के बाद का जीवन ही इसका मुख्याधार था इसका घटनास्थल पेरिस का एक पत्र-कार्यालय, ब्रिटिश और अमेरिकन एव बोहेयिमन पत्रकारो से वार्तालाप और स्पेन मे लम्बी छुट्टी बिताने के स्थानो मे रखा गया है।

कुमारी स्टीन ने हेमिग्वे को साड और मनुष्य की लड़ाई देखने का चस्का लगा दिया था। १९३७ ई० मे 'दोपहर के बाद मौत' (डेथ इन दि आफटरनून) लिखते समय इन्होने अपनी इस जानकारी का उपयोग भली-भाति किया। अपराजित (दि अनडिफीटेड) कहानी मे भी इस अनुभव का लाभ उठाया गया है। १९२७ ई० मे इनकी 'स्त्री के

बिना पुरुष' (मैन विदाउट वोमेन) प्रकाशित हुई। इसके बाद तो उनकी रचनाओ की माग बढ गई और पत्रिकाओ मे उनकी कहानिया प्रचुर सख्या मे निकलने लगी।

१६२८ ई० मे वे अमेरिका लौटने के बाद वहा जमकर दस वर्ष रहे। अब वे अनेक कहानिया लिखने का लोभ छोडकर एक अच्छा उपन्यास लिखने के लिए जम गए। यहा वे फ्लोरिडा मे रहने लगे और १६२६ ई० मे जब वे केवल तीस वर्ष के थे 'शस्त्र-विदाई' जैसा उपन्यास प्रकाशित करा दिया जिसकी धूम मच गई और इन्हे व्यापक रूप से यश प्राप्त हुआ। इसके बाद तो वे दो वर्ष तक इधर-उधर सैर करते रहे—स्विट्जरलैड और स्पेन गए और ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका मे शिकार खेलने के लिए भी गए। इसके सिलसिले मे हेमिग्वे ने अपनी यात्रा-पुस्तक 'अफ्रीका की हरी पहाडिया' (दि ग्रीन हिल्स आफ अफ्रीका) लिखी जो १६३५ ई० मे प्रकाशित हुई। उन्होने उसी पृष्ठभूमि को लेकर दो सुन्दर कहानिया लिखी जो (विजेता कुछ नही लेते) 'विनर्स टेक नथिग' सग्रह मे १६३३ ई० मे प्रकाशित हुई। १६३७ ई० मे इन्होने 'हैव एण्ड हैव नाट्' (अमीर और सर्वहारा) उपन्यास साम्यवादी कथा-वस्तु को आधार बनाकर लिखा और प्रकाशित कराया। स्पेन के गृह-युद्ध के बाद उन्होने 'स्पेनिश अर्थ' (स्पेनी-भूमि) और 'फार हूम दि बेल टॉल्स' (घटा किसके लिए बजता है) उपन्यास लिखे जो १६४० ई० मे प्रकाशित हुए।

१६४१ ई० मे युद्ध-सवाददाता बनकर वे चीन चले गए। वहा से लौटने के बाद हवाना मे बस गए और उसीको उन्होने अन्त तक अपना निवासस्थान बनाए रखा। १६४२ से १६४४ ई० तक वे अपनी मोटर लाच मे बैठकर क्यूबा से पनडुब्बिया भगाने का काम करते रहे। १६४४ ई० मे वे यूरोपीय युद्धक्षेत्र मे जा पहुचे। पेरिस पहुचनेवालो मे उनकी सेना पहली थी। वे जर्मनी भी गए और ब्रिटेन के रायल एयर फोर्स के साथ अनेक सैनिक उडानो मे गए।

युद्ध के बाद कई वर्षो तक हेमिग्वे के बारे मे किसीने कुछ नही सुना वे हालीवुड मे अपनी कहानियो की फिल्म बनवाने का लाभप्रद काम करते रहे। इन फिल्मी कहानियो मे 'मैकोम्बर' और 'किलर' बहुत प्रसिद्ध हुईं। 'फार हूम दि बेल टॉल्स' तथा 'दि स्नोज़ आफ किलिमजारो' की कहानियो पर भी चित्रपट बने जिनमे अन्तिम का रूप बदलकर डाइरेक्टर ने अश्लील कर दिया।

१६५० ई० मे प्रकाशित 'एक्रास दि रिवर ऐण्ड इण्टू दि ट्रीज़' मे उन्होने मृत्यु का वर्णन कर अपनी मृत्यु की कल्पना की थी। यह पुस्तक बहुत अधिक बिकी, किन्तु 'दि ओल्डमैन ऐण्ड दि सी' (१६५४) को नोबल पुरस्कार समिति ने उसे इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना घोषित किया। उसी वर्ष (१६५४) ई० मे वे पूर्वी अफ्रीका की यात्रा पर भी गए।

हेमिग्वे को अपनी इन रचनाओ के लिए बडा सम्मान प्राप्त हुआ। उनकी 'अफ्रीका की हरित पहाडिया' व्यापक रूप से पढी गई। हेमिग्वे अपनी व्यक्तिगत विशेषता भी रखते थे। अमेरिका और यूरोप के सैनिक श्रेणी के अधिकारी उन्हे अपने अन्दर खपनेवाला नही समझते थे। बात यह थी कि हेमिग्वे इनकी तरह रगीन जातियो से घृणा नही करते थे।

इस बात पर उनकी आलोचना अवश्य की जाती रही कि उन्होने चार विवाह किए और वे कभी-कभी मद्यपान मे बहक जाते और घूसेबाजी की करामात भी दिखा देते थे, पर उनमे कलाकार की कोमलता और उच्चतम भावुकता और अनुभूति भी थी। अपनी सवेदनशीलता के कारण ही वे अपने उपन्यासो के छोटे-बडे सभी पात्रो के साथ गहरी सहानुभूति रखते थे। अनेक पत्रकारो ने उन्हे 'विनीत, विद्वान' कभी-कभी 'उदासीन', 'अध्यवसायी' और 'उदार' कहा है। कुछ ने यह भी जोड दिया है कि वे कभी-कभी सनक-से जाया करते थे, किन्तु उनकी इस झक मे कोई बहुत असामान्य बात नही होती थी। वे बिल्लियो के बडे शौकीन थे।

हेमिग्वे को शिकार करने, मछली मारने, वर्फ पर फिसलने और मद्यपान का विशेष शौक था। उसका शरीर गठीला और विशाल था। उनके लेखन मे शारीरिक श्रम की झलक भी मिलती है। चित्रकला, भाषा-विज्ञान और उपन्यास-लेखन उनके प्रिय लेखन-विषय है। अपने कुछ चरित-नायको की तरह उनमे अधिक बाते करने का रोग भी था। वे किसी भी विषय पर बातचीत करने को सन्नद्ध मिलते थे। वे अपने उपन्यासो के नायको से कभी सारी बाते स्पष्ट नही कहलाते। उन्होने कई जगह प्रकारान्तर से अग्रेजो की प्रशसा इसलिए की है कि वे कम बोलते है। 'इन आवर टाइम' मे उन्होने अपने अग्रेज मित्र डार्मन स्मिथ का इसी दृष्टि से सुन्दर चरित्र-चित्रण किया है। उन्होने यह भी स्पष्ट किया है कि अमीरी ढग का सैनिक गुण तो अग्रेज, हगेरियन और स्पेनी फौजी अफसरो मे ही होता है। इनकी रचना-शैली रुडयार्ड किप्लिग की रचनाओ से प्रभावित प्रतीत होती है।

हेमिग्वे की अधिकाश पुस्तके अनेक स्थलो और उनके ही लोगो से सम्वन्ध रखती है। 'शस्त्र-विदाई' (फेयरवेल टू आर्म्स) मे उन्होने इटालियन पर्वतो और वहा की घाटियो का सुन्दर वर्णन किया है। प्राकृतिक वर्णन — शीत, कुहार, वृष्टि का भी इन्होने बहुत अच्छा चित्रण किया है। इसी प्रकार मानव-कृत्यो के वर्णन मे इनका युद्ध, घृणा, प्रेम, शान्ति का वर्णन आकर्षक है। कही-कही तो प्रकृति-वर्णन मे हेमिग्वे ने कवित्वमय भाषा लिख डाली है।

उनकी कथाओ मे दो तरह के लोग अधिक है—पहले तो सीधे-सादे पर्वत-निवासी जो आवश्यकता पडने पर छापामार युद्ध करते है। 'बुड्ढा और समुद्र' (दि ओल्ड मैन ऐण्ड दि सी) मे ऐसे लोगो का वर्णन अधिक मिलता है और उनके सघर्षों तथा उनके साहस-कौशल का अच्छा परिचय मिलता है। दूसरे प्रकार के पात्र अनेक प्रकार के कर्तव्य दिखाते है। 'फीस्टा' मे जैक बार्नेस ऐसा ही है। 'शस्त्र-विदाई' मे लेफ्टिनेट हेनरी भी इसी कोटि का है। 'विजयी कुछ नही ले पाता' (विनर टेक्स नथिंग) मे निक का चरित्र भी न्यूनाधिक रूप मे इसी प्रकार का है। किन्तु इस प्रकार के पात्र उपन्यासो और लम्बी कहानियो मे ही विकसित हुए है। स्त्रियो के चरित्र मे उन्होने एक विशेषता दिखाई है कि वे अपना निजी व्यक्तित्व रखती है। 'फीस्टा' मे लेडी ब्रेट ऐशली का

चरित्र-चित्रण करते हुए उन्होने बताया है कि वह मद्यप-सी महिला विवाह तो मादक कैम्पवेल से करनेवाली है जोकि उसीकी सामाजिक श्रेणी का अग्रेज है, और सोती रावर्ट कोहन के साथ है। फिर भी वह प्रेम इनमे से किसीसे नही करती।

'शस्त्र-विदाई, के एक पात्र फ्रेडरिक हेनरी के मुह से हेमिग्वे ने सैनिक जीवन के अन्त का वर्णन कटुतापूर्ण शब्दो मे करते हुए कहा है "तुम्हे कुछ सीखने-समझने का समय ही नही मिला। अन्त मे तुम्हे नियमोपनियमो के फन्दे मे फास लिया गया—और अब तो तुम्हे मौत का आलिगन करना ही पडेगा। अगर बच गए तो गर्मी-आतशक आदि का शिकार बनकर मरना है।" भाग्यवाद का पुट होते हुए भी यह उपन्यास शून्यवाद या अमानवता का समर्थन नही करता। इटली के सैनिको का उन्होने स्नेहसिक्त वर्णन किया है—पियक्कड रिनाल्डी, अब्रुज्जी का नवयुवक पुरोहित, एम्बुलेन्स गाडियो के तीन ड्राइवरो के ऐसे चित्र है जो भुलाए नही जा सकते। घोर कष्ट उठाकर और वीरतापूर्ण पराजय के वाद भी उनमे हसी-खुशी की गर्मी शेप रहती है।

'घटा किसके लिए बजता है' (फार हूम दि वेल टॉल्स) मे १९३७ ई० की घटना है और सो भी चार दिनो के अन्दर घटित। घटनास्थल स्पेन का युद्धस्थल है जहा फ्राको-लाइन के पीछे एक पुल तोडने का प्रयत्न किया जाता है। पर इसे उसमे वडे खतरे के बाद सफलता मिलती है। प्रयत्न मे रावर्ट जोरडन नामक अमेरिकन घुडसवार घोडे से गिरकर सकट मे पड जाता है और पुल तोडनेवाले दल का नेता पैबलो अपने अनुयायियो सहित भाग निकलता है। वह अपने कर्त्तव्य, अपनी टोली और अपनी प्रेयसी मरिया की (जो उस टोली की एक सदस्या है) बाते सोचता है। उसके अन्त को हेमिग्वे ने ऐसे सुन्दर वर्णन पवारो के ढग पर लिखा है कि पाठक मुग्ध हुए बिना नही रह सकता।

'अमीर और अकिंचन (हैव ऐण्ड हेव नाट) 'नदी के उस पार निकुज मे' (एक्रास दि रिवर एण्ड इट्टू दि ट्रीज), 'बुड्ढा और समुद्र' (दि ओल्डमैन ऐण्ड दि सी) आदि उपन्यासो मे हेमिग्वे ने बडे ही कला और कौशलपूर्ण ढग से कथावस्तु और वर्णन का सौन्दर्य निभाया है। सच पूछा जाए तो ससार के उपन्यासकारो मे केवल हेमिग्वे ही ऐसे है जिसके गद्य मे पद्य का आनन्द मिलता है और जिनका प्रत्येक शब्द अत्यन्त स्वाभाविक, जादू-भरा और अपने स्थान पर जडा प्रतीत होता है। उनके उपन्यासो मे जो दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है वह यह कि उनमे कथानको का वैविध्य है। कही तो आप उन्हे मैड्रिद के साडो के साथ मनुष्य की लडाई के मेले मे देखेगे तो कही बर्फीली घाटियो मे प्रकृति के मुखरित सौदर्य के बीच, कही आप उन्हे युद्ध की पहली पक्ति मे देखेगे तो कही बूढे और शेरो-सम्बन्धी स्वप्नो मे तरगित होते पाएगे।

परन्तु ससार को अपने उपन्यासो और चित्रपटो से वैविध्य का दर्शन करानेवाला यह महान उपन्यासकार (१९६१ ई० मे) अपने घर बैठे बन्दूक साफ करते हुए न जाने कैसे अपने ही हाथो गोली का शिकार हो गया।

हाल्डोर फिलजन लैक्सनेस

१९५५ ई० का नोबल पुरस्कार आइसलैण्ड के महाकवि हाल्डोर फिलजन लैक्सनेस को मिला। उन्होने अपनी रचनाओ द्वारा आइसलैण्ड की एक पुरानी काव्यात्मक शैली का जीर्णोद्धार किया और इस दृष्टि से उनका बहुत अधिक महत्त्व हो जाता है।

लैक्सनेस का जन्म १९०२ ई० मे हुआ था। उन्होने अपनी पहली रचना सत्रह वर्ष की अवस्था मे एक उपन्यास के रूप मे लिखी थी, किन्तु उसमे इनकी शैली परिपक्व नही हुई थी। पीछे जब उन्होने यूरोप की यात्रा की और प्रथम विश्व-युद्ध के सिलसिले मे जगह-जगह घूमे तो उनका अनुभव बढ गया। ये रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के अनु-यायी बन गए और कई वर्ष तक लगातार भ्रमण की अवस्था मे ही रहे। इनकी अधिकाश यात्रा का समय फ्रास और सयुक्तराज्य अमेरिका मे व्यतीत हुआ। इन्होने इन धार्मिक आदेशो को मजबूती से पकडा कि मनुष्य को अपने पडौसियो से प्रेम करना चाहिए। उन्होने साम्यवाद का भी अध्ययन किया, जिसका परिचय इनकी बाद की रचनाओ मे मिलता है।

१९३० ई० तक इन्होने अपना भ्रमण और लेखन-शैली दोनो परिपक्व कर लेने के बाद जो लेखनी उठाई तो इनकी रचनाए अधिक महत्त्वपूर्ण बन गई। वे आइसलैण्ड के पहले निवासी थे जिन्होने 'सल्का वल्का' उपन्यास १९३४ ई० मे प्रकाशित कराकर नाम कमा लिया। इनकी भाषा और शैली दोनो मे सजीवता आ गई। आइसलैण्ड मे जिन गावो मे मछलिया मारी जाती है, उनका चित्रण उन्होने बडी खूबी से किया है।

इस प्रकार की और भी रचनाए उन्होने की जिनमे 'स्वतन्त्र लोग' (सजाल्फरेट फोक) १९३५ ई० मे प्रकाशित हुई। इसमे आइसलैण्ड के निवासियो को प्रकृति और समाज के विरुद्ध कैसा सघर्ष करना पडता है इसका सुन्दर वर्णन है – साथ ही उन्हे अपना स्वतन्त्र अस्तित्व कायम रखने के लिए क्या-क्या करना पडता है, इसका भी।

'आइसलैण्ड का घटा, (आइसलैण्ड क्लुकान) १९४३ ई० मे प्रकाशित हुआ जिसमे यह दिखाया गया है कि डेन्मार्क के शासनान्तर्गत १८वी शताब्दी मे आइसलैण्ड की कैसी दुर्दशा हो गई थी। वर्तमान युग का आभास भी उनकी रचनाओ मे अच्छी तरह मिलता है। लैक्सनेस ने अपनी मातृभाषा मे कोमल भावनाओ से भरा कथा-साहित्य भरकर उसके भण्डार की वृद्धि और अपने छोटे-से देश का नाम उजागर किया है।

जुआन रामोन जिमेनेज़

१९५६ ई० का पुरस्कार स्पेन के कवि जुआन रामोन जिमेनेज़ को प्राप्त हुआ।

जिमेनेज का जन्म पोर्टोरिको (अमेरिका) मे १८८१ ई० मे हुआ था औ
१९५८ ई० मे उनका देहान्त हो गया। उनके गीत स्पेनी भाषा मे है और वे गेय ह
के कारण स्पेन-भाषी क्षेत्रो मे बडे प्रेम से गाए जाते है। उनकी कविताओ मे उच्च भ
और कलात्मक शुद्धता भरी हुई है।

१९१२ ई० से १९१६ ई० तक जिमेनेज अन्य स्पेनी कवियो के साथ रहे जि
अण्टोनियो मकाडो के साथ उनका अच्छा सम्बन्ध रहा। १९१६ ई० मे इनका विव
जेनोबिया कैम्परूबी के साथ हुआ जिन्होने श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओ का अ
वाद स्पेनी भाषा मे किया था। स्पेन के गृह-युद्ध के समय जिमेनेज़ मैंद्रिद मे ही रहे। इ
बाद उन्होने देश-त्याग कर दिया और विदेशो मे रहने लगे। क्यूबा मे इन्होने का
समय गुज़ारा और २९ मई, १९५८ ई० को सेन जुआन मे उनका देहान्त हो गया

जिमेनेज़ ने अपने जीवन का अधिकाश समय लिखने मे ही लगाया। उन्ह
कविताए तो लिखी ही, प्रकाशन-सम्बन्धी अन्य कामो मे भी व्यस्ततापूर्वक समय काट
फ्रेंच साहित्यिको मे उनकी रचनाओ की काफी चर्चा हुई। उनका 'अध्यात्म गीत' (सो
टोज़ स्पिरिचुएल) जो १९१४-१५ ई० मे ही प्रकाशित हुआ था, अधिक चर्चा
विषय बना क्योकि उसने सोलहवी सदी के स्पेनी गीतो की याद दिला दी।

विवाह के बाद जिमेनेज़ की साहित्य-रचना ने और भी जोर पकडा और f
तो उनके ग्रन्थ सिलसिलेवार निकलते ही गए। प्रकाशन का यह क्रम १९५५ ई०
चलता ही गया। उनकी गद्य-रचना मे तीन उल्लेखनीय है—'प्लेटेरोय और मै', 'एस
नोल्स डि ट्रेस मुण्डोज' और 'राइडर्स टु द सी'।

आलबेयर कामू

१९५७ ई० का नोबल पुरस्कार फ्रासीसी साहित्यकार आलबेयर कामू को मिला।

कामू का जन्म ७ नवम्बर, १९१३ ई० को अलजीरिया मे हुआ था। प्रथम विश्वव्यापी महासमर मे उनके पिता काम आ गए थे। उनके पिता अलसेशियन और माता स्पेनी थी। जिन दिनो उनका जन्म हुआ, घर मे गरीबी और कठिनाई से दिन व्यतीत होते रहे थे। अलजीरिया विश्वविद्यालय मे वे दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर रहे थे, पर बीमारी के कारण पढना-लिखना छूट गया। १९३९ ई० तक वे उत्तर अफ्रीका मे ही रहे। फिर वे पत्रकार और अभिनेता के रूप मे काम करते रहे। खेल-कूद और रगमच उनकी दिलचस्पी के विषय बन गए।

उनकी रचनाओ मे सर्वप्रथम – 'ला ऐन्वर्स ए-लेड्राइट' १९३७ ई० मे प्रकाशित हुआ। उसके बाद 'नोसेज' १९३८ ई० मे। ये दोनो ही निबन्ध सग्रह थे, जिनसे उनकी लेखन-शक्ति और उत्तरी अफ्रीका के प्रति भावना स्पष्ट हो जाती है।

१९४२ ई० मे कामू फ्रासीसी रक्षक-दल मे सम्मिलित हो गए और एक गुप्तपत्र—'कामेट' के लिए लिखने लगे। उसका सम्पादन उन्होने १९४५ ई० तक किया। इसके बाद उनके चार पत्र पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। इन पत्रो द्वारा युद्ध के बारे मे कामू के विचार सहज ही समझ मे आ जाते हैं।

कामू की पहली मुख्य रचना 'ले एट्रेजर' थी जो १९४२ ई० मे प्रकाशित हुई। १९४६ मे इसका अग्रेजी अनुवाद 'दि आउटसाइडर' और 'स्ट्रेजर' (अमरीकन सस्करण) के नाम से प्रकाशित हुए। इस रचना मे उनकी एकाकीपन की भावना व्यक्त हुई है। इससे वे बीसवी सदी के रहस्य-ज्ञाता के रूप मे प्रसिद्ध हो गए। 'जीवन' का निरर्थक रूप मे प्रयोग करने के बारे मे उनकी दूसरी रचना 'ले माइथ डि सिस्फी' १९४२ ई० मे निकली जो बाद मे अग्रेजी मे अनूदित होकर प्रकाशित हुई।

इसके बाद नाटको का ताता शुरू हुआ तो 'ले मालेनतेन्द्र' (१९४४ ई०), 'कैलिगुला' (१९४५ ई०), 'ले रेट-डी-सीज' (१९४८ ई०), 'ले जस्टिस' (१९५० ई) प्रकाशित हुए जिनका मिश्रित स्वागत हुआ। ये सभी नाटक रगमच पर अभिनीत हुए और इनमे दूसरे और चौथे के चार-चार सौ से अधिक प्रदर्शन हुए।

१९४७ ई० मे उनका 'ले पेस्टे' प्रकाशित हुआ जिसका अंग्रेजी सस्करण 'प्लेग'[1] के नाम से निकला। इसमे यह दिखाया गया है कि उत्तर अफ्रीका मे प्लेग फैलने पर उसकी मनुष्य पर क्या प्रतिक्रिया होती है, किन्तु इसका गहरा और अन्तर्निहित अर्थ भी है। कामू ने यहा समाज के प्रति व्यक्ति के कर्तव्य का दिग्दर्शन किया है। इस विषय को उन्होने अपने एक दूसरे उपन्यास 'विद्रोह' (ले होम रिवोल्ट) मे अधिक विस्तार के साथ प्रतिपादित किया है। इसमे क्रान्ति के आदेश पर विस्तृत तर्कयुक्त व्याख्या प्रस्तुत की है।

१९५६ ई० मे उनका 'ला शूट' प्रकाशित हुआ जिसका अंग्रेजी अनुवाद 'फाल' (पतन) के नाम से १९५७ ई० मे निकला। यह एक लघु उपन्यास है जिसमे लेखक की एक अद्भुत आशा की झलक मिलती है। इनकी छ कहानियो का एक सकलन 'ले एग्जाइल एट ले रोमूम' (१९५७ ई०) के नाम से प्रकाशित होकर अधिक ख्याति प्राप्त कर चुका है।

कामू ने धार्मिक विश्वास के अभाव मे एक स्वीकृत मानदण्ड की स्वीकृति पर जोर डाला है। उनकी रचनाओ मे आशावाद की झलक सर्वत्र दिखाई देती है। उन्होने बौद्धिक और आध्यात्मिक समस्याओ को सुलझाने का प्रयत्न किया है और इसके लिए मानवीय एकता पर जोर दिया है। उन्होने मानव-दुखो की अनुभूति अपने हृदय से उडेलकर कागज पर रख दी है और हिंसा, क्रूरता, प्रपीडन और अत्याचार के विरुद्ध चुनौती दी है। इस हैसियत से उन्होने एक विशिष्ट लेखक का स्थान प्राप्त कर लिया है और वे उसके अधिकारी बन गए हैं।

---

१ हिन्दी में भी यह इसी नाम से अनुवादित होकर प्रकाशित हो चुका है।

बोरिस पास्तरनाक

१९५८ ई० का नोबल पुरस्कार रूस के बोरिस लिवोनन्दोविच पास्तरनाक को देने की घोषणा हुई, पर रूसी कम्युनिस्ट सरकार की राजनीतिक अडगेबाज़ी के कारण उन्होने उसे लेने से इन्कार कर दिया ।

पास्तरनाक की रचनाग्रो मे अधिकाश समसामयिक काव्य है और उन्हे रूसी महाकाव्य-परम्परा के क्षेत्र मे अद्भुत सफलता प्राप्त हुई है, पर उनके उपन्यास 'डॉ० जिवागो' मे उन्होने अपने विचार इस स्वतत्रता से व्यक्त किए जो रूसी सरकार को सहन नही हुए ।

पास्तरनाक का जन्म १० फरवरी, १८९०ई०को मास्को मे हुआ था। उनके पिता एक कलाकार थे जिन्होने लियो टॉल्सटॉय की रचनाग्रो का भी चित्रण किया था और उनके परिवार का भी ।

बोरिस पास्तरनाक ने १९१२ ई० से लिखना शुरू किया और उनका पहला कविता-सग्रह 'बादलो मे जुडवा' (ब्लिजनेत्स वी० तुचाख) १९१४ ई० मे प्रकाशित हो गया था । उनके कविता-सग्रहो मे 'प्रतिबन्ध के पार' (पोवर्स बैरीरोव) १९१७ ई० मे, कथावस्तु और भिन्नताए' (तीमी इवरियात्सी) १९२३ ई० मे और 'दूसरा जन्म' (तोरो रोज़देवी) १९३२ ई० मे प्रकाशित हुए । इनकी कुछ कविताए और कहानिया अग्रेजी मे भी अनूदित हुई है ।

उन्होने उराल के एक कारखाने मे काम किया और वे सदा विचारो की उलझन और निष्कर्ष मे तल्लीन रहे । 'मेरी बहन, जीवनी' शायद उनके कविता-सग्रहो मे सबसे अधिक पसन्द किया गया । यह १९२२ ई० मे ही प्रकाशित हो गया था । 'लेफ्टिनेट स्मित' (१९२६ई०) इनकी बाद की रचना है। १९२७ ई० मे उन्होने कुछ कहानिया और अपनी आत्मकथा प्रकाशित कराई। १९३० मे १९४० ई० के बीच उनका कोई महत्व-पूर्ण ग्रन्थ नही निकला और गेटे, शेक्सपीयर, क्लीस्ट, वर्लेन और बेन जान्सन की रच-नाग्रो का रूसी अनुवाद उन्होने उन्ही दिनो किया । १९३७ ई० मे उन्होने सैनिको की एक टुकडी को विद्रोह के लिए प्राणदण्ड देने का विरोध किया ।

१९५३ ई० में रूस के तत्कालीन जोसेफ स्टालिन की मृत्यु के बाद उन्होने कोई महत्त्वपूर्ण रचना की तो वह 'डॉक्टर ज़िवागो' उपन्यास था, पर उसे १९५६ मे

'नोवीमीर' मासिक ने प्रकाशित करने से इन्कार कर दिया। इसका कारण यह बताया गया कि उसमे समाजवादी क्रान्ति का विरोध दिग्दर्शित किया गया है।

इस प्रकार निराश होकर पास्तरनाक ने अपनी यह रचना एक इटालियन साम्यवादी प्रकाशक को, जो रूस आया था, सौप दी, और वह रूसी के बदले नवम्बर १९५७ ई० मे पहले इटालियन मे और फिर अग्रेजी मे प्रकाशित हुई। बाद मे इसका फ्रेच सस्करण निकला। २२ अक्तूबर को स्वीडिश एकैडमी ने उन्हे नोबल पुरस्कार देने की घोषणा की। ये पहले ही रूसी थे जिन्हे उनकी 'सुरम्य काव्य-कला और अन्य रचनाओ' के लिए यह पुरस्कार घोषित हुआ, पर उन्होने उसे स्वीकार नही किया। इवान बुनिन नामक जिस रूसी को १९३३ ई० मे यह पुरस्कार मिला था, वे एक जिलावतन रूसी थे।

पास्तरनाक इस पुरस्कार की घोषणा से प्रसन्न हुए थे, परन्तु जब रूसी पत्रिका 'लिटरेचरन्या गजेटा' मे यह प्रकाशित हुआ कि यह पुरस्कार पास्तरनाक को उनके 'डाक्टर जिवागो' मे प्रतिपादित साम्यवाद-विरोधी विचारो के कारण राजनीतिक प्रोत्साहन के रूप मे दिया गया है तो २९ अक्तूबर को पास्तरनाक ने पुरस्कार लेने से इन्कार करते हुए स्वीडिश एकैडमी को सूचित किया कि वे इस पुरस्कार को लेने के योग्य नही है। शायद रूस उन्हे जिलावतनी की सजा भी दे देता, पर उन्होने ख्रु श्चेव से प्रार्थना की कि उन्हे देश से न निकाला जाए, क्योकि ऐसा करने का अर्थ होगा उन्हे मृत्यु-दण्ड देना। ३० मई, १९६० ई० को उनका देहान्त हो गया।

पास्तरनाक पहले और एकमात्र ऐसे बडे कवि थे जिन्होने क्राति (१९१७ ई०) के बाद भी रूस को नही छोडा। साम्यवादियो ने उनकी कडी टीका की। १९३० ई० के बाद तो उनकी रचनाए अग्रेजी, फ्रेच, जर्मन और अन्य भाषाओ की श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होने लगी। उन्होने अग्रेजी, फ्रेच, जर्मन आदि भाषाओ से रूसी मे अनुवाद भी किए। इन अनुवादो मे शेक्सपीयर, गेटे की श्रेष्ठ रचनाए सबसे ऊची है। उनका अपना विख्यात उपन्यास, जिसकी धूम सारे ससार मे मची, 'डॉक्टर ज़िवागो' ही है जो नवम्बर १९५० ई० मे प्रकाशित होकर विख्यात हुआ।

साल्वातोर काज़ीमोदो

१९५९ ई० का नोबल पुरस्कार इटली के सिसिली द्वीपवासी प्रसिद्ध कवि सीन्योर साल्वातोर काजीमोदो को मिला। उनकी रचनाओ मे यह विशेषता है कि उनमे जीवन के दु खपूर्ण अनुभव आग्नेय भाषा मे व्यक्त किए गए है। कविता-लेखन के अतिरिक्त उन्होने समीक्षा के रूप मे भी बहुत कुछ लिखा है।

साल्वातोर का जन्म सिसिली द्वीप के मोदिका नामक स्थान मे २० अगस्त, १९०१ ई० को हुआ था। उनकी शिक्षा विधिवत् हुई थी और वे अपने समसामयिक तकनीकी प्रगति से भली भाति अवगत प्रतीत होते है। उनकी बाद की रचनाओ मे इसका आभास अच्छी तरह मिल जाता है। रोम के एक शिल्प महाविद्यालय मे इन्होने शिक्षा प्राप्त की थी और उसके बाद इटली सरकार की सेवा मे इजीनियर की हैसियत से काम करते हुए उन्होने सारे इटली देश की यात्रा दस वर्ष तक की। १९३५ ई० मे वे मिलान मे बस गए और वहा अपनी साहित्यिक गतिविधियो के कारण काफी विख्यात हो गए। कुछ दिनो बाद वे इटालियन भाषा के प्राचार्य नियुक्त हो गए। अध्यापन-काल मे उन्होने नाटको की समीक्षाए विशेष रूप मे लिखी जो अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुई। उनके विचार वामपक्षीय थे इसलिए वे 'इर्मेतिस्मो' मे काफी आगे आए। उन्होने गेय कविताओ की परम्परागत गायन-पद्धति मे नये सुधार सुझाए और अभिव्यक्ति की नई शृखलाओ की ओर इगित किया। उन्होने बताया कि सगीत के प्रभाव मे शब्द की अपेक्षा ध्वनि और लय विशेष काम करते है। इसी दृष्टि ने पहले उनगारेती और भाण्टेल की शिष्यता करके बाद मे उन्होने उनकी धुनो से अपनी निजी शैली विकसित की।

उनकी रचनाओ मे 'जल और थल' (एक्वेसतेअर) १९३० ई० मे प्रकाशित हुई और 'निराली धरती' (ला तेरा इम्प्रेगियेबिल) १९५८ ई० मे। इन दोनो के कारण उन्हे 'वियारगो पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इनकी कविताए जीवन के गहरे स्तर को स्पर्श करती है।

काजीमोदो ने ग्रीक, लैटिन और अग्रेजी (शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट') से अनुवाद भी किए है और उन्हे आधुनिक अभिरुचि का भी पूरा ज्ञान है।

इटली मे मुसोलिनी की तानाशाही के दिनो मे वहा के साहित्यिक — सिलोने, अलबर्तो मोरोविया और वितोरिनी दबे-से पडे थे। तानाशाही के पतन के बाद ही उनकी

बातें सुनी जा सकी और उनकी रचनाओ की कद्र हुई । इसका अधिकाश श्रेय साल्वातोर काजीमोदो को है। उनकी कविताओ का सग्रह पाच जिल्दो मे प्रकाशित हुआ है जिनके नाम अग्रेजी अनुवाद-सहित इस प्रकार है :

(१) और शाम हो गई (And Suddenly it is Evening)
(२) दिन पर दिन (Day-By-Day)
(३) अब जीवन स्वप्न है (Life is Now Dream)
(४) नकली हरियाली और असली (The False Green and The Real)
(५) निराली धरती (The Matchless Earth)

उन्हे 'एतनाताओमीना पुरस्कार' नामक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी उनकी श्रेष्ठ कविताओ के लिए मिल चुका है ।

एलेक्सिस सेण्ट लेजर

१९६० ई० का नोबल पुरस्कार एलेक्सिस सेट लेजर को मिला जिनका उपनाम 'सेण्ट जॉन पर्स' है। उनकी कविताओ मे कल्पना की उडान बहुत है और वे वर्तमान युग का सुन्दर चित्रण करती है। वे जीवन को गम्भीरतापूर्वक नही, खेल की भाति देखते और उसपर अपनी कल्पना की उडान भरते है। कविता मे इनकी समानता ज्वाइस, इलियट और एजरा पाउण्ड से की गई है।

पर्स या लेजर का जन्म ३१ मई, १८८७ ई० को फ्रास के एक द्वीप 'लेजर ले फ्यूले' मे हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा एक वृद्ध धर्माचार्य के द्वारा हुई थी। उनकी दाई एक हिन्दू स्त्री थी जो शैवमत की गुप्त अनुगामिनी थी। उनकी आरम्भिक कृतियो मे 'समुद्र और तूफान' ही अधिक उभरते है और गर्म देशो के पेड़-पौदे हरियाली आदि भी।

ग्यारह वर्ष की अवस्था मे वे अपने पारिवारिक टापू से फ्रास लाए गए, जहा उन्होने साहित्य, औषधिशास्त्र और कानून का अध्ययन किया। १९१४ ई० मे वे दूतावास की सेवा मे ले लिए गए। उनकी मित्रता कुछ चीनी दार्शनिको से हो गई। पहाडी के बीच मे उन्होने एक मन्दिर किराये पर ले लिया था और उसमे उन्हे बडा आनन्द आता था। छुट्टी के दिनो मे वे गोबी के रेगिस्तान की सैर को जाया करते थे। वे फीजी और न्यूहेब्रिड्स के बीच मे दक्षिण समुद्र की अनुसधान-यात्रा पर भी जाते थे।

१९२२ ई० मे शान्तिदूत एरिस्टाइड ब्रिआद के अनुरोध पर सेण्ट लेजर वाशिगटन मे हुई निशस्त्रीकरण परिषद् मे भाग लेने अमेरिका गए क्योकि ये सुदूरपूर्व के विशेषज्ञ माने जाते थे। बाद मे तो ब्रिआद उनके साथ फ्रास आ गए और वहा उनके दाहिने हाथ बन गए। ब्रिआद की १९३२ ई० मे मृत्यु हो जाने के बाद लेजर वैदेशिक सचिव बन गए। फिर भी रात का समय वे काव्य-रचना मे ही लगाते रहे।

इन दिनो लेजर अमेरिका मे रहते है, जहा ये 'लाइब्रेरी ऑफ काग्रेस' के 'फैलो' बना लिए गए है। फ्रासीसी काव्य-धारा के बारे मे ये लाइब्रेरी के परामर्शदाता है।

सेण्ट लेजर की पहली रचना १९०९ ई० मे 'इमेजेज़ ए'-क्रूसो' के नाम से प्रकाशित हुई। उनका दूसरा कविता-सग्रह 'इलोजेज़' शीर्षकान्तर्गत १९१० ई० मे निकला।

'नोवेले रिन्यू फ्रासीस पोमे' नवम्बर १९२२ ई० मे प्रकाशित हुआ, 'एमिती दू प्रिंस' १९२२ ई० मे और 'अनाबोस' १९२४ ई० मे प्रकाशित हुआ जिसका अनुवाद कवि एस० इलियट ने अंग्रेज़ी मे करके १९३० ई० मे प्रकाशित कराया। इस रचना का अनुवाद जर्मन, इटालियन, रूमानियन और रूसी मे भी प्रकाशित हुआ। यही उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति भी मानी जाती है। 'निर्वासित' (एग्जाइल) भी इनकी अच्छी रचनाओं मे है।

आइवो एण्ड्रीक

१९६१ ई० का नोबल पुरस्कार यूगोस्लाविया के प्रसिद्ध साहित्यकार आइवो एण्ड्रीक को प्राप्त हुआ।

एण्ड्रीक का जन्म बोसिया क्षेत्र मे १८९२ ई० मे हुआ था। उनकी शिक्षा सारा-जेवो और जागरेब मे हुई थी। साहित्य के अतिरिक्त उन्हे राजनीति मे भी दिलचस्पी थी और वे बाद मे राजदूत हो गए। द्वितीय विश्व-महासमर के दिनो मे वे बर्लिन (जर्मनी) मे यूगोस्लाव-राजदूत थे।

यूगोस्लाविया के इतिहास को लेकर उन्होने अपने क्षेत्र बोसिया की तत्कालीन विभूतियो का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि उसे महाकाव्य की टक्कर का कहा जा सकता है। इतिहास के पात्रो और दृश्यो का इन्होने शक्तिशाली ढग से चित्रण किया है।

एण्ड्रीक की रचनाओ मे, जो अग्रेजी मे अनूदित होकर ख्याति प्राप्त कर चुकी है, दो—'दि ब्रिज ओवर डायना' तथा 'ए क्रॉनिकल एबाउट ट्रावनीक' अधिक प्रसिद्ध मानी जाती है और वास्तव मे यही उनकी सर्वश्रेष्ठ रचनाए हैं।

जॉन स्टेनबेक

१६६२ ई० का नोबल पुरस्कार अमरीकी उपन्यासकार जॉन स्टेनबेक को प्राप्त हुआ। इनका जन्म १६०२ ई० मे हुआ था और इनकी शिक्षा-दीक्षा स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय मे हुई थी। ये विद्यार्थी-जीवन मे मजदूरी करके खर्च चलाते थे इसलिए इनको विशेष विद्यार्थी का दर्जा मिल गया था। लेखन-कार्य का प्रयोग इन्होने अपने छात्र-जीवन से ही आरम्भ कर दिया था। १६३५ ई० मे इन्होने 'टार्टिला फ्लैट' नामक उपन्यास लिखा जोकि प्रयोग के रूप मे इनका चौथा प्रयत्न था। उसमे उन्होने अमेरिका के दक्षिणी-पश्चिमी आवारा मजदूरो का अच्छा चित्रण किया है।

१६३६ ई० मे स्टेनबेक ने 'इन डुब्त्रियस बैटिल' लिखा जिसमे मज़दूरो की हडताल का विषय विस्तारपूर्वक चित्रित किया गया है। १६३७ ई० मे उनका 'ऑफ माइस एण्ड मेन' प्रकाशित हुई जो एक भावुकतापूर्ण रोमाचक नाट्य-रचना है। १६३८ ई० मे उनका 'लाग वेली' नामक कहानी-सग्रह प्रकाशित हुआ। १६३६ ई० मे उनका 'ग्रेप्स ऑफ रैथ' नामक उपन्यास निकला जिसपर पुलिट्ज़र पुरस्कार प्राप्त हुआ। १६४२ ई० मे इनका 'द मून इज़ डाउन' उपन्यास छपा जिसमे नार्वे आक्रमण का वर्णन है। 'कैनेकी रो' १६४५ ई० मे प्रकाशित हुआ जो कैलिफोर्निया के समुद्र-तट की कहानी है। इस रचना के उपसहार-स्वरूप एक दूसरी रचना 'स्वीट थर्सडे' के नाम से १६५४ ई० मे प्रकाशित हुई जो मानवीय सहानुभूति की भावनाओ से ओत-प्रोत है। इसके पूर्व १६४७ ई० मे इनकी दो रचनाए—'वेवर्ड बस' और 'पर्ल' नाम से प्रकाशित हुई थी जिनका चित्रण जे० सी० ओर्ज़को नामक कलाकार ने किया था। १६५२ ई० मे उनका 'ईस्ट ऑफ अदन' नामक उपन्यास प्रकाशित होकर अच्छा नाम पा गया।

जॉन स्टेनवेक की अवस्था अब साठ वर्ष की हो गई है। इनकी रचनाओ मे भावोद्वेग का उभार काफी होता है और प्राय बीच-बीच मे हास्य-रस की झलक आ जाती है। अमेरिका का जो समाज सभी वर्गो से परे या 'जाति-बाहर' गिना जाता है उसका चित्रण इन्होने अच्छी तरह किया है। इस दृष्टि से वे अमेरिका के अन्य नोबल पुरस्कार-विजेताओ—सिक्लेयर लुई, पर्ल बक, यूजेन ओ'नील, विलियम फॉकनर और अर्नेस्ट हेमिग्वे से भिन्न प्रकार के औपन्यासिक है। इन सभी साहित्य-स्रष्टाओ मे अन्तिम

दो से इनकी अधिक घनिष्ठता रही।

स्टेनबेक गत महायुद्ध के पहले तो सर्वप्रिय लेखक थे, पर महायुद्ध के बाद इनके अनुभव और तकनीक मे परिवर्तन आ गया और उच्च स्तर की रचनाओ के लिए उनकी प्रशसा की अपेक्षा भर्त्सना अधिक होने लगी—फिर भी इनका नाम तो प्रथम श्रेणी के उपन्यासकारो मे पहले भी था और अब भी है। १९५० ई० से ही इनकी रचनाओ पर पुरस्कार देने के लिए नोबल पुरस्कार समिति हर साल विचार करती रही है।

डा० आस्टरलिग जैसे समीक्षक ने इनकी रचनाओ की समीक्षा मे १९४० ई० से १९५० ई० तक की और फिर १९५० ई० से आगे की अवधि मे प्रकाशित रचनाओ —'कैनेकी रो' से 'स्वीट थर्सडे' तक सभी रचनाओ मे क्षीणतर शक्ति का अनुभव किया है। किंतु गत वर्ष इनके 'द विंटर ऑफ अवर डिस्कटेण्ट' (असन्तोषजनक शीत) जैसे विस्तृत उपन्यास पर अधिक अनुकूल टीका-टिप्पणिया हुई है। 'ग्रेप्स ऑफ रैथ' से इनका उच्च स्तर कायम रह सका है जिसमे आवारे का ओकलोहामा से स्थानान्तरित होकर केलीफोर्निया जाना चित्रित किया गया। अकेले अमेरिका मे इस उपन्यास की बीस लाख प्रतिया बिकी है। इस उपन्यास का अनुवाद तैतीस भाषाओ मे प्रकाशित हो चुका है। प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट ने इनकी इस रचना की कद्र और प्रशसा की है।

स्टेनबेक का जन्म कैलिफोर्निया के एक साधारण परिवार में हुआ था जो सैलिनास घाटी मे रहता था। इनके विद्यार्थी-जीवन से ही इनका घुमक्कड ज.वन आरम्भ हो गया था। ये एक साथ कई काम करने के आदी शुरू से ही हो गए – खेतो मे, अख बार मे और पहरेदारी के काम मे अपने विद्यार्थी-जीवन से ही लग गए थे और उनका 'कप ऑफ गोल्ड' (सोने की प्याली) उपन्यास भी ऐसे ही समय मे लिखा गया था। इसके बाद तो स्टेनबेक प्रथम श्रेणी के औपन्यासिक बन गए। फॉकनर के उपन्यासो के मुकाबले मे स्टेनबेक का 'डुब्बियस वैटिल' ही रखा जा सकता है जिसके कथावस्तु मे हडताल को मुख्य बनाया गया है। यह १९३६ ई० मे प्रकाशित हुआ था। 'आफ माइस एण्ड मेन' मे विनोद और विषाद दोनो का सामजस्य है और यह एक सर्वथा निर्दोष रचना मानी जाती है। यह १९३७ ई० मे प्रकाशित हुई थी। 'लाग वेली' कथा-सग्रह उसके बाद १९३८ ई० मे प्रकाशित हुआ और 'ग्रेप्स ऑफ रैथ' तो उनकी तत्कालीन विख्यात रचना मानी जाती है। स्टेनबेक इस रचना के बाद साहित्य-ससार मे जम गए। वे प्रतिदिन २००० से ३००० शब्द ही लिखने लगे और वह भी सप्ताह मे छ. दिन। उनकी 'क्यूट', 'सेंटीमेटल' और 'प्रिटेन्शस' उन्ही दिनो की रचनाए है जिनकी बिक्री बहुत तेजी के साथ हुई। 'ट्रेवेल्स विद चार्ली' उनकी नवीनतम रचना है जो उनकी २७वी कृति है। पुरस्कार-समिति ने उनकी रचनाओ मे 'द विटर ऑफ अवर डिस्कटेण्ट' उपन्यास को उच्चतम स्तर का माना है।

जार्ज सेफ़रिस

१९६३ ई० का नोबल पुरस्कार ग्रीक कवि जार्ज सेफरिस को मिला। सेफरिस का नाम इस शताब्दी के तीसरे दशक मे ही प्रकाश मे आ गया था और उनकी कविताएँ तीसरे और चौथे दशक मे यूरोप के ग्रीक भाषा के विद्यार्थियो मे सर्वप्रिय हो चुकी थी। वर्षों तक यह एक तपस्वी कवि के रूप मे योरोस द्वीप मे रहे। १९४५ ई० मे जब वे 'द क्रश' नामक काव्य-ग्रथ लिखने मे लगे तो उस द्वीप के एक चट्टान पर आसन जमाकर बैठे रहा करते थे। एकान्त-चिन्तन और प्राकृतिक वातावरण ने उनकी उस रचना को चार चाँद लगा दिये।

मृतक सागर के वातावरण मे—स्मरना मे १९०० ई० मे जन्म लेकर भी सेफरिस की उच्च शिक्षा पेरिस मे सम्पन्न हुई, जहा उनका सम्पर्क अग्रेज़ी-भाषी लोगो के साथ हुआ। इनकी रचनाओ की तुलना पाउण्ड और इलियट की रचनाओ से की जाती है।

सेफरिस के पिता कानून-विषय के एक प्रोफेसर थे, इसलिए इन्हे भी कानून पढने का अवसर मिला। उनकी कविताए अधिकाशत ग्रीक भाषा मे ही है, इसलिए उनपर पूरे अधिकार के साथ तो कोई ग्रीक-पडित ही कुछ कह सकता है, पर कुछ फुटकर अशो का अनुवाद यत्र-तत्र अग्रेज़ी मे हुआ है जिसे पढकर इनकी बहुज्ञता और पाण्डित्य का परिचय अवश्य मिल जाता है। तीस वर्ष के लम्बे समय तक ग्रीक भाषा मे जो रचनाए इन्होने की है, उनमे इन्होने अपने सारे अध्ययन और अनुभव का निचोड़ दे दिया है। सेफरिस कोरे कवि न होकर राजनीतिज्ञ भी है। इन्हे ग्रीक भाषा का आचार्य और आधुनिक कवि कहा जाता है। इनमे जो विश्वव्यापी भावना और अन्तर्दृष्टि है उनके कारण ही इनका सारे ससार मे नाम हो गया और अन्त मे इन्हे नोबल-पुरस्कार मिला।

जां पाल सार्त्र

१६६४ का नोबल पुरस्कार फ्रेंच लेखक जा पाल सार्त्र को मिला। पुरस्कार लेने मे उन्होने बहुत ग्रानाकानी की ग्रौर कहा—"लेखक को सस्था नही वनना चाहिए, चाहे उससे उसे कितना ही बडा सम्मान क्यो न प्राप्त हो।" उनकी इस इन्कार ग्रौर ग्रस्वीकृति की विश्वव्यापी चर्चा हुई। उन्होने ग्रपनी ग्रात्मकथा—'वर्ड्स' (शब्द) मे कहा है—"मै ग्रपने पागलपन मे सबसे बडी बात यही पसन्द करता हू कि इसने मेरी ग्रारम्भ से ही रक्षा की है ग्रौर मैं 'सौन्दर्य' के जादू मे नही फँसा— मैं कभी इस विचार से नही फूला कि मै सुखी बौद्धिक हू। मैंने तो सदा ग्रपने को बचाया ही है।" 'सिचुएशन्स' (परिस्थितिया) मे उन्होने पन्द्रह सुन्दर निबन्धो मे 'मुक्ति' प्राप्त करने का वर्णन किया है। उन्होने ग्रपनी रचनाग्रो मे व्यग्य रूप मे भगवान से मुक्ति पाने की जितनी बाते कही है उससे कैथोलिक ईसाइयो के लिए बहस-मुबाहिसे ग्रौर सिरदर्द की बड़ी सामग्री तैयार हो गई है। किन्तु इनकी रचनाग्रो से जिज्ञासु बौद्धिको को बडा ही सन्तोष ग्रौर समाधान प्राप्त होता है। उन्होने नवबौद्धिको को ग्रभिनव ज्ञान-दान ग्रौर नई तर्क-शैली देने के लिए ही ग्रपना जीवन बिताया है।

सार्त्र ने विचार बदलने से कभी इन्कार नही किया। उन्होने सदा खरी-खरी बाते कही है। उन्होने मोटी से मोटी सासारिक बाते भी कही हैं ग्रौर सूक्ष्म से सूक्ष्म कला-विवेचन भी किया है। उनकी रचनाग्रो मे 'चूहो ग्रौर ग्रादमियो' की बाते भी कही गयी है ग्रौर चित्रणो ग्रौर फिल्मो के बारे मे भी। ऐन्द्रे जिद की मृत्यु पर 'जीवित जिद' (लिविग जिद) लिखकर उन्होने दक्षिण पन्थी लेखको की भी खबर ली है ग्रौर वामपथियो की भी।

सार्त्र की रचनाग्रो की सख्या लम्बी है ग्रौर वे सबकी सब बडी-बडी जिल्दो मे हैं उनकी 'बौद्धिक युग' (द एज ग्राफ रीज़न), 'रिप्रीव', 'ग्रात्मा मे फौलाद' (ग्रायरन इन द सोल), 'नौसिया' 'माडेलेग्रर', 'हारा-जीता' (लूजर विन्स), 'नेक्रासाव' ग्रादि सभी उच्चकोटि की गम्भीर विषयो की रचनाए है, पर इनकी भाषा ऐसी ग्रालकारिक ग्रौर चुहल-भरी है कि इन ग्रन्थो को पढने मे मज़ा ग्राता है ग्रौर पाठक कही-कही, उनमे से कम से कम कुछ मे, तो तैरने-सा लगता है। इनकी रचनाग्रो के काफी ग्रनुवाद ग्रग्रेज़ी मे उपलब्ध है।

मिखाइल शोलोखोव

१९६५ का नोबल पुरस्कार रूसी साहित्यकार मिखाइल शोलोखोव को मिला। इस समाचार से शोलोखोव के करोडो पाठको को बडी ही प्रसन्नता हुई, क्योकि उनके पाठक उनके अनुवादो को पढकर उनसे भली भाँति परिचित हो चुके थे। हिन्दी मे भी उनके अग्रेजी अनुवाद का अनुवाद 'ऐण्ड क्वाइट फ्लोज द डोन' प्रकाशित होकर उनको सुपरिचित करा चुका था इसलिए यह नाम नया नही था। शोलोखोव को टाल्स्टाय-शैली का अन्तिम साहित्यकार कहा जाता है।

मिखाइल शोलोखोव को जनता का लेखक कहा जाता है। वे अभी बासठ वर्ष के है और लिखते ही जा रहे है। उन्हे उच्चतम सोवियत सम्मान 'आर्डर आफ लेनिन' पहले ही प्राप्त हो चुका था। स्वीडिश अकादमी ने उन्हे पुरस्कार देते समय जो वक्तव्य निकाला था उसमे कहा गया था कि "मिखाइल शोलोखोव कलापूर्ण शक्तियो से सम्पन्न है और डोन की गाथा का औपन्यासिक रूप उनकी इस क्षमता का चूडान्त है। यह रचना रूसी जनता को उसके ऐतिहासिक दौर की याद ताजा कराती है और उन्हे अपनी १९१८-२० के युद्धकाल की याद दिलाती है।" 'क्वाइट फ्लोज द डोन' एक महान् औपन्यासिक रचना है और उसमे रूसी कृषक-जीवन की अर्थ-व्यवस्था के समूहीकरण का साकार चित्रण है। इसमे रूसी जनता के खून, आसू, मेहनत और पसीने का मधुरतम अवगुण्ठन है। उसमे क्रान्ति और गृह-युद्ध की खुली तस्वीर है और शोलोखोव ने अपनी कल्पना के साथ तत्कालीन रूसी पृष्ठभूमि को ऐसा चमका दिया है कि पाठक उसमे मोहक स्वप्न की भाँति लिप्त हो जाता है।

सैमुएल एग्नान और नेली साक्स

१९६६ का नोबल पुरस्कार उसकी परम्परा के विपरीत दो इज़राइली साहित्य-कारो को सयुक्त रूप मे प्रदान किया गया। इन सयुक्त पुरस्कार-विजेताओ मे एक है सैमुएल जोजेफ एग्नान, जिनकी अवस्था ८९ वर्ष की है और दूसरी है नेली साक्स जो अपने जीवन के ७५ वर्ष पूरे कर चुकी है। इन दोनो साहित्यकारो मे पहले तो गद्य लेखक है और दूसरी है, कवयित्री।

ये दोनो पुरस्कार-विजेता इज़राइल-निवासी हैं और ये यहूदी जाति के है। वैसे एग्नान का जन्म तो पूर्वी यूरोप मे हुआ था और नेली साक्स जर्मनी मे पैदा हुई थी। इन दोनो ही की विशेषता यह है कि इस अवस्था मे भी इनकी साहित्य-सेवा जारी है। इनकी रचनाओ मे यहूदी-जीवन का वर्णन बडी ही सजीवता से किया गया है और इस दृष्टि से इन दोनो की रचनाएँ विशिष्ट और आकर्षक है।

एग्नान

एग्नान की गणना एक श्रेष्ठ कलाकार के रूप मे की जाती है। उनकी अधिकाश कहानिया पूर्वी यूरोप के यहूदियो के जीवन से सम्बन्धित है और चूकि उनका जन्म स्वय यहाँ के ही वातावरण मे हुआ था, इसलिए उनकी रचनाओ मे वहा का समाज सुन्दर और वास्तविक रूप मे चित्रित हो उठा है। एग्नान की जीवन-गाथा शान्तिपूर्ण और विशुद्ध साहित्यिक रही है। १९०८ ई० मे ही वे एक क्लर्क के रूप मे इज़राइल आ गए। उन दिनो इजरायल को अधिकाश रूप मे फिलिस्तीन कहा जाता था। उस समय से ही वे यरूसलम (जेरूसलम) के एक शान्त मुहल्ले मे सरल और एकान्त जीवन व्यतीत करते रहे है। वे यहा से बाहर जाना-आना कम पसन्द करते हैं और सदा साहित्य-रचना मे ही व्यस्त रहते है। उनकी रचनाओ मे सार्वभौम सत्य के दर्शन होते हैं, यद्यपि व्यवहार मे वे एक कट्टर यहूदी ही कहे जा सकते है।

एग्नान का ईश्वर मे दृढ विश्वास है। उन्होने अपनी रचनाओ मे उसका और कठोर सत्य का सजीव चिन्तन किया है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओ मे 'गत कल और परसो' अधिक प्रसिद्ध है, किन्तु उनकी रचनाओ मे सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है 'रात का राही'। उनकी सारी रचनाए व्यग्य, हास्य और गम्भीरता से समन्वित है। उनकी

भाषा बहुत ही कोमल है और उस सूक्ष्मता के दर्शन स्थल-स्थल पर होते है। उनकी शैली मे तुलनात्मकता और भाषा मे मुहावरो की प्रचुरता है।

एग्नान को जो पुरस्कार प्राप्त हुआ है वह एक प्रकार से नयी दुनिया पर पुराने विश्व की विजय का द्योतक है। एग्नान अब भी पुराने यहूदियो की तरह गोल टोपी पहनते है और अब भी पुरानी हिब्रू भाषा को जीवित रखने के हामी है। वे पुरानी बाइबिल का पारायण करते है और यहूदी धर्माचार्यो पर पूर्ण श्रद्धा रखते हैं।

अब से १८ वर्ष पूर्व बने अभिनव इजराइल राष्ट्र की २५ लाख जनता अपने २५००० वर्ग मील विस्तृत देश मे प्राचीन और नवीन दोनो ही रूपो को सजाती चली आ रही है। वैसे तो ससार-भर मे फैले यहूदी बिल्कुल अद्यतन ढग के बन चुके है और यूरोप और अमेरिका मे तो उन्होने बडे-बडे व्यापार, उद्योग सचालित कर नाम कमा लिया है, किन्तु उनकी सस्कृति और धर्म-शृखला अभी तक उस साढे तीन हजार वर्ष पहले की याद दिलाती है, जब वे उस प्रदेश—फिलिस्तीन का शासन करते थे, और जो बाद मे उनसे छीन लिया गया था।

यहूदी जाति पुराने जमाने मे ही अपने वणिक्-स्वभाव के कारण कष्ट और जुल्म की शिकार रही है। रोमन सम्राटो ने उन्हे अपने देश से निकाला तो वे १८वी शताब्दी तक नही सम्भल पाए। उन्नीसवी सदी मे उनकी दशा फिर सुधरी और उनकी मृतप्राय हिब्रू भाषा भी पुनर्जीवित हुई। सैकडो यहूदी लेखक, कलाकारो और इतिहासकारो ने उनके गत गौरव को पुनरुज्जीवित कर दिया और वे न केवल व्यापार-उद्योग मे, बल्कि कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान और राजनीति मे भी चमके।

एग्नान को हिब्रू भाषा की पुरानी शैली का रक्षक माना जाता है, क्योकि उन्होने उसकी प्राचीन शब्दावली के स्वरूप को अक्षुण्ण रखा है और आधुनिक हिब्रू के शब्द अपनी रचनाओ मे कम लिए है। आजकल के यहूदी इस पुरानी शैली को नही समझते, केवल अध्ययन-प्रेमी और विद्वान पाठक ही उनकी रचनाओ का रस ले पाते है, किन्तु विद्यार्थियो के नये तबके मे भी उनकी भाषा के प्रति रुचि पैदा हो गयी है। इस प्रकार रहन-सहन और जीवन-शैली मे पुराने होकर भी विचारो की दृष्टि से एग्नान ने आधुनिक जगत् पर विजय प्राप्त कर ली है।

नेली साख्स

दूसरी पुरस्कार-विजेता नेली साख्स है जो जर्मन और स्वीडिश यहूदी माता-पिता की सन्तान है। ये एग्नान की तरह किसी भी परम्परा, पूर्वाग्रह और रूढि-परायणता से ग्रस्त नही है, किन्तु यह भी नही कहा जा सकता कि उनका कोई निश्चित विचार-दर्शन है। कवयित्री होने के नाते उनके गीतो मे हृदय को पीडा है, जिसमे उद्वेलन की अद्भुत शक्ति है। उनके परिवार के कितने ही सदस्य गत महासमर मे जर्मन यातना-शिविर मे समाप्त हो गए है, पर उन्हे जर्मनो की नयी पीढी पर विश्वास

और आस्था है । नेली साख्स का पहला काव्य-सग्रह 'कथाएँ और आख्यायिकाएँ' शीर्षक से प्रकाश मे आया था । हिटलर के अभ्युदय के पहले ही उनकी रचनाएँ जर्मनी मे नाम पा चुकी थी, किन्तु हिटलर के अधिकाराल्ढ होते ही उन्हे जर्मनी से भागना पडा । इजराइल मे आकर उन्होंने शान्ति और आस्था से भरे जिन गीतो की रचना की है वह साहित्य की उत्तम धरोहर कही जा सकती है । इज्राइल मे नेली साख्स का वैसा ही आदर है जैसा एग्नान का । एग्नान की गद्य-शैली विख्यात है तो साख्स की काव्य-रचना सरस है । उनकी कविताएँ अनुभवो और युक्तियो से भरी होने के कारण प्रौढ, सबल और स्थायी प्रभावकारी है । नेली साख्स की यह विशेषता है कि वे हिब्रू और जर्मन दोनो ही भाषाओ मे मौलिक रूप मे काव्य-रचना करती है ।
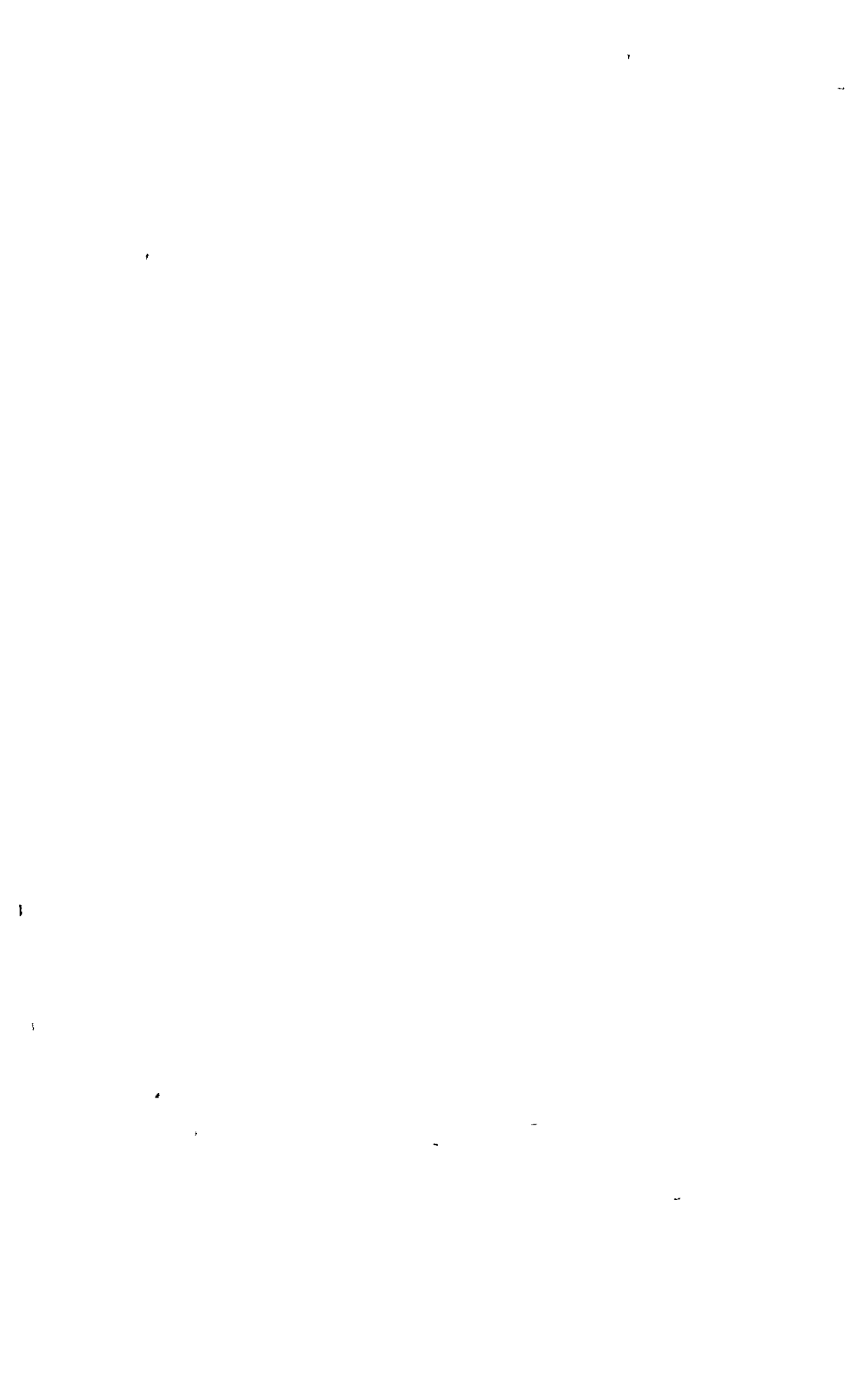
अपेक्षाए। अपेक्षाए है तो आज नही कल जब अपेक्षाए टूटेगी तो प्राणो पर सकट के बादल घिर आएगे।

'मेरी अमीर विधवा मौसी के बच्चे नही थे मगर उनके पास धन खूब था। उन्हे कुत्ते पालने का शौक था। उनके घर मे पाच सौ दस कुत्ते थे। मैने जिन्दगी-भर धन पाने के लोभ मे उन्हे खुश रखने की हर तरह से कोशिश की। उनके नापाक बदबूदार कुत्तो को खूब प्यार जताया, पागल कुत्तियो की पूछो पर हाथ फेरा और खुजलीदार पिल्लो को उठाकर गले से लगाया। मेरी

६

कल मर गयी।' ढब्बूजी ने अपने दोस्त मुल्ला नसरुद्दीन

[illegible]।

[illegible] उत्सुकता से पूछा—'अच्छा, तो वह वसीयत

[illegible]